WHITE BOOK

COACH UP IAS
YOUR SELECTION Is OUR BUSINESS

आधुनिक भारत का इतिहास

सिविल सेवा परीक्षा के लिए

IAS COACH ASHUTOSH SRIVASTAVA

IAS COACH MANISH SHUKLA

8009803231 / 9236569979

Saarthi

THE COACH

1 : 1 MENTORSHIP BEYOND THE CLASSES

- **Diagnosis** of candidates based on background, level of preparation and task completed.
- **Customized solution** based on Diagnosis.
- One to One **Mentorship.**
- Personalized schedule **planning.**
- Regular **Progress tracking.**
- **One to One classes** for Needed subjects along with online access of all the subjects.
- Topic wise **Notes Making sessions**.
- One Pager **(1 Topic 1 page)** Notes session.
- **PYQ** (Previous year questions) Drafting session.
- **Thematic charts** Making session.
- **Answer-writing** Guidance Program.
- **MOCK Test** with comprehensive & swift assessment & feedback.

Ashutosh Srivastava
(B.E., MBA, Gold Medalist)
Mentored 250+ Successful Aspirants over a period of 12+ years for Civil Services & Judicial Services Exams at both the Centre and state levels.

Manish Shukla
Mentored 100+ Successful Aspirants over a period of 9+ years for Civil Services Exams at both the Centre and state levels.

भारत में मुगल साम्राज्य का पतन

- औरंगजेब, जिसका सबसे बड़े साम्राज्य पर नियंत्रण था, की मृत्यु (1707) के बाद मुगलों का धीरे-धीरे अंत होने लगा था, औरंगजेब की मृत्य के बाद मुगल साम्राज्य लगभग 50 वर्षो तक ही रहा।
- उस समय उसके तीन पुत्र जीवित थे- मुअज्जम, आजम तथा कामबक्श।
- औरंगजेब राज्य के बंटवारे के लिए वसीयत लिख गया था, जिससे उत्तराधिकार का युद्ध न हो, परन्तु फिर भीं उनमे युद्ध हुआ । जिसमे मुअज़्ज़म विजयी हुआ।
- मुअज्जम सीधा दिल्ली आया; रास्ते में ही लाहौर के निकट बहादुरशाह के नाम से अपने को बादशाह घोषित किया।

औरंगजेब के पुत्रो के बीच उत्तरधिकार का युद्ध

- **जजाऊ का युद्ध (18 जून, 1707 ई०)** इस युद्ध में बहादुरशाह(मुअज्जम) ने आजम को पराजित कर मार डाला। इसमें आजम के दो पुत्र भी मारे गए।
- **बीजापुर का युद्ध (जनवरी, 1709 ई०)** यह युद्ध बहादुरशाह (मुअज्जम) और कामबक्श के बीच हुआ। कामबक्श घायल हुआ और अगले दिन उसकी मृत्यु हो गई। कामबक्श का पुत्र भी युद्ध में भी युद्ध में मारा गया।

उत्तर मुगलकाल के शासक

बहादुशाह प्रथम/ Bahadur Shah I (1707-1712 ई.)

↓

जहाँदारशाह/ Jahandar Shah (1712-1713 ई.)

↓

फर्रुखसियर / Farrukhsiyar (1713-1719 ई.)

↓

मुहम्मदशाह/ Muhammad Shah (1719-1748 ई.)

↓

अहमदशाह बहादुर/ Ahmed Shah Bahadur (1748-1754 ई.)

↓

आलमगीर द्वितीय/ Alamgir II (1754-1759 ई.)

↓

शाहआलम द्वितीय/ Shah Alam II (1759-1806 ई.)

↓

अकबर द्वितीय/ Akbar II (1806-1837 ई.)

↓

बहादुरशाह द्वितीय/ Bahadur Shah II (1837-1857 ई.)

❑ **बहादुरशाह प्रथम (शाह आलम प्रथम)(मुअज्जम) (1707-12 ई०)**

- एक अन्य उपाधि-शाहे-बेखबर (खाफी खाँ द्वारा प्रदत्त) उत्तराधिकार के युद्ध में 63 वर्षीय बहादुरशाह विजयी रहा। उसने समझौते और मेल-मिलाप की नीति अपनाई। उसने हिन्दू सरदारों और राजाओं के प्रति अधिक सहिष्णुतापूर्ण रुख अपनाया। आरम्भ में उसने आमेर और मारवाड़ (जोधपुर) के राजपूतों पर पहले से अधिक नियंत्रण रखने की कोशिश की।
- इस उद्देश्य से उसने आमेर की गद्दी पर से जयसिंह को हटाकर उसके छोटे भाई विजयसिंह को बिठाने और मारवाड़ के राजा अजीतसिंह को मुगल सत्ता की अधीनता स्वीकार करने के लिए मजबूर करने की कोशिशें कीं।
- मराठा सरदारों के प्रति इसकी निति अस्थिर रही उसने मराठो को दक्कन की सरदेश मुखी दे दी मगर चौथ का अधिकार नहीं दिया।

- उसने शिवजी के पौत्र शाहू को मुग़ल कैद से मुक्त किया (बहादुरशाह ने गुरुगोविन्द सिंह के साथ संधि कर और एक 5000 मनसब देकर विद्रोही सिक्खों के छात्र बेल-मिलाप करने की कोशिश की, परन्तु गुरु गोविन्द सिह की मृत्यु के बाद बाँदा बहादुर के नेतृत्व में सिक्खो ने बगावत कर दी।
- बहादुर शाह ने सिखों और कार्रवाई की और 1711 में बंदा बहादुर को लोहगढ़ के किले में पराजित किया लेकिन 1712 में बंदा बहादुर ने इस किले को फिर से जीत लिया और इसी युद्ध में उसकी मृत्यु हो गयी

- बहादुरशाह ने बुंदेला सरदार छत्रसाल से मेल-मिलाप कर लिया। चूड़ामन ने बंदा बहादूर के खिलाफ अभियान में बादशाह का साथ दिया।
- बहादुरशाह के दरबार में 1711 ई० में एक इच प्रतिनिधि शिष्ट मण्डलों जोसुआ केटेलार के नेतृत्व में गया।
- इस शिष्टमण्डल का दरबार में जोरदार स्वागत किया गया। इस स्वागत में एक पुर्तगाली सी जुलियाना की महत्वपूर्ण भूमिका थी इसे " बीबी फिदवा " की दी उपाधि गई थी।
- **ओवन सिडनी के लिखा है-** "मुगल सम्राटों, में बहादुरशाह अन्तिम सम्राट् था जिसके सम्बन्ध में कुछ अच्छे शब्द कहे जा सकते हैं"
- बहादुरशाह की मृत्यु के पश्चात् उसके चार पुत्रों (जहाँदारशाह, अजीम-उस-शान, जहाँशाह तथा रफी-उस-शान) के बीच उत्तराधिकार की लड़ाई प्रारम्भ हुई।

❑ **जहाँदारशाह (1712-13 ई०)** –

- जहाँदारशाह एक कमजोर तथा पतित शाहजादा था।
- उसके शासन काल में प्रशासन वस्तुतः जुल्फिकार खां के हाथों में था. वो वजीर बन गया था।
- जुल्फिकार खाँ के पिता असद खों को वकील नियुक्त किया गया। ये दोनों बाप-बेटे ईरानी अमीरों के नेता थे।
- उसने जयसिंह को मालवा का सुवेदार नियुक्त किया तथा " मिर्जा राजा" की पदवी दी।
- मारवाड़ के अजीत सिंह को "महाराजा" की पदवी दी गई और गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया गया।
- जहाँदार के समय में जजिया कर समाप्त कर दिया गया।
- मराठा शासक को दक्कन की चौथ और सरदेशमुखी इस शर्त पर दी गई कि उनकी वसूली मुगल अधिकारी करेंगे और फिर मराठा अधिकारियों को दे देंगे।
- जुल्फिकार खाँ ने एक गलत प्रवृत्ति इजारा को बढ़ावा दिया। इससे किसानों का उत्पीड़न बढ़ा।
- जहाँदारशाह **लालकुंवरि नामक** वेश्या पर आसक्त था।
- जहांदार के भतीजे फर्रुखसियर ने सम्राट् के पद का दावा किया और उसकी सहायता सैयद बंधुओं ने की।
- आगरा में जहाँदार के साथ 1713 में युद्ध हुआ। जहाँदार पराजित हुआ और बाद में उसकी हत्या कर दी गई।
- जहाँदारशाह को लोग **लम्पट मूर्ख** भी कहते थे।

❑ फर्रुखसियर (1713-1719 ई.)

- फरूखसियर को मुगल बादशाह की गद्दी सैयद बन्धुओं अब्दुल्ला खाँ और हुसैन अली खाँ के सहयोग से मिली।
- सैयद बन्धुओं ने फर्रुखसियर के गद्दी पर बैठते ही जजिया कर समाप्त कर दिया
- अब्दुल्ला खाँ को वज़ीर का पद एवं हुसैन अली को मीर बख्शी का पद प्रदान किया गया।
- फर्रुखसियर के शासनकाल में ही सिख नेता बन्दाबहादुर को 19 जून, 1716 को दिल्ली में फांसी दे दी गयी।
- उसने 1717 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी को व्यापारिक छूट प्रदान करने के लिए एक **"शाही फरमान"** जारी किया इसे कम्पनी का **मैग्नाकार्टा** कहा जाता है।
- फर्रुखसियर ने जयसिह को सवाई की उपाधि दी।
- सैय्यद हुसैन अली ने 1719 ई० में पेशवा बालाजी विश्वनाथ में दिल्ली की सन्धि करके मराठों से सैन्य सहायता लेकर फर्रुखशियर को अपदस्थ कर अंधा बना दिया तथा 10 दिन बाद उसकी हत्या कर दी गई।
- मुगल साम्राज्य के इतिहास में किसी अमीर द्वारा किसी मुगल बादशाह की हत्या का यह पहला उदाहरण था।

❑ Note :- 1717 ई० - शाही फरमान

- कम्पनी ने सन् 1715 ई० में जान सरमन की अध्यक्षता में कलकत्ता से एक दूतमण्डल मुगल दरबार में भेजा।
- विलियम हैमिल्टन नामक सर्जन और ख्वाजा सेहूद नामक एक आर्मीनियन दुभाषिया इस दूत मंडल में थे।
- हैमिल्टन ने फर्रुखसियर की एक दर्दनाक बीमारी छुड़ाने में सफलता प्राप्त की। फलतः फर्रुखसियर अंग्रेजों से प्रसन्न हो गया। उसने 1717 ई० में एक शाही फरमान जारी किया

❑ रफी -उद-दरजात

- यह सबसे कम समय तक शासन करने वाला मुगल शासक था। इसकी मृत्यु क्षयरोग (टी० बी०) से हुई। इस काल को उल्लेखनीय घटना निकृगियर का विद्राह था। निकूसियर अकबर-II का पुत्र था।

❑ रफी-उद-दौला

- इसने "**शाहजहां द्वितीय**" की उपाधि धारण की
- यह दूसरा सबसे कम समय तक शासन करने वाला मुगल सम्राट् था। इसके शासन काल में अजीत सिंह अपनी विधवा पुत्री को मुगल हरम से वापस ले गया रफी-उद-दौला की मृत्यु पेचिश नामक बीमारी के कारण हुई।

❑ मुहम्मद शाह (रौशन अख्तर)

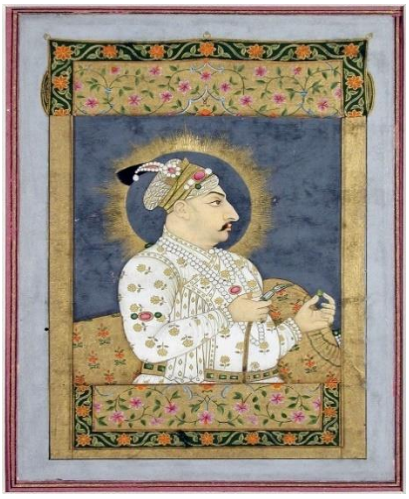

- अत्यधिक विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करने के कारण इसे रंगीला की उपाधि मिली थी। इसके काल में सैय्यद वधुओं का अंत हुआ।
- उसका पहला वजीर मुहम्मद अमीन खा हुआ। मुहम्मद शाह के काल में ही निजामुलमुल्क ने हैदराबाद राज्य की नींव डाली।
- सआदत खों ने अवध में अपने राज्य को स्वतंत्र कर लिया। इसी तरह बगाल, बिहार और उड़ीसा भी स्वतंत्र हो गए।
- फारस के शासक नादिरशाह ने 17.39 ई० में मुहम्मदशाह के समय में ही दिल्ली पर आक्रमण किया।

- बाजीराव प्रथम के नेतृत्व में मराठे केवल 500 घुड़सवार लेकर मार्च, 1737 ई० में दिल्ली पर चढ़ आए, परन्तु उनका किसी ने भी विरोध नहीं किया।

❑ नादिरशाह का आक्रमण

- मुहम्मदशाह के शासनकाल में फारस के नादिरशाह (ईरान का नेपोलियन) ने 1738-39 ई. के बीच भारत पर आक्रमण किया, जिसमें मुगल सेना बुरी तरह पराजित हुई।
- दिल्ली में लूटपाट करने के बाद 1739 ई. में वह वापस चला गया। इस युद्ध को करनाल का युद्ध (24 Feb 1739) कहा जाता हैं।
- वापस लौटते वक्त वह मुगल राजसिंहासन तख्त-ए-ताऊस, कोहिनूर हीरा तथा मुहम्मदशाह द्वारा तैयार करवाई गई हिन्दू संगीत की प्रसिद्ध चित्रित फारसी पाण्डुलिपि को भी अपने साथ ले गया। 1747 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।
- 20 मार्च 1739 को दिल्ली पर इसका अधिकार हो गया।

❑ अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण (1748-1767 ई.)

- मुहम्मदशाह के शासनकाल में ही नादिरशाह के उत्तराधिकारी अहमदशाह अब्दाली ने 1748 ई. में भारत पर आक्रमण किया।
- अहमदशाह अब्दाली को दुर्रे-दुर्रानी (युग का मोती) कहा गया।
- 1748-1767 ई. के दौरान उसने भारत पर सात बार (पंजाब (असफल-1748) , पंजाब (1749), पंजाब (1752), दिल्ली (1757), पानीपत (1761), पंजाब (1764), सिख (1767) आक्रमण किया। अब्दाली ने 1761 ई. में पानीपत की तीसरी लड़ाई में मराठों की सेना को पराजित किया।
- अहमदशाह का इस युद्ध में भाग लेने का तत्कालीन कारण मराठो द्वारा लाहौर से अपने वायसराय तैमूर शाह के निष्कासन का बदला लेना था।
- भारत से वापस जाने से पूर्व इसने स्वयं द्वारा विजित भारतीय प्रदेशों की सूबेदारी रूहेला सरदार नजीबुद्दौला (मुगल साम्राज्य का मीर बख्शी) को सौंप दी।

❑ अहमदशाह बहादुर (1748-1754 ई.)

- मुहम्मदशाह की मृत्यु के बाद अहदमशाह दिल्ली के सिंहासन पर बैठा।इसका जन्म एक नर्तकी से हुआ था।
- जिससे मोहम्मद शाह ने विवाह किया था इसके काल में मुगल अर्थव्यवस्था इतनी बिगड़ गयी थी की सेना को वेतन देने के लिए शाही समान बिकने लगे थे।
- इसके काल में अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर कुल पाँच बार आक्रमण किए।
- इसके शासनकाल में राजकीय कामकाज का नेतृत्व राजमाता उधमबाई (उपाधि किबला-ए-आलम) कर रही थी।
- अहमदशाह ने हिजड़ों (किन्नरो) के सरदार जावेद खाँ को नवाब बहादुर की उपाधि प्रदान की।
- उसने सफदरजंग को अपना वजीर तथा कमरूद्दीन के पुत्र मुइन-उल-मुल्क को पंजाब का सूबेदार बनाया।
- सफदरजंग ने जब जावेद खाँ की हत्या करवा दी, तब अहमदशाह ने इमाद-उल-मुल्क (गाजीउद्दीन) को वजीर बनाया।

- **गाजीउद्दीन इमाद-उल-मुल्क** ने मराठो के सहयोग से अहमदशाह को अपदस्थ कर उसकी आँखें निकलवाकर सलीमगढ़ की जेल में डाल दिया तथा अजीजुद्दीन को आलमगीर द्वितीय की उपाधि के साथ मुगल बादशाह बनाया।

❑ **आलमगीर द्वितीय (1754-1759 ई.)**

- इसका वास्तविक नाम अजीजुद्दीन था।
- प्लासी के युद्ध (1757) के समय आलमगीर द्वितीय दिल्ली का शासक था।
- इसी के काल में अब्दाली दिल्ली तक चढ़ आया।

❑ **शाहजहां तृतीय (1758-59)**

- आलमगीर द्वितीय हत्या के समय इसका पुत्र अलीगौहर बिहार में था। जहां इसने शाह आलम द्वितीय के नाम से खुद को बादशाह घोषित कर दिया।
- इसी समय दिल्ली इमाद-उल-मुल्क ने कामबक्श के पौत्र मुही-उल-मिल्लर को शाहजहां तृतीय के नाम से सिंघासन पर बैठा दिया।
- इस प्रकार आलमगीर -II की मृत्यु के पश्चात मुग़ल साम्राज्य में दो बादशाह दो अलग -अलग स्थानों पर सिंघासनारूढ़ हो गए।

❑ **शाहआलम द्वितीय (1759-1806 ई.)**

- शाहआलम द्वितीय का नाम अलीगौहर था।
- इसके समय में पानीपत का तृतीय युद्ध (1761 ई. में) तथा बक्सर का युद्ध (1764 ई. में) हुआ। बक्सर के युद्ध में इसने बंगाल के अपदस्थ नवाब मीरकासिम का साथ दिया।
- इसी युद्ध में कासिम की ओर से अवध के नवाब शुजाउद्दौला ने भी हिस्सा लिया था।
- बक्सर के युद्ध में पराजित होने के बाद शाहआलम द्वितीय को 1765 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी से इलाहाबाद की सन्धि करनी पड़ी, जिसके बाद उसे अनेक वर्षों तक इलाहाबाद में अंग्रेजों का पेंशनभोगी बनकर रहना पड़ा।
- शाह आलम द्वितीय पहला पेंशनर था इसी के समय से मुगल सम्राट अंग्रेजो के पेंशनर बन गए।
- उसके समय में ही 1803 ई. में अंग्रेजों ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया।
- रुहेला सरदार गुलाय कादिर ने शाहआलम द्वितीय को अन्धा बना दिया था तथा 1806 ई. में शाहआलम द्वितीय की हत्या कर दी गई।

❑ **अकबर द्वितीय (1806-1837 ई.)**

- अकबर द्वितीय अंग्रेजो के संरक्षण में बनने वाला प्रथम मुगल बादशाह था, इसके समय में बादशाहत मात्र लाल किले तक सिमट कर रह गई।
- अकबर द्वितीय ने राममोहन राय को राजा की उपाधि दी तथा उन्हें अपनी पैरवी के लिए इंग्लैण्ड भेजा था।
- 1837 ई. इंग्लैंड में उसकी मृत्यु हो गई। इसी के समय में 1835 मुगलो के सिक्के बंद हो गए।

❑ **बहादुरशाह द्वितीय (1837-1857 ई.)**

- बहादुरशाह द्वितीय जफर के नाम से कविता तथ शायरी लिखते थे, इसलिए वे बहादुरशाह जफर के नाम से प्रसिद्ध थे।
- 1857 ई. के विद्राह में विद्रोहियों का साथ देने के कारण अंग्रेज सरकार ने इन्हें गिरफ्तार कर रंगून निर्वासित कर दिया, जहाँ 1862 ई. में इनकी मृत्यु हो गई।
- यह मुगल साम्राज्य का अन्तिम शासक था।
- इसकी मृत्यु के पश्चाद भारत में मुगल साम्राज्य का अन्त (समाप्त) हो गया।
- लेकिन कानूनी रूप से मुगल साम्राज्य 1 नवंबर 1858 को महारानी विक्टोरिया के घोषणा पात्र के नाम से ही समाप्त हो गया था।

मुगल दरबार में दल

- प्रसिद्ध लेखक विलियम अरविन के अनुसार मुगल दरबार में बहुत से दल थे।
- इनमें चार प्रमुख थे तूरानी, ईरानी, अफगानी और हिन्दुस्तानी। इनमें पहले तीन मध्य एशियाई, ईरानी और अफगान सैनिकों के वंशज थे।
- तूरानी और अफगानी प्रायः सुन्नी थे जबकि ईरानी शिया।
- तूरानी दल - निजामुल मुल्क, अमीन खाँ, और जकरिया खाँ
- ईरानी दल - जुल्फिकार खाँ, सआदत खाँ, अमीर खाँ और इसहाक खाँ
- अफगानियों - अली मुहम्मद् खाँ एवं सुहम्मद खॉ बंगश
- हिन्दुस्तानी - सैय्यद बंधू
- सैय्यद बन्धु- सैय्यद बन्धु भारतीय इतिहास में राजा बनाने वाले के नाम से विख्यात हैं।
- इनके नाम अब्दुल्ला खाँ और हुसैन अली खाँ बाराहा है। इन्होंने भारतीय इतिहास में चार लोगों- फर्रुखशियर, रफीउद्दरजात, रफीउद्दौला एवं मुहम्मद शाह को राजा बनाया।

❑ मुगल साम्राज्य के पतन के निम्नलिखित मुख्य कारण हैं।

- **औरंगजेब का उत्तरदायित्व -** औरंगजेब की धर्मान्धता की नीति के कारण सिक्खों, जाटों, बुन्देलों, राजपूतों एवं मराठों ने विद्रोह किए।
- जजिया पुनः लागू करने तथा अन्य सामाजिक अपमानों के कारण सतनामी, बुन्देलों तथा जाटों ने विद्रोह किया।
- औरंगजेब की दक्षिण की मूर्खतापूर्ण नीति के कारण राज्य के समस्त साधनों पर इतना बोझ पड़ा कि धन, सेना इत्यादि का नाश हुआ।
- **अयोग्य उत्तराधिकारी-** औरंगजेब के उत्तराधिकारी दुर्बल एवं नैतिक रूप से पतित थे। बहादुरशाह की उपाधि 'शाहे बेखबर थी।
- जहांदारशाह लम्पट, मूर्ख था, फर्रुखशियर घृणित कायर था, मुहम्मदशाह की प्रशासन के प्रति उदासीनता, मदिरा एवं सुन्दरी के प्रति रुचि होने के कारण लोग उसे 'रंगीला' कहा करते थे।
- इस प्रकार के शक्तिहीन और मूर्ख सम्राट् राज्य के हितों की रक्षा नहीं कर सकते थे।
- **मुगल अभिजात वर्ग का पतन -** सम्राटों की देखा-देखी मुगल अभिजात वर्ग ने भी परिश्रमी एवं कठोर सैनिक जीवन छोड़ दिया था। इस प्रकार अभिवात वर्ग के लोगों में जो जर्जरता आ गई थी, उसके कारण उत्तम शासक वर्ग तथा वीर सैनिक नेताओं का देश में अभाव हो गया था।
- **दरबार में गुटबन्दी-** औरंगजेब के अन्तिम दिनों में मुगल दरबार में तूरानी, अफगानी, ईरानी एवं हिन्दुस्तानी गुट विशेष रूप से सक्रिय थे। प्रत्येक गुट का प्रयत्न यह था कि वह सम्राट् के कान भरे और सम्राट् को दूसरे दल के विरुद्ध कर दे।
- विदेशी आक्रमणों के विरुद्ध भी ये दल एक नहीं होते थे और प्रायः आक्रान्ताओं से मिलकर पड्यंत्र रचते थे।
- निजामुलमुल्क और बुरहानुलमुल्क ने निजी स्वार्थों के कारण नादिरशाह से मिलकर दिल्ली प्रशासन के विरुद्ध पड्यंत्र रचे और अपने स्वार्थ के लिए राष्ट्रीय हितों को न्यौछावर कर दिया।
- **उत्तराधिकार का त्रुटिपूर्ण नियम -** मुगलों में उत्तराधिकार का कोई नियम नहीं था। अतः उत्तराधिकार का फैसला मुख्यतः तलवारों के बल पर ही होता था। इसका फायदा उत्तरकालीन मुगलों के कमजोर शासनकाल में उमरा वर्ग ने उठाया।
- वे अपने निजी स्वार्थों के लिए सम्राटों को सिंहासन पर बैठाते अथवा उतारते थे। इस प्रकार उत्तराधिकार के त्रुटिपूर्ण नियम ने देश की राजनीति को शिथिल बना दिया।
- **मराठों का उत्थान -** मुगल साम्राज्य के पतन में सबसे महत्वपूर्ण बाहरी कारण शवाओं के अधीन मराठों का उत्थान था ।
- पेशवाओं ने हिन्दू पद पादशाही का आदर्श अपने सामने रखा जो मुस्लिम राज्य के अंत द्वारा ही पूरा किया जा सकता था।
- **सैनिक दुर्बलता -** मुगल सैन्य व्यवस्था में सैनिक पने मनसबदारों के प्रति ही निष्ठा रखते थे, सम्राट के प्रति नहीं।
- मुग़ल सैनिकों में व्यक्तिगत वीरता के अभाव को छोड़कर शेष सभी अवगुण जैसे अनुशासनहीनता, विलासपूर्ण जीवन, निष्क्रियता आदि विद्यमान थे।

यूरोपियों का आगमन

- अंग्रेजों द्वारा भारत में औपचारिक प्रभुत्व स्थापित करने से पहले भी, भारत और यूरोपीय देशों के बीच व्यापार होता था। सीरिया, मिस्र और ऑक्सस घाटी के माध्यम से भारत और यूरोप के मध्य आर्थिक संबंध थे।
- यूरोपीय कम्पनियों का आगमन प्राचीन काल में यूरोप और भारत के बीच व्यापारिक संबंध युनानियों के साथ आरम्भ हुए। भारत में मुख्यतः दो भागों से विदेशी प्रवेश कर सकते थे- **समुद्री-मार्ग , स्थल मार्ग**

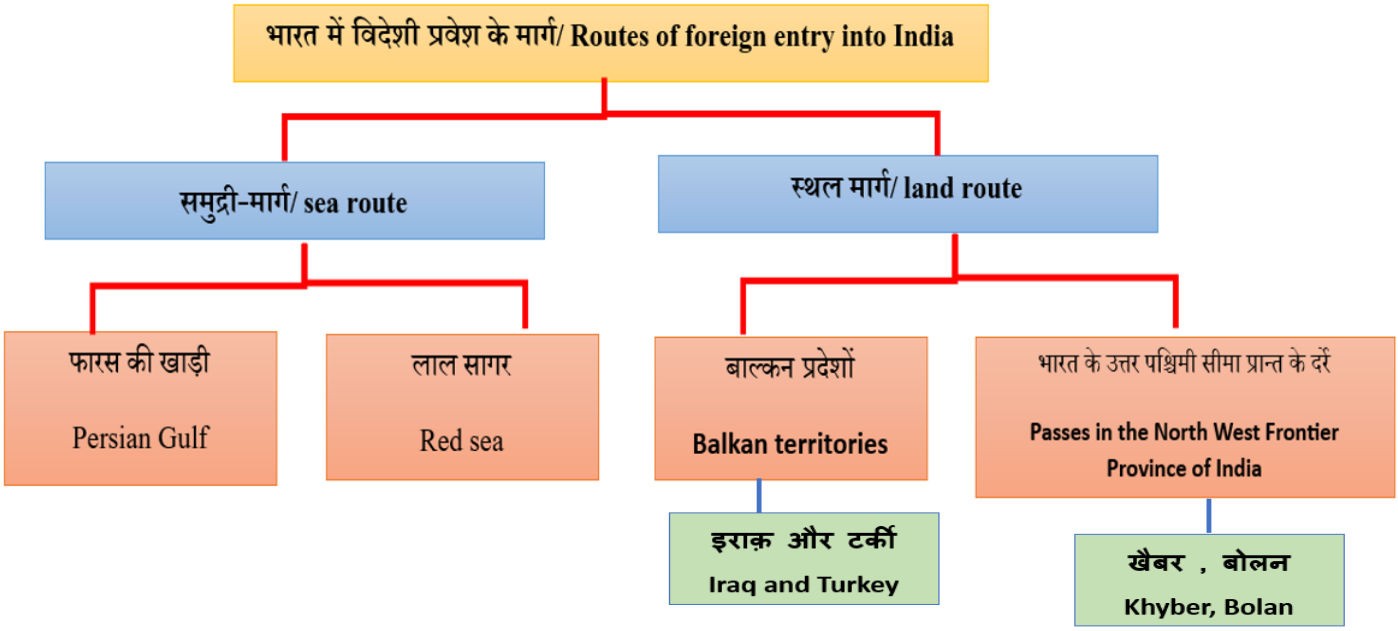

- **समुद्री-मार्ग :-** दो मुख्य समुद्री मार्ग वे प्रयम फारस की खाड़ी से होकर एवं द्वितीय लाल सागर से होकर। इसमें फारस की खाड़ी वाला मार्ग ज्यादा प्रचलित था, क्योंकि लाल सागर वाला मार्ग अत्यधिक कुहरे के कारण दुष्कर था।)
- **स्थल मार्ग :-** बाल्कन प्रदेशों से टर्की, फारस, ईरान, इराक होता हुआ अफगानिस्तान पहुँचता था, फिर खैबर कुर्रम, बोलेन तथा गोमल आदि दरों से होता हुआ भारत तक पहुँचता था।

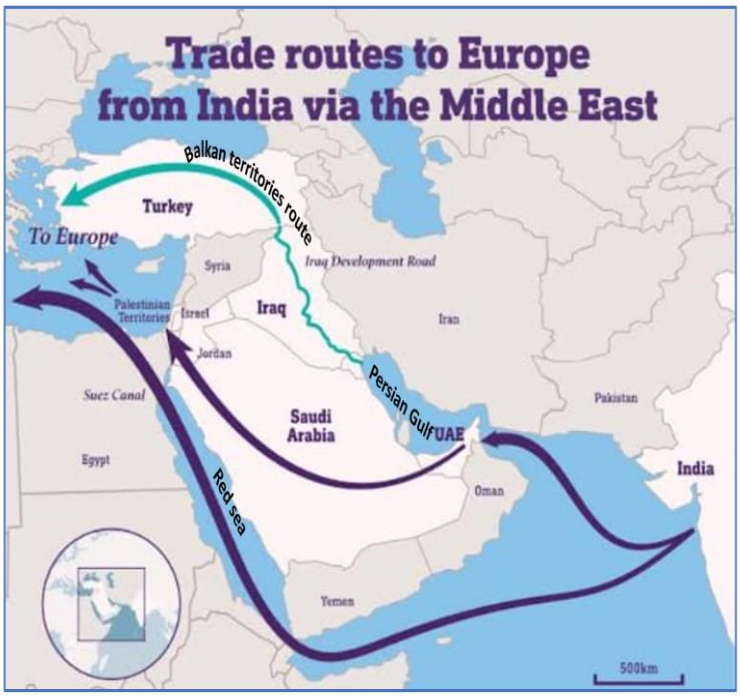

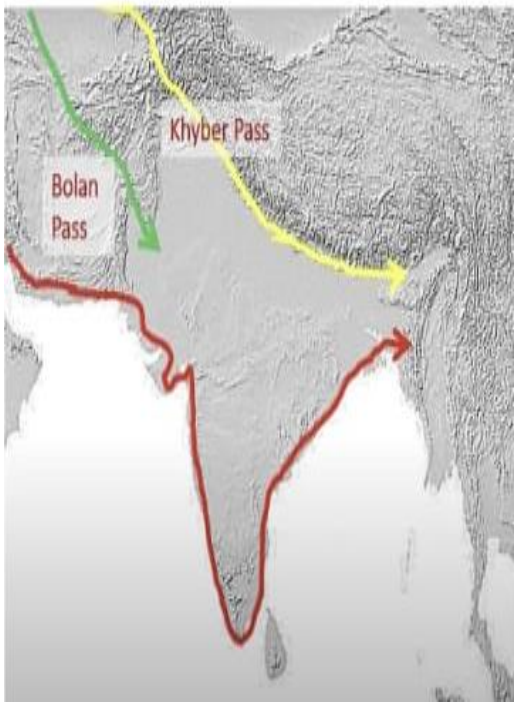

- 1453 ई. में कुस्तुनतुनिया के पतन के साथ ही यूरोप जाने वाले स्थल मार्ग पर तुर्कों का अधिकार हो गया।
- इसके कारण पश्चिमी यूरोप के राष्ट्रों ने नए व्यापारिक मार्गों की खोज प्रारम्भ की।
- क्योंकि 15वीं सदी के दौरान जहाजरानी निर्माण और नौपरिवहन विज्ञान में महान प्रगति हुई। इस समय कुतुबनुमा (दिशा सूचक) का अतविष्कार भी हो चुका था।
- नए भौगोलिक आविष्कार और व्यापारिक मार्गों की खोज में पुर्तगाल अग्रणी था।
- पुर्तगाल के राजकुमार प्रिंस हेनरी "द नेवीगेटर" के सतत प्रयासों से भौगोलिक खोजों का कार्य आसान हुआ।
- पुर्तगाल के नाविक वार्थोलोमोडियाज ने 1487 ई० में उत्तमाशा अन्तरीप को खोज निकाला, जिसे उसने तूफानी अन्तरीप कहा 1494 ई० में स्पेन के निवासी कोलम्बस ने भारत पहुँचने का मार्ग ढूंढ़ते हुए अमरीका को खोज निकाला।
- 1498 ई० में पुर्तगाली वास्कोडिगामा ने उत्तमाशा अन्तरीप का चक्कर काटकर भारत तक पहुँचने में सफलता पाई।

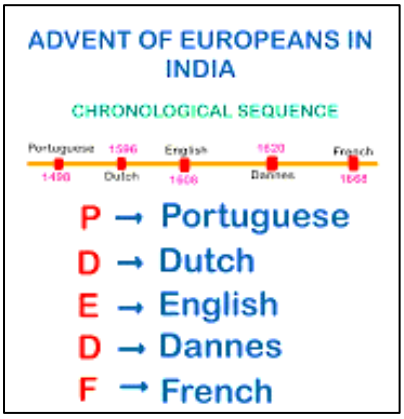

- वास्कोडिगामा अब्दुल मजीद नामक गुजराती पथ- प्रदर्शक की सहायता से 20 मई, 1498 को भारत के स्थित बन्दरगाह 'कालीकट' (Calicut) पहुँच गया।
- इस समुद्री मार्ग की खोज के बाद, पूरे यूरोप की विभिन्न व्यापारिक कंपनियां भारत में स्थापित हुई। यूरोपीय लोग कई चरणों मे भारत पहुंचे।
- भारत में यूरोपवासियों के आने के क्रम - पुर्तगाली , डच, अंग्रेज, डेनिश और फ्रांसीसी ।

पुर्तगाली

नाम	कार्य	महत्त्व
वास्कोडिगामा	• वह 1498 में कालीकट पहुँचा। कालीकट के हिन्दू शासक जमोरिन ने उसका स्वागत किया था। • 1502 तक, उसकी दूसरी यात्रा के बाद कन्नौर, कालीकट और कोचीन में व्यावसायिक चौकियों का निर्माण हुआ, साथ ही उनकी किलेबंदी भी की गई थी।	• अन्य व्यापारियों के विपरीत, पुर्तगाली भारत में सभी व्यापारों को नियंत्रित करना चाहते थे। • वास्को डी गामा ने 1501 में भारत की दूसरी यात्रा के समय कन्नौर में एक कारखाना स्थापित किया था। • अरबों के प्रतिरोध के बावजूद पुर्तगाली कालीकट, कोचीन और कन्नौर में अपने व्यापारिक केंद्र स्थापित करने में सफल रहे।

पेड्रो अल्वारेज केबरेल (1500)	• 1500 में कालीकट में पहला कारखाना स्थापित किया गया था।	• भारतीय उपमहाद्वीप पर यूरोपीय शासन के युग की शुरुआत की थी।
फ्रांसिस्को डी अल्मेडा (1505-09)	• ब्लू वाटर पालिसी (कार्टेज़ सिस्टम) पहले गवर्नर द्वारा शुरू की गई थी, जिसे सम्राट ने पुर्तगाली हितों को संरक्षित करने के लिए चुना था। • पुर्तगालियों ने विदेशियों को भारत में व्यापार करने से रोकने के लिए कार्टेज प्रणाली, समुद्री व्यापार लाइसेंस या उपयुक्त सरकार द्वारा जारी परमिट लागू किया था।	• प्रथम वायसराय, फ्रांसिस्को डी अल्मेडा को 1505 में चुना गया था, और उसने कोचीन में आवास स्थापित किया था । • 1509 में दीव के तट पर, अल्मेडा ने मिस्रियों और भारत से उनके सहयोगियों को हराया था।
अलफांसो डी अल्बुकर्क (1509-1515)	• 1509 में, अल्बुकर्क को भारत में पुर्तगाली क्षेत्रों का गवर्नर बनाया गया था। इसने कोचीन को अपना मुख्यालय बनाया। • हिंद महासागर की रणनीतिक कमान अपने हाथ मे ले ली थी। • बीजापुर के शासक आदिल शाह सुलतान से 1510 में गोवा को छीन लिया था। • विजयनगर के श्री कृष्ण देव राय (1510) से भटकल को छीन लिया था। • भारत में रहने और स्थानीय लोगों से शादी करने की प्रथा शुरू की, साथ ही जहाँ जहाँ उनका अधिकार था वहाँ सती प्रथा को गैरकानूनी घोषित किया था। • इसने 1511 में दक्षिण पूर्व एशिया की महत्वपूर्ण मंडी मलक्का पर नियंत्रण कर लिया और 1515 में हरमुज़ पर अधिकार कर लिया परन्तु बार बार के प्रयास के बाद भी अदन पर भी अधिकार नहीं कर सके।	• इसे भारत में पुर्तगाली प्रभुत्व स्थापित करने वाला व्यक्ति माना जाता है। • 'साम्राज्यवाद की नीति' सर्वप्रथम इसके द्वारा ही प्रस्तुत की गई थी। • सत्ता में अपने संक्षिप्त समय के दौरान, इसकी नीति के मूल उद्देश्य-व्यापार मार्गों और मसालों के स्रोतों पर नियंत्रण-लगभग पूरे हो गए थे। • पश्चिमी तट पर दमन, साल्सेट और बॉम्बे में, पूर्वी तट पर मद्रास के पास सैनथोम और बंगाल में हुगली में अल्बुकर्क के उत्तराधिकारियों द्वारा पुर्तगाली बस्तियों की स्थापना की गई थी।
नोडी कुन्हा (1529-38)	• 1530 में, उसने कोचीन के बजाय गोवा को राजधानी बना दिया था। उसने गुजरात के शासक बहादुर शाह को दीव (1535) और बेसिन (1534) से निष्कासित कर दिया था। • उसने अपना मुख्यालय हुगली, बंगाल में स्थापित किया।	• व्यावहारिक शासक जिसने अपने साम्राज्य का विस्तार पश्चिमी तटीय क्षेत्र से बाहर भी किया था। • इसके शासन काल में पुर्तगाली सत्ता पूर्वी तट तक पहुँच गई थी।

पुर्तगालियों के लिए अनुकूल परिस्थितियां

- **दृष्टिकोण:** उद्योग पर एकाधिकार सुनिश्चित करने की प्रारंभिक रणनीति में पुर्तगाली जहाजों को हथियारों से लैस(खतरों से निपटने के लिए) करना शामिल था।
- **समुद्री:** उनके पास उत्कृष्ट जहाज और तोप से लैस बेड़े (अन्य छोटे राज्यों की तुलना में कहीं बेहतर) थे।
- **अरब देशों का पिछड़ापन:** मिस्र और मध्य पूर्व में लकड़ी की कमी थी और वे जहाज बनाने में असमर्थ थे।

- **चीन का डर नही:** चीनियों को भारत पर आक्रमण करने से प्रतिबंधित कर दिया था, इसके साथ कोई अन्य महाशक्तियां नहीं थीं।
- **कुशल:** वे कुशल नाविक, व्यापारी और गवर्नर थे।
- **सैन्य विकास**: 16 वीं शताब्दी में, पुर्तगाली, जिनके पास मैचलॉक (तोड़ेदार बन्दूक), सैनिक के शरीर के कवच थे, जहाजों से सेना के विकास का प्रदर्शन करते हुए मालाबार में पहुंचे।

पुर्तगाली नियंत्रण की विधि एवं प्रक्रिया

- 1571 (ई० में पुर्तगाली एशियाई साम्राज्य को तीन स्वतंत्र कमानों में विभाजित किया गया।
- अफ्रीको समुद्र तट पर पुर्तगाली बस्तियों पर नियंत्रण के लिए मोजाम्बिक के गवर्नर की नियुक्ति की गई।
- भारतीय और फारस की खाड़ी के प्रदेशों की गोआ के गवर्नर के अधीन रखा गया तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के द्वीपों पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए मलक्का के गवर्नर की नियुक्ति की गई।
- पुर्तगालियों ने यूरोप को होने वाले निर्यात व्यापार को नियंत्रित करने के साथ-साथ मालाबार तट पर एक बन्दरगाह से दूसरे बन्दरगाह तक होने वाले व्यापार और भारतीय बन्दरगाहों से फारस की खाड़ी एवं मलक्का तक होने वाले विदेशी व्यापार पर एकाधिकार स्थापित कर लिया
- पुर्तगाली सामुद्रिक साम्राज्य को **एस्तादो द इण्डिया** नाम दिया गया।
- उन्होंने हिन्द महासागर में होने वाले व्यापार को नियंत्रित करने और उस पर कर लगाने का प्रयास किया।
- अपनी **कार्टज-आर्मेडा-काफिला व्यवस्था (Cartaz-Armada-Cafile System)** द्वारा उन्होंने एशियाई व्यापार पर गहरा प्रभाव डाला।
- उनका मुख्य साधन था कार्ज या परमिट जिसके पीछे आर्मेडा का बल होता था। पुर्तगाली अपने आप को **"सागर के स्वामी"** कहते थे और कार्टज-आर्मेडा व्यवस्था को उचित ठहराते थे।
- कोई भी भारतीय या अरबी जहाज पुर्तगाली अधिकारियों से कार्टज (परमिट) लिए बिना अरब सागर में नहीं जा सकता था। कार्टज के लिए शुल्क देना पड़ता था।
- एशिया के शासक इस व्यवस्था को स्वीकार करने के लिए बाध्य थे क्योंकि पुर्तगालियों की नौ-सेना अत्यन्त शक्तिशाली थी।

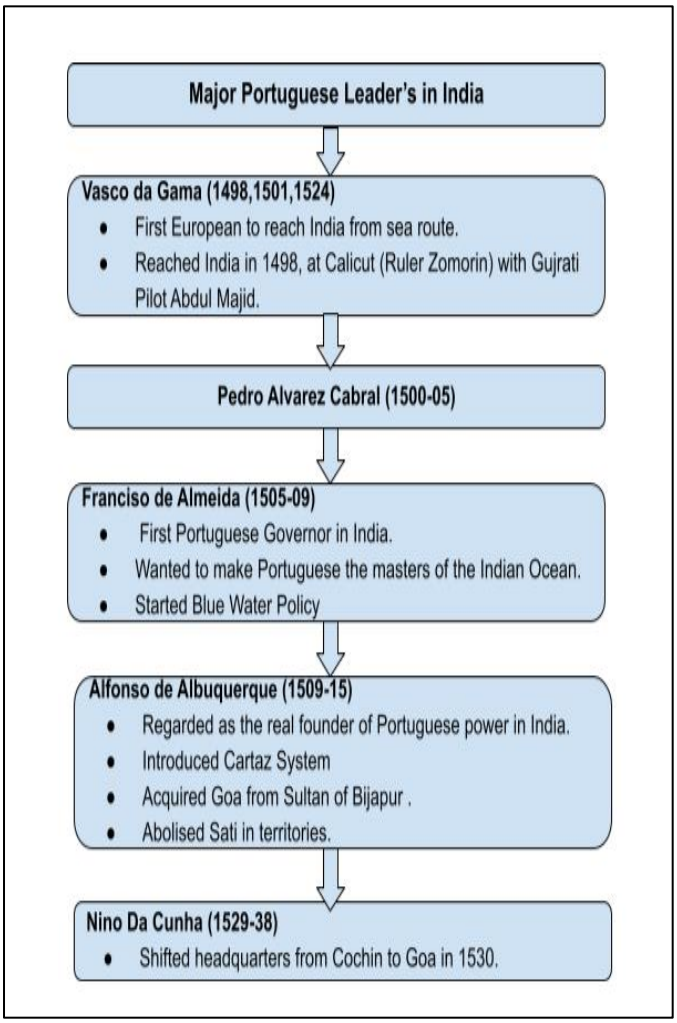

- भारतीय एवं अरवी जहाजों को काली मिर्च एवं गोला-बारूद ले जाने की अनुमति नहीं थी।
- पुर्तगालियों ने अपने आपको यह अधिकार भी दे रखा था कि वे निषिद्ध व्यापार में लगे होने के सन्देह पर जहाजों की तलाशी ले सकते थे।
- पुर्तगालियों को व्यापार नियंत्रण का एक अन्य उपाय भी करना पड़ा, वह था काफिला व्यवस्था। इसमें स्थानीय व्यापारियों के जहाजों का एक काफिला होता था, जिसकी रक्षा के लिए पुर्तगाली बेडा साथ-माथ चलता था।
- इसके दो कार्य थे-प्रथम इन जहाजों की समुद्री डाकुओं से रक्षा करना एवं द्वितीय यह निश्चित करना कि इनमें से कोई जहाज पुर्तगाली व्यवस्था के बाहर जाकर व्यापार न करें।
- मुगल बादशाह तक सूरत से मोरवा जाने वाले अपने जहाजों के लिए परमिट प्राप्त करते थे।
- मुगल सम्राट् अकबर ने पुर्तगालियों से प्रतिवर्ष एक निःशुल्क कार्ट्ज प्राप्त करके एक प्रकार से उनका नियंत्रण स्वीकार कर लिया पुर्तगालियों का हिन्द महासागर पर 1595 ई० तक एकाधिकार बना रहा।

पुर्तगालियों की असफलता के कारण

- **पुर्तगाली प्रभुत्व का पतन-** पुर्तगालियों के पतन के अनेक कारण थे (प्रथमतः उनकी धार्मिक असहिष्णुता से भारतीय शक्तियाँ बिगड़ गई और इनकी शत्रुता पर विजय प्राप्त करना पुर्तगीनों के बूते के बाहर की बात थी।
- दूसरे, उनका चुपके-चुपके व्यापार करना अन्त में उनके लिए घातक हो गया। तीसरे ब्राजील का पता लग जाने पर पुर्तगाल की उपनिवेश सम्बन्धी क्रियाशीलता पश्चिम की ओर उन्मुख हो गई। अन्ततः एवं सर्वप्रमुख कारण उनके पीछे आने वाली दूसरी यूरोपीय कम्पनियों से उनकी प्रतिद्वंद्विता हुई जिसमें वे पिछड़ गए।
- **अल्बुकर्क के बाद नेतृत्व की कमी:** अल्बुकर्क की मृत्यु के बाद पुर्तगाली सरकार द्वारा किसी योग्य व्यक्ति को भारत नहीं भेजा गया था। फलस्वरूप पुर्तगाली साम्राज्य का पतन होने लगा था।
- **बेईमान सरकार:** क्योंकि उन्हें अल्प वेतन दिया जाता था, अधिकारियों को किसी से रिश्वत वसूलने में कोई पछतावा नही होता था। अधिकांश पुर्तगाली अधिकारी स्वार्थी थे।
- **भ्रष्ट अधिकारी:** वे जनता के दुखों की उपेक्षा करते हुए, अपने निजी भाग्य का निर्माण करने पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे।
- **धार्मिक नीति:** उन्होंने भारतीय आबादी को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने के लिए कई तरह की तकनीकों का इस्तेमाल किया था।
- 1540 में, राजा के निर्देशों के तहत, गोवा के द्वीप पर सभी हिंदू मंदिरों को नष्ट कर दिया गया, जिससे स्थानीय लोगों को उनकी जबरन रणनीति के परिणामस्वरूप गुस्सा आया।
- **मुगल साम्राज्य का उदय:** मुगल साम्राज्य के उदय से भी पुर्तगालियों की असफलता हुई। 16वीं शताब्दी की शुरुआत में पुर्तगालियों को ज्यादा विरोध का सामना नहीं करना पड़ा।
- हालांकि, 1556 में अकबर के राज्यारोहण के बाद मुगल साम्राज्य का विस्तार होना शुरू हो गया था। मुगल व्यावहारिक रूप से पूरे भारत को जीतने में सक्षम थे।
- **भारत में डच और अंग्रेजी प्रभाव का विस्तार:** इसने वहां भयंकर विरोधियों को जन्म दिया। वे पुर्तगालियों से कहीं अधिक श्रेष्ठ थे। परिणामस्वरूप, भारत में पुर्तगाली साम्राज्य धीरे-धीरे बिखर गया।
- **ब्राज़ील की खोज:** ब्राजील की खोज ने पुर्तगालीयो की औपनिवेशिक महत्वाकांक्षाओं को पश्चिम की ओर मोड़ दिया था।

भारत में पुर्तगालियों का योगदान:

- **औषधि**: पुर्तगालियों द्वारा शब्दकोश और भारत के चिकित्सा ज्ञान में काफी वृद्धि की गई थी। गार्सिया दा ओर्टा नाम के एक पुर्तगाली विद्वान ने 1563 में भारत की औषधीय जड़ी-बूटियों पर पहला ग्रंथ / आलेख लिखा था।
- **तम्बाकू की खेती:** उन्होंने भारत में तम्बाकू की खेती की शुरुआत की थी।
- **प्रिंटिग प्रेस:** भारत के गोवा में, उन्होंने 1556 में पहला प्रिंटिंग प्रेस बनाया।
- **वास्तुकला:** इसके अतिरिक्त, भारत के दक्कन क्षेत्र में गिरिजाघर वास्तुकला में पुर्तगाली प्रभाव देखा जा सकता है। उदाहरण: पश्चिमी तट पर विस्तृत मैन्युलेस्क भवन।

डच

- **प्रारंभ:** डचों ने अपने व्यावसायिक हितों के कारण पूर्व की ओर यात्रा की थी। 1596 में सुमात्रा और बंताम जाने वाले पहले डच व्यक्ति कॉर्नेलिस डी हाउटमैन थे।
  - डच वर्तमान नीदरलैण्ड (हॉलैण्ड) के निवासी थे।
- **डच संसद का चार्टर(1602) :** मार्च 1602 में डच संसद के चार्टर ने नीदरलैंड की यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कंपनी, जिसके पास युद्ध की घोषणा करने, संधियों पर हस्ताक्षर करने और किलों का निर्माण करने का अधिकार था, की स्थापना की थी।
- इनकी फ़ैक्ट्री की मुख्या विशेषता यह थी की इनकी किले बंदी नहीं होती थी (अपवाद- पुलिकट के गेलड्रिया का दुर्ग)
- **भारत मे डच फैक्टरी:** मसूलीपट्टनम (1605), पुलिकट (1610), सूरत (1616), बिमलीपट्टनम (1641), करिकल (1645), चिनसुरा (1653), कासिमबाजार (कासिमबाजार), बारानागोर, पटना, बालासोर, नागपट्टनम (1658), और कोचीन (1663) भारत में स्थित केवल कुछ डच कारखाने हैं। इन्होंने पूर्वी और पश्चिमी दोनों तटों पर कारखाने बनाएं थे।
- **इंडोनेशिया में वाणिज्यिक हित:** भारत में साम्राज्य निर्माण में डचों की अधिक रुचि नहीं थी; उनकी रुचि व्यापार में थी। किसी भी प्रकार से, उनका मुख्य व्यावसायिक हित इंडोनेशिया के स्पाइस द्वीप समूह में था।

- **आँग्ल-डच युद्ध:** डच आँग्ल-डच संघर्ष को हार गए थे और इसके परिणामस्वरूप मलय द्वीपसमूह पर उन्होंने अपना ध्यान केंद्रित किया।
- **बेदरा युद्ध (1759)** एक लंबे संघर्ष के बाद, अंग्रेजों ने डचों को हरा दिया था।
    - 1596 ई. में केप ऑफ गुड होप होते हुए पूर्वी जगत में स्थित सुमात्रा तथा बाण्टेन आने वाला प्रथम डच नागरिक कार्नेलियस हाउटमैन था।
    - 1602 ई. में डच संसद के एक आदेश द्वारा डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी (यूनाइटेड ईस्ट इण्डिया कम्पनी ऑफ नीदरलैण्ड) की स्थापना की गई।
    - इस कम्पनी का मूल नाम वेरिंगदे ओस्त इण्डसे कम्पनी (VOC) था। इस कम्पनी को 21 वर्षों के लिए डच संसद द्वारा भारत और पूरब के देशों के साथ व्यापार करने, आक्रमण और विजय प्राप्त करने के सम्बन्ध में अधिकार प्राप्त हुए।
    - 1605 ई. में डचों ने पुर्तगीजों से अम्बायना ले लिया तथा धीरे-धीरे मसाला द्वीप पुंज (इण्डोनेशिया) में उन्हीं को हराकर अपना प्रभाव स्थापित कर लिया।उन्होंने जकार्ता जीत कर 1619 ई में यही पर बैटेविया नामक शहर बसाया।
    - डच नौसेना नायक वादेर हेग सूरत एवं मालाबार में असफल होने के बाद 1605 में मस्सलीपट्टनम में प्रथम डच फैक्ट्री बसायी।
    - दूसरी डच फक्ट्री पेतोपोल्ली में स्थापित की और 1610 में पुलिकट में फ़ैक्ट्री स्थापित कर इसे अपना मुख्यालय बनाया।

डचों की व्यापारिक नीति

- 17वीं शताब्दी में पूर्व की महत्त्वपूर्ण व्यापारिक शक्ति के रूप में डचों ने पुर्तगालियों को विस्थापित किया। 1690 ई. तक उनका प्रमुख केन्द्र पुलीकट था, बाद में नागपट्टनम हो गया।
- कोचीन के मुट्टा शासन से डच कंपनी ने पूड़ाकड और क्रांगनौर के बीच के क्षेत्र में काली मिर्च का एकाधिकार प्राप्त किया।
- डचों की व्यापारिक व्यवस्था सहकारिता (कार्टल) पर आधारित थी। इस व्यवस्था का उल्लेख 1722 ई. के दस्तावेज में किया गया है, जिसमे नागपट्टनम के डच गवर्नर और छः तेलुगू व्यापारियों के बीच समझौते के विषय में लिखा गया है।
- 1664 ई. में मुगल शासक औरंगजेब ने डचों को 3 ½ % वार्षिक चुंगी पर बंगाल, बिहार और उड़ीसा में व्यापार करने का अधिकार प्रदान किया।
- 1658 ई. में डचों ने पुलीकट में अपने स्वर्ण निर्मित पैगोडा सिक्के का प्रचलन करवाया था
- डचों द्वारा भारत से नील, शोरा और सूती वस्त्र का निर्यात किया जाता था। ये कपड़े कोरोमण्डल तट, बंगाल और गुजरात से निर्यात किए जाते थे। भारत से भारतीय वस्त्र को निर्यात की वस्तु बनाने का श्रेय ड्चों को जाता है।
- मालाबार तट वर्ती प्रदेशो में कोच्चीन , कन्नूर , वेनगुर्ला डचों के व्यापारिक केंद्र थे
- डच फैक्ट्रियों के प्रमुख फैक्टर कहलाते थे।
- डचों ने मसालों के स्थान पर भारतीय कपड़ों के निर्यात को अधिक महत्व दिया।
- माल के स्तर को बनाए रखने के लिए डच कम्पनी ने कासिम बाजार में स्वयं रेशम की चक्री का उद्योग स्थापित किया । भारत से भारतीय वस्त्र को निर्यात की वस्तु बनाने का श्रेय डचों को नाता है।

बेदरा का युद्ध

- डचों और अंग्रेजों के बीच 1759 ई. में लड़े गए बेदरा के युद्ध में भारत में अंग्रेजी नौसेना की श्रेष्ठता सिद्ध हो गई। इस युद्ध के परिणामस्वरूप डच भारतीय व्यापार से बाहर हो गए।

डचों की असफलता के कारण

- डच कम्पनी का सरकार के सीधे नियन्त्रण में होना,
- कम्पनी के पदाधिकारी और कर्मचारी का भ्रष्ट एवं अयोग्य होना,
- अंग्रेजों की तुलना में नौसैनिक शक्ति का कमजोर होना,
- दक्षिणी पूर्वी एशिया के द्वीपों पर अत्यधिक ध्यान केन्द्रित करना

भारत में ड्चों द्वारा स्थापित प्रमुख कारखाने/ Major factories established by the Dutch in India	
कारखाने/ Factories	स्थापना ई./ establish
मसूलीपट्टनम/ **Masulipatnam**	1605
पुलोकट फोर्ट/ **Pulokut Fort**	1610
सूरत/ **Surat**	1616
विमलोपत्तनम/ **Vimalopattanam**	1641
करिकाल/ **Karikal**	1645
चिनसुरा/ **Chinsura**	1653
पटना, कासिम बाजार, बालासोर/ **Patna, Cossimbazar, Balasore**	1658
नागपट्टनम/ **Nagapattanam**	1659
कोचीन/ **Cochin**	1663

अंग्रेज

- इनकी प्रारम्भिक समुद्री यात्राएँ सुमात्रा, जावा व मलक्का के लिए हुईं, जिनका उद्देश्य मसालों के व्यापार पर नियन्त्रण करना था।
- 1579 ई. में विलियम ड्रेक नामक ब्रिटिश नागरिक ने सर्वप्रथम पूर्वी क्षेत्रों का भ्रमण किया।
- 1588 ई. में ब्रिटिश नौसेना की स्पेनिश आर्मेडा की हार हुई और इसी के साथ ब्रिटिश की नौसैनिक श्रेष्ठता स्थापित हो गई।
- अपनी इसी श्रेष्ठता को आधार बनाकर ब्रिटिश ने भारत की ओर कूच किया। यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियों में, जिन्होंने भारत में आकर अपनी व्यापारिक गतिविधियाँ आरम्भ कीं, उनमें अंग्रेज सर्वाधिक सफल रहे।

- 1597 ई. में जॉन मिल्डेनहाल नामक ब्रिटिश यात्री थल मार्ग से भारत आया।
- 1588 में स्पेनी जहाज बेड़ा (आरमेड़ा) अंग्रेजों द्वारा पराजित होता है जिसमें अंग्रेजी सेना का नेतृत्व 'जॉन मिल्डेन हॉल' ने किया था और इस पराजय के बाद एशिया के व्यापार से पुर्तगाली नियंत्रण समाप्त हो गया था।
- इस पराजय के अवशेषों पर डच एवं अंग्रेजों ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया।
- 1599 ई० में पूर्व के देशों के साथ व्यापार करने के लिए अंग्रेजों ने **'गवर्नर एण्ड कम्पनी ऑफ मर्चेण्ट्स ऑफ लन्दन ट्रेडिंग इन टू द ईस्ट इण्डीज'** नामक कम्पनी की स्थापना की।
- 31 दिसम्बर, 1600 ई० में ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ प्रथम ने एक शाही फरमान देकर इस कम्पनी को 15 वर्षों के लिये पूर्व के देशों के साथ व्यापार करने की अनुमति प्रदान की।
- एक समिति की व्यवस्था की गई। इसमें एक निदेशक, एक उपनिदेशक और 24 सदस्य होते थे। यही समिति बाद में 'कोर्ट आफ

कम्पनी की व्यापारिक सफलताएं-

शासक	कंपनी की स्थिति
जहाँगीर	▪ कैप्टन हॉकिन्स के नेतृत्व में हेक्टर नामक पहला अंग्रेजी जहाज 1608 ई० में सूरत के बन्दरगाह पर पंहुचा। ▪ हॉकिन्स जो तुर्की भाषा बोल सकता था, अकबर के नाम जेम्स 1 का पत्र लेकर मुगल बादशाह जहाँगीर के दरबार में पहुँचा। ▪ दरबार में उसने फारसी भाषा में बात की। जहांगीर ने उसे 400 का मनसब प्रदान किया ▪ हॉकिन्स ने अंग्रेजों के लिए सूरत में एक फैक्ट्री खोलने की अनुमति मांगी। यह अनुमति रद्द कर दी गई। ▪ सन् 1611 ई० में कैप्टन मिडल्टन ने स्वाल्ली में पुर्तगालियों के जहाजों बेड़े को परास्त किया।

	▪ पुर्तगालियों को पराजित करने के कारण जहाँगीर अंग्रेजों से प्रभावित हुआ और 1613 ई० में उसने अंग्रेजों को सूरत में स्थायी कारखाना स्थापित करने की अनुमति दे दी। ▪ 1615 ई० में सर टामस रो जहाँगीर के दरबार में आया और अंग्रेजी व्यापार के लिए कुछ सुविधाएं प्राप्त की। ▪ 1623 ई० तक अंग्रेजों ने सूरत, भड़ौंच, अहमदाबाद, आगरा और मसूलीपट्टम में अपनी फैक्ट्रियाँ स्थापित कर ली थीं।
शाहजहां	▪ शाहजहाँ ने पुर्तगालियों से नाराज होकर बंगाल में अंग्रेजों को मीमित क्षेत्र में बाजार की अनुमति प्रदान की, लेकिन बंगाल में सर्वप्रथम अंग्रेजों को व्यापारिक छुट 1651 ई० में प्राप्त हुई जब गेब्रियन बांटन ने शाहजहाँ की पुत्री का सफलतापूर्वक इलाज किया इसके द्वारा 3000 रुपया वार्षिक कर के बदले में कम्पनी को बंगाल, बिहार, उडीसा में मुफ्त व्यापार करने की अनुमति दी गई। ▪ 1651 ई० में एक कोठी हुगली में बृजमैन के अधीन खोली गई।
औरंगजेब	▪ 1661 ई. में चार्ल्स द्वितीय ने कम्पनी को एक नया आज्ञा-पत्र प्रदान किया, जिसके आधार पर कम्पनी को मुद्रा दालने, किला बनाने, न्याय करने तथा ईसाई राज्यों के साथ सन्धि-विग्रह करने का अधिकार मिल गया। ▪ 1661 ई. में इंग्लैण्ड के राजा चार्ल्स द्वितीय का विवाह पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन के साथ हुआ। इस अवसर पर पुर्तगालियों ने चार्ल्स द्वितीय को दहेज के रूप में बम्बई का द्वीप प्रदान किया। ▪ बम्बई का द्वीप 10 पौण्ड वार्षिक किराए पर चार्ल्स द्वितीय ने 1668 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी को दे दिया। ▪ 1667 ई. में सम्राट औरंगजेब ने अंग्रेजो को बंगाल में व्यापार करने की सुविधा प्रदान करते हुए एक फरमान जारी किया। ▪ 1687 ई. में सूरत के स्थान पर बम्बई अंग्रेजों को मुख्य व्यापारिक बस्ती बन गई। गरकड गियर, जो बम्बई का गवर्नर था, बम्बई का वास्तविक संस्थापक भी था। ▪ आधुनिक कोच्चि कभी भी ब्रिटिश उपनिवेश का भाग नहीं रहा। ▪ बादशाह औरंगजेब ने 1680 ई० में एक फरमान जारी किया, जिसमें यह आदेशं दिया गया कि कोई चुंगी के लिए कम्पनी के आदमियों को तंग न करे और न उसके व्यापार में रुकावट डाले। ▪ इसमें यह भी आदेश था कि अंग्रेजों से 2% चुंगी के अतिरिक्त 1.5 % जजिया के रूप में भी लिया जायेगा। ▪ 1686 ई० में अंग्रेजों ने हुगली को लूट लिया, परन्तु औरंगजेब द्वारा पराजित होने पर वे हुगली से भाग खड़े हुए। ▪ 1688 ई० में सर जॉन चाइल्ड ने बम्बई और पश्चिमी समुद्र तट के मुगल बन्दरगाहों पर घेरा डाला। ▪ कई मुगल जहाजों को पकड़ लिया तथा 'मक्का जाने वाले धर्मयात्रियों को बन्दी बनाने के लिए' अपने कप्तान को लाल सागर और फारस की खाड़ी भेजा, परन्तु औरंगजेब की सेना ने उन्हें पराजित किया। ▪ अन्ततः सर जॉन चाइल्ड को औरंगजेब से माफी माँगनी पड़ी। ▪ जाब चानोंक ने अगस्त 1690 ई० में सूतानाती में एक अंग्रेजी कोठी स्थापित की। ▪ बंगाल के सूबेदार अजीम-उस-सान ने 1698 ई० में अंग्रेजों को मृतानाती, कलिकाता और गोविन्दपुर नामक तीन गाँवों की जमींदारी प्रदान की, जिसके बदले में उन्हें इन गाँवों के मालिकों को 1200 रुपये देने पड़े। ▪ 1698 ई० में इंग्लैण्ड के राजा विलियम तृतीय ने एक अन्य कम्पनी कायम की, जो इग्लिश कम्पनी ट्रेडिंग इन द ईस्ट के नाम से जानी गई। इस कम्पनी ने अपने लिए व्यापारिक सुविधाएं प्राप्त करने के उद्देश्य से सर विलियम नारिश को औरंगजेब के दरबार में राजदूत के रूप में भेजा। किन्तु इसका कोई फल न निकला। ब्रिटिश मंत्रिमण्डल से कुछ दबाव पड़ने पर दोनों कम्पनियों ने 1702 ई० में संयुक्त होने का निश्चय किया ।

	▪ 1698 ई० में दो कंपनियाँ इनमें से एक "जनरल सोसायटी" तथा दूसरी "इंलिश कंपनी ट्रेडिंग इन द ईस्ट" के नाम से जानी गई। इन दोनों कंपनियों ने भी 1702 ई० में पुरानी कंपनी से विलय का प्रस्ताव किया। अंततः 1708 ई० में इन दोनों नई कंपनियों का भी मूल कंपनी में विलय कर लिया गया। इस प्रकार "न्यू कंपनी" ,"जनरल सोसायटी" ,इंग्लिश कंपनी ट्रेडिंग इन द ईस्ट" नामक कंपनियों 1708 ई० "द यूनाइटेड कंपनी ऑफ मर्वेन्ट्स आफ लंदन ट्रेडिंग टू द ईस्ट इंडीज" में संयुक्त हो गई कंपनी का यह नाम 1833 ई० तक कायम रहा। 1833 ई० के चार्टर द्वारा इसका संक्षिप्त नाम "इंस्ट इण्डिया कंपनी" कर दिया गया।

भारत (गोवा) में पुर्तगाली शासन शेष भारत में ब्रिटिश शासन से किस प्रकार भिन्न था?

पुर्तगाली	ब्रिटिश
कैथोलिकवाद: पुर्तगालियों का शासन कैथोलिक धर्म से प्रेरित था जो ईसाई धर्म का एक रूढ़िवादी रूप है। **रूढ़िवादी:** पुर्तगालियों ने गोवा पर बहुत लंबे समय- लगभग 450 वर्ष तक शासन किया। उनका शासन 1510 में शुरू हुआ और 1961 तक जारी रहा। पुर्तगालियों के गोवा में, उस अवधि के दौरान बहुत से सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन हुए थे। **धर्माधिकरण (inquisition) की नीति :** गोवा में, मंदिरों को नष्ट किया गया। केरल में, सीरियाई ईसाइयों और गौड़ सारस्वत ब्राह्मणों को धर्म परिवर्तन के लिए राजी किया गया था। **तटीय शक्ति**: अच्छी समुद्री नौसेना के कारण पुर्तगाली मुख्य रूप से तटीय भाग के आसपास बसे हुए थे।	**प्रोटेस्टेंटवाद:** ब्रिटिश शासन प्रोटेस्टेंटवाद पर आधारित था। **सुधारात्मक**: तथ्यो के अनुसार ब्रिटिश शासन प्रबोधन के बाद आया, इसकी तुलना पुर्तगाली शासन से करना कठिन है क्योंकि 200 वर्ष नैतिक विकास के लिए पर्याप्त समय है तथा प्रबोधन के संयमित प्रभाव के कारण सामान्य रूप से ईसाई धर्म के लिए भी एक महत्वपूर्ण समय था। **शुद्ध रूप से वाणिज्यिक नीति**: ब्रिटिश शासन का मौलिक उद्देश्य लाभ कमाना था जो पूंजीवाद का मूल सिद्धांत था। इस प्रकार वे पूरी तरह से उपनिवेशवाद के व्यावसायिक पहलू पर निर्भर थे। **महाद्वीपीय शक्ति:** उनका ध्यान कूटनीतिक और सैन्य सफलता के आधार पर संपूर्ण भारत को उपनिवेश बनाने पर केंद्रित था।

डेन

- अंग्रेजों के बाद डेन 1616 ई० में भारत आए। तंजौर जिले के ट्रांकेबोर में 1620 ई० में उन्होंने अपनी पहली फैक्ट्री स्थापित की। इसके बाद बंगाल के सीरमपुर में 1676 ई० में उन्होंने अपनी दूसरी फैक्ट्री स्थापित की। 1845 ई० में उन्होंने अपनी सभी फैक्ट्रियों ब्रिटिश कम्पनी को बेच दी और वे भारत से चले गए।

फ्रेंच

- फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना 1664 में लुई XIV के मंत्री कॉल्बर्ट ने की थी, जिन्होंने इसे हिंद और प्रशांत महासागरों में फ्रांसीसी व्यापार पर 50 साल का एकाधिकार भी दिया था। फ्रेंच कंपनी का नाम कंपनी द इंडेस ओरिएण्टलेस रखा गया था।
- 1667 में फ्रांसिस कार्रो के नेतृत्व में एक दाल भारत आया जिसने 1668 में सूरत में पहले व्यापारिक कारखाने की स्थापना की। 1669 में मर्काारा ने गोलकुंडा से अनुमति प्राप्त कर मसुलीपत्तनम में दूसरी फक्ट्री स्थापित की।
- 1673 ई. में कम्पनी के निदेशक फ्रैंको मार्टिन और एक गैर-पेशेवर सैनिक वेलांग द लेस्पिने ने वलिकोण्डापुरम के मुस्लिम सूबेदार शेर खाँ लोदी से एक गाँव प्राप्त कर फ्रांसीसी बस्ती का निर्माण किया तथा उसका नाम पॉण्डिचेरी रखा। यह पूर्ण रूप से किलाबन्द (फोर्टलुई) था।
- 1674 ई. में स्थापित पॉण्डिचेरी को 1701 ई. में पूर्व की फ्रांसीसी बस्तियों का केन्द्र बनाया गया। इसलिए फ्रांसिस (फ्रैंको) मार्टिन को भारत में फ्रांसीसी बस्तियों का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। अंग्रेज समर्थित डचों ने फ्रांसीसियों से 1693 ई. में पॉण्डिचेरी को अपने अधीन ले लिया, किन्तु 1697 ई. में रिजविक की सन्धि द्वारा इसे वापस लौटा दिया। 1731 में चंद्रनगर के प्रमुख के रूप में डुप्ले की नियुक्ति हुयी। फ्रांसीसी गवर्नर डुप्ले के समय में फ्रांसीसी प्रभुत्व की स्थापना हुई।
- बंगाल के सूबेदार शाइस्ता खाँ ने 1674 ई० में फ्रांसीसियों को एक जगह दीः जहाँ 1650-92 ई० में उन्होंने चन्द्रनगर की प्रसिद्ध फ्रांसीसी कोठी बनाई। जून, 1720 ई० में फ्रांसीसी कम्पनी का "इण्डोज को चिर स्थायी कम्पनी के रूप में पुनः निर्माण हुआ, तब 1720 ई० और 1742 ई० के बीच लिनो और ड्यूमा के बुद्धिमत्तापूर्ण शासन में समृद्धि इनके पास लौट आई। फ्रांसीसियों ने 1721 ई० में मारीशस, 1725

ई० में मालाबार समुद्र तट पर स्थित माही और 1739 ई० में कारीकल पर कब्जा कर लिया। पाण्डिचेरी को 1701 ई० में पूर्व की फ्रांसीसियों की सभी बस्तियों का मुख्यालय बनाया गया और फ्रैंको मार्टिन को भारत में फ्रांसीसी मामलों का महानिदेशक बनाया गया।

▪ आँग्ल-फ्रेंच संघर्ष

- 16वीं तथा 17वीं शताब्दी का यूरोप वाणिज्यवाद की ओर अग्रसरित हुआ। यही वा काल है, जब वहाँ राजतन्त्र संगठित होना प्रारम्भ होता है।
- इन्हें अधिक-से-अधिक संसाधनों की आवश्यकता थी, जोकि इनके पास उपलब्ध नहीं थे।
- अतः इन्होंने साम्राज्यवाद की नीति का पालन करते हुए, संसाधनों से परिपूर्ण भारत को व्यापार में प्रारम्भ कर धीरे-धीरे अपने आधिपत्य में लेना प्रारम्भ किया।
- व्यापार और संसाधनों पर एकाधिकार व नियन्त्रण बनाए रखने के लिए इन यूरोपीय कम्पनियों के मध्य भी आपसी युद्ध एवं सन्धियाँ हुई तथा भारतीय शासकों के साथ में इनकी यहीं नीतियाँ रही।
- भारतीय शासक आपसी मतभेद में ही उलझे रहते थे, इनमें एकता का अभाव था। इसलिए मुगल शक्तियों का पतन हो रहा था, उनमें केन्द्रीय शक्ति एवं सत्ता का भी अभाव था।
- ऐसी स्थिति में इसने यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियों का ध्यान व्यापार से राजनीति एवं प्रशासन की ओर आकर्षित कर दिया और इसी क्रम में उनके द्वारा ब्रिटिंग साम्राज्य के आधिपत्य की नीव भारत में रखी गई।
- भारत में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना हेतु बहुत से संघर्ष हुए, जिनका विवरण निम्नलिखित है

• प्रथम कर्नाटक युद्ध (1740-48):

- **कारण:** उत्तराधिकार के ऑस्ट्रियाई युद्ध का ही एक रूप था
- **संधि: ऐक्स-ला चैपल की संधि, 1748**
- **महत्व:**
  - अंग्रेजों को मद्रास वापस दे दिया गया, जबकि फ्रांसीसियों को बदले में उत्तरी अमेरिका में अपनी संपत्ति प्राप्त हुई।
  - यह संघर्ष सेंट थोमे (मद्रास में-1746) की लड़ाई के लिए प्रसिद्ध है, जिसने कर्नाटक के नवाब और अंग्रेजो के सहयोगी अनवर-उद-दीन की सेना, के खिलाफ फ्रांसीसियों को खड़ा किया था।
  - सेंट थामे के युद्ध को अड्यार का युद्ध भी कहा जाता हैं क्यूकी सेंट थामे अड्यार नदी के किनारे स्थित हैं।

• द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-54):

- **कारण:** फ्रांसीसियों और अंग्रेजों ने काल्पनिक युद्धों के मोर्चों के रूप में क्षेत्रीय राजवंश संघर्षों का उपयोग किया था।
- **संधि:** 1755 में पांडिचेरी की संधि
- **महत्त्व:**
  - हालाँकि लड़ाई अभी भी समाप्त नही हुई थी, इसने दक्षिण भारत में अंग्रेजों पर फ्रांसीसियों के प्रभाव को गंभीर रूप से कमजोर कर दिया और इसके परिणामस्वरूप फ्रांसीसियों को डुप्लेक्स को वापस बुलाना पड़ा था। यह संघर्ष अम्बूर के युद्ध (1749) के लिए प्रसिद्द हैं।
- **अम्बूर के युद्ध (1749):- मध्य -** संयुक्त सेना (मुज़फ्फर ज़ंग , चंदा साहब और डूप्ले), कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन

- इस लड़ाई में नवाब की पराजय हुई और वह मारा गया।

• तृतीय कर्नाटक युद्ध (1758-63):

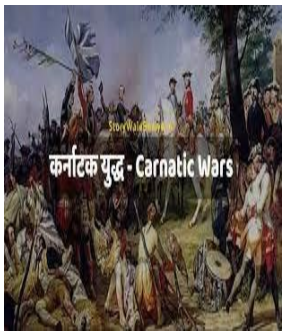

पृष्ठभूमि: यूरोपियन सप्त वर्षीय युद्ध (1856-1863)

भारत मे युद्ध की कार्यप्रणाली:

- 1758 में अंग्रेजी किलों को फ्रांसीसी सेना ने ले लिए थे। फ्रांसीसी बेड़े को अंग्रेजों द्वारा भारी नुकसान हुआ था।
- अंग्रेज़ जनरल आइर कूट ने आर्थर डी लाली के नेतृत्व वाली फ्रांसीसी सेना को पूरी तरह से नष्ट कर दिया और बुस्सी को बंदी बना लिया।
- तमिलनाडु में महत्वपूर्ण संघर्ष वांडीवाश की लड़ाई (1760-61) के लिए प्रसिद्ध है।

• संधि: पेरिस की संधि 1763

- **महत्त्व:**
  - फ्रांसीसियों को केवल व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए भारतीय शहरों का उपयोग करने की अनुमति मिली थी;किलों/बस्तियों की किलेबंदी की अनुमति नहीं दी थी।
- **वांडीवाश युद्ध** –(1760)
  - मध्य - अंग्रेजों और फ्रांसीसी सेना के बीच
  - आयरकूट के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने काउंट लाली के नेतृत्व वाली फ्रांसीसी सेना को पराजित कर दिया।
  - इस युद्ध पर टिप्पणी , मालसन के अनुसार - वाण्डियावाश के युद्ध ने उस महान भवन का, जिसे ड्यूमा तथा डुप्ले ने निर्मित किया था, ध्वस्त कर दिया।"
  - **वांडीवाश युद्ध** जीतने के बाद, अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी का भारत में कोई यूरोपीय विरोधी नहीं बचा था।

Trick = trick for battel and treaty

APP SAW

A= **A**ix-la-Chapelle	S= Battle of **St**. Thomme (in Madras)
P= **P**ondicherry Treaty	A= battel of **A**mboor
P= **P**aris Treaty	W = Battle of **W**andiwash

असफलता के कारण:

- **अंग्रेजों की नौसैनिक उपस्थिति:** अंग्रेजों की भारत में एक मजबूत नौसैनिक उपस्थिति थी, जिसने उन्हें फ्रांसीसी, जिनके पास ऐसी नौसेना नहीं थी, से अधिक लाभ दिया।
- **घरेलू सरकार पर निर्भर:** अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी के विपरीत, फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी, सरकारी कंपनी थी जो हर चीज के लिए घरेलू सरकार पर निर्भर थी।
- **निजी व्यापार:** वायसराय और उनके अधीनस्थ अक्सर निजी व्यापार, तस्करी, गुलामों की तस्करी आदि में लगे रहते थे, जिसने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कम्पनी के प्राथमिक उद्देश्य से विचलित होने और बाद में फ्रांसीसी शक्ति के पतन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- **अंग्रेजों की तरह बंगाल के संसाधनों तक पहुँचने में असमर्थ:** बंगाल के प्रचुर संसाधन ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए सुलभ थे। वे फ्रांसीसीयो पर हमले कर सकते थे।
- **भारतीय शासकों की आंतरिक राजनीति में डुप्लेक्स की भागीदारी:** इसका प्रभाव फ्रांसीसी कंपनी के व्यापारिक कार्यों पर पड़ा था।डुप्लेक्स का मानना था कि भारतीय वाणिज्य विफल हो गया था और सैन्य विजय ने एक अधिक आशाजनक भविष्य का निर्माण किया था। हालाँकि, अंग्रेजों ने एक वाणिज्यिक राष्ट्र के रूप में अपनी उत्पत्ति को कभी नहीं खोया था।

भारत में अंग्रेजो की विस्तार नीतियां

❑ **प्रशासनिक नीति**

- रिंग फेंस नीति
- सहायक सन्धि
- व्यपगत नीति
- कुशासन की नीति
- चतुराईपूर्ण निष्क्रियता की नीति
- प्राउड रिज़र्व की नीति
- गैर-हस्तक्षेप की नीति

❑ **रिंग फेंस नीति**

- **प्रचलन -** वॉरेन हेस्टिंग द्वारा
- इसमें अपने क्षेत्रों की सुरक्षा के लिए अपने पड़ोसियों की सीमाओं की रक्षा करना शामिल था।

❑ **सहायक सन्धि**

- **प्रचलन -** लॉर्ड वेलेजली द्वारा
- भारतीय शासक को अपने सशस्त्र बलों को भंग करना पड़ता था।
- भारतीय शासकों ने बाहरी मामलों में अपनी संप्रभुता अंग्रेजों के हाथों में दे दी।
- एक भारतीय शासक अपनी सेवा में अंग्रेजों के अलावा किसी अन्य विदेशी नागरिक को नियुक्त कर सकता था।
- **सहायक स्वीकार करने वाले राज्यों का क्रम-** हैदराबाद (1798), मैसूर (1799), तंजौर (1799), अवध (1801), पेशवा (1802), भोंसले (1803), सिन्धिया (1804)

❑ **व्यपगत नीति**

- **प्रचलन -** लॉर्ड डलहौजी
- पैतृक वारिस के न होने की स्थिति में सर्वोच्च सत्ता कंपनी के द्वारा अपने अधीनस्थ क्षेत्रों को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाने की नीति व्यपगत का सिद्धान्त या हड़प नीति कहलाती है।
- **व्यपगत किये गए राज्यों का क्रम-**

- सतारा (1848),
- जैतपुर और संबलपुर (1849)
- उदयपुर (1852)
- नागपुर(1853)
- झांसी(1854)

❑ **कुशासन की नीति**

- भारतीय शासकों के कुशासन के आधार पर भारतीय राज्यों का विलय।
- **जैसे-** अवध (1856)

❑ **चतुराईपूर्ण निष्क्रियता की नीति**

- **प्रचलन - जॉन लॉरेन्स**
- **अंग्रेजों को अफगानिस्तान के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए और इसके दरबार में अंग्रेजी प्रतिनिधि को बनाए रखने की कोई आवश्यकता नहीं थी.**

❑ **गैर-हस्तक्षेप की नीति**

- **प्रचलन -** सर जॉन शोर
- यहाँ एक राजनीतिक विदेश नीति सिद्धांत है जो अन्य देशों की घरेलू राजनीति मामलों में हस्तक्षेप का विरोध करता है

❑ **'प्राउड रिजर्व' की नीति**

- **प्रचलन -** लिटन ने
- लिटन ने 'प्राउड रिजर्व' की एक नई विदेश नीति शुरू की थी, जिसका उद्देश्य वैज्ञानिक सीमाओं और 'प्रभाव के क्षेत्रों की रक्षा करना था।

भारत में अंग्रेजो की विस्तार नीतियां/ British expansion policies in India	
प्रशासनिक नीति/ Administrative Policy	**विलयी राज्य/ merged state**
रिंग फेंस की नीति (1765-1813): ▪ बफर जोन की स्थापना करके कंपनी की सीमाओं को मजबूत करने के लिए। ▪ आम तौर पर, यह अपने क्षेत्रों की रक्षा के लिए अपने पड़ोसियों की सीमाओं का बचाव करने की रणनीति थी	बक्सर की लड़ाई के बाद अवध को बफर राज्य के रूप में इस्तेमाल किया गया था।
सहायक गठबंधन (1798 के बाद से) ▪ इस पद्धति के तहत कंपनी के सैनिकों को भारतीय राजाओं द्वारा उपयोग किया जाना था। ▪ उन्हें सैनिकों से जुड़ी सभी लागतों को भी वहन करना था और शासकों को अपने दरबार में ब्रिटिश नागरिकों की मेजबानी करते रहना होता था।	**सहायक सन्धि स्वीकार करने वाले राज्यों का क्रम है-** हैदराबाद (1798 ई.), मैसूर (1799 ई.), तंजौर (1799 ई.), अवध (1801 ई.), पेशवा (1802 ई.), भोंसले (1803 ई.), सिन्धिया (1804 ई.)। इन राज्यों के अलावा सहायक सन्धि स्वीकार करने वाले अन्य राज्य थे-जयपुर, जोधपुर, मच्छेड़ी, बूँदी तथा भरतपुर।
व्यपगत नीति (1848-1859) ▪ इस नीति के अनुसार, कंपनी के दासत्व के अधीन यदि किसी रियासत का कोई उत्तराधिकारी नही होता था, तो भूमि को अंग्रेजों द्वारा हड़प लिया जाता था।	सतारा झांसी नागपुर उदयपुर इत्यादि
कुशासन की नीति (1848-1856) ▪ भारतीय शासकों के कुशासन के आधार पर भारतीय राज्यों का विलय।	अवध
चतुराईपूर्ण निष्क्रियता की नीति (1864) ▪ अंग्रेजों को अफगानिस्तान के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए था और इसके दरबार में अंग्रेजी प्रतिनिधि को बनाए रखने की कोई आवश्यकता नहीं थी.	अफगानिस्तान
प्राउड रिज़र्व की नीति (1874) ▪ लिटन ने 'प्राउड रिजर्व' की एक नई विदेश नीति शुरू की थी, जिसका उद्देश्य वैज्ञानिक सीमाओं और 'प्रभाव के क्षेत्रों की रक्षा करना था। अफगानिस्तान के साथ संबंधों को अब अस्पष्ट नहीं रखा जा सकता था।	अफगानिस्तान

अंग्रेजो के पडोसी राज्यों से संघर्ष

ब्रिटिश राज की विदेश नीति/ Foreign policy of the British Raj

- प्लासी और बक्सर के युद्धों में विजय के बाद भारत में ब्रिटिश प्रभुसत्ता की स्थापना हुई। वेलेजली ने अपनी सहायक सन्धि के माध्यम से भारतीय रजवाड़ों के वैदेशिक सम्बन्धों पर रोक लगा दी।
- लार्ड हेस्टिंग्स के शासन काल में भारत में कम्पनी की राजनीतिक सर्वश्रेष्ठता स्थापित हो गई। भारत के पड़ोसी देशों में 4 प्रमुख देश थे जिनसे अंग्रेजों के सम्बन्ध प्रभावित हुए।
- ये देश नेपाल, वर्मा, अफगानिस्तान और तिब्बत थे। इनमें से केवल बर्मा का ही अंग्रेजों ने भारतीय राज्य में विलय किया।

युद्ध	युद्ध की कार्यप्रणाली	शामिल पक्ष	निष्कर्ष
प्रथम आंग्ल नेपाल युद्ध (1814-16)	**आंग्ल- नेपाल युद्ध - लार्ड हेस्टिंग:** ने स्वयं इस युद्ध की योजना बनायीं और स्वयं इस युद्ध का सेनापति भी था। इस युद्ध के दौरान जनरल गिलेस्पी मारे गए। अंतिम रूप से डेविड ऑक्टेर लोनी ने गोरखों को फरवरी 1816 में हरा दिया।	गोरखा - लार्ड हेस्टिंग	**सगौली की संधि (1868)** ● इस सन्धि के द्वारा गोरखों ने काठमाण्डू में एक ब्रिटिश रेजीडेण्ट रखना स्वीकार कर लिया। ● नेपाल के पश्चिम में गढ़वाल और कुमायूँ के जिले अंग्रेजों को दे दिए तथा वे सिक्किम से हट गए। ● 1857 के विद्रोह को दबाने में गोरखों ने ब्रिटिशों का सहयोग किया, जिसके कारण ब्रिटिशों ने उन्हें तराई प्रदेश वापस कर दिया।

आंग्ल वर्मा युद्ध

युद्ध	युद्ध की कार्यप्रणाली	शामिल पक्ष	निष्कर्ष
प्रथम आंग्ल वर्मा युद्ध (1824-26)	अंग्रेजो की सेनाओं ने दो और से (असम और रंगून) वर्मा पर आक्रमण किया। कैम्पबेल के नेतृत्व में 11 मई 1824 को रंगून पर अधिकार कर लिया गया। इस सफलता के बाद अंग्रेजो ने प्रोम पर अधिकार कर लिया और वर्मा का सेनापति बंदुल्ला मारा गया।	**कैम्पबेल - सेनापति बंदुल्ला**	■ **याण्डबू की संधि (24 Feb ,1826)** ■ अंग्रेजो को अराकान और तेनसिराम क्षेत्र मिल गए। ■ मणिपुर के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार कर लिया गया। ■ वर्मा ने असम जयंतिया और काक्षर के क्षेत्र छोड़ दिए। ■ वर्मा की राजधानी आवा में एक अंग्रेज रेजिडेंट की नियुक्ति स्वीकार कर ली।
द्वितीय आंग्ल वर्मा युद्ध (1852)	**बर्मा का द्वितीय युद्ध (1852 ई०)** याण्डबू को सन्धि के पश्चात् बहुत से अंग्रेज व्यापारी बर्मा के दक्षिणी तट और रंगून में बस गए थे। दो अंग्रेज कप्तानों शेपर्ड और लुइस पर कुछ विशेष दोषों के लिए बर्मा सरकार ने भारी जुर्माने किए।	**जनरल डलहौजी - बर्मा का राजा**	-

	फलस्वरूप गवर्नर जनरल डलहौजी ने अपने फॉक्स नाम के युद्धपोत के अफसर कोमोडोर लेम्बर्ट को रंगून भेजा। लेम्बर्ट ने बर्मा के राजा का एक पोत पकड़ लिया। यही द्वितीय आंग्ल वर्मा युद्ध का कारण बना इस युद्ध में बर्मा का राजा हार गया। 20 दिसम्बर, 1852 ई० को लोअर बर्मा अथवा पेगू (उत्तरी बर्मा) को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया।		
तृतीय आंग्ल वर्मा युद्ध (1885-88)	**तृतीय युद्ध (1885-88 ई०) तृवीय आंग्ल-बर्मा** युद्ध वायसराय लार्ड डफरिन के काल में हुआ। इसमें बर्मा की पराजय हुई। फलस्वरूप, बर्मा को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया।	लार्ड डफरिन	भारत सरकार अधिनियम, 1935 के द्वारा बर्मा को भारत से पृथक दिया गया। 4 जनवरी, 1948 को इसे एक स्वतन्त्र देश का दर्जा प्रदान कर दिया गया।

आंग्ल - अफगान संघर्ष

NOTE:-

गण्डमक की सन्धि (26 मई, 1879)

- **इस सन्धि की प्रमुख शर्ते,**
  - याकूब खाँ के द्वारा काबुल में एक स्थायी ब्रिटिश रेजिडेण्ट रखने की बात स्वीकार कर ली गई।
  - हेरात तथा अन्य सीमावर्ती क्षेत्रों में एक ब्रिटिश प्रतिनिधि रखने की बात भी मान ली गई।
  - याकूब खाँ ने अपनी विदेश नीति ब्रिटिशो के अनुसार चलानी स्वीकार की।
  - याकूब खाँ ने कुर्रम तथा मिसनी दर्रो पर ब्रिटिश नियन्त्रण स्वीकार किया।
  - याकूब खाँ को यह आश्वासन दिया गया कि ब्रिटिश उनकी सुरक्षा विदेशी शक्तियों से करेंगे और उन्हें ₹6 लाख वार्षिक भी देंगे।

आंग्ल-सिन्ध सम्बन्ध (Anglo-Sindh Relationship)

- सिन्धु नदी के दक्षिणी घाटी क्षेत्र को सिंधु प्रदेश कहते थे।
- 18वीं शताब्दी में इस पर कल्लौर सरदार का राज था।
- 1783 ई० में मीर फतह अली खाँ ने कल्लौर राजवंश को अपदस्थ कर सिन्ध पर अपना अधिकार कर लिया। इसने सिंध को तीन भागो में विभक्त किया
- ऊपरी भाग : राजधानी : खैरपुर
- निचला भाग : राजधानी : हैदराबाद
- मध्य भाग : राजधानी : मीरपुर
- इन तीनों भागो के अमीर एक-दूसरे से पूर्णतः स्वतन्त्र थे।
- गद्दी अमीर के लड़के को नहीं बल्कि भाई को प्राप्त होती थी।
- इन अमीरों के राज्य की सीमाएँ अंग्रेजी राज्य की सीमाओं से मिलती थी।
- अंग्रेज सिन्ध का महत्व जानते थे। इसीलिए उन्होंने 1630 में ही मुगल सम्राट से कोठी स्थापित करने का फरमान ले लिया था।
- 1801 में सिन्ध के अमीरों से संधि करके फ्रान्सीसियों को सिन्ध में बसने नहीं दिया।

- महाराजा रणजीत सिंह को भी सिन्ध में हस्तक्षेप नहीं करने दिया।
- सिन्धु नदी में जलयात्रा मार्ग की खोज के लिए सर एलेक्जेण्डर बर्न्स को भेजा गया।
- बर्न्स सिन्धु नदी के मार्ग से लाहौर गया।
- 1832 में विलियम बैंटिंक के निर्देश पर कर्नल पोटिंगर ने सिन्ध में अंग्रेज राजनीतिक एजेंटों को नियुक्त किया।
- 1838 ई० में लार्ड आकलैंड ने सिन्ध के अमीरों से एक संधि कि, जिसके तहत अमीरों ने सिखों से अपने झगड़े में कंपनी की मध्यस्थता स्वीकार की , हैदराबाद में रेजीडेंट रखना स्वीकार किया।
- ऑकलैंड के स्थान पर लार्ड एलनबरो भारत का गवर्नर जनरल बना। उसने मेजर आउट्रम के स्थान पर सर चार्ल्स नेपियर को सिंध में कंपनी का रेजीडेंट नियुक्त किया।
- चार्ल्स नेपियर ने सिन्ध के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप किया और सिंध के अमीरों पर अनेक आरोप लगाकर इमामगढ़ के दुर्ग पर आक्रमण कर उसे जीत लिया।
- मियानी के युद्ध (फरवरी, 1843)
  - अंग्रेज रेजीडेंट -नेपियर
  - **अन्य तथ्य -**
    - बलूचियों को परास्त कर हैदराबाद पर अधिकार कर लिया।
- दाबो के युद्ध (मार्च, 1843)
  - अंग्रेज रेजीडेंट -नेपियर
  - अन्य तथ्य -
    - मीरपुर के अमीर शेरमुहम्मद को परास्त किया।

Note –
- अगस्त 1843 तक समस्त सिन्ध अंग्रेजी राज्य में सम्मिलित कर लिया गया
- नेपियर को सिन्ध का गवर्नर बना दिया गया।

आंग्ल तिब्बत युद्ध

युद्ध	युद्ध की कार्यप्रणाली	शामिल पक्ष	निष्कर्ष
War	**Methodology of War**	**parties involved**	**conclusion**
प्रथम आंग्ल तिब्बत युद्ध (1904)	▪ तिब्बत एवं सिक्किम के मध्य सीमा-विवाद को दूर करने ▪ तिब्बत में रूस के बढ़ते प्रभाव को समाप्त करने ▪ लॉर्ड कर्जन के द्वारा फ्रांसिस यंग हस्बैण्ड के नेतृत्व में एक सैन्य दल ल्हासा (तिब्बत की राजधानी) भेजा गया। ▪ तिब्बती एवं ब्रिटिश सेना के मध्य **गुरु** नामक स्थान पर युद्ध हुआ	**फ्रांसिस यंग हस्बैंड**	**ल्हासा की संधि (7 September 1904)**

NOTE-

ल्हासा की सन्धि

- **इस सन्धि की प्रमुख शर्तें,**
  - तिब्बत के द्वारा ब्रिटिशों को क्षतिपूर्ति के रूप में ₹75 लाख देना स्वीकार किया गया ।
  - इस क्षतिपूर्ति राशि की जमानत के रूप में चुम्बी घाटी को 75 वर्षो के लिए ब्रिटिश आधिपत्य में रखने की बात स्वीकार की गई।
  - तिब्बत ने यह स्वीकार किया की वह किसी भी विदेशी शक्ति को तिब्बत में रेल, तार और सड़क आदि बनाने की सुविधा नहीं देगा।

- ब्रिटिशों को ग्यान्त्से, मातुंग और गरतोक में व्यापारिक केन्द्र खोलने की अनुमति प्रदान की गई।
- ग्यान्त्से में ब्रिटिश रेजीडेण्ट रखने की बात स्वीकार की गई।
- **NOTE:-** बाद में युद्ध-क्षति की धनराशि घटाकर 25 लाख रूपये कर दी गयी और चुम्बी घाटी को तीन वर्ष बाद ही छोड़ दिया,
- It was agreed to keep a British Resident in Gyantse.
- NOTE:- Later, the amount of war damage was reduced to 25 lakh rupees and the Chumbi Valley was left after three years.

.

ब्रिटिश शासन का भारतीय प्रशासन एवं अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

अंग्रेजो के आने से पहले भारतीय अर्थव्यवस्था ग्रामीण थी यहां की अधिकांश जनसँख्या गांव में रहती थी जैसे -जैसे भारतीय शासको ने यूरोपीय कंपनियों को संरक्षण और सुविधाएं प्रदान की उसका प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था और प्रशासन पर निम्नलिखित चरणों में देखा जा सकता हैं।

- **ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विभिन्न चरण / Various stages of British colonialism**
- **भू-राजस्व व्यवस्था / Land revenue system**
- **ग्रामीण उद्योग एवं नगरीय दस्तकारियों का विनाश / Destruction of rural industries and urban handicrafts**
- **कृषि का वाणिज्यीकरण / Commercialization of agriculture**
- **धन निकासी का सिद्धान्त / Theory of wealth drain**
- **दरिद्रता एवं अकाल / Poverty and famine**
- **ब्रिटिश काल में आर्थिक विकास / Economic development during the British period**

❑ ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विभिन्न चरण / Various stages of British colonialism:-

उपनिवेशवाद उतनी ही आधुनिक ऐतिहासिक परिघटना है जितनी कि औद्योगिक पूंजीवाद। यह पारंपरिक अर्थव्यवस्था और आधुनिक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के संबंध में उपनिवेश के आधुनिक ऐतिहासिक विकास के विशिष्ट चरण का वर्णन करता है। भारत को सामान्यतः एक आदर्श उपनिवेश माना गया है।

इसके उपनिवेशवाद के विभिन्न चरण हैं:

- **पहला चरण:** वाणिज्यिक पूँजीवाद (व्यापार और लूट का एकाधिकार) (1757-1813)
- **दूसरा चरण:** आद्योगिक पूँजीवाद (मुक्त व्यापार का युग)(1813-1860)
- **तीसरा चरण:** वित्तीय पूंजी का युग (1860 के बाद)

❑ पहला चरण: वाणिज्यिक पूँजीवाद (व्यापार और लूट का एकाधिकार) (1757-1813):

- दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों और शेष भारत के साथ-साथ बंगाल की विजय के साथ, पहले चरण में व्यापार पर एकाधिकार पाने और सरकारी संसाधनों की लूट के दोनों लक्ष्यों को तेजी से हासिल कर लिया गया।
- ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में व्यापार और हस्तशिल्प पर एकाधिकार प्राप्त करने हेतु राजनीति में अपने प्रभाव का लाभ उठाया।
- इस चरण में कॉलोनी में कोई मूलभूत परिवर्तन नहीं हुआ। केवल सैन्य संगठन , प्रौद्योगिकी तथा राजस्व प्रशासन के शीर्ष स्तर पर परिवर्तन किए गए।

❑ दूसरा चरण: आद्योगिक पूँजीवाद (मुक्त व्यापार का युग) (1813-1860)

- सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक ब्रिटिश सरकार की एकतरफा मुक्त व्यापार नीति थी जिसने भारत को कच्चे माल के निर्यातक और ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं के आयातक में बदल दिया।
- प्रशासन को अधिक विस्तृत और व्यापक बनाया गया ताकि आयातित माल गाँवों में प्रवेश कर सके और कच्चे माल को आसानी से बाहर ले जाया जा सके।
- सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक कृषि का व्यावसायीकरण था, जो कि अधिकांश भारतीय किसानों के लिए मजबूरी से जुड़ी प्रक्रिया थी।
- इन्हें ब्रिटिश वस्तुओं की मांग बढ़ाने के लिए बढ़ावा दिया गया था।

❑ तीसरा चरण: वित्तीय पूंजी का युग (1860 के बाद)

- भारत के रेलमार्गों, भारत सरकार के ऋण, व्यापार, कोयला खनन, जूट मिलों, नौवहन और बैंकिंग में महत्वपूर्ण निवेश किया गया था।

- इस समय, अन्य नए साम्राज्यवादी राष्ट्रों से हुई प्रतिस्पर्धा ने दुनिया में ब्रिटेन की स्थिति के लिए संकट उत्पन्न किया। परिणामस्वरूप भारत पर इसकी पकड़ और मजबूत की गई।
- तीन प्रमुख घटनाएं- प्रथम विश्व युद्ध, महामंदी (1929-34), और द्वितीय विश्व युद्ध ने विदेशी व्यापार और विदेशी धन के प्रवेश को कम कर दिया या रोक दिया। लेकिन, चूंकि संबंध केवल कमजोर हुए थे, टूटे नहीं थे, इसलिए भारत में केवल औद्योगिक विस्तार हुआ, औद्योगिक क्रांति नहीं हुई।

भू राजस्व व्यवस्था/ land revenue system

भू राजस्व व्यवस्था			
व्यवस्था	**जमींदारी व्यवस्था**	**रैयतवाड़ी व्यवस्था**	**महालवारी व्यवस्था**
वर्ष और संस्थापक	1793 में लॉर्ड कार्नवालिस	1820 में थॉमस मुनरो	1822 में होल्ट मैकेंज़ी द्वारा तैयार 1833 में लॉर्ड विलियम बेन्थिक द्वारा भारत में लागू की गई
भू-राजस्व भुगतान	ज़मींदारों (बिचौलियों) के द्वारा वसूला जाता था।	सीधे किसानों द्वारा किया जाता था।	गांव के मुखिया द्वारा वसूला जाता था।
भूमि पर स्वामित्व	ज़मींदार	किसान	किसान
राजस्व एकत्र प्रणाली	राजस्व स्थायी रूप से तय कर दिया गया।	राजस्व को समय-समय पर संशोधित किया जाता था।	राजस्व को समय-समय पर संशोधित किया जाता था।
प्रांत	बंगाल, उड़ीसा, बिहार और वाराणसी	मद्रास, बम्बई तथा असम और कुर्ग के कुछ भागों में प्रचलित थी	यह प्रणाली उत्तर पश्चिमी सीमांत प्रांत, पंजाब, गंगा घाटी और मध्य प्रांत में प्रचलित थी
भारत में क्षेत्रफल	19%	51%	30%

❑ **इज़ारेदार प्रणाली (1772):**

- बंगाल में वारेन हेस्टिंग्स द्वारा शुरू की गई राजस्व खेती के तहत, यूरोपीय जिला कलेक्टर, उच्चतम बोली लगाने वाले को धन एकत्र करने का अधिकार देते।
- उच्च राजस्व मांगों के कारण, यह प्रणाली एक शोषणकारी प्रणाली थी, जिसने किसानों का शोषण किया।

❑ **स्थाई बंदोबस्त (1793):**

- **उत्पत्ति:** कॉर्नवालिस ने 1793 में स्थायी बंदोबस्त की प्रणाली शुरू की जिसके तहत 'जमींदारों' को जमीन का मालिक बनाया गया।
- **अन्य नाम :** इस्तमरारी बन्दोबस्त, जमींदारी व्यवस्था , जागीरदारी व्यवस्था , मालगुजारी व्यवस्था
- **क्षेत्र:** पश्चिम बंगाल, बिहार, ओडिशा, यूपी, आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश में प्रणाली का ज्यादा प्रसार हुआ था।
- **क्षेत्रफल का हिस्सा :** 19%
- **लाभ:**
  - कंपनी का उद्देश्य इस प्रणाली के माध्यम से जमींदारों का एक व्यावसायिक वर्ग स्थापित करना था, जो पैसों के लिए अपने खेतों में फसल उत्पादन बढ़ाने का काम करते।
  - जमींदार किसानों से भू-राजस्व एकत्र करते थे और सरकार को 10-11% का भुगतान करते थे, शेष को अपने पास रख लेते थे।
  - राज्य के लिए प्रत्येक किसान के बजाय कुछ जमींदारों से संवाद स्थापित करना ज्यादा आसान होता था।
  - समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादार हो गया।
- **कमियां:**

- यह उच्च राजस्व के बोझ के कारण काश्तकार - कृषक की अधिक दरिद्रता का कारण बना।
- इसने जमींदारों के लिए भी बड़ी कठिनाई पैदा की, जिनमें से कई समय पर राजस्व का भुगतान करने में असमर्थ होते थे और **'सनसेट क्लॉज'** के तहत अपनी भूमि खो दी।
- बड़ी संख्या में पारंपरिक जमींदारों के घर ढह गए।
- प्रणाली ने उप-सामंती वर्ग को भी प्रोत्साहित किया, अर्थात जमींदार और कृषक के बीच बिचौलियों को, इससे किसानो की चुनौतियां बढ़ती गयी।

Note :- 'सनसेट क्लॉज' (सूर्यास्त कानून) - इस व्यवस्था के अंतर्गत जमींदारों को एक निश्चित राशि पर भूमि दे दी गई। जमींदारों को यह निश्चित राशि एक निश्चित समय में सूर्यास्त के पहले चुका देनी पड़ती थी नहीं तो उनकी जमीन नीलाम कर दी जाती थी इस कानून को सूर्यास्त कानून कहा जाता था।

❑ रैयतवारी व्यवस्था (1820)

- **उत्पत्ति**: अलेक्जेंडर रीड और थॉमस मुनरो द्वारा शुरू की गई
- रैयतवारी प्रणाली के तहत, राजस्व शुरू में प्रत्येक गाँव से अलग-अलग एकत्र किया जाता था, बाद में प्रत्येक कृषक या 'रैयत' का व्यक्तिगत रूप से मूल्यांकन किया जाने लगा, जमींदार नहीं, किसानों को संपत्ति के मालिक के रूप में जाना जाता था।
- **क्षेत्र:** मद्रास, बॉम्बे प्रेसीडेंसी
- **क्षेत्रफल का हिस्सा :** 51%
- **लाभ:**
  - किसी मध्यस्थ की अनुपस्थिति के कारण राज्य द्वारा एकत्रित राजस्व में वृद्धि हुई।
- **कमियां:**
  - त्रुटिपूर्ण मूल्यांकन
  - किसान करों के बोझ से दबे हुए थे।
  - करों का भुगतान करने में असमर्थ किसान महाजनों के पास जाते थे, जो उनका शोषण करते थे।

❑ महालवारी प्रणाली (1822)

- **उत्पत्ति**: होल्ट मैकेंज़ी द्वारा शुरू की गई
- इस प्रणाली के तहत, राज्य ने या तो ग्रामीण समुदाय के साथ या कुछ मामलों में, पारंपरिक 'तालुक़दार' के साथ समझौता किया।
- सामूहिक स्वामित्व अधिकारों को कुछ मान्यता दी गई।
- **क्षेत्र:** भारत के उत्तर और उत्तर-पश्चिम भाग।
- **क्षेत्रफल का हिस्सा :** 30%
- **लाभ:**
  - सरकार के लिए स्थायी आय।
  - अधिक कुशल राजस्व प्रणाली।
- **कमियां:**
  - किसानों का शोषण ।
  - किसान सूखे में भी कर चुकाने के लिए बाध्य थे

भू राजस्व व्यवस्था			
व्यवस्था	जमींदारी व्यवस्था	रैयतवाड़ी व्यवस्था	महालवारी व्यवस्था

वर्ष और संस्थापक	1793 में लॉर्ड कार्नवालिस	1820 में थॉमस मुनरो	1822 में होल्ट मैकेंज़ी द्वारा तैयार 1833 में लॉर्ड विलियम बेन्थिक द्वारा भारत में लागू की गई
भू-राजस्व भुगतान	ज़मींदारों (बिचौलियों) के द्वारा वसूला जाता था।	सीधे किसानों द्वारा किया जाता था।	गांव के मुखिया द्वारा वसूला जाता था।
भूमि पर स्वामित्व	ज़मींदार	किसान	किसान
राजस्व एकत्र प्रणाली	राजस्व स्थायी रूप से तय कर दिया गया।	राजस्व को समय-समय पर संशोधित किया जाता था।	राजस्व को समय-समय पर संशोधित किया जाता था।
प्रांत	बंगाल, उड़ीसा, बिहार और वाराणसी	मद्रास, बम्बई तथा असम और कुर्ग के कुछ भागों में प्रचलित थी	यह प्रणाली उत्तर पश्चिमी सीमांत प्रांत, पंजाब, गंगा घाटी और मध्य प्रांत में प्रचलित थी
भारत में क्षेत्रफल	19%	51%	30%

❑ **भू-राजस्व प्रणाली का प्रभाव:**

- **कृषि में नवाचार की कमी**: किसानों की खराब वित्तीय स्थिति के कारण कृषि में कोई भी तकनीकी नवाचार नहीं हुआ जिससे **कृषि स्थिर** हो गई।
- **किसानों की दयनीय स्थिति:** कृषि की दयनीय स्थिति के कारण किशानो ने कृषि छोड़कर अपनी मर्जी से काश्तकार बन गए।
- **अनुपस्थित जमींदारी प्रथा:** इससे भू-मध्यस्थों और उप-मध्यस्थों की संख्या में वृद्धि हुई जिससे अनुपस्थित जमींदारी प्रथा को बढ़ावा मिला।
- **साहूकार वर्ग का उदय:** ब्रिटिश सरकार द्वारा समयबद्ध और राजस्व की अत्यधिक मांग ने किसानों को साहूकारों से ऋण लेने के लिए मजबूर कर दिया, जिन्होंने बदले में उच्च ब्याज लगाकर किसानों का शोषण किया।
- **जमींदारों का उदय:** जमींदार ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के एक महत्वपूर्ण वर्ग और सहयोगी बन गए।
- **प्रादेशिक विस्तार**: भू-राजस्व से आय के लालच ने भी कंपनी को भारत में क्षेत्रीय विस्तार की एक आक्रामक नीति का अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया।

Note:- डेनियल थारनर ने 1890-1947 ई0 तक के काल को **'कृषि स्थिरता का काल'** कहा है।

अर्थव्यवस्था से जुड़ी प्रथायें	
प्रथा	**तथ्य**
तिनकठिया प्रथा	तीनकठिया खेती अंग्रेज मालिकों द्वारा बिहार के चंपारण जिले के रैयतों (किसानों) पर नील की खेती के लिए जबरन लागू तीन तरीकों मे एक था। खेती का अन्य दो तरीका **'कुरतौली'** और **'कुश्की'** कहलाता था। तीनकठिया खेती में प्रति बीघा 3/20 भाग नील की खेती करना अनिवार्य बनाया गया था।

ददनी प्रथा	इस प्रथा के अन्तर्गत ब्रिटिश व्यापारी भारतीय उत्पादकों, कारीगरों एवं शिल्पियों को अग्रिम पेशगी के रूप में धन दे देते थे।
कमियाँटी प्रथा	बिहार एवं उडीसा में प्रचलित इस प्रथा के अन्तर्गत कृषिदास के रूप में खेती करने वाले कुर्मी जाति के लोग अपने मालिकों द्वारा प्राप्त ऋण पर दी जाने वाली ब्याज की राशि के बदले जीवन भर उनकी सेवा करते थे।
दुबला हाली प्रथा	यह प्रथा भारत के पश्चिमी क्षेत्र मुख्यतः सूरत में प्रचलित थी जिसके अंतर्गत दुबला तथा हाली कहलाने वाले भू-दास अपने मालिकों को ही अपनी संपत्ति का और स्वयं का संरक्षक मानते थे ।

❑ **ग्रामीण उद्योग एवं नगरीय दस्तकारियों का विनाश**

- ब्रिटिश सरकार ने भारत के लघु और कुटीर उद्योगों पर कोई ध्यान नहीं दिया। जिसके कारण भारत में इनका पतन तेजी से हुआ जबकि इसी समय इग्लैण्ड में औद्योगिक विकास हुआ।
- उद्योगों में भारतीय वस्त्र उद्योग सर्वाधिक विकसित था। ढाका का मलमल, लाहौर के गलीचे, कश्मीर की शाल, बनारस का जरी का काम, व अहमदाबाद की धोतियाँ व दुपट्टे, लखनऊ का चिकन, बार्डर क के लिए नागपुर का सिल्क उद्योग प्रसिद्ध था।
- बनारस, पूना,अहमदाबाद और नासिक ताम्बे एवं पीतल उद्योग के लिए प्रसिद्द थे।
- वस्त्र उद्योग के अतिरिक्त जहाज निर्माण उद्योग, चमड़ा उद्योग और संगमरमर पत्थर, हाथी दाँत, लकड़ी व चंदन की तराशी व नक्काशी भी विश्व प्रसिद्ध थी।
- ब्रिटिश काल में कम्पनी की आर्थिक नीतियों तथा भारतीय रियासतों पर उनके अधिकार से भारतीय उद्योग व दस्तकारी पर सीधा असर हुआ।
- ब्रिटिश ने भारत को बाजार की तरह इस्तेमाल करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाये।
- कई प्रतिबंध लगा दिए - जैसे, 1820 ई० के बाद ब्रिटिश बाजारों के दरवाजे भारतीय मालों के लिए बन्द कर दिए गए।
- भारतीय रेशमी और सूती कपड़ों पर इतना अधिक निर्यात कर लगा दिए गए।
- ब्रिटिश निर्मित कपड़े पर से आयात शुल्क हटा दिया गया।
- इससे भारत का लघु व कुटीर उद्योग ध्वस्त हो गया।
- भारत की नगरीय दस्तकारी के पतन के करण
- कम्पनी के कर्मचारी जुलाहों पर अत्याचार करते थे।
- जुलाहों पर दबाव बनाने के लिए पहले उनको पेशगी दी जाती थी, जिसे 'ददनी प्रथा' कहा जाता था।
- इसके द्वारा कम्पनी के कर्मचारी जुलाहों को कुछ मुद्रा पेशगी में देते थे और बदले में एक शर्तनामा लिखवा लेते थे कि वे एक निश्चित तिथि पर निश्चित मात्रा और मूल्य पर वस्त्र तैयार करके देंगे। इससे भारत का वस्त्र उद्योग ध्वस्त हो गया।
- रजवाड़ों की समाप्ति से हस्तशिल्प के बड़े ग्राहक ख़त्म हो गए जिससे इस उद्योगों को बड़ा धक्का लगा।
- ब्रिटिश भारत का सारा कच्चा माल निर्यात कर देते थे इससे भारतीय हस्तशिल्पों का पतन हुआ क्योंकि कपास और चमड़े जैसे कच्चे माल की क़ीमतें बढ़ गयीं।
- ब्रिटेन ने मशीनों का आविष्कार और यातायात के नवीन साधनों की खोज से भारत में बानी वस्तुओ की बिक्री बहुत कम हो गयी क्योंकि बाजार में मशीनों से बनी वस्तुओं का मूल्य कम होता था, जबकि हाथ से बनी भारतीय वस्तुओं का मूल्य अधिक होता था। जिससे में ब्रिटिश तैयार माल का आयात बढ़ा तथा कच्चे माल का निर्यात बढ़ा। फलतः लाखों भारतीय कारीगर बेरोजगार हो गये।
- कच्चे माल की खपत की कोई उचित व्यवस्था न होना इनके पतन का एक कारण था , भारतीय उद्योगों का संगठित व व्यवस्थित नहीं थे।
- इसे भारत में 'अनुद्योगीकरण का नाम दिया गया। यह प्रक्रिया 1813 से प्रारम्भ हुयी। जिसे ईस्ट इंडिया कंपनी ने व्यापारिक एकाधिकारों की समाप्ति से और तेज कर दिया।

❑ **कृषि का व्यावसायीकरण**

शुरुआत:

- भारतीय कृषि का व्यावसायीकरण 1813 के बाद शुरू हुआ जब इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति ने गति प्राप्त की।
- 1860 ई. के आस-पास औद्योगिक क्रांति के साथ वाणिज्यिक कृषि को प्रमुखता मिलने लगी।
- जिन फ़सलों पर कंपनी केंद्रित थी, वे थीं नील, कपास, कच्चा रेशम, अफ़ीम, काली मिर्च और 19वीं सदी में चाय और चीनी भी।

व्यावसायीकरण के कारक:

- ब्रिटिश द्वारा स्थापित राजनीतिक एकीकरण और उसके बाद एकल राष्ट्रीय बाजार का उदय।
- ब्रिटेन में कच्चे माल की मांग को पूरा करने के लिए कपास, जूट, चाय और तम्बाकू जैसी कई व्यावसायिक फसलें शुरू की गई।
- प्रतिस्पर्धा और अनुबंध द्वारा रीति-रिवाज और परंपरा का प्रतिस्थापन भी भारतीय कृषि के व्यावसायीकरण का एक कारण बन गया।
- बेहतर संचार और परिवहन जैसे रेलवे आदि के विस्तार ने भी कृषि के व्यवसायीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी क्योंकि इससे कृषि उत्पादों को स्थानांतरित करना आसान हो गया था।
- मुद्रा अर्थव्यवस्था के प्रसार ने वस्तु विनिमय का स्थान ले लिया और कृषि उत्पाद बाजार की वस्तुएं बन गई।

व्यावसायीकरण के प्रभाव:

- नकदी फसलों के निर्यात ने अनिवार्य रूप से संसाधनों को भारत से बाहर भेजने का काम किया।
- इन निर्यातों के बदले में भारत को कोई आयात नहीं प्राप्त हुआ।
- भारतीय साहूकारों ने वाणिज्यिक फसलों की खेती के लिए किसानों को अग्रिम नकद दिए और यदि किसान उन्हें समय पर वापस भुगतान करने में विफल रहे, तो किसानों की भूमि साहूकारों के स्वामित्व के तहत आ जाती थी इससे साहूकारी व्यवस्था को बढ़ावा मिला
- व्यावसायीकरण के कारण कीमत में अस्थिरता आ गयी।
- राज्य शक्ति के निरंतर उपयोग ने बाजारों को विकृत कर दिया और एक पूर्ण श्रम बाजार की उपस्थिति को रोक दिया।
- वाणिज्यिक गैर-खाद्य फसलों के प्रतिस्थापन के कारण खाद्य फसलों की खेती वाले क्षेत्र में कमी आई। जिससे अकाल की समस्या बढ़ गयी।
- कृषि के व्यवसायीकरण से बंधुआ मजदूरी की समस्या बढ़ गई।
- अंग्रेजों द्वारा भारतीय किसानों के दमन के कारण किसान विद्रोह बढ़ गए। उदा. 1859 में नील विद्रोह।

सकारात्मक प्रभाव:

- व्यावसायीकरण ने सामाजिक विनिमय को प्रोत्साहित किया और इसने भारतीय अर्थव्यवस्था को पूंजीवादी रूप में बदलना संभव बनाया।
- जब कृषि समस्याओं ने राष्ट्रीय रूप धारण कर लिया, इसने आर्थिक राष्ट्रवाद को मजबूती मिली
-

Note :- राष्ट्रवादी नेताओं के संघर्ष तथा विभिन्न विद्रोहों के बाद 1880 ई. में **दुर्भिक्ष आयोग (Famine Commission)** गठित किया गया। वर्ष 1901 में कृषि महानिदेशक की नियुक्ति की गई। वर्ष 1905 में अखिल भारतीय कृषि बोर्ड का गठन हुआ। वर्ष 1906 में भारतीय कृषि सेवा गठित की गई। प्रान्तों में कृषि विभाग बनाया गया।

❑ धन निकासी सिद्धांत

धन की निकासी की कल्पना भारत से ब्रिटेन को बिना किसी आर्थिक और व्यावसायिक लाभ के संसाधनों के एकतरफा हस्तांतरण के रूप में की गई थी।

इस सिद्धांत के प्रस्तावक: दादाभाई नौरोजी:

- 1867 में, एक भाषण में, उन्होंने तर्क दिया कि ब्रिटेन भारत के धन की निकासी कर रहा था, जो देश के राजस्व का लगभग 25 प्रतिशत था, जिसे 'इंग्लैंड के संसाधनों में जोड़ा गया' था।
- 1873 में, उन्होंने 'भारत के हितों की अनदेखी करने के लिए ब्रिटेन की आलोचना की।
- उनकी पुस्तक **पॉवर्टी एंड अन- ब्रिटिश रूल इन इंडिया** (1901) राष्ट्रवादी राजनीतिक अर्थव्यवस्था के निर्माण में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुई।

आर. सी. दत्त:

- उन्होंने अपनी पुस्तक "**इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया"** में प्लासी की लड़ाई के बाद से अंग्रेजों के अधीन देश की संपूर्ण आर्थिक व्यवस्था के बारे में लिखा है।
- आर.सी. दत्त के अनुसार, "प्रत्येक वर्ष भारत का आधा शुद्ध राजस्व भारत से बाहर जाता है"

एम जी रानाडे:

- एम जी रानाडे ने **"भारतीय अर्थशास्त्र पर निबंध "** लिखा था जिसमें धन की निकासी की चर्चा की गयी थी।
- उन्होंने घोषणा की, "कि भारत की राष्ट्रीय आय का एक तिहाई से अधिक सरकार द्वारा एक या दूसरे रूप में ले लिया गया था"

धन की निकासी के घटक:

- क्षेत्रीय विस्तार के माध्यम से, कंपनी वाणिज्यिक राजस्व बढ़ाने और भारतीय वस्तुओं के निर्यात में सक्षम थी।
- इंग्लैंड को निजी पूंजी का स्थानांतरण भी, धन निकासी का ही एक भाग हुआ करता था।
- गृह प्रभार भी धन निकासी का एक प्रमुख हिस्सा बना। इसमें इंग्लैंड में कंपनी के कर्मचारियों को दिया जाने वाला वेतन/पेंशन शामिल था।
- भारत में प्रदान की जाने वाली सेवाओं के लिए इंग्लैंड में बैंकों, बीमा कंपनियों और शिपिंग निगमों को भुगतान किया गया धन एक और तरीका था जिससे भारत से धन निकासी की जा रही थी।
- "हमारा सिस्टम एक स्पंज की तरह काम करता है, जो गंगा के किनारे से सभी अच्छी चीजों को खींच लेता है, और थेम्स के किनारे उन्हें निचोड़ देता है" - **जॉन सुलिवन**

धन की निकासी का प्रभाव:

- धन की निकासी ने ब्रिटेन से वित्त पूंजी के रूप में अधिशेष के माध्यम से देश की आय के साथ-साथ रोजगार को भी प्रभावित किया, जिसके परिणामस्वरूप धन की अधिक निकासी हुई।
- धन की निकासी और पूंजी की कमी से भारत की उत्पादक पूंजी प्रभावी रूप से कम हो गई थी जिससे औद्योगिक विकास में बाधा उत्पन्न हुई।
- भारत के व्यापार, उद्योग और कृषि क्षेत्रों को इस प्रकार की निकासी के कारण नुकसान उठाना पड़ा, जो 18वीं और 19वीं शताब्दी में देश की आर्थिक स्थिरता का एक प्रमुख कारक था।
- दादाभाई नौरोजी के अनुसार, जो बाहर निकल रहा था, वह "संभावित अधिशेष" था, जिसे अगर भारत में निवेश किया जाता, तो इससे अधिक आर्थिक विकास हो सकता था।
- सरकार के भारी सार्वजनिक ऋण और ब्याज भुगतान के कारण, भारतीय लोगों पर करों का बोझ बढ़ गया था, और इस वृद्धि का बहुत प्रतिगामी प्रभाव पड़ा।

धन निकासी सिद्धांत ने कैसे आम जनता को आकर्षित किया

- लोगों ने यह महसूस किया कि ब्रिटिश शासन भारत के आर्थिक हितों के प्रति शत्रुतापूर्ण था क्योंकि औपनिवेशिक सरकार की आर्थिक नीतियां ब्रिटेन के लाभ की ओर उन्मुख थीं।
- भारत में आर्थिक राष्ट्रवाद का उदय औपनिवेशिक सरकारी अधिकारियों और शुरुआती राष्ट्रवादियों के बीच वैचारिक प्रतिस्पर्धा से हुआ, जिन्होंने धन निकासी के सिद्धांत को प्रतिपादित किया।
- गरीबी और शोषण के कारण जनता में साम्राज्यवाद विरोधी भावना बढ़ने लगी।
- इसने ब्रिटिश शासन के शोषणकारी और स्वार्थी स्वभाव को उजागर किया और लोगों को यह विश्वास दिलाया कि ब्रिटिश शासन, मौजूदा गरीबी का मुख्य कारण था।

❑ दरिद्रता एवं अकाल

दरिद्रता

- ब्रिटिश आर्थिक नीतियों के कारण भारतीय जनता में अत्यंत दरिद्रता आ गयी। भारतीयों के लिए रोजगार या जीविका प्राप्त करना कठिन होता गया।

भारतीय जनता की दरिद्रता का कारण -

- ब्रिटिश आर्थिक शोषण
- देशी उद्योगों का ह्रास, उसकी जगह लेने में आधुनिक उद्योगों की विफलता,
- करों की ऊँची दरें,
- धन का निकास,
- कृषि का पिछड़ापन
- गरीब किसानों का जमींदारों, महाजनों, व्यापारियों और राज्य द्वारा शोषण।

अकाल-

- एक ऐसी स्थिति है जिसमें बहुत से लोगों को खाने के लिए भोजन नहीं मिलता और वे भूख और बीमारियों से मर जाते हैं। पूरे ब्रिटिश काल में लगभग 33 बार अकाल पड़ा। सबसे विनाशकारी अकाल 1943 का बंगाल अकाल था।

अकाल के कारण:

- सिंचाई की सुविधा ना होने के कारण खाद्यान्न उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।
- ब्रिटिश सरकार, भारत में कमी के बावजूद अपने मूल देश इंग्लैंड और अन्य जगहों पर खाद्यान्न का निर्यात करती रही।
- विश्व के विभिन्न भागों में युद्ध लड़ रहे अपने सैनिकों के भोजन के लिए अंग्रेज खाद्यान्न का उपयोग करते थे
- अकाल, गरीबी का प्रत्यक्ष परिणाम थी।
- कृषि का खाद्यान्न उत्पादन से नकदी फसलों में स्थानांतरण।
- भारत के व्यापार की संरचना में परिवर्तन के कारण भी खाद्यान्न की कमी हुई।

अकाल का प्रभाव:

- सामूहिक मृत्यु दर के कारण जनसंख्या वृद्धि में ठहराव आ गया था
- पारंपरिक भारतीय समाज का विनाश हो गया यह बड़े पैमाने पर प्रवासन, भीड़भाड़, अनाज के लिए संघर्ष आदि के कारण हुआ।
- महिलाओं के बढ़ते शोषण ने महिलाओं को वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर किया।
- ब्रिटिश सेना ने भारत में उत्पादित लगभग सभी वस्त्रों का उपभोग किया, जिसके परिणामस्वरूप कपड़े की कमी हो गई।
- पुरुषों ने आगे बढ़ने और सेना में शामिल होने के लिए अकाल के परिणामस्वरूप अपनी जमीन बेचना शुरू कर दिया। राहत की तलाश में, वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहे। इससे महिलाएं और उनके बच्चे बेघर हो गए।
- अकाल व्यापक स्वच्छता समस्याओं, और संक्रमण के प्रकोप का कारण बना।

आधुनिक भारत में अकाल आयोग			
आयोग का नाम	गठन का वर्ष	मुख्य सिफारिशें	लाभ
कर्नल स्मिथ समिति	1860-61	समिति ने दिल्ली तथा आसपास के क्षेत्रों में आये अकाल के कारणों की जांच की सिफारिश की।	कोई विशेष परिणाम नहीं निकला।
जार्ज कैम्पबेल समिति	1866-67	उड़ीसा में आये अकाल से सम्बंधित इस समिति के अनुसार सिर्फ स्वयंसेवी संस्थाएँ ही राहत कार्यों के लिए उत्तरदायी नहीं हैं।	सरकार ने आयोग की सिफारिशों के अनुरूप अकाल राहत कार्यों को अंजाम दिया, कोई विशेष लाभ नहीं निकला।

स्ट्रेची आयोग (लार्ड लिटन)	1880	इस समिति के अनुसार जरूरतमंद लोगों को सहायता पहुँचाना राज्य का कर्तव्य है असक्षम तया अशक्त लोगों को भोजन दिया जाये। प्रत्येक प्रांत में 'अकाल कोष' होना चाहिए।"	सरकार ने 'अकाल कोष' स्थापित करने के प्रयास किया। 1883 ई० में' अकाल संहिता' निश्चित की गयी।
लायल आयोग (लार्ड एल्गिन II)	1897 ई०	इस आयोग ने स्ट्रेची आयोग की सिफारिशों में कुछ परिवर्तन करने की अनुशंसा की।	आयोग की सिफारिशें मान ली गयी
मैकडोनल आयोग (लार्ड कर्जन)	1900	इसने अकाल सहायता और अनुदान में दी गयी सहायता पर आवश्यकता से अधिक बल दिया। इसने नैतिक नीति तथा ग्राम स्तर के कार्यों को प्राथमिता दी।	इसके आधार पर आगे की अकाल सहायता नीति निर्धारित हुई।
वुडहेड आयोग	1945	अकाल की जांच के लिए सर जान वुडहेड की अध्यक्षता में एक अकाल जांच कमीशन बैठाया गया।	-

❑ ब्रिटिश काल में आर्थिक विकास

ब्रिटिश काल में भारत का अत्यधिक आर्थिक शोषण हुआ। परन्तु ब्रिटिश शासन का भारत के आर्थिक जीवन पर कुछ अच्छा प्रभाव भी पड़ा। भारत के कृषि क्षेत्र में उन्नति हुई, आधुनिक औद्योगिक में प्रगति प्रारम्भ हुई, यातायात और संचार के साधनों में वृद्धि हुई।

- **कृषि क्षेत्र में उन्नति-**

भारत के उद्योग		
उद्योग	**स्थापना वर्ष**	**स्थान**
सूती वस्त्र	1818	फोर्ट ग्लोस्टर असफल (कोलकाता)
सूती वस्त्र	1853	बम्बई (सफल)
कागज	1832	सिरामपुर (प. बंगाल)
चीनी उद्योग	1840	बेतिया (बिहार)
सीमेन्ट	1904	चेन्नई
जूट	1855	रिशंरा (प. बंगाल)
लोहा इस्पात	1870	कुलटी (प. बंगाल)
ऊनी वस्त्र	1876	कानपुर
एल्युमिनियम	1937	जे.के. नगर (प. बंगाल)

सूती वस्त्र उद्योग

- 19वीं शताब्दी में सूती कपड़ा उद्योग का इतिहास प्रारम्भ होत्ता है।
- सर्वप्रथम 1818 ई० में कलकता में एक मिल की स्थापना हुयी परन्तु यह असफल रही और इस अपवाद को छोड़कर सूती कपड़ा उद्योग बम्बई क्षेत्र में केन्द्रित रहा।
- बम्बई में पारसी कावसजी नानाभाई दामार ने 1853 ई० में पहला कारखाना स्थापित किया।
- जे० एन० टाटा द्वारा 1877 ई० में एम्प्रेस मिल नागपुर में प्रारम्भ किये जाने के बाद वास्तविक प्रगति शुरू हुई। 1853 से 1880 ई० के प्रथम चरण में 300 कारखानों का निर्माण हुआ
- 1880 से 1895 ई० के बीच सूती कपड़ा उद्योग में पहले की अपेक्षा तीव्र गति से वृद्धि हुई।

- इस बीच एक कड़े प्रतियोगी के रूप में जापान उठ खड़ा हुआ। जापान की प्रतियोगिता के कारण बम्बई के सूती धागों का व्यापार पूर्वी एशिया से समाप्त हो गया।

जूट उद्योग

- भारत में पहला जूट कारखाना सेरामपुर (बंगाल) में 1855 ई० में खोला गया। इस उद्योग पर पूरी तरह यूरोपियनों का आधिपत्य रहा।
- इसके लिए बंगाल में कच्चा माल उपलब्ध था।
- सर्वप्रथम, 1918 ई० में एक लिमिटेड कम्पनी के रूप में बिड़ला ब्रदर्स और 1919 ई० में विड़ला जूट कम्पनी स्थापित की गयी।
- 1940 ई० के बाद घनश्याम दास बिड़ला ने अंग्रेजों से अनेक कम्पनियों को खरीदकर अपना व्यवसाय बढ़ाया और तभी से जूट उद्योग में भारतीयों का प्रभुत्व स्थापित हुआ।

लोहा-इस्पात उद्योग

- सबसे पहले जे० एन० टाटा ने 1907 ई० में जमशेदपुर (बिहार) में TISCO की स्थापना की।
- इसके बाद मैसूर में भद्रावती एवं बंगाल में भी स्टील कम्पनियों स्थापित की गई।
- इन कारखानों से भारतीय आवश्यकताओं की आंशिक पूर्ति हो पाती थी।
- अंग्रेजो ने भारत में लोहा इस्पात उद्योग को अधिक प्रोत्साहित नहीं किया।

आर्थिक विकास से सम्बद्ध आयोग

आयोग	स्थापना वर्ष	सिफारिशें	विशेष तथ्य
दत्ता समिति	1915 ई०	कीमतों के उतार-चढ़ाव पर रिपोर्ट दी।	
मैक्लागन समिति	1915 ई०	सहकारी संस्थाओं पर रिपोर्ट दी।	
हालैण्ड समिति	1916 ई०	उद्योग से सम्बद्ध सिफारिशें	
औद्योगिक आयोग	1916 ई०	भारतीय उद्योगों और व्यापार में उन क्षेत्रों का पता लगाना जिसमें सरकार सहायता दे सके।	**अध्यक्ष-** सरथामस हालैण्ड
राजस्व आयोग	1921 ई०	उद्योगों को प्रारम्भिक विकास की अवस्था में संरक्षण	**अध्यक्ष-** इब्राहिम रहीमुल्ला **अन्य नाम** - रहीमुल्ला आयोग
व्हिटले आयोग	1929 ई०	औद्योगिक कार्यशालाओं और बगीचों में श्रम की वर्तमान स्थिति पर रिपोर्ट दी।	कई कानूनों में संसोधन
स्प्रू समिति	1934 ई०	मध्यमवर्गीय बेरोजगारी की जाँच	1935 ई० में रिपोर्ट प्रस्तुत

यातायात के साधनो का विकास

आधारभूत संरचना	विवरण
रेलवे	• उद्देश्य - कृषि वाले क्षेत्रो को बाजार से जोड़ना • इसने लोगों को लंबी दूरी की यात्रा करने और इस तरह भौगोलिक और सांस्कृतिक बाधाओं को तोड़ने में सक्षम बनाया • इसने भारतीय कृषि के व्यावसायीकरण को बढ़ावा दिया जिसने भारत में ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं की आत्मनिर्भरता पर प्रतिकूल प्रभाव डाला • मुम्बई से ठाणे के बीच 1853 में प्रथम रेल लाइन का निर्माण हुआ। • निर्माण -लार्ड डलहौजी • सहचर नामक समाचारपत्र के अनुसार "भारत में रेल का विकास एक हथकड़ी है " • सर्वाधिक विस्तार - लार्ड कर्जन के समय में
सड़क	• उद्देश्य - भारत के भीतर सेना को संगठित करने

	• इंग्लैंड या अन्य आकर्षक विदेशी स्थलों में भेजने के लिए कच्चे माल को ग्रामीण इलाकों से निकटतम रेलवे स्टेशन या बंदरगाह तक ले जाना
पत्तन	• ब्रिटेन से कच्चे माल का निर्यात और तैयार माल का आयात करना
डाक	• उपयोगी सार्वजनिक प्रयोजन के होते हुए भी अपर्याप्त बना रहा • स्थापना - 1853 (डाक तार विभाग) • पहली तार लाइन - कलकत्ता से आगरा
अंतर्देशीय जलमार्ग	• कभी-कभी यह उड़ीसा तट पर तटीय नहर के मामले में खर्चीला साबित हुआ
इलेक्ट्रिक टेलीग्राफ	• इसने कानून और व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से कार्य किया • प्रशासन की दक्षता बढ़ाना

कैसे इन अवसंरचनात्मक विकास ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में मदद की:

- रेलवे ने पूरे देश में लोगों की आवाजाही को सुगम बनाया।
- रेलवे स्टेशन जन-राष्ट्रवाद के स्थल बन गए, जिनका उपयोग वास्तव में धर्मनिरपेक्ष उद्देश्यों के लिए एम.के. गांधी द्वारा किया गया, इस प्रकार जनता के बीच एकता को मजबूती मिली।
- उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों के सभी शिक्षित राष्ट्रवादी उन्नत संचार बुनियादी ढांचे के माध्यम से एक दूसरे के साथ संवाद करने में सक्षम थे। उन्होंने अपने मुद्दों को संबोधित किया और विचारों का आदान-प्रदान किया।
- बेहतर कनेक्टिविटी के साथ, लोगों को जल्दी से पता चला, कि ब्रिटिश शासन पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में हुई व्यापक भूमि लोपन के लिए जिम्मेदार था।
- ब्रिटिश विरोधी तोड़फोड़ के लिए रेलगाड़ियाँ सबसे प्रतीकात्मक और साथ ही व्यावहारिक सहारा बन गई।

नवीन राज्यों का उदय

हैदराबाद

- दक्कन के निजाम हैदराबाद राज्य की नींव मुहम्मद शाह के शासनकाल में चिनकिलिच खाँ अथवा निजामुलमुल्क ने रखी। जुल्फिकार खाँ पहला व्यक्ति था जिसने पहली बार दक्कन में स्वतंत्र राज्य का स्वप्न देखा था। 1720 ई० में चिनकिलिच खाँ को दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया गया। यह तूरानी गुट का सरदार था। सैय्यद बन्धुओं के पतन में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी।
- मुहम्मदशाह ने 1722 ई. में चिनकिलिच खां को दक्कन के छः सूबों की सुबेदारी सौंपी थी, जिसका मुख्यालय औरंगाबाद में था। 1722 से 1724 ई. तक वह मुगल साम्राज्य का वजीर रहा, किन्तु सम्राट के व्यवहार से तंग आकर वह दक्कन वापस चला गया और उसने स्वतन्त्र हैदराबाद राज्य की स्थापना की। निजाम ने दिल्ली की सरकार से अपनी स्वन्त्रता की घोषणा कभी नहीं की थी, किन्तु स्वतन्त्र शासक की भांति व्यवहार किया।
- मुहम्मदशाह ने मुचारिज खां को आदेश दिया था कि वह निजाम को जीवित अथवा मृत पकड़े। 1724 ई. में शकूरखेड़ा के युद्ध में निजाम-उल-मुल्क (चिनकिलिच खाँ) ने मुबारिज खाँ को पराजित कर मार डाला।
- मजबूर होकर मुहम्मद शाह ने चिनकिलिच खाँ को दक्कन का वायुसराय नियुक्त कर दिया और उसे आसफजाहै की उपाधि भी दे दी। चिनकिलिच खाँ ने 1725 ई० में हैदरावाद को अपनी राजधानी बनाई।

राजपूत

18वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य की दुर्बलता से लाभ उठाकर उन्होंने अपनी स्वाधीनता घोषित कर दी। बहादुरशाह ने 18 ई० में जोधपुर पर आक्रमण किया।

- **अजीत सिंह** ने अधीनता तो स्वीकार कर ली परन्तु शीघ्र ही उसने जयसिंह द्वितीय तथा दुर्गादास राठौर के साथ मिलकर मुगलों के विरुद्ध एक गठजोड़ बना लिया। 1714 ई० में मुगल सेनापति हुसैन अली ने जोधपुर पर आक्रमण किया। अजीत सिंह को अपनी पुत्री का विवाह मुगल सम्राट् फर्रुखशियर से करना पड़ा।

- **सवाई जय सिंह (1688 ई० से 1747 ई०)**
- इन्हे "सवाई" की पदवी मुगल शासक फर्रुखशियर ने दी थी।
- इन्होने 1727 ई० जयपुर (गुलाबी शहर) की स्थापना की।

Note:-

- **1876 ई० में महाराज रामसिंह ने इंग्लैंड की महारानी विक्टोरिया तथा प्रिंस ऑफ वेल्स के युवराज अल्बर्ट एडवर्ड सप्तम के स्वागत में पूरे शहर को गुलाबी रंग से सजवाया था। तभी से इस शहर का नाम गुलाबी नगरी पड़ा है।**

- जयसिह एक महान खगोलशास्त्री भी थे।
- इन्होने दिल्ली, जयपुर, उज्जैन, वाराणसी और मथुरा में बिल्कुल सही और आधुनिक उपकरणों के सुसज्जित पर्यवेक्षण-शालायें बनाई।
- इन्होने सारणियों का एक सेट तैयार किया जिससे लोगों को खगोल शास्त्र सम्बन्धी पर्यवेक्षण करने में सहायता मिले। इसका नाम "जिज मुहम्मदशाही" थे।
- इन्होने युक्लिड की 'रेखागणित के तत्व' का अनुवाद संस्कृत में कराया। उसने त्रिकोणमिति की बहुत सारी कृतियों और लघुगणकों को बनाने और उनके इस्तेमाल सम्बन्धी नेपियर की रचना का अनुवाद संस्कृत में कराया।

भरतपुर (जाट)

- दिल्ली, मथुरा तथा आगरा के समीपवर्ती क्षेत्रों में जाट जाति के लोगों का निवास था। ये मूलतः समीपवर्ती क्षेत्रों में कृषि कार्य करने वाले जमींदार थे।
- इन्होंने औरंगजेब की नीतियों के विरुद्ध विद्रोह किया था। प्रथम विद्रोह तिलुपत के जमींदार गोकुल ने 1669 ई. में किया। यह विद्रोह असफल रहा, परन्तु आगे चलकर चूड़ामन आदि जाट नेताओं ने जाटों को संगठित किया।

भरतपुर के प्रमुख शासक निम्न हैं

- चूड़ामन ने 1700 ई. में भरतपुर राज्य की नींव रखी। इसने थीन नामक स्थान पर एक सुदृढ़ दुर्ग बनाया। 1721 ई० में आगरा के सूबेदार जयसिंह द्वितीय के अधीन मुगल सेना ने दुर्ग को जीत लिया इसके पश्चात् चूड़ामन ने आत्महत्या कर ली।
- बदन सिंह ने डींग, कुम्बेर, वेद तथा भरतपुर में चार दुर्ग बनाए। इसीलिए बदन सिंह को 'भरतपुर राज्य' का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है। नादिरशाह के आक्रमण के बाद मथुरा पर आधिपत्य जमा लिया। अहमदशाह अब्दाली ने बदन सिंह को राणा की उपाधि प्रदान की और इसके साथ महेन्द्र शब्द को भी जोड़ा।
- सूरजमल - इसने आगरा, मथुरा, मेरठ तथा अलीगढ़ पर अधिकार कर लिया था। इसे जाटों का अफलातून भी कहा गया है। 1763 ई. में इसकी मृत्यु हुई। पानीपत के तृतीय युद्ध में जाट सूरजमल के नेतृत्व में मराठों का सहयोग करना चाहते थे किन्तु सदाशिवराव भाऊ से मतभेद होने के कारण अलग हो गये।

- जवाहर सिंह की मृत्यु के बाद क्रमशः रतन सिंह, केसरी सिंह, रणजीत सिंह तथा रणधीर सिंह शासक हुए। 1805 ई. में रणधीर सिंह ने अंग्रजों की अधीनता स्वीकार कर ली थी। इसी के साथ जाट शासन का अन्त हो गया ।

रुहेले तथा बंगश पठान

- गंगा की घाटी में रुहेलों तथा बंगश पठानों ने भी स्वतंत्र राज्य स्थापित किए। एक अफगान वीर दाउद तथा उसके पुत्र अली मुहम्मद खाँ ने बरेली में एक छोटी सी जागीर का विस्तार कर रुहेलखण्ड में एक स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया जो उत्तर में कुमायूँ से दक्षिण में गंगा नदी तक फैल गया। बाद में इसने बुन्देलखण्ड तथा इलाहाबाद के प्रदेशों पर अपना प्रभुत्व जमा लिया।
- इनकी पहली राजधानी आवला (बरेली) थी बाद में रामपुर राजधानी बानी
- 1774 ई. में "मीरापुरकटरा के युद्ध" में हाफिज रहमत खाँ की मृत्यु हो गई, इसके पश्चात् इसका पुत्र फैजुल्ला खाँ रामपुर का शासक बना तथा शेष भाग शुजाउद्दौला को दे दिया गया।

सिक्ख

- सिक्ख शब्द संस्कृत के शिष्य शब्द से उत्पन्न हुआ हैं जिसका मतलब हैं " गुरुनानक के शिष्य" एक संप्रदाय के रूप में सिक्खों का उदय मुगलकाल में हुआ। सिक्ख धर्म की नींव गुरुनानक ने पंजाब में डाली। सिक्खों का इतिहास 10 सिक्ख गुरुओं के इतिहास से प्रारम्भ होता है। जिनका इतिहास निम्नलिखित है-
- The word Sikh is derived from the Sanskrit word Shishya which means "disciple of Guru Nanak". Sikhs emerged as a sect during the Mughal period. Guru Nanak laid the foundation of Sikhism in Punjab. The history of Sikhs begins with the history of 10 Sikh Gurus. Whose history is as follows-

❑ **गुरुनानक**

- **जन्म -** रावी नदी के तट पर तलवंडी में

- **मृत्यु -** पंजाब के करतार पुर में
- **रचना -** जपजी साहब
- **समकालीन-** इब्राहिम लोदी
- **महत्वपूर्ण कार्य -**
  - सिक्ख धर्म के संस्थापक
  - नानक पंथ चलाया।
  - शिष्य लहना (अंगद) को अपना उत्तराधिकारी बनाया
  - लंगर प्रथा प्रारम्भ
  - जातिप्रथा के विरोधी

❑ **गुरुअंगद**

- **समकालीन-** इब्राहिम लोदी
- **महत्वपूर्ण कार्य -**
  - खादुर में गुरु गद्दी बनाई
  - लंगर व्यवस्था को नियमित कर दिया
  - गुरुमुखी लिपि के आविष्कारक
  - हुमांयू ने 1540 ई. में भेट की थी।

❑ **गुरु अमरदास**

- **समकालीन- अकबर**
- **गद्दी- गोइन्दवाल में**
- **22 गद्दीयों की स्थापना**
- **लवन विवाह पद्धति चलायी**

Note :- शादी करने वाले जोड़े को गुरु ग्रंथ साहिब के चारों ओर परिक्रमा करनी होती है और साथ ही गुरु ग्रंथ साहिब की एक रचना का पाठ करना होता है, जिसे लवण के रूप में पहचाना जाता है

- **महत्वपूर्ण कार्य -**
  - कोई भी व्यक्ति बिना लंगर में भोजन किए गुरु से नहीं मिल सकता।
  - अकबर इनसे मिलने स्वयं गोइन्दवाल गया
  - अकबर ने अमरदास की बेटी 'बीबीभानी' के नाम कुछ जमीन दी।

❑ **गुरु रामदास**

- **समकालीन- अकबर**
- **महत्वपूर्ण कार्य -**
- अकबर ने इन्हें 500 बीघा जमीन प्रदान की। इसी जमीन पर इन्होंने अमृतसर नामक शहर बसाया।
- गुरु का पद पैतृक बना दिया।

❑ **गुरु अर्जुन देव**

- समकालीन- जहाँगीर
- रचना - सुखमनी
- हरमिंदर साहिब की नीव सूफी संत मियां मीर ने रखी
- मसनद प्रथा चालयी

- **महत्वपूर्ण कार्य -**
  - सच्चा बादशाह भी कहा जाता है।
  - अमृतसर एवं संतोषसर नामक तालाब निर्मित करवाए।
  - हरमिन्नर साहव का निर्माण करवाया
  - अनिवार्य आध्यात्मिक कर लेना शुरू किया
  - 1604 ई० में इन्होंने आदिग्रंथ की रचना की।
  - खुसरो को समर्थन देने के कारण जहाँगीर में 1606 ई० में इन्हें मृत्युदण्ड दे दिया

❑ **गुरु हरगोविन्द**

- **समकालीन-** जहाँगीर
- जहाँगीर ने इन्हें, अपने पिता के 2.5 लाख जुर्माने की राशि न देने के कारण दो वर्ष तक ग्वालियर के किले में कैद कर रखा था।
- **महत्वपूर्ण कार्य -**
  - सिक्खों को लड़ाकू जाति के रूप में परिवर्तित
  - ऊंचा "अकालतख्न" का निर्माण
  - शिष्यों को मांसाहार की आज्ञा
  - कश्मीर में कीरतपुर नामक नगर बसाया।
  - अमृतसर का युद्ध, गुरुसारी का युद्ध, करतारपुर का युद्ध व किरतपुर का युद्ध मुगलो के साथ किये।

❑ **गुरु हरराय**

- **समकालीन-** शाहजहाँ
- **महत्वपूर्ण कार्य -**
  - सामूगढ़ की पराजय के बाद दाराशिकोह इनसे मिला था।

❑ **गुरुहरकिशन**

- **समकालीन-** औरंगजेब
- **महत्वपूर्ण कार्य -**
  - हरकिशन ने अपना उत्तराधिकारी तेगबहादुर को बनाया।
  - चेचक से मृत्यु

❑ **गुरुतेगबहादुर**

- **समकालीन** – औरंगजेब
- **महत्वपूर्ण कार्य -**
  - इन्होंने अपना स्थान अमृतसर की जगह मरखोवाली में बनाया
  - इस्लाम स्वीकार न करने के कारण औरंगजेब ने इनकी हत्या कर दी

❑ **गुरुगोविन्द सिंह**

- **समकालीन** – औरंगजेब
- **रचना -** कृष्ण अवतार , 'चन्दीदीवर' , जफ़रनामा
- **आत्मकथा -** 'विचित्रनाटक'
- **चार पुत्र -** अजीत सिह, जुझारू सिंह, जोरावर सिंह और फतेह सिंह।
- दसवें एवं अन्तिम गुरु
- **महत्वपूर्ण कार्य -**

- आनन्दपुर नगर की स्थापना
- 1699 ई० में खालसा पंथ की स्थापना
- पाँच वस्तुएं धारण करने को कहा केश, कंघा, कच्छा, कड़ा और कृपाण।
- नान्देर नामक स्थान पर अजीम खान द्वारा गोविन्द सिह को घायल कर दिया
- गुरु गद्दी समाप्त कर दी।
- गोविन्द सिंह ने आदिग्रंथ का पुनः संकलन करवाया। इसीलिए इसे "दिसम् पादशाह का ग्रंथ" भी कहा जाता है।

गुरु गोविन्द सिंह और मुगलों के बीच हुए युद्ध

- नादोन का युद्ध (1690 ई०)
- आनन्दपुर का प्रथम युद्ध (1701ई०)
- आनन्दपुर का द्वितीय युद्ध (1704 ई०)
- चकमौर का युद्ध (1705 ई०)
- खिदराना का युद्ध (1705 ई०)
- **नादोन का युद्ध**
- **वर्ष** -1690 ई०
- **मध्य** - भीम चंद, गुरु गोबिन्द सिंह एवं मुगल सेना (अलीफ खान)
- **परिणाम** - राजा भीम चंद के गठबंधन को विजय प्राप्त हुई।
- **आनन्दपुर का प्रथम युद्ध**
- **वर्ष** - 1701 ई०
- **मध्य** - भीम चंद, गुरु गोबिन्द सिंह, पहाड़ी सेना एवं मुगल सेना
- **परिणाम** - पहाड़ी सेना पराजित
- **आनन्दपुर का द्वितीय युद्ध**
- **वर्ष** -1704 ई०
- **मध्य** - सरहिन्द सूबेदार वजीर खाँ और गोविन्द सिंह
- **परिणाम** - गोविन्द सिंह के पुत्र- जोरावर एवं फतेह को सरहिन्द लाकर दीवार में चुनवा दिया गया।

Note:-
पिछले साल जनवरी में प्रधानमंत्री मोदी ने घोषणा की थी कि 26 दिसंबर को जोरावर सिंह और फतेह सिंह की शहादत को याद करते हुए वीर बल दिवस के रूप में मनाया जाएगा। उन्होंने गुरु गोविंद सिंह के प्रकाश पर्व के दिन यह घोषणा की थी।

- **चकमौर का युद्ध**
- **वर्ष** -1705ई०
- **मध्य** - मुगल सेना एवं गोविन्द सिंह
- **परिणाम** - गोविन्द सिंह के शेष दो बेटे अजीत एवं जुझारु सिंह मारे गये।
- **खिदराना का युद्ध**
- **वर्ष** -1705ई०
- **मध्य** - मुगल सेना एवं गोविन्द सिंह
- **परिणाम** - गोविन्द सिंह विजयी

सिख गुरुओं की प्रमुख उपलब्धियाँ/ Major achievements of Sikh Gurus		
गुरु/Guru	वर्ष/year	प्रमुख उपलब्धियाँ/ Major Achievements
नानक/Nanak	1469-1539	सिख धर्म के प्रवर्तक/ Founder of Sikhism
अंगद/Angad	1539-1552	गुरुमुखी लिपि के जनक/ Father of Gurmukhi script
अमरदास/Amardas	1552-1574	22 गद्दी का निर्माण/22 Construction of the cushion
रामदास/Ramdas	1574-1581	अमृतसर के संस्थापक/ Founder of Amritsar
अर्जुन देव/Arjundev	1581-1606	स्वर्ण मन्दिर की स्थापना/ Establishment of the Golden Temple
हरगोविन्द सिंह/Hargovindsingh	1606-1644	अकाल तख्त की स्थापना/ Establishment of Akal Takht
हरराय/Harrai	1644-1661	उत्तराधिकार युद्ध में दाराशिकोह के पक्षधर/ Dara Shikoh's partisan in the war of succession
हरकिशन/Harkishan	1661-1664	अल्प वयस्क अवस्था में मृत्यु/ death at a young age
तेग बहादुर/Tegbahadur	1664-1675	औरंगजेब द्वारा फांसी/Hanged by Aurangzeb
गोविन्द सिंह/Govind Singh	1675-1708	खालसा सेना का संगठन/ Organization of the Khalsa Army

बन्दा बहादुर (1708-1716 ई०)

- **अन्य नाम** – लक्ष्मणदेव, माधवदास, माधवदास बैरागी, गुरु का बन्दा, बन्दा बहादुर, गुरुवख्श सिंह
- यह सिक्खों के पहले राजनीतिक नेता थे।
- इन्होने गुरुनानक और गुरुगोविन्द सिंह के नाम के सिक्के चलवाए और सिक्ख राज्य की मुहर बनवाई।
- 1716 ई० में गुरुदासपुर के युद्ध में बन्दाबहादुर को में कैद कर लिया गया। वहाँ से दिल्ली लाया गया जहाँ फर्रुखशियर ने उन्हें मृत्यु दंड दे दिया।
- इनकी मृत्यु के बाद सिक्खों में शरबत खालसा एवं गुरुमत्ता प्रथाओं का प्रचलन हुआ। इकट्ठे होने को शरवत खालसा जबकि निर्णय को गुरुमत्ता कहा गया। 1753 ई० में दल खालसा संगठन ने राखी प्रथा का प्रचलन किया।
- पानीपत के तृतीय युद्ध के पश्चात् सिक्खों के सर्वाधिक गौरवपूर्ण इतिहास का प्रारम्भ हुआ। 1764 ई० में सिक्ख अमृतसर में एकत्रित होकर देग, तेग एवं फतेह लेख युक्त शुद्ध चाँदी के सिक्के चलाए , 1763 ई० से 1773 ई० के बीच पंजाब में छोटे-छोटे सिक्ख राज्यों की स्थापना हुई, ये राज्य मिसल कहलाते थे। **इस समय पंजाब में 12 मिसलें थीं, जो निम्नलिखित थीं-**

बारह सिक्ख मिसलें/ Twelve Sikh Misls	
मिसल/ Misls	**नेता/संस्थापक/ Leader/Founder**
अहलूवालिया मिसल/ Ahluwalia Misl	**जस्सा सिंह/ Jassa Singh**
सुकरचकिया मिसल/Sukerchakia Misl	**चरत सिंह / Charat Singh**
सिंहपुरिया मिसल/ Singhpuria Misal	**नवाब कपूर सिंह/ Nawab Kapur Singh**
भंगी मिसल/ Bhangi Misl	**छज्जा सिंह/ Chajja Singh**
फुलकियां मिसल/ Phulkian Missal	**संधू जाट चौधरी/ Sandhu Jat Chowdhary**
रामगढ़िया मिसल/ Ramgarhia Misl	**नन्द सिंह रामगढ़िया/ Nand Singh Ramgarhia**
कन्हैया मिसल/ Kanhaiya Misal	**जयसिंह/ Jai Singh**
शहीदी मिसल/ Shaheedi Misl	**बाबा द्वीप सिंह/ Baba Dweep Singh**
नकई मिसल/ Nakai Misl	**हीरा सिंह/ Heera Singh**
बुले वालिया मिसल/ Bulle Walia Misl	**गुलाब सिंह/ Gulab Singh**
निशानवालिया मिसल/ Nishanwalia Misl	**सरदार संगत सिंह/ Sardar Sangat Singh**
करोड़ खिधियां मिसल/Crore Khidiyan Misl	**भगेल सिंह/Bhagel Singh**

पाँच शक्तिशाली मिसलें - भंगी, अहलूवालिया, सुकेरचकिया, कन्हैया ताथा नक्कई। इनमें भंगी मिसल सबसे शक्तिशाली थी।

There were five powerful misls - Bhangi, Ahluwalia, Sukerchakia, Kanhaiya and Nakkai. Among these, Bhangi misl was the most powerful.

रणजीत सिंह (1792 ई० से 1839 ई०)

- नवम्बर, 1780 ई० को रणजीत सिंह का जन्म हुआ। ये सुकेरचकिया मिसल के अमुख महासिंह के पुत्र थे।
- 1797 ई० अफगान सेना ने आक्रमण किया रणजीत सिंह ने इन्हे बुरी तरह परास्त किया और लाहौर तक इनका पीछा किया। वापस जाते समय जमान शाह की 12 तोपे नदी में गिर गई थीं। रणजीत सिंह ने इन्हें निकलवाकर वापस भिजवा दिया। इस सेवा का बदले में जमान शाह ने रणजीत सिह को लाहौर पर अधिकार करने की अनुमति दे दी।
- 1799 ई० में रणजीत सिंह ने लाहौर पर अधिकार कर लिया। जमान शाह ने उन्हें राजा को उपाधि दी और लाहौर का अपना सूबेदार मान लिया।
- 1805 ई० में रणजीत सिंह ने अमृतसर को भंगी मिसल से छीन लिया।
- इस तरह पंजाब को राजनीतिक राजधानी लाहौर एवं धार्मिक राजधानी अमृतसर दोनों उसके अधीन हो गई।
- अमृतसर की सन्धि (25 अप्रैल, 1809 ई०)- इस सन्धि पर मेढकॉफ और रणजीत सिंह ने अपने हस्ताक्षर किए।
- इस सन्धि की प्रमुख शर्ते निम्नलिखित थीं- (1) सतलज नदी दोनों राज्यों की सीमा (2) लुधियाना में एक अंग्रेजी सेना रखी गई (3) सतलज के पूरब के राज्य अब अंग्रेजों के पास चले गए और पश्चिम रणजीत सिंह के पास

रणजीत सिंह की विजय/ Victory of Ranjit Singh	
विजय / Victory	**वर्ष/year**
कॉगड़ा/ Kangra	**1809 ई०**
मुल्तान/ Multan	**1818 ई०**
कश्मीर/ Kashmir	**1819 ई०**
लेह/ Leh	**1820-21 ई०**
पेशावर/ Peshawar	**1834 ई०**

- 1813 में शाहशुजा से रणजीत सिंह ने कश्मीर को अपने संरक्षण में ले लिया और शाहशुजा ने इन्हे कोहिनूर हीरा प्रदान किया।
- 1839 में रणजीत सिंह की मृत्यु हो गई।

कोहिनूर हीरे का इतिहास

- कोहिनूर हीरे की खोज भारत के तेलंगाना राज्य के गोलकुंडा की खदानों से हुई थी।
- विभिन्न राजवंशों से होते हुए यह वर्तमान समय में ब्रिटेन की महारानी के ताज की शोभा बढ़ा रहा है। वर्ष 1739 ई. में नादिरशाह ने यह हीरा मुहम्मदशाह पर आक्रमण के दौरान लूट ले गया, नादिर शाह की मृत्यु के बाद इस पर अहमदशाह अब्दाली का अधिकार हो गया तथा उसके बाद उसके पुत्र शाह शुजा को प्राप्त हुआ।
- 1809 ई. के लगभग शाह शुजा ने महाराजा रणजीत सिंह को भेंट किया। 30 मार्च 1849 को गुजरात युद्ध में सिक्ख शासक दिलीप सिंह पराजित हो गए, उसी समय डलहौजी ने यह हीरा ब्रिटेन की महारानी को भेंट कर दिया।
- तब से यह तीन टुकड़ों में विभाजित है। प्रथम टुकड़ा-ब्रिटिश म्यूजियम में है, जबकि द्वितीय व तृतीय टुकड़ा ब्रिटेन की महारानी के मुकुट में विद्यमान है।

रणजीत सिंह का प्रशासन/ Administration of Ranjit Singh

रणजीत सिंह की सरकार को खालसा सरकार कहा जाता था। इन्होने डोगरा सरदारों एवं मुसलमानों को उच्च पदों पर नियुक्त किया। इन्होने गुरुमत को प्रोत्साहन नहीं दिया इनके राज्य के प्रशासन में पाँच मंत्री सहयोग करते थे।

पाँच मंत्री/ Five ministers	उदाहरण/ Example
मुख्यमंत्री/ Chief Minister	राजा ध्यान सिह / Raja Dhyan Singh.
विदेश मंत्री/ Foreign Minister	फकीर अजीजुद्दीन/ Faqir Azizuddin
रक्षा मंत्री/ Defence Minister	दीवान मोहकम, दीवान चन्द्र मिश्र , हरी सिह नलवा / Diwan Mohkam, Diwan Chandra Mishra, Hari Singh Nalwa
अर्थमंत्री/ Economy Minister	भगवानदास/ bhagwandas
सदर-ए-ड्योढ़ी/ sadar-e-dyorhi	डोगरे सामन्तों में तीन भाई ध्यान सिंह, गुलाब सिंह, सुचेता सिंह / Among the Dogra feudal lords, there were three brothers Dhyan Singh, Gulab Singh and Sucheta Singh.

केन्द्र में 4 महत्वपूर्ण प्रशासकीय विभाग निम्नलिखित थे-

(1) दफ्तर-ए-आबवाव-उल-माल :- भू-राजस्व

(2) दफ्तर-ए-तोहिजात :- राजपरिवार के व्यय

(3) दफ्तर-ए-मवाजाब :- सैनिक एवं असैनिक कार्मिकों के वेतन

(4) दफ्तर-ए-रोजनामचा खर्च :- राजा के प्रतिदिन के व्यय

प्रान्तीय प्रशासन

रणजीत सिंह के राज्य में चार सूबे प्रमुख थे - लाहौर, मुल्तान, कश्मीर एवं पेशावर।

प्रांतीय प्रशासन का क्रम- सूबे > परगने > तालुके > मौजे (गाँव)

भू-राजस्व व्यवस्था - भू-राजस्व उपज का 33% से 40% के मध्य लिया जाता था।

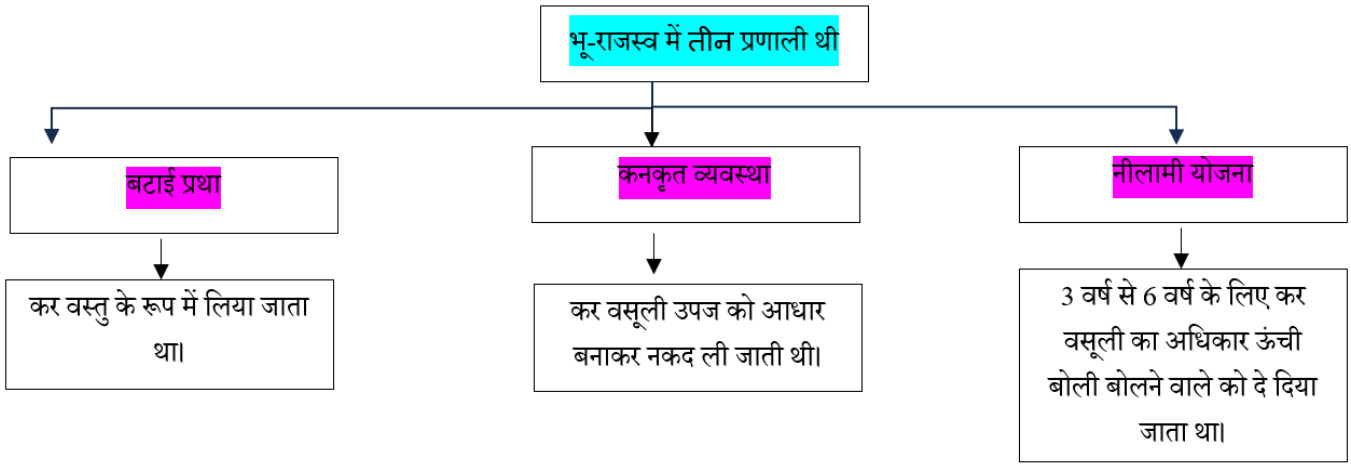

सैन्य प्रशासन

रणजीत सिंह की सेना को दो भागों में बटी थी –

(1) फौज-ए-खास

(2) फौज-ए-वेकवायद अर्थात् अनियमित सेना।

(1) फौज-ए-खास

अन्य नाम - फौज-ए-आइन अर्थात् नियमित सेना।

यह घुड़सवार, पैदल एवं तोपखाने में विभक्त थी।

घुड़सवारों का प्रशिक्षु- फ्रांसीसी सेनापति एलार्ड को नियुक्त किया, लेकिन घुड़सवार परेड को घृणा की दृष्टि से देखते थे और प्रशिक्षण को रक्स-ए-लूलुआ (नर्तकी की चाल) के नाम से पुकारते थे। लार्ड आकलैण्ड ने रणजीत सिंह के घुड़सवारों का देखकर कहा था कि "यह संसार की सबसे सुन्दर फौज है"।

पैदल सेना का प्रशिक्षु - इटालियन सेनापति बन्तुरा को प्रशिक्षण हेतु नियुक्त किया गया। सैनिक को ड्रेस -लाल कमीज, नीला पाजामा एवं काले चमड़े की पेटियों।

तोपखाना का प्रशिक्षु – फ्रांसीसी जनरल कोर्ट ,कर्नल गार्डनर एवं लेहना सिंह

तोपखाना प्रमुख - दरोगा-ए-तोपखाना कहा जाता था।

रणजीत सिंह का तोपखाना चार भागों में विभक्त था-तोपखाना-ए-पीली, तोपखाना-ए-अस्पी, तोपखाना-ए-जम्बूरक, तोपखाना-ए-गवी।

(2) फौज-ए-बेकवायद

अन्य नाम - अनियमित सेना

इसमें मुख्य रूप से घुड़सवार होते थे।

इन्हें दो भागों में विभक्त किया जा सकता है-

(i) घुड़चढ़ा-खास - घुड़चढ़ों को अपने घोड़े तथा अस्त्र लाने होते थे। इन्हें राज्य की आर से वेतन दिया जाता था।

(ii) मिसलदार- इन्हें पहले जागीर दी गई, बाद में नकद वेतन दिया जाने लगा।

न्याय-प्रशासन

- इनकी न्याय व्यवस्था धर्मनिरपेक्ष थी।
- ग्रामों के विवादों का निपटारा पंचायतों द्वारा किया जाता था।
- सूबे में सबसे उच्च न्यायालय नाजिम का होता था। राजधानी लाहौर में अदालत-उल-आला थी। अदालत-उल-आला की अपील महाराजा के दरबार में की जाती थी। मृत्युदण्ड केवल राजा दे सकता था।

Note:- फ्रांसीसी पर्यटक विक्टर जाकमा ने रणजीत सिंह की तुलना "नेपोलियन बोनापार्ट" से की है।

आंग्ल -सिख संघर्ष/ Anglo-Sikh War

युद्ध/war	युद्ध की कार्यप्रणाली/ Methodology of War	शामिल पक्ष/ parties involved	निष्कर्ष/ conclusion
प्रथम आँग्ल -सिख संघर्ष (1845-46)	**प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध (1845 ई० से 1846 ई०)** महारानी जिन्दन की महत्वाकांक्षा का परिणाम था। ये चार लड़ाइयों मुदकी (18 सितम्बर, 1845 ई०), फीरोजशाह (21 दिसम्बर, 1845 ई०), बद्दोवाल और आलीवाल (28 जनवरी, 1846 10) ऐसी हुई जो निर्णायक नहीं थीं। केवल पाँचवीं सबवराओं की लड़ाई (10 फरवरी, 1846 ई०) निर्णायक सिद्ध हुई। इन लड़ाइयों के बाद सिक्खो को लाहौर की संधि करनी पड़ी।	रानी जिंदल लार्ड हार्डिंग (गवर्नर जनरल) लार्ड गाफ़ (सेनापति)	लहौर की संधि (March, 1846) भौरेवाल की संधि (December 1846)
द्वितीय आँग्ल सिख संघर्ष (1848-49)	**द्वितीय आंग्ल-सिक्ख युद्ध (1848 ई० से 1849 ई०)** प्रथम युद्ध में पराजय के बाद सिक्ख सेना खालसा शक्ति को पुनः प्रतिष्ठित करना चाहती थी। सिक्ख डलहौजी की साम्राज्यवादी नीति के विरोधी थे। रानी जिन्दन के साथ अंग्रेजों ने बहुत बुरा व्यवहार	**लार्ड डलहौजी**	**29, march 1849** महाराजा दिलीप सिंह ने पंजाब को ब्रिटिश साम्राज्य में विलय के लिए सम्बंधित समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए।

	किया। भैरोवाल की सन्धि के अनुसार उसे 1 लाख रुपये वार्षिक पेंशन दिया जाना था, जिसे घटाकर केवल 48,000 रुपये वार्षिक निश्चित कर दिया गया। मुल्तान के गवर्नर मूलराज को अंग्रेजों द्वारा अपदस्थ करने के कारण सिक्खों एवं जनता ने विद्रोह कर दिया। अतः डलहौजी ने बहाना लेकर युद्ध की घोषणा कर दी। इसमें कुल तीन युद्ध हुए। • **रामनगर का युद्ध (Nov, 1848)** • **चिलियावाला का युद्ध (Jan, 1849)** • **गुजरात का युद्ध (Feb , 1849)**		इस तरह डलहौजी ने चार्ल्स नेपियर के नेतृत्व में पंजाब को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया , दिलीप सिंह को 5 लाख की वार्षिक पेंशन पर रानी जिंदल के साथ इंग्लैण्ड भेज दिया गया।

Note:-

लाहौर की सन्धि (8 मार्च, 1846)

- इस सन्धि की प्रमुख शर्ते,
  - एक ब्रिटिश रेजीडेण्ट (सर हेनरी लॉरेन्स) को लाहौर में नियुक्त किया गया।
  - सिखों ने सतलुज नदी के दक्षिणी ओर के सभी प्रदेशों को अंग्रेजों को सौंप दिया।
  - लाहौर दरबार पर ₹ 1.5 करोड़ युद्ध का जुर्माना लगाया गया।
  - अंग्रेज़ों ने दिलीप सिंह को महाराजा , रानी जिन्दन को संरक्षिका तथा लालसिंह को वजीर के रूप में मान्यता प्रदान की।
  - लाहौर का आकार सीमित करने के लिए अंग्रेज़ों ने कश्मीर को ₹ 50,000 में गुलाबसिंह को बेच दिया, जिस कारण सिखों ने लाल सिंह के नेतृत्व में पुनः विद्रोह कर दिया।

भैरोवाल की सन्धि (22 दिसम्बर, 1846)

- इस सन्धि की प्रमुख शर्ते,
  - दिलीप सिंह के वयस्क होने तक ब्रिटिश सेना का लाहौर प्रवास निश्चित कर दिया गया
  - लाहौर का प्रशासन आठ सिख सरदारों की एक परिषद् को सौंप दिया गया
  - महारानी जिन्दन को ₹ 48,000 की वार्षिक पेंशन पर शेखपुरा भेज दिया गया।
- **रामनगर का युद्ध (22 नवम्बर, 1848 ई०)**
  - इस युद्ध में जनरल गॉफ के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने रावी नदी पार कर रामनगर के स्थान पर एक अनिर्णायक युद्ध लड़ा।
- **चिलियाँवाला का युद्ध (13 जनवरी, 1849 ई०)**
  - चिलियांवाला के स्थान पर गॉफ के नेतृत्व में एक और अनिर्णायक युद्ध लड़ा गया, परन्तु इस युद्ध में अंग्रेजों को भारी क्षति पहुँची।
- **गुजरात का युद्ध (21 फरवरी, 1849 ई०)**
  - गॉफ के स्थान पर सेना का नेतृत्व चार्ल्स नेपियर को सौंपा गया। उसने तोपों के युद्ध में सिक्खों को परास्त किया और सिक्ख सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया
  - 29 मार्च, 1849 ई० को डलहौजी ने सिक्ख राज्य को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया।
  - महाराजा दिलीप सिंह को पाँच लाख रुपये वार्षिक पेंशन देकर उसे शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैण्ड भेज दिया गया।
  - वहाँ उन्होंने ईसाई धर्म ग्रहण कर लिया बाद में वे पुनः पंजाब लौट आए और अपना धर्म स्वीकार कर लिया।
  - दिलीप सिंह से कोहिनूर हीरा लेकर ब्रिटिश राजमुकुट में लगा दिया गया।
  - पंजाब की प्रशासनिक व्यवस्था तीन सदस्यों की एक कमेटी को सौंपी गई। हेनरी लॉरेन्स को प्रशासनिक व्यवस्था ,जान लारेन्स को भू-राजस्व प्रबन्ध तथा चाल्य मेस्सन को न्याय विभाग का अध्यक्ष बनाया गया। इस तरह पंजाब राज्य ब्रिटिश साम्राज्य का अंग बन गया ।

अवध

❑ सआदत खाँ

- अवध के स्वतंत्र राज्य का संस्थापक सआदत खाँ (बुरहानुलमुल्क) था। उसने फैजाबाद को अपनी राजधानी बनाया। उसे 1722 ई० में अवध का सूबेदार बनाया गया। सआदत खाँ ने सैय्यद बन्धुओं के विरुद्ध षड्यंत्र में भाग लिया। उसे बुरहानुलमुल्क की उपाधि भी मिली। सआदत खाँ ने 1723 ई० में अवध में नया राजस्व बन्दोवस्त लागू किया। यह धार्मिक सहिष्णु शासक था, उसके अनेक सेनापति और उच्च अधिकारी हिन्दू थे। इसने नादिरशाह को दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया तथा उसे 20 करोड रुपये मिलने की आशा दिलाई। जब नादिरशाह ने दिल्ली पर अधिकार करने के बाद उसे बुलवाया तो उसने विष खाकर आत्महत्या कर ली।

❑ सआदत खाँ के उत्तराधिकारी

- सफदरजंग (1739 ई० से 1754 ई०)
- शुजाउद्दौला
- आसफुद्दौला
- वजीर अली (1797 ई० से 1798 ई०)
- सआदत अली खाँ (1798 ई० से 1819 ई०)
- गाजीउद्दीन हैदर अली खाँ (1814-27 ई०)
- अमजदअली (1842-47 ई०)
- वाजिद अली शाह (1847 ई० से 1856 ई०

❑ सफदरजंग (1739 ई० से 1754 ई०)

- मुहम्मद शाह ने एक फरमान द्वारा सफदरजंग को अवध का नवाब नियुक्त कर दिया बाद में इसे 1748 ई० में सम्राट् अहमदशाह ने उसे अपना वजीर नियुक्त किया तथा इलाहाबाद प्रान्त दे दिया। इस कारण उसके उत्तराधिकारी नवाब वजीर कहलाने लगे।
- सफदरजंग ने न्याय की उचित व्यवस्था की। उसने नौकरियों देने में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच निष्पक्षता की नीति अपनाई। उसकी सरकार के सबसे बड़े पद पर एक हिन्दू महाराजा नवाव राय था।
- सफदरजंग ने फर्रुखाबाद के बंगश नवाबों और जाटों के विरुद्ध सैन्य अभियान किये। अन्ततः जयप्पा सिंधिया और मल्हारराव के साथ नवाब ने एक मैत्री सन्धि की।
- 1753 ई. में बादशाह अहमदशाह ने सफदरजंग को वजीर के पद बर्खास्त कर दिया, 1754 ई. में अवध में इसकी मृत्यु हो गई।

❑ शुजाउद्दौला

- सफदरजंग के बाद उसका उत्तराधिकरी उसका पुत्र शुजाउद्दौला बना। इसने 1759 ई. में अलीगौहर (मुगल बादशाह अहमदशाह द्वितीय) को लखनऊ में शरण दी ।
- 1761 ई. में लड़े गये पानीपत के तृतीय युद्ध में शुजाउद्दौला ने अहमदशाह अब्दाली का साथ दिया। 'बक्सर के युद्ध' (1764 ई.) में शुजाउद्दौला ने बंगाल के नवाब का साथ दिया। शुजाउद्दौला ने वारेन हेस्टिम्स में 1773 ई० में बनारस की सन्धि की थी।

❑ आसफुद्दौला (1775 ई० से 1797 ई०)

- इसने अपनी राजधानी फैजाबाद से लखनऊ स्थानान्तरित कर दी। वारेन हेस्टिंग्स से आसफुद्दौला ने फैजाबाद की सन्धि की।

▪ फैजाबाद की सन्धि (1775 ई०)

- इसी सन्धि के तहत बारेन हेस्टिंग्स ने अवध की बेगमों के सम्पत्ति की सुरक्षा की गारण्टी ली थी।
- बाद में वारेन हेस्टिंग्स ने 1781 ई० में फैजाबाद की सन्धि की परवाह न करते हुए जान मिडल्टन को बेगमों से धन वसूलने का आदेश दिया।
- बाद में वारेन हेस्टिंग्स पर इंग्लैण्ड में वर्क ने महाभियोग चलाया था जिसमें एक कारण उसका अवध की बेगमों के साथ दुर्व्यवहार था। आसफुद्दौला ने 1784 ई० में लखनऊ में इमामबाड़ा का निर्माण कराया।

❑ वज़ीर अली(1797-1798)

- यह आसफउद्दौला का पुत्र था।
- इसके चाचा सआदत अली खाँ-II ने अंग्रेजों को अपनी तरफ मिलाकरइसे नवाब के पद से हटा दिया।

❑ **सआदत अली खाँ-II (1798-1814)**

- यह आसफउद्दौला का भाई था।
- सर जॉन शोर की मदद से इसने गद्दी प्राप्त की
- और उसे बहुत-सा धन एवं इलाहाबाद का जिला प्रदान किया।
- 1801 ई० में वैलेजली की सहायक-संधि स्वीकार कर ली।
- जिसमें रुहेलखण्ड, गोरखपुर और गंगा-यमुना का मध्यवर्ती भाग सम्मिलित था, अंग्रेजों को दे दिया।
- लॉर्ड हेस्टिंग्स ने धन लेकर इसे 'राजा' की उपाधि प्रदान किया।

❑ **गाजीउद्दीन हैदर अली खाँन (1814-27)**

- हेस्टिंग्स ने इसे 1815 ई० में 'बादशाह' की उपाधि प्रदान की।

❑ **वाजिद अली शाह (1847 ई० से 1856 ई०)**

- अवध का अन्तिम नवाब वाजिद अलीशाह (1847-1856 ई.) हुआ। इसी के शासनकाल में अवध पर लार्ड डलहौजी ने कुशासन का आरोप लगाकर उसे 1856 ई. में ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया। इसे पेंशन देकर कलकत्ता भेज दिया।

❑ **केरल**

- **राजधानी -** त्रावणकोर
- राज्य को 1729 ई० के बाद राजा मार्तण्ड वर्मा के नेतृत्व में प्रमुखता मिली।

❑ **मैसूर**

- 1565 ई. में तालीकोटा का निर्णायक युद्ध हुआ, जिसने विजयनगर साम्राज्य का अन्त कर दिया।
- इसके अवशेषों पर जिन स्वतन्त्र राज्यों का जन्म हुआ, उनमें मैसूर एक प्रमुख राज्य था।
- इस समय यहाँ वाड्यार वंश का शासन था तथा यहाँ का शासक चिक्का कृष्णराज था।
- लेकिन वास्तविक शक्ति नेजराज और देवराज नामक दो मंत्रियों के हाथो में थी।

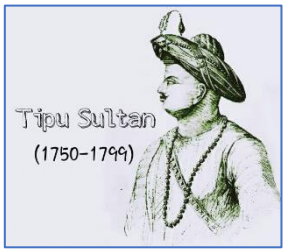

❑ **हैदर अली**

- 18वीं सदी में हैदर अली नामक एक योग्य सेनापति अपनी योग्यता के बल पर मैसूर राज्य का स्वामी बना।
- हैदर अली के युद्ध कौशल से प्रभावित होकर नेजराज ने 1757 ई. में उसे डिण्डीगुल के किले का फौजदार नियुक्त किया।
- फ्रांसीसियों की सहायता से उन्होंने डिण्डीगुल में 1755 ई. में एक आधुनिक शस्त्रागार की स्थापना की।

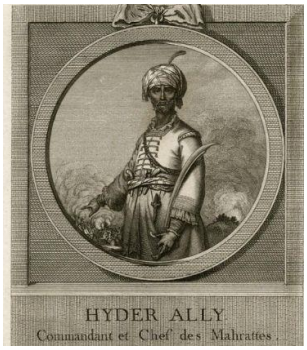

❑ **हैदरअली के शक्ति और राज्य विस्तार में सहायक तत्व -**

- हैदराबाद और कर्नाटक के उत्तराधिकार के युद्ध
- पानीपत की तीसरी लड़ाई में मराठों की पराजय
- दक्षिण में अंग्रेजों व फ्रान्सीसियों की कट्टर शत्रुता

❑ **हैदरअली के शत्रु -**

- मराठा , हैदराबाद के निजाम और अंग्रेज
- 1764 ई० में पेशवा माधवराव ने हैदरअली को एक युद्ध में परास्त किया और 1765 ई0 में हैदरअली को मराठों से सन्धि करके उन्हें अपना कुछ भू-क्षेत्र तथा 28 लाख रुपये प्रति वर्ष देने का वायदा करना पड़ा।
- 1765 ई० में निजाम ने अंग्रेजों की सहायता लेकर हैदरअली पर आक्रमण किया। मराठे भी इस सन्धि में सम्मिलित हो गये।
- 1766 ई० में हैदरअली ने बड़ी बुद्धिमानी से निजाम और मराठों को अपनी ओर मिलाकर मोर्चे को छिन्न-भिन्न कर दिया।
- अब उसे केवल अंग्रेजों से लोहा लेना था।

❑ **टीपू सुल्तान (1782-1799 ई.)**

- 1782 ई. में अपने पिता हैदरअली की मृत्यु के बाद मैसूर की गद्दी पर बैठा।
- टीपू एक पढ़ा लिखा योग्य शासक था।
- इसने अपने नवीन प्रयोगों के अन्तर्गत नई माप-तौल की इकाई और नवीन संवत का प्रचलन करवाया।
- टीपू ने सुल्तान की उपाधि धारणा की तथा 1787 ई. में अपने नाम से सिक्के जारी करवाया।
- टीपू द्वारा जारी सिक्कों पर हिन्दू देवी-देवताओं के चित्र तथा हिन्दू संवत् की आकृतियाँ अंकित थी।
- टीपू ने वर्षों और महीनों के नाम से अरबी भाषा का प्रयोग करवाया।
- इसने अरब, कुस्तुनतुनिया , काबुल और मॉरीशस में दूतमण्डल भेजा।
- टीपू ने 1796 ई. में एक नौसेना बोर्ड का गठन किया।
- टीपू ने जमींदारी व्यवस्था को समाप्त कर सीधे रैय्यत से सम्पर्क स्थापित किया।

Note:-

- चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध के बाद वेलेजली ने कहा 'आज पूरब का साम्राज्य मेरे कदमों पर पड़ा है।
- टीपू सुल्तान ने चांदी के आबिदी , बाकिरी तथा जाफरी नाम के सिक्के चलवाये थे।
- टीपू सुल्तान जैकोबिन क्लब का सदस्य था।
- टीपू सुल्तान ने श्रीरंगपट्टनम् में स्वतंत्रता का वृक्ष लगाया था।

आँग्ल-मैसूर संघर्ष/ Anglo-Mysore conflict

युद्ध/ war	शामिल पक्ष/ parties involved	इसके बारे में/ About this
प्रथम आँग्ल-मैसूर युद्ध (1767- 1769)	हैदर अली - लार्ड वेलेरेस्ट के मध्य	• **युद्ध की कार्यप्रणाली:** 1769 में, पहला आँग्ल-मैसूर युद्ध लड़ा गया था जिसमें हैदर अली ने अंग्रेजों को हराया था। • **निष्कर्ष: मद्रास की संधि (1769)** पर हस्ताक्षर किए गए और हैदर अली ने लगभग पूरे कर्नाटक पर कब्जा कर लिया था
द्वितीय आँग्ल मैसूर युद्ध (1780- 1784)	हैदर अली/ टीपू सुल्तान - वॉरेन हेस्टिंग्स के मध्य	• **युद्ध की कार्यप्रणाली:** वॉरेन हेस्टिंग्स ने फ्रांसीसी पोर्ट माहे पर हमला किया, जो हैदर अली के क्षेत्र में था। हैदर अली ने निजाम और मराठा को जीतकर आर्कोट (कर्नाटक राज्य की राजधानी) पर कब्जा कर लिया। **निष्कर्ष:** जुलाई 1781 में, आयरकूट ने अली को पोर्टो नोवो में हराकर मद्रास को बचाया। दिसंबर 1782 में, हैदर अली की मौत के बाद, उनके बेटे टीपू सुल्तान ने युद्ध किया था। टीपू सुल्तान ने मार्च **1784 में मैंगलोर की संधि** पर हस्ताक्षर किए, जिससे दूसरा आँग्ल-मैसूर युद्ध समाप्त हुआ।
तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1789-1792)	टीपू सुल्तान- लार्ड कॉर्नवालिस के मध्य	**युद्ध की कार्यप्रणाली:** तीसरा युद्ध टीपू सुल्तान और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच लड़ा गया, था यह 1789 में शुरू हुआ और 1792 में टीपू की हार के साथ समाप्त हो गया था। इस युद्ध में, मराठों और निजाम ने अंग्रेजों की सहायता की थी और कॉर्नवालिस ने बैंगलोर पर कब्जा कर लिया था। **निष्कर्ष:** टीपू सुल्तान और लॉर्ड कॉर्नवालिस के बीच **सेरिंगपट्टनम की संधि (1792)** के हस्ताक्षर के साथ युद्ध समाप्त हुआ था। इस संधि में, टीपू ने अपने आधे क्षेत्रों और अपने दो बेटों को युद्ध के बंधक के रूप में खो दिया था।
चतुर्थ आँग्ल मैसूर युद्ध (1799)	टीपू सुल्तान- लॉर्ड वेलेजली के मध्य	**युद्ध की कार्यप्रणाली:** 1799 के चौथे युद्ध में, लॉर्ड वेलेजली के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना ने एक भयंकर युद्ध में टीपू सुल्तान पर हमला किया और टीपू को हरा दिया था।

		निष्कर्ष: उन्होंने अपनी राजधानी सेरिंगपट्टनम की रक्षा करते हुए **4 मई 1799** को वीरगति प्राप्त की। मैसूर ने सहायक संधि मान ली

❑ **बंगाल**

- बंगाल सबसे समृद्ध था। अंग्रेजों ने बंगाल में अपनी पहली कोठी 1651 ई० में शाहशुजा की अनुमति से बनाई।
- शाहशुजा ने ही अंग्रेजों को 3 हजार रुपये वार्षिक के बदले में बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा में मुक्त व्यापार की अनुमति दे दी।
- अजीमुशान ने 1698 ई० में कम्पनी को सुतानाती, कलिकाता तथा गोविन्दपुर की जमींदारी भी मिल गयी।
- 1717 ई० में फर्रुखशियर ने 3 हजार रुपये वार्षिक कर के बदले में अंग्रेजों को व्यापारिक छूट प्रदान की।
- औरंगजेब ने 1700 ई० में मुर्शिद कुली खाँ को बंगाल का दीवान बनाया। 1717 ई० में इसे बंगाल का सूबेदार बना दिया गया। मुर्शिद कुली खां ने ही स्वतंत्र बंगाल की नीव रखी।

❑ **मुर्शिद कुली खाँ (1717-1727 ई०) :-**

- मुर्शिद कुली खाँ ने मुग़ल शासको की कमजोरी का लाभ उठा कर स्वतंत्र बंगाल की स्थपना की। अजीमुस्सान से मतभेद के कारण इन्होने अपनी राजधानी ढाका से मुर्शिदाबाद (मकसूदाबाद) स्थानान्तरित कर दी। 1719 ई० में इसे उड़ीसा भी दे दिया गया। इनके समय में जमीदारों के कुल 3 विद्रोह हुए।
- **पहला विद्रोह -** सीताराम राय उदय नारायण और गुलाम मोहम्मद के नेतृत्व में
- **दूसरा विद्रोह -** शुजात खां के नेतृत्व में
- **तीसरा विद्रोह -** नजात खाँ के नेतृत्व में
- इन्होने भूमि बन्दोबस्त में इजारेदारी प्रथा प्रारम्भ की।

- **Note:-**
- इजारेदारी प्रथा - इस प्रथा की शुरुआत साल 1772 में गवर्नर वॉरेन हेस्टिंग्स ने की थी।
- इस प्रथा के तहत, भूमि राजस्व वसूलने का अधिकार सबसे ज़्यादा बोली लगाने वाले को दिया जाता था।
- यह एक पंचवर्षीय व्यवस्था थी. साल 1777 में, पंचवर्षीय ठेके को वार्षिक कर दिया गया।

❑ **शुजाउद्दीन (1727-1739 ई०)-**

- यह मुर्शिद कुली खाँ का दामाद था।
- उड़ीसा का उप गवर्नर था।
- 1727 ई० में शुजाउद्दीन बंगाल का नवाब बना।
- 1733 ई० में बिहार भी इसके अधीन हो गया।
- इसने अलीवर्दी खाँ को बिहार का नाइब सूबेदार बनाया।
- फतेह चन्द, जगतसेठ, आलमचंद एवं हाजी अहमद खाँ इसके सहायकों में थे।

❑ **सरफराज (1739 ई०)-**

- **उपाधि -** आलम-उद्दौला- हैदर गंज।
- इसके समय में अलीवर्दी खां ने विद्रोह कर दिया।
- 1740 ई० में गिरिया के युद्ध में सरफराज खाँ मारा गया।
- इसके बाद अलीवर्दी खाँ बंगाल का नवाब बना।

❑ **अलीवर्दी खाँ (1740-1756 ई०) –**

- उपाधि - मिर्जा मुहम्मद खां
- इसने मुगल सम्राट् मुहम्मदशाह को 2 करोड़ रुपये घूस देकर अपने पद को स्थाई बनाया।
- मराठो से परेशान होकर अन्ततः मराठा सरदार रघुजी से 1751 ई० में इन्होने सन्धि कर ली।
- इस सन्धि के द्वारा इन्होने मराठों को उड़ीसा प्रान्त और 12 लाख रूपए की वार्षिक चौथ देने की बात स्वीकार कर ली।
- इसने "यूरोपियों की तुलना मधुमक्खियों से की और कहा कि यदि इन्हें न छेड़ा जाए तो शहद देंगी और यदि छेड़ा जाए तो काट-काट कर मार डालेंगी।"
- इसने अंग्रेजो को कलकत्ता और फ्रांसीसियों को चंद्रनगर के किले की किले बंदी नहीं करने दी
- 1756 ई० में इसकी मृत्यु पेचिस से हुई
- इसके बाद सिराजुद्दौला नवाब बना।

❑ **सिराजुद्दौला (1756-1757 ई०)**

- **इसके तीन प्रतिद्वंदी -** नवाब शौकत जंग , उसकी मौसी घसीटी बेगम तथा अंग्रेज
- शौकत जंग को सिराजुद्दौला ने अक्टूबर, 1756 ई० में **मनिहारी के युद्ध** में पराजित करके मार डाला।
- अंग्रेजों ने कलकत्ता और फ्रांसीसियों ने चन्द्रनगर की किलेबन्दी प्रारम्भ की। नवाब के मना करने पर फ्रांसीसी मान गए, किन्तु अंग्रेज नहीं माने।
- 4 जून, 1756 ई० को सिराजुद्दौला ने कासिम बाजार और 20 जून, 1756 ई० को फोर्ट विलियम पर अधिकार कर लिया। कलकत्ता के गवर्नर ड्रेक को फुल्टा द्वीप में शरण लेनी पड़ी तथा हालवेल ने नवाब को समर्पण कर दिया।

ब्लैक होल की घटना (20 जून, 1756 ई०)

- यह एक अंग्रेज अधिकारी हालवेल द्वारा अपनी पुस्तक "अलाइव दा वंडर" में उल्लेखित मनगढ़न्त कहानी है। इसमें हालवेल ने बताया कि नवाब ने 20 जून की रात में 146 अंग्रेज बन्दियों को 18 फुट लम्बी तथा 14 फुट 10 इंच चौड़ी कोठरी में बन्द कर दिया। अगले दिन हॉलवेल सहित मात्र 23 व्यक्ति जिन्दा बचे। यह घटना इतिहास में ब्लैक होल के नाम से प्रसिद्ध है। यह घटना झूठी लगती है क्योंकि इतनी छोटी कोठरी में इतने व्यक्तियों को बन्द करना सम्भव नहीं है। अन्य समकालीन साहित्य में इस घटना का कोई उल्लेख नहीं मिलता। उदाहरण स्वरुप समकालीन मुस्लिम इतिहासकार गुलाम हुसैन ने अपनी पुस्तक 'सियारुल मुत्खैरिन' में इसका कोई जिक्र नहीं किया है।

❑ **अलीनगर की सन्धि**

- **वर्ष -** 9 फरवरी 1757 ई०
- **मध्य -** सिराजुद्दौला और क्लाइव
- **प्रमुख शर्ते -**
- इसी सन्धि के तहत कम्पनी को अपने स्थलों को दुर्गीकृत करने एवं सिक्के ढालने की अनुमति मिल गई।
- मुगल बादशाह द्वारा अंग्रेजों को दी गयी सभी सुविधाओं को नवाब ने स्वीकार कर लिया।
- अंग्रेजों के 'दस्तक' पर बंगाल, बिहार और उड़ीसा की सीमाओं में कोई कर नहीं लिया जायेगा।
- नवाब कम्पनी की सभी वस्तुओं को वापस कर देगा और क्षतिपूर्ति के रूप में 3 लाख रुपये अंग्रेजों को देगा।
  - सिराजुद्दौला की स्थिति को कमजोर होता हुआ देख अंग्रेजो ने इनके विरोधियों मीरजाफर , रायदुर्लभ और जगत सेठ के साथ मिलकर षड्यंत्र रचा। प्लासी का युद्ध इसी संयंत्र का परिणाम था।

प्लासी के युद्ध की पृष्ठभूमि

- क्लाइव ने मानिकचन्द को घूस देकर 2 जनवरी, 1757 ई० को कलकत्ता पर अधिकार कर लिया। 9 फरवरी, 1757 ई० में नवाब ने क्लाइव से अलीनगर की सन्धि कर ली।

❑ **प्लासी का युद्ध**

- **वर्ष -** 23 जून, 1757 ई०
- मुर्शिदाबाद के दक्षिण में कुछ मील की दूरी पर प्लासी नमक गावों में दोनों सेनाये आमने सामने आयी।

- नवाब की ओर से मीर मदान, मोहन लाल एवं कुछ फ्रांसीसी सैनिकों ने भाग लिया। मीर मदान और मोहन लाल वीरगति को प्राप्त हुए।
- नवाब भागकर मुर्शिदाबाद पहुँचा जहाँ मीरजाफर के लड़के मीरन ने मोहम्मद वेग द्वारा उनकी हत्या करवा दी।
- मीर जाफर को बंगाल का नवाब बना दिया गया इतिहासकारों ने इसको क्लाइव के गीदङ की संज्ञा दी।
- **प्लासी के युद्ध के परिणाम-**
- इस युद्ध ने बंगांल में अंग्रेजो साम्राज्य की नींव डाल दी।"
- सर जदुनाथ सरकार के अनुसार - "23 जून. 1757 ई० को भारत में मध्यकालीन युग का अन्त हो गया और आधुनिक युग का शुभारम्भ हुआ।
- कम्पनी को 24 परगने की जमींदारी मिल गई, कम्पनी को कुछ वर्षो के लिए बर्दवान तथा नदिया के कुछ क्षेत्र मिले ।
- इस युद्ध के परिणाम स्वरूप क्लाइव को बंगाल का गवर्नर बना दिया गया।
- प्लासी युद्ध के बाद भी अंग्रेजों का भारत में "वाणिज्यिक स्वरूप" बना रहा।
- **मीरजाफर (1757 ई० से 1760 ई०)**
- प्लासी युद्ध के बाद अंग्रेजों ने मीरजाफर को बंगाल का नवाब बना दिया। ल्यूक सक्राफ्ट्रन को इसके दरबार में अंग्रेज रेजिडेंट नियुक्त किया गया। इसके समय में ही अंग्रेजो ने फूट डालो और शासन करो निति की शुरुआत की।
- मीरजाफर विद्रोहियों को दबा भी नहीं सका जिससे वह अपने आन्तरिक प्रशासन में भी स्वतंत्र नहीं रहा। 1760 ई० को क्लाइव इंग्लैण्ड वापस चला गया।
- मीरजाफर अंग्रेजों की लगातार बढ़ती हुई धन की माँग को पूरा न कर सका , वेन्सिटार्ट बंगाल का स्थाई गवर्नर बना। इसने 1760 ई० में मीरकासिम से समझौता किया, इसी के तहत मीर जाफ़र को गद्दी से हटा दिया गया और 15 हजार मासिक पेंशन पर कलकत्ता भेज दिया गया

❑ **मीरकासिम (1760 ई० से 1763 ई०)**

- मीर कासिम (1760-63 ई०)
- नवाब बनने के बाद 1760 को मीरकासिम ने संधि के अनुसार बर्दवान, मिदनापुर और चटगाँव जिले अंग्रेजों को स्थायी रूप से दे दिये
- अंग्रेजों ने आवश्यकता पड़ने पर मीरकासिम को सैनिक सहायता देने और आन्तरिक मामले में हस्तक्षेप न करने का वचन दिया।
- अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए इसे एक आर्मिनियन अधिकारी गुर्गिन खाँ और एक मुस्लिम अधिकारी मुहम्मद तकी खाँ से सहायता प्राप्त हुयी।
- मीर कासिम ने मुंगेर में तोपों तथा तोड़दार बंदूकें बनाने की व्यवस्था की।
- समरू नामक एक जर्मन को अपना सेनापति, नियुक्ति किया।

अंग्रेजों से संघर्ष

- **नवाब मीरकासिम और अंग्रेजों के मध्य हुए युद्ध**
  - कटवा का युद्ध जुलाई, 1763 ई०
  - गिरिया का युद्ध सितम्बर, 1763 ई०
  - उदयनाला का युद्ध 1763 ई०
  - बक्सर का युद्ध 22 अक्टूबर, 1764 ई०
- **मीरकासिम और अंग्रेजों के बीच संघर्ष होने के कारण -**
- मीरकासिम की राजधानी मुर्शिदाबाद में अंग्रेजों का बहुत प्रभाव था। इसलिए उसने मुर्शिदाबाद के स्थान पर मुंगेर को अपनी राजधानी बनाया और किलेबन्दी की।
- अंग्रेजों को फर्रूखसियर के 1717 के फरमान द्वारा निःशुल्क व्यापार करने का अधिकार प्राप्त था। उन्होंने इसका दुरुपयोग किया। वे भारतीय व्यापारियों से रिश्वत लेकर इसी सुविधा के आधार पर उन्हें व्यापार करवाते थे। इससे राज्य को अधिक हानि हो रही थी।
- मीरकासिम ने कठोर कार्यवाही की और मार्च, 1763 में दो वर्ष के लिए समस्त व्यापारिक करों एवं चुंगियों को समाप्त कर दिया।

- अंग्रेजों ने इसका विरोध किया। जुलाई, 1763 में मीरकासिम के विरुद्ध औपचारिक युद्ध की घोषणा कर दी गयी।

इनके द्वारा किये गए प्रशासनिक सुधार-

(1) उसने सेना के आधुनिकीकरण किया इसके लिए जर्मन अधिकारी "वाल्टर रीन हार्ड"(समरू) को नियुक्त किया

(2) खिजरीजमा कर वसूल किया।

(3) तोपों तथा तोड़दार बन्दूकों को बनाने की व्यवस्था मुंगेर में की।

(4) नये कर उपरिकर लगाए

(5) 1763 ई० में समस्त आन्तरिक व्यापार को कर मुक्त कर दिया। ताकि अंग्रेजों द्वारा दस्तकों के दुरुपयोग न हो सके।

- इनके इन सुधारो से अंग्रेज रुष्ट हो गए और उन्होंने पुनः बंगाल का नवाब बना दिया। इसके बाद मुगल सम्राट शाहआलम द्वीतीय अवध के नवाब शुजाउद्दौला और मीरकासिम ने अंग्रेजो के विरुद्ध गठबंधन बनाया।

❑ बक्सर का युद्ध

- 22 अक्टूबर 1764 ई० को हेक्टर मुनरो के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने इस संयुक्त सेना को पराजित कर दिया। मीरकासिम दिल्ली की ओर भाग गया और वहीं पर उसकी मृत्यु हो गई। शुजाउद्दौला और मुगल सम्राट् शाहआलम द्वितीय ने आत्मसमर्पण कर दिया।
- बक्सर के युद्ध के बाद ही भारत में वास्तविक रूप से ब्रिटिश प्रभुसत्ता स्थापित हुई। 1765 ई० में मीरजाफर की मृत्यु हो गई।

❑ इलाहावाद की प्रथम सन्धि

- **वर्ष -12 अगस्त, 1765 ई०**
- **मध्य -** इस सन्धि पर शाहआलम द्वितीय, बंगाल के नवाव नजमुद्दौला एवं क्लाइव ने हस्ताक्षर किए।
- **इस सन्धि की शर्तें निम्नलिखित थीं-**

(1) बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा की दीवानी कम्पनी को दे दी।

(2) सम्राट् को अवध के नवाब से कड़ा और इलाहाबाद के जिले लेकर दे दिए गए।

(3) मुग़ल सम्राट को 26 लाख रूपए वार्षिक पेंशन के रूप में दिया गया।

(4) अंग्रेजों को उत्तरी सरकार की जागीर मिली।

❑ इलाहाबाद की दूसरी सन्धि

- वर्ष -16 अगस्त, 1765 ई०
- **मध्य -** नवाब शुजाउद्दौला और क्लाइव

इस सन्धि को प्रमुख शर्तें निम्नलिखित थी –

(1) अवध का राज्य कड़ा और इलाहाबाद को छोड़कर नवाब को वापस मिल गया।

(2) कम्पनी को 50 लाख रुपये तथा चुनार का दुर्ग अवध से प्राप्त हुए।

(3) अवध की सुरक्षा हेतु नवाब के खर्च पर एक अंग्रेजी सेना अवध में रखी गई।

(4) अवध में कर मुक्त व्यापार करने की सुविधा कम्पनी को प्राप्त हुई।

(5) अवध के अधीन राजा बलवन्त सिंह को वाराणसी और गाजीपुर में अंग्रेजों की संरक्षिता में अधिकार दिया गया।

❑ नजमुद्दौला (1765 ई० से 1766 ई०)

- यह मीरजाफर के पुत्र थे।
- वेन्सिटार्ट ने अपने संरक्षण में बंगाल का नवाब बनाया।
- यह बंगाल का शासन अपने हाथ में नहीं लेना चाहता था। मुहम्मद रजा खाँ को अपना नायब बनाया।
- 50 लाख की वार्षिक पेंशन नवाब को देकर बंगाल की सत्ता क्लाइव ने अपने हाथ में ले ली।

❑ सैफ-उद-दौला (1766-70 ई0)

- नज़मुदौला के मृत्योपरान्त सैफ-उद-दौला बंगाल का नवाब बना।
- बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा की समस्त जिम्मेदारी अंग्रेजों को सौंप दी।

- अंग्रेजो ने नवाब की पेंशन घटाकर 12 लाख रुपये वार्षिक कर दी।

❑ **मुबारक-उद-दौला (1770-75 ई0)**

- यह बंगाल का अंतिम नवाब था।
- यह 1770 ई० में नवाब बना।
- इसकी वार्षिक पेंशन घटाकर 10 लाख रु० कर दी गई।
- 1775 ई० में वारेन हेस्टिंग्स ने नवाब के पद के अन्त की घोषणा कर दी। बाद में इसकी पुष्टि कलकत्ता सुप्रीम कोर्ट ने भी कर दी।

नोट - मुख्य न्यायाधीश इम्पे ने मुबारक-उद्- दौला को फैन्टम (बेताल) की संज्ञा प्रदान की थी

❑ **बंगाल में द्वैध शासन (1765 ई० से 1772 ई०)**

- क्लाइव ने दोहरी व्यवस्था के अन्तर्गत प्रशासन, राजस्व वसूली तथा दीवानी न्याय अपने पास रखे तथा आन्तरिक शान्ति व्यवस्था फौजदारी न्याय एवं अन्य समस्त प्रशासनिक दायित्व नवाब पर छोड़ दिया अर्थात् क्लाइव ने प्रशासन का अधिकार तो ले लिया, लेकिन उत्तरदायित्व स्वीकार नहीं किया। इसी को 'द्वैध शासन' कहते हैं।
- कम्पनी ने दीवानी कार्य के लिए बंगाल में मो० रजा खाँ बिहार में राजा सिताब राये तथा उड़ीसा में राय दुर्लभ को नियुक्ते को।
- बंगाल में द्वैध शासन की नींव 1765 ई० में क्लाइव ने रखी। वारेन हेस्टिंग्स ने इसे 1772 ई० में समाप्त कर दिया।
- **इस द्वैध शासन के निम्नलिखित दुष्परिणाम सामने आए-**
  - प्रशासनिक अव्यवस्था
  - कृषि का का नुकसान
  - उद्योग तथा दक्षता का पतन
  - भारतीय व्यापार का पतन

Note:-

आलोचना –

- भारतीय इतिहासकार के० एम० पन्निकर ने इस काल को "डाकुओं का राज्य" कहा है।
- विटिश इतिहासकार पर्सीवल स्पीयर ने इसे " बेशर्मी और लूट का काल" माना है।

मराठा साम्राज्य

मराठा उदय के कारक

- **भाषा और साहित्य का प्रभाव :** एकनाथ ने मराठों के मातृ भाषा के गर्व को प्रोत्साहित किया, जिसने मराठों के बीच सामुदायिक भावना और संबंधों को बढ़ाने में मदद की।
- **भौगोलिक परिस्थितियां:** महाराष्ट्र के स्थानिक और अन्य प्राकृतिक विशेषताओं द्वारा मराठा साम्राज्य की सत्ता में वृद्धि हुई थी।
- **प्रबंधन मामलों में प्रशिक्षण:** शिवाजी के सत्ता में आने से बहुत पहले, मराठों ने प्रबंधन मामलों में ज्ञान और प्रशिक्षण हासिल कर लिया था।
- **दक्षिण की अस्थायी राजनीतिक स्थिति:** दक्षिण में मुस्लिम साम्राज्यो की अस्थिर राजनीतिक स्थिति के कारण राजनीतिक वातावरण मराठों के लिए अनुकूल था।
- **शिवाजी की करिश्माई छवि** शिवाजी महाराज से पहले, मराठा परमाणुओं की तरह कई दक्कन साम्राज्यों में विभाजित था। इनका व्यक्तित्व मराठा राज्य के उदय में प्रधान कारण बना। वे एक कुशल सेनानायक थे।
- गुरिल्ला युद्ध: मराठा कठिन इलाके की वजह से काफी हद तक गुरिल्ला युद्ध करने में सक्षम थे।
- **: विद्वानों के परिप्रेक्ष्य**

इतिहासकार ग्रांट डफ की राय थी कि मराठा सह्याद्री पहाड़ों से बाहर जंगली आग की तरह फैले।
ग्रांट डफ ने बाजीराव को उनकी घुड़सवारी, संस्कृत साहित्य, कई खेलों, और गुरिल्ला युद्ध के असाधारण प्रतिभा के लिए "नेपोलियन ऑफ मराठा" की उपाधि से सम्मानित किया था।

मराठों का उत्कर्ष

- शिवाजी के पूर्वज मेवाड़ के सिसौदिया वंश के थे। मराठो का इतिहास महाराष्ट्र के सज्जन सिंह से प्रारम्भ होता हैं माना जाता हैं की 1303 ई० मे अलाउद्दीन खिलजी ने मेवाड़ पर आक्रमण के समय सज्जन सिंह (सुजान सिंह) महाराष्ट्र चले गए। सज्जन सिंह के बाद 5 वीं पीढ़ी उग्रसेन और उनके दो पुत्र कर्ण सिंह और शुभकरण का इतिहास मिलता हैं।
- शुभकरण के वंशज भोसले थे। शुभकरण का पौत्र बालाजी भोसले था इसके दो पुत्र थे मालोजी और विठोजी थे। ये दोनों भाई लखुजी जाधव के अंगरक्षक बन गए। मालोजी पुत्र शाहजी था। मालोजी ने अंगरक्षक की नौकरी छोड़ अहमदनगर के सुल्तान के यहाँ नौकरी कर ली। अहमद नगर के वजीर मलिक अम्बर ने इनको सेना में भर्ती कर लिया तथा इन्हें पुना-सूपा की जागीर दे दी, 1605 ई० को शाहजी का विवाह जीजाबाई के साथ हो गया।
- 1620 ई० में मालोजी की मृत्यु हो गई और शाहजी उत्तराधिकारी हुए।
- 1620 ई० में शाहजी जहाँगीर की सेवा में चले गए। इस प्रकार मराठे पहली बार मुगलों की सेवा में आये ।
- 1627 ई० में शाहजी और जीजाबाई से शिवाजी का जन्म हुआ।

शिवाजी

- **जन्म -** 1627 ई. (शिवनेर, पहाड़ी दुर्ग)
- **पिता-** शाहजी भोसले
- **माता -**जीजाबाई
- **पत्नियां-** सोयराबाई , पुतलीबाई
- **संरक्षक-** कोण्डदेव (दादाजी)
- **राज्याभिषेक-** 1674 ई
- **मृत्यु. -**1680 ई.
- **गुरु -** रामदास राजधानी रायगढ़

शिवाजी के प्रारंभिक सैन्य अभियान

- शिवाजी ने अपना पहला सैन्य अभियान बीजापुर के आदिलशाही राज्य के विरुद्ध किया
- 1643 ई. में सिंहगढ़ का किला जीता।
- 1646 ई. में तोरण तथा मुरुम्बगढ़
- 1647 ई. में कोण्डाना को जीता।
- 1648 ई. में इन्होंने पुरन्दर का किला नीलोजी नीलकण्ठ से जीता
- 1656 में रायगढ़ को अपनी राजधानी बनाया।
- 1656 ई. तक चाकन, चारामती, सूपा, तिकोना तथा लौहगढ़ के किलों पर अधिकार कर लिया।
- 1657 ई. में अहमदनगर तथा जुन्नार पर आक्रमण के समय इन्होंने पहली बार मुगलों (औरंगजेब) का सामना किया।
- 1666 ई. में चन्द्रराव मोरे से जावली का किला जीता

अफजल खाँ से संघर्ष (1659 ई.)

- बीजापुर ने प्रख्यात सरदार अफजल खाँ (मूल नाम - अब्दुल्ला भटारी) को सितम्बर, 1659 में शिवाजी विरुद्ध कार्यवाही करने हेतु भेजा। इसने अपने दूत कृष्णजी भास्कर को भेजकर प्रतापगढ़ के जंगल में मिलने की इच्छा जताई। यहीं शिवाजी को अफजल खाँ के षड्यन्त्र का पता चला।
- शिवाजी के साथ दो अंगरक्षक जीवमहल तथा शम्भूजी कावजी थे। नेताजी पालकर तथा मोरो पिंगले के नेतृत्व में मराठा सेना जंगल में तैयार खड़ी थी ।
- शिवाजी ने गोपीनाथ को दूत बनाकर अफजल खाँ के पास भेजा। अफजल खाँ ने धोखे से शिवाजी की हत्या करने का प्रयास किया, परन्तु शिवा जी ने बघनख से अफजल खाँ की हत्या कर दी और मराठा सेना ने बीजापुर की सेना को बुरी तरह पराजित किया
- अन्ततः बीजापुर के शासक ने शिवाजी को स्वतन्त्र शासक मान लिया।

शाइस्ता खाँ से संघर्ष (मुगलों) (1663 ई.)

- औरंगजेब ने 1663 ई. में अपने मामा शाइस्ता खाँ को दक्षिण का सूबेदार नियुक्त कर शिवाजी को समाप्त करने का आदेश दिया।
- इसने बीजापुर के साथ मिलकर कुछ युद्धों में मराठों के विरुद्ध सफलता भी पाई। उसने पूना, चाकल, कल्याण सहित कई किलों को जीत लिया। परन्तु 15 अप्रैल, 1663 को रात्रि के समय शिवाजी ने शाइस्ता खाँ के पूना शिविर में घुसकर आक्रमण कर दिया, परन्तु वह भाग निकला। लेकिन उसका पुत्र फतह खाँ मारा गया। शिवजी का आक्रमण सफल रहा इससे मुगलो की प्रतिष्ठा में कमी आयी औरंगजेब के पुत्र मुअज़्ज़म को दक्षिण का वायसराय नियुक्त किया गया।

सूरत की प्रथम लूट (1664)

- मराठों ने 1664 ई. में सूरत को प्रथम बार लूटा।
- इसका वर्णन जॉन ऑक्साइडन द्वारा मिलता है।
- इस लूट में शिवजी को लगभग 1 करोड़ रूपए प्राप्त हुए।

पुरन्दर की सन्धि (22 जून, 1665)

- **मध्य** – शिवाजी और कछवाहा सरदार जयसिंह
- आमेर के कछवाहा सरदार जयसिंह को दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया। इसने शिवाजी को सन्धि के लिए बाध्य कर दिया, जो पुरन्दर की सन्धि (22 जून, 1665) के नाम में प्रसिद्ध हुई। इस सन्धि के समय मनूची भी उपस्थित था।
- **संधि की प्रमुख शर्ते** –

➢ शिवाजी को अपने 35 में से 23 किले मुगलों को देने पड़े,

➢ शम्भाजी को मुगल दरबार में 5,000 का मनसब दिया गया

➢ शिवाजी ने मुगलों की ओर से बीजापुर के विरुद्ध युद्ध एवं सेवा करने का वचन दिया।

शिवाजी और औरंगजेब की भेट(1666 ई.)

- शिवाजी औरंगजेब से मिलने आगरा पहुँचे, किन्तु वहाँ इनका औरगजेब से विवाद हो गया। इसके पश्चात् इन्हें जयपुर महल में बन्दी बना लिया गया। रामसिंह (जयसिंह का पुत्र) ने इनकी सुरक्षा की गारण्टी ली थी, परन्तु ये अपने हमशक्ल होरजी-फर्जन्द को अपने स्थान पर लिटाकर भाग निकले।
- 1666 को रायगढ़ पहुँच कर इन्होने दक्षिण के सूबेदार मुअज्जम के माध्यम से सन्धि प्रस्ताव रखा, जिसे औरंगजेब ने स्वीकार (1668 ई.) कर लिया।
- औरंगजेब ने इन्हें राजा की उपाधि दी , बीजापुर और गोलकुंडा से चौथ वसूलने का अधिकार दे दिया गया। और इनके पुत्र शम्भाजी को मनसब प्रदान किया तथा बरार में एक जागीर दी।

सूरत में दूसरी लूट(1670)

- इस लूट में शिवजी को लगभग 66 लाख रूपए और सोने की पालकी प्राप्त हुए।

Second loot in Surat(1670)

- In this loot Shivaji got about 66 lakh rupees and a golden palanquin.

शिवाजी का राज्याभिषेक

- 16 जून. 1674 को
- रायगढ़ किले में
- **विद्वान-** काशी के प्रसिद्ध विश्वेश्वर भट्ट / गंगा भट्ट ने किया।
- इस अवसर पर हेनरी ऑक्साइडन उपस्थित था।
- उपाधि - हैन्दव धर्मोद्धारक, गौब्राह्मण प्रतिपालक, छत्रपति की उपाधि ली
- इसमें पहले यज्ञोपवीत, तुलादान, पुनर्विवाह (इनकी दूसरी पत्नी सोयराबाई के साथ हुआ)
- इस अवसर पर नया संवत चलाया।
- सोने और चांदी के सिक्के जारी किये और सिक्को पर "श्री शिवा छत्रपति लिखवाया"

शिवजी का दूसरा राजभिषेक

- सितम्बर 1674
- तांत्रिक तरीके से संपन्न
- **विद्वान-** निश्चलपुरी गोसाई
- अंतिम अभियान- 1677 कर्नाटक का अभियान इनका अंतिम अभियान था। इसका उद्देश्य बीजापुर के आदिलशाही राज्य पर अधिकार करना था। शिवाजी ने दो मंत्रियों मदन्ना और अख़न्ना की सहयता से गोलकुंडा के सुल्तान से एक गुप्त संधि की।
- इस अभियान में शिवाजी ने जिंजी (1678ई) मदुरई , बेल्लोर आदि किले जीत लिए। जिंजी दक्षिणी क्षेत्रो की राजधानी बनाया। यह उनको अन्तिम विजय थी।

शिवाजी का प्रशासन

शिवाजी के प्रशासन का आदर्श प्राचीन हिन्दू सिद्धान्तों पर आधारित था। शिवाजी राज्य के सर्वोच्च अधिकारी थे। 'छत्रपति' उनकी उपाधि थी। समस्त शक्तियाँ राजा के हाथों में केन्द्रित थीं।

उनका साम्राज्य दो भागों में विभक्त था –

1. स्वराज - महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिलनाडु सम्मिलित
2. मुल्क-ए- कादिम -

केंद्रीय प्रशासन

राजा की सहायता और परामर्श के लिए 8 मंत्रियों की एक परिषद् होती थी जिसे अष्टप्रधान कहा जाता था।

अष्टप्रधान की विशेषता

- प्रत्येक मंत्री अपने विभाग का प्रमुख था।
- प्रत्येक मंत्री शिवाजी द्वारा नियुक्त होता था।
- सभी शिवाजी के प्रति उत्तरदायी था।
- मंत्रियों को कोई विशेष स्वतंत्र अधिकार नहीं थे।
- ये मंत्री शिवाजी के उच्च सचिव के समान थे।
- मंत्रियों से परामर्श लेने के लिए शिवाजी बाध्य नहीं थे।
- मंत्री के पद आनुवंशिक नहीं नहीं थे।
- शिवाजी हमेशा अष्टप्रधान के संयुक्त निर्णय को मानते थे।

अष्टप्रधान मंत्री

(1) पेशवा अथवा मुख्य प्रधान -

- यह राजा का प्रधान मंत्री होता था।
- इसका कार्य सम्पूर्ण राज्य के शासन तथा राजा की अनुपस्थिति में उसके कार्यों की देखभाल करना भी था।
- सभी सरकारी दस्तावेजों पर राजा के हस्ताक्षर के नीचे इसकी मुहर एवं हस्ताक्षर आवश्यक थे।

(2) अमात्य (मजमुआदार) –

- यह वित्त एवं राजश्व अर्थमंत्री था। इसका कार्य राज्य की आय और व्यय की देखभाल करना तथा राजा को उससे अवगत कराना था।
- **उदाहरण :-** शिवाजी के अमात्य रामचन्द्र पंत थे।

(3) मंत्री (वाकयानवीस) –

- यह दरबारी लेखक होते थे
- राजा के दैनिक कार्यों को लेखबद्ध करता था।
- गुप्तचर एवं सूचना विभाग के कार्यों को देखभाल भी करता था।
- इसका पद आज के गृहमंत्री के समान था।

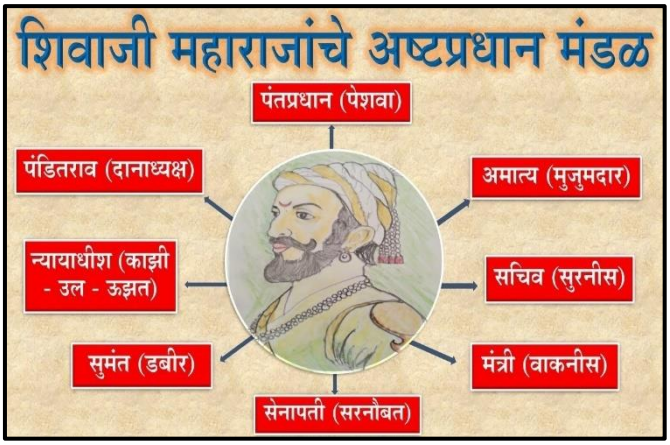

(4) सुमंत (दवीर)

- यह राज्य का विदेश मंत्री था।

(5) सचिव (शुरुनवीस या चिटनिस)

- यह पत्राचार विभाग से सम्बन्धित था।
- यह राज्य के सचिवालय का प्रभारी होता था।
- इसका मुख्य कार्य सरकारी दस्तावेजों को तैयार करना था।
- परगनो के हिसाब की जाँच करना

(6) सेनापति (सर-ए-नौबत)

- यह सेना का प्रमुख अधिकारी था।
- इसका प्रमुख कार्य सेना की भर्ती, संगठन, उनकी आवश्यकता की पूर्ति करना था।

(7) न्यायाधीश

- यह राजा के बाद राज्य का मुख्य न्याय अधिकारी था।
- इसका प्रमुख कार्य दीवानी एवं फौजदारी मुकदमों का हिन्दू कानून के आधार पर न्याय करना था।

(8) पंडितराव (सद्र)

- धार्मिक मामलों का मुख्य सलाहकार था।

- समारोह या त्यौहारों में मुख्य पुजारी के रूप में कार्य करता था।
- इसका कार्य राजा की तरफ से ब्राह्मणों को दान देना, धार्मिक कार्यों को निश्चित करना तथा प्रजा के नैतिक चरित्र को सुधारना था।

अष्टप्रधान- अन्य तथ्य

- सेनापति के अतिरिक्त प्रायः सभी मंत्री ब्राह्मण होते थे
- न्यायाधीशों तथा पंडितराव को छोड़कर बाकि सभी सैन्य संचालन के लिए बाध्य थे।
- प्रत्येक मंत्री के अधीन आठ अधिकारियों का कार्यालय होता था
- जिसमे - दीवान, मजमुआदार, फड़निस, सेबनिस , कारखानिस, चिटनिस, जमादार , पोटनिश होते थे।

प्रान्तीय प्रशासन

शिवाजी ने अपने राज्य को 5 भागों में बाँटा था। इन्हें प्रान्त या सरसूबा कहा जाता था। शिवाजी अपने क्षेत्र को 'स्वराज' कहते थे।
प्रान्त के सर्वोच्च अधिकारी को सरे-कारकुन कहा जाता था। इसकी नियुक्ति शिवाजी करते थे।

शिवाजी के समय में मराठा राज्य –

राज्य	**अधीन**
उत्तरी प्रान्त	पेशवा मोरो त्रयम्बक पिंगले
दक्षिण-पश्चिमी प्रान्त	अन्ना जी दत्तो
दक्षिण पूर्वी प्रान्त	दत्तो जी पन्त
दक्षिण प्रान्त	रघुनाथ पन्त हनुमन्तै

प्रांतीय प्रशासन- इकाई एवं अधिकारी

इकाई	**अधिकारी**
प्रान्त	सूबेदार
महालों	सरहवलदार
तर्कों	हवलदार
मौजो	कारकुन
गाँव	पटेल , पाटिल

भू-राजस्व व्यवस्था

शिवाजी की भू-राजस्व व्यवस्था रैयतवाड़ी प्रथा पर आधारित थी, यह व्यवस्था द्वारा अपनायी गयी थी। शिवाजी ने अन्ना जी दत्तो के अधीन भूमि की माप करवाई। माप का आधार जरीब थी, जिसे काठी कहा जाता था। 120 बीघे को चावर कहा जाता था।

उपज के आधार पर भूमि का विभाजन- उत्तम, मध्यम एवं निम्न

- प्रारम्भ में उपज का 1/3 भाग भूमिकर के रूप में लिया जाता था। बाद में शिवाजी ने अन्य स्थानीय करों व चुंगियों को समाप्त कर दिया इसे बढ़ाकर 2/5 (40%) भाग कर दिया।
- बंजर भूमि पर कर नहीं लिया जाता था। उद्यान भूमि या नकदी फसल उत्पन्न करने वाली भूमि से कर नकद में लिया जाता था
- शिवाजी जमींदारी (देशमुखी) व्यवस्था को समाप्त नहीं कर पाए, न ही अधिकारियों को जागीरें देना वन्द किया।
- शिवाजी कृषि को प्रोटक्शन देने के लिए तकाबी ऋण भी देते थे

चौथ के विषय में विद्वानों के भिन्न मत हैं -

- रानाडे के अनुसार 'चौथ' सैन्य-कर था,
- सरदेसाई के अनुसार 'चौथ' विजित क्षेत्रों से वसूल किया जाने वाला कर था।'
- यदुनाथ सरकार के अनुसार 'चौथ' मराठा आक्रमण से बचने के लिए दिया जाने वाला कर था।
- **चौथ -** इस प्रकार चौथ विजित राज्यों के क्षेत्रों में उपज के एक चौथाई कर के रूप में वसूल किया जाता था।

- **सरदेशमुखी** – यह अतिरिक्त कर था जो आय का 10 प्रतिशत था।
  - शिवाजी के अनुसार सरदेशमुखी लेना उनका अधिकार है।
  - यह कर शिवाजी उस क्षेत्र के सबसे बड़े देशमुख (सरदेशमुख) होने के नाते लेते थे।
  - गुमाश्ता नामक अधिकारी द्वारा वसूला जाता था।
- **मोकासा-** मराठा सरदारों को दी जाने वाली जागीर थी
- **मिरासपट्टी या सिंहासन पट्टी -** यह उपकर था।
- **पतदाम -** विधवा पुनर्विवाह पर लगने वाला कर था।
- **पोलपट्टी -** जमींदारो पर उनके द्वारा युद्ध में लुटे गए धन पर लगने वाला कर था।
- **बाबती -** यह राजा को दिया जाता था जो चौथ की आय का 1/4 भाग था
- **सहोत्रा -** यह सचिव को दिया जाता था जो चौथ की आय का 6 % भाग था
- **नादगुण्डा -** यह राजा की इच्छा पर निर्भर होता था जो चौथ की आय का 3 % भाग था

सैन्य-प्रशासन

शिवाजी के सैन्य-प्रशासन विभिन्न विभागों में विभाजित था –

- दुर्ग, तोपखाना, नौ-सेना, घुड़सवार सेना एवं पैदल-सेना सम्मिलित थी।

दुर्ग-सैन्य –

- सैन्य-प्रशासन में दुर्गों का काफी महत्व था। शिवाजी के पास 240 या 250 दुर्ग थे।

दुर्ग अधिकारी		
अधिकारी	**उत्तरदायित्त्व**	**जाति**
हवलदार	किले की सुरक्षा व्यवस्था	मराठा
सूबेदार	किले के नागरिक प्रशासन	ब्राह्मण
कारकुन	गोदाम का अधिकारी	कायस्थ

तोपखाना

- शिवाजी का एक छोटा तोपखाना था।
- जिसमें लगभग 200 तोपें थीं।
- तोपों की खरीद फ्रांसीसियों, पुर्तगालियों तथा अंग्रेजों से गई थीं।

नौसेना

- शिवाजी के पास नौसेना भी थी।
- शिवाजी के नौ-सैनिक अड्डे- कोलाबा, कल्याण और भिवण्डी

अश्वारोही सेना

- अश्वारोही सेना के संगठन को पागा कहा जाता था।
- इसमें दो प्रकार के सैनिक होते थे- बरगीर एवं सिलेदार।

- **बरगीर** –
  - वे घुड़सवार सैनिक थे, जिन्हें राज्य की ओर से घोड़े और शस्त्र दिए जाते थे। ये नियमित वेतन भी प्राप्त करते थे।
- **सिलेदार**
  - वे घुड़सवार सैनिक थे, जो अपना अस्त्र-शस्त्र स्वयं रखते थे। इन्हें लूट के माल में हिस्सा भी दिया जाता था।

अश्वारोही सेना का पदक्रम	
क्रम	**अधिकारी**
25 घुड़सवार	हवलदार
5 हवलदार	जुमलादार
10 जुमलादार	एक हजारी
5 एक हजारी	एक पंचहजारी

सैन्य अधिकारी

- **सर-ए-नौबत**
  - सेना का सर्वोच्च अधिकारी होता था।
  - ये मराठा तथा सबनीस ब्राह्मण होते थे।
- **सबनिस**
  - यह ब्राह्मण जाति का होता था
  - इनके द्वारा किले के अन्दर असैनिक शासन
- **हवलदार**
  - इनके अधीन पहाड़ी दुर्ग होते थे।
  - इनका प्रमुख कार्य किले के आन्तरिक प्रशासन को देखना था।

पैदल सेना

पैदल सेना का पदक्रम	
क्रम	**अधिकारी**
9 सैनिकों	नायक
10 नायकों	हवलदार
3 हवलदारों	एक जुमलादार
10 जुमलादारों	एक हजारी

- पैदल सेना को पाइक कहा जाता था।
- इसका सबसे बड़ा पद सात हजारी का होता था।
- पैदल सेना का सबसे बड़ा अधिकारी सरे-नौबत होता था।

अन्य तथ्य-

- सेना में हिन्दू और मुसलमान दोनों ही होते थे।
- युद्ध में ब्राह्मणों, स्त्रियों आदि का सम्मान किया जाता था।
- सैनिक अभियानों के समय परिवार के सदस्यों को साथ रखना मना था।

शिवाजी का न्याय प्रशासन

- शिवाजी की न्याय निष्पक्षता पर अधारित था।

- धर्मशास्त्र के सिद्धान्तों के आधार पर निर्णय दिया जाता था।
- सर्वोच्च न्यायाधीश शिवाजी स्वयं थे। वे न्यायाधीश एवं पंडितराव की सहायता से निर्णय देते थे।
- न्यायालय 'धर्म-सभा' या 'हुजूर-हाजिर मजलिस' कहा जाता था।
- शिवाजी के नीचे न्यायाधीश का न्यायालय होता था।
- प्रान्त एवं महाल स्तर पर न्यायालय के लिए 'मजलिस' होता था, जिसे 'सभा' कहा जाता था।
- गाँवों में न्याय पंचायत करती थी।

धार्मिक नीति

- शिवाजी धर्म-सहिष्णु शासक थे।
- सभी धर्मो के साथ उनका व्यवहार उदार रहा।
- उनकी सेना एवं नौ-सेना में भी मुसलमानों को बड़े पद दिए गए थे।
- प्रसिद्ध इतिहासकार खाफी खॉ ने भी, जो उनका कटु आलोचक था, उनकी धार्मिक नीति की प्रशंसा की है।

मराठा साम्राज्य के विषय में विद्वानों में विभिन्न मत	
सर जदुनाथ सरकार	"मध्ययुगीन राजतंत्र की एक अनोखी घटना बताया है।
स्मिथ	"डाकू राज्य"

शिवाजी के उत्तराधिकारी

- शम्भाजी (1680-89 ई०)
- राजाराम (1689-1700 ई०)
- ताराबाई (1700-1707 ई०)
- अहमदशाह शाहूजी (1707-1749 ई०)
- राजाराम II (1749-50 ई०)

शिवाजी की मृत्यु के बाद मराठा साम्राज्य में आन्तरिक फूट पड़ गई। शिवाजी की दो पुत्र शम्भाजी एवं राजाराम के बीच उत्तराधिकार का विवाद उठ खड़ा हुआ। अन्त में राजाराम को गद्दी से उतारकर शम्भाजी 1680 ई० को सिहासनारूढ़ हुए।

❑ शम्भाजी (1680-89 ई०)

- **जन्म** - 1657 ई० में
- **माँ** - सईबाई
- **गुरु** - केशव भट्ट , उमाजी पंडित
- **पत्नी** - येसूबाई
- **पुत्र** - शाहू
- **राजधानी** -रायगढ़
- शिवाजी की मृत्यु के समय ये पन्हाला के किले में कैद थे, बाद में इन्हें छोड़ दिया गया। 1681 ई० में इनका राज्याभिषेक हुआ इसका पूरा शासनकाल षड्यंत्रों और विद्रोह से घिरा रहा।
- मराठा नायकों के प्रति अविश्वास के कारण शम्भा जी ने उत्तर भारतीय ब्राह्मण कवि कलश को प्रशासन का सर्वोच्च अधिकार नियुक्त किया
- इस प्रकार शम्भाजी के समय में अष्ट-प्रधान में विघटन हो गया।

- 1681 ई० को शम्भाजी औरंगजेब के पुत्र अकबर को शरण दी।
- 1689 ई० में औरंगजेब ने शम्भाजी एवं कविकलश की हत्या करवा दी।
- शम्भाजी की हत्या के बाद 'राजाराम' पुनः राजा हुआ।

❑ **राजाराम (1689-1700 ई०)**

- 1689 ई० में रायगढ़ में उनका राज्याभिषेक किया गया।
- राजाराम ने अपने को शाहू का प्रतिनिधि माना और गद्दी पर नहीं बैठा।
- 1689 ई० में औरंगजेब ने रायगढ़ पर अधिकार कर लिया तो राजाराम ने जिजी में शरण ली।
- 1691 ई० में मुगलों ने जुल्फिकार खाँ के नेतृत्व में जिजी का घेरा डाल दिया। 8 वर्षों तक राजाराम जिंजी के किले में कैद रहा।
- 1699 सतारा को मराठो की राजधानी बनाई
- 1700 ई० में सतारा में इनकी मृत्यु हो गई।
- इसने प्रतिनिधि नामक एक नए पद की नियुक्ति की थी।

❑ **ताराबाई (1700-1707 ई०)**

- राजाराम की मृत्यु के बाद उनकी विधवा रानी ताराबाई अपने अल्पवयस्क पुत्र शिवाजी-II के नाम से सिंघासन पर बैठी।
- इनके समय में मराठों का पुनः उत्कर्ष हुआ।
- 1707 ई० में औरंगजेब की मृत्यु हो गई
- शाहू जी को कैद से रिहा कर दिया गया।

❑ **शाहूजी (1707-1749 ई०)**

- ये शम्भाजी के पुत्र थे।
- **राजधानी-** सतारा
- **राज्याभिषेक -** 1708 ई०
- **नया पद -** सेनाकर्ते (सेना को संगठित करने वाला)
- **पहला सेनाकर्ते -** बालाजी विश्वनाथ
- **खेड़ा का युद्ध -** 1707 ई० में खेड़ा नामक स्थान पर शाहूजी और ताराबाई की सेना में युद्ध हुआ।
- बालाजी विश्वनाथ की मदद से ताराबाई की पराजय हुई
- ताराबाई भागकर दक्षिणी महाराष्ट्र चली गयी।
- 1708 ई. में शाहू ने सतारा पर अधिकार कर लिया अब मराठा राज्य दो उपराज्यो में बट गया उत्तर में सतारा जो शाहू के अधीन था तथा दक्षिण में कोल्हापुर जो शिवाजी-II के अधीन था।
- यह आपसी संघर्ष तब समाप्त हुआ जब शिवाजी-II की मृत्यु हो गयी और राजाराम का पुत्र शम्भाजी-IIगद्दी पर बैठा।
- 1731 ई० में इन दोनों के मध्य "वारना की संधि" से यह संघर्ष समाप्त हुआ। इस संधि में यह व्यवस्था की गई कि शम्भाजी-II दक्षिणी भाग की राजधानी कोल्हापुर में शासन करे तथा शाहू जी उत्तरी भाग की राजधानी सतारा में शासन करे।
- पेशवा के पद पर बालाजी की नियुक्ति के साथ ही यह पद वंशानुगत हो गया और बालाजी तथा उनके उत्तराधिकारी राज्य के वास्तविक शासक बन गए।

❑ राजाराम II (1749-50 ई०)

- 1750 ई० में राजाराम II मराठा शासक बना। इसने पेशवा बालाजी बाजीराव के साथ **"संगोला की सन्धि"** की। इस संधि के अनुसार, मराठा संगठन का वास्तविक नेता पेशवा बन गया।

मराठों की प्रमुख संधियाँ		
सन्धि	**वर्ष**	**किनके-किनके मध्य**
पुरन्दर की सन्धि	1665	जयसिंह एवं शिवाजी
संगोला की सन्धि	1750	बालाजी बाजीराव एवं राजाराम -II
झलकी की सन्धि	1752	बालाजी एवं हैदराबाद के निजाम
गक्षस भुवन की संधि	1763	माधवराव तथा हैदराबाद के निजाम
सूरत की सन्धि	1775	रघुनाथ राव (राघोवा) एवं अंग्रेजों
पुरन्दर की सन्धि	1776	माधवराव नारायण एवं अंग्रेजों
बड़गाँव की सन्धि	1779	माधवराव नारायण एवं अंग्रेजों
सालबाई की सन्धि	1782	माधवराव नारायण एवं अंग्रेजों
बेसीन की सन्धि	1802	बाजीराव द्वितीय एवं अंग्रेज
देवगाँव की सन्धि	17 December, 1803	भोसलें एवं अंग्रेज
सुर्जी-अर्जुन गाँव की सन्धि	30 December, 1803	सिंधिया एवं अंग्रेज
पूना की संधि	1817	बाजीराव द्वितीय एवं अंग्रेज
मन्दसौर की सन्धि	1818	होल्कर एवं अंग्रेज

पेशवा का इतिहास/ History of Peshwa

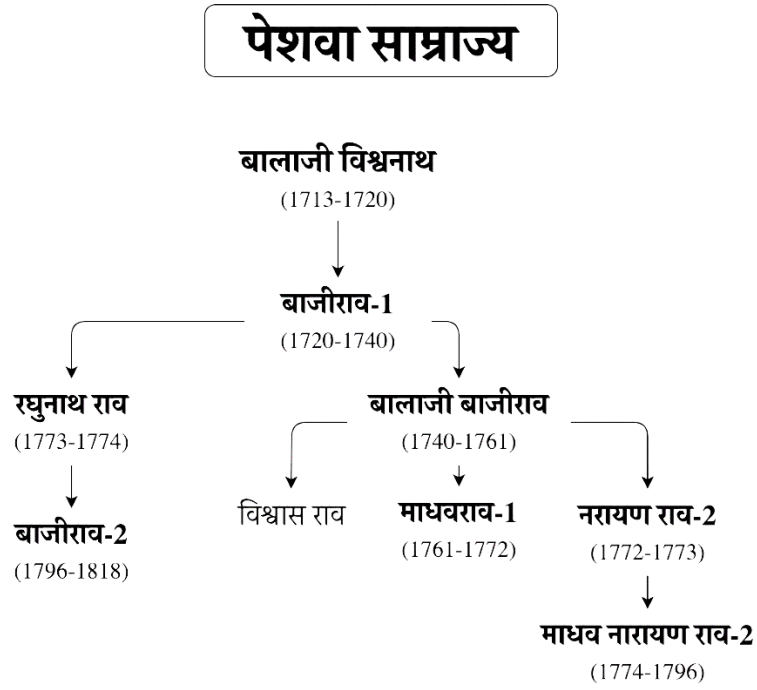

❑ बालाजी विश्वनाथ (1713-20)

- यह मराठा साम्राज्य का द्वितीय संस्थापक माना जाता है। 1708 ई० में शाहू ने इन्हें सेनाकर्ते और 1713 ई० में इन्हें पेशवा नियुक्त किया।
- **दिल्ली की संधि :-** 1719 ई० में मुगल बादशाह की ओर से सैय्यद हुसैन अली और मराठों के मध्य हुयी।

- **इस सन्धि के अनुसार की प्रमुख शर्ते -**
  - शिवाजी के स्वराज के अंतर्गत आने वाले सभी प्रदेश और दुर्ग शाहू को दे दिए गए।
  - दक्षिण भारत के 6 सूबों से चौथ और सरदेशमुखी वसूल करने की अनुमति दे दी गई।
  - चौथ के बदले में शाहू मुगलो को 15000 सैनिकों की सहायता प्रदान करेगा।
  - शाहू , मुगल बादशाह को प्रतिवर्ष 10 लाख रुपये वार्षिक भेट के रूप में प्रदान करेगा।
  - मुग़ल सम्राट शाहू की माता , पत्नी ,भाई तथा अन्य सम्बन्धियों को कैद से मुक्त कर देगा।
  - रिचर्ड टेम्पल ने इस सन्धि को मराठों का 'मैग्नाकार्टा' कहा है।
- **मृत्यु -** 1720 ई.

❑ **बाजीराव-I (1720-40 ई०)**

- बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र बाजीराव पेशवा बना।
- **बाजीराव के समक्ष कठिनाईयां -**
  - स्वराज का एक भाग जंजीरा के सिद्दियों के अधीन होना।
  - शिवाजी के वंशज शाहू की सर्वोच्च सत्ता को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे
  - मराठा सरदार स्वायत्तता प्राप्त करना चाहते थे।
- बाजीराव-। अपनी योग्यता तथा सूझबूझ के बल पर इन कठिनाइयों पर विजय पाने में सफल रहे।

❑ **बाजीराव-। के विजय अभियान**

- **निजाम से सम्बन्ध -** निजामुलमुल्क आसफजाह ने कोल्हापुर गुट को प्रोत्साहित कर मराठों के बीच फूट डलवाने का प्रयत्न किया।
- बाजीराव-। ने 1728 ई० को पालखेड़ के युद्ध में निजाम को पराजित किया तथा **शिवागाँव की सन्धि (1728)** की।
- **इस संधि की प्रमुख शर्ते -**
  - निजाम, शाहू को चौथ तथा सरदेशमुखी का शेष धन देंगे
  - शम्भूजी को सहायता न देना
  - विजित प्रदेश पेशवा को लौटाना होगा।
  - निजाम ने शाहू की अधीनता स्वीकार कर ली।
- निज़ाम ने अपनी हार स्वीकार नहीं की और मराठो में फुट डालने का प्रयास करते रहे 1737 में निज़ाम ने मुग़ल सम्राट मोहम्मद शाह के साथ मिलकर एक बड़ी सेना तैयार की लेकिन बाजीराव ने निज़मो को हरा दिया और 1738 में **दुरई -सराय की संधि** हुयी
- **जिसकी प्रमुख शर्ते थी -**
  - मालवा , नर्मदा और चम्बल नदी के बीच का क्षेत्र बाजीराव को दे दिया गया।
  - 50 लाख रूपए बाजीराव को दिए गए।

❑ **गुजरात विजय**

- गुजरात से भी मराठे चौध और सरदेशमुखी वसूल करते थे।
- शाहू ने गुजरात से कर वसूलने का भार मराठा सेनापति त्र्यम्बक राव दाभादे को दे दिया। परन्तु, दाभादे महत्वकाँक्षी था वह इससे सन्तुष्ट न था और वह मालवा तथा गुजरात की संयुक्त चौथ पर अधिकार चाहता था। उसने निजाम से मित्रता भी कर ली। 1731 ई० में बाजीराव ने त्र्यम्बक राव के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही आरम्भ कर दी।
- डभोई के युद्ध (1731 ई०) में त्र्यम्बक राव मारा गया
- उनके स्थान पर "पिलाजी गायकवाड़" का अधिकार गुजरात में स्थापित किया गया। अन्त में, 1738 ई० में गुजरात मराठा राज्य में मिला लिया गया।

❑ मालवा विजय

- मालवा उत्तर भारत तथा दक्कन को जोड़ता था। दक्कन तथा गुजरात को जाने वाले महत्वपूर्ण व्यापार मार्ग यहाँ से गुजरते थे।
- बालाजी विश्वनाथ ने 1719 ई० में मालवा से चौथ प्राप्त करने का प्रयास किया परन्तु असफल रहे।
- 1728 ई० में मालवा पर आक्रमण किया गया।
- यहाँ के सूबेदार गिरधर बहादुर को "अमझेरा के युद्ध" में पराजित किया गया।
- ऊदाजी पवार तथा मल्हारराव होल्कर ने आक्रमणों से मुगल सत्ता की जड़ें उखाड़ डाली।

❑ बुन्देलखण्ड की विजय

- बुन्देलखण्ड इलाहाबाद की सूबेदारी में था। जब मुहम्मद खाँ बंगश इलाहाबाद का सूबेदार नियुक्त हुआ तो उसने बुन्देलों को समाप्त करने की ठानी, उसने जैतपुर जीत भी लिया। बुन्देल नरेश छत्रसाल ने मराठों से सहायता मांगी। 1728 ई० में मराठों ने बुन्देलखण्ड के सभी विजित प्रदेश मुगलों से वापस छीन लिए तथा छत्रशाल को वापस कर दिए।
- छत्रसाल ने पेशवा की शान में एक दरबार का आयोजन किया, दरबार में एक मुस्लिम नर्तकी 'मस्तानी' को पेश किया तथा काल्पी, सागर, झाँसी तथा हृदयनगर पेशवा को निजी जागीर के रूप में भेंट किया।

❑ दिल्ली अभियान -

- बाजीराव 29 मार्च, 1737 ई० को 500 घुड़सवारो के साथ दिल्ली पहुँचा। वहाँ केवल 3 दिन ठहरा तथा 31 मार्च को मालवा की सूबेदारी और 13 लाख की वार्षिक नकद धनराशि की अदायगी का आश्वासन दिए जाने पर वह वहाँ से हट गया।
- 1737 ई० में ही मुगल बादशाह ने निजाम को मराठों के विरुद्ध भेजा। बाजीराव ने भोपाल के निकट निजाम को घेर लिया और ऐसी स्थिति पैदा कर दी कि उसे बिना युद्ध के 7 जुलाई, 1738 ई० को 'दुरई सराय की संधि' के लिए विवश होना पड़ा।

❑ बसीन की विजय-

- यह यूरोपीय शक्ति के विरुद्ध मराठों की महानतम विजय थी।इस विजय में मराठो को बसीन एवं साल्सेट प्राप्त हुआ।
- इस क्षेत्र से प्राप्त राजस्व की राशि 2.5 लाख रुपये प्रतिवर्ष थी।
- पुर्तगालियों पर विजय से मराठो की सर्वोच्चता सिद्ध हो गयी।

❑ नासिरजंग के खिलाफ अभियान :-

- बसीन विजय के पश्चात् पेशवा ने निजामुलमुल्क के पुत्र तथा नायब नासिरजंग के खिलाफ अभियान किया क्योंकि उसने निजाम के साथ हुई संधि के दावों को अस्वीकार कर दिया था।
- 1740 में नासिरजंग के साथ मुंगी-पैठन की संधि की जिसकी प्रमुख शर्ते थी - एक दूसरे के अधिकृत प्रदेश पर अधिकार न करना, शांति बनाये रखना।
- इस प्रकार बाजीराव ने सभी समस्याओं का हल निकाला और मराठा-शक्ति को पहली बार उत्तर-भारत के विस्तृत और उपजाऊ भू-प्रदेश में फैला दिया।अपने बीस वर्ष के शासनकाल में पेशवा बाजीराव ने मराठों को भारत की सर्वश्रेष्ठ शक्ति बना दिया। अपने जीवन के अन्तिम दिनों में पेशवा ने मुगल सूबों को मराठा सरदारों के प्रभाव क्षेत्र में विभाजित कर दिया। जो गायकवाड़ , सिंधिया , भोसले तथा होल्कर थे।

❑ बालाजी बाजीराव (1740-61 ई०)

- पेशवा बाजीराव का 40 वर्ष की अल्पायु में ही निधन हो गया। उनके बाद उनका पुत्र बालाजी बाजीराव (नाना साहब के नाम से प्रसिद्ध) गद्दी पर बैठा। यह अपने चचेरे भाई सदाशवि राव भाऊ के परामर्श और मार्ग निर्देशन पर निर्भर रहा।
- 20 वर्ष की आयु में पेशवा बना था। इन्होंने 1750 ई० में मराठा शासक राजाराम II से संगौला समझौता करके सम्पूर्ण अधिकार स्वयं ले लिए। इनके काल में मराठा राज्य का सर्वाधिक प्रसार हुआ।

पूर्व तथा दक्षिण -

- मराठा सरदार कर्नाटक के नवाब दोस्त अली से असंतुष्ट थे।
- रघूजी भोंसले ने कर्नाटक के विरुद्ध एक अभियान भेजा

- युद्ध में दोस्त अली मारा गया तथा उसके पुत्र ने सन्धि कर ली। मराठों ने दोस्त अली के जामाता चन्दा साहिब को वन्दी बनाकर सतारा भेज दिया।
- इसके पश्चात् रघूजी ने अपने वित्त मंत्री भास्कर पंत को बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा से चौथ वसूलने के लिए भेजा। नवाब अलीवदर्दी खां ने भास्कररा को मरवा दिया।
- तब रघुजी भोंसले ने बंगाल पर आक्रमण कर दिया तथा लूटपाट की।
- बाध्य होकर 1751 ई० में अलीवर्दी खाँ को उड़ीसा देना पड़ा तथा बंगाल एवं बिहार से 12 लाख रुपया वार्षिक चौथ देना स्वीकार किया।

❑ **निजाम से युद्ध-**

- निजामुलमुल्क आसफजाह की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारियों में युद्ध छिड़ गया जिससे पेशवा को खानदेश तथा बराड़ में अपना अधिकार स्थापित करने का अवसर मिल गया।
- भलकी की सन्धि (1752 ई०) द्वारा निजाम ने बराड का आधा भाग मराठों को दे दिया।
- निजाम से पुनः सिन्दखेड़ (1757 ई०) में भीषण युद्ध छिड़ गया।
- निजाम ने बाध्य होकर, 25 लाख रुपये वार्षिक कर देने योग्य प्रदेश तथा नालदुर्ग मराठों को दे दिया।
- 1760 ई० में हुए उदगीर के युद्ध में निजाम की करारी हार हुई जिसमे मराठो को 60 लाख रु० वार्षिक कर तथा अहमदनगर, दौलताबाद, बुरहानपुर तथा बीजापुर नगर प्राप्त हुए।

❑ **पंजाब तथा दिल्ली -**

- 1757 ई० में रघुनाथ राव एक सेना के साथ दिल्ली पहुँचा। मुगल बादशाह ने मराठों से सन्धि कर अहमदशाह अब्दाली के प्रतिनिधि नजीबुद्दौला को मीरवक्शी के पद से हटा दिया।
- 1758 ई० में रघुनाथ राव पंजाब पंहुचा और अब्दाली के पुत्र राजकुमार तैमूर को पंजाब से निकाल दिया। इस तरह मराठे अटक तक पहुँच गए। तथा अदीनावेग खाँ को 75 लाख रु० वार्षिक कर के बदले पंजाब का गवर्नर नियुक्त कर दिया। अदीना बेग की मृत्यु के बाद साबाजी सिन्धिया ने यह पद संभाला। मराठों के इस कार्य ने अहमदशाह अब्दाली को चुनौती दी ।
- सिडनी ओवन के अनुसार अहमदशाह अब्दाली एक कट्टर मुस्लिम था वह मराठों के अपने सहधर्मियों के विरुद्ध अभियानों का विरोधी था। फलस्वरूप पानीपत का तृतीय युद्ध हुआ।

❑ **पानीपत का तृतीय युद्ध**

- वर्ष -14 जनवरी, 1761 ई०)
- **मध्य-** अहमदशाह अब्दाली और मराठों
- **अन्य तथ्य -**
- **अहमदशाह अब्दाली के पक्ष -,**नजीबुद्दौला , अवध के नवाब शुजाउद्दौला, रुहेला सरदार हाफिज रहमत खाँ और सादुल्ला खाँ
- **मराठा के पक्ष -** बालाजी बाजीराव , विश्वासराव, सदाशिव राव भाऊ
- **तात्कालिक कारन-** मराठो के द्वारा पंजाब के वायसराय तैमूर शाह का निष्काषण
- **मराठा तोपखाना -** इब्राहिम गर्दी
- इस युद्ध में पराजय को बालाजी बाजीराव सहन नहीं कर सका और 1761 ई० में उसकी मृत्यु हो गई।
- पेशवा को सूचना व्यापारियों द्वारा मिली कि "युद्ध में दो मोती विलीन हो गये।"
- मराठों की पराजय सिक्ख राज्य के उदय में सहायक बनी।

पानीपत के युद्ध के प्रभाव

- **जी० एस० सरदेसाई के अनुसार,** "युद्धस्थल में मराठों के सैन्य बल की इतनी अधिक क्षति हुई, इसके अतिरिक्त इस युद्ध ने कुछ भी निर्णय नहीं किया।"

- **लेखक सिडनी ओवन के अनुसार** "इससे मराठा शक्ति, कुछ काल के लिए चूर-चूर हो गई। यद्यपि यह बहुमुखी दैत्य मरा तो नहीं, परन्तु इतनी भली भाँति कुचला गया कि यह लगभग सोया रहा तथा जब यह जागा तो अंग्रेज इससे निपटने के लिए तैयार थे तथा अन्त में इसे जीतने तथा समाप्त करने में सफल हुए।"
- **काशीराज पंडित के अनुसार** "पानीपत का तृतीय युद्ध मराठों के लिए प्रलयंकारी सिद्ध हुआ।"
- **श्री आर० बी० सरदेसाई के अनुसार** "पानीपत के तृतीय युद्ध ने यह निश्चित नहीं किया कि भारत पर कौन शासन करेगा, बल्कि यह निश्चित किया कि भारत पर कौन शासन नहीं करेगा अर्थात् अब मराठे शासन नहीं करेंगे।"

NOTE - काशीराज पंडित पानीपत के तृतीय युद्ध के प्रत्यक्षदर्शी थे

❑ **माधवराव (1761-72 ई०)**

- पानीपत की हार के बाद माधवराव ने मराठों की प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने की कोशिश की। उसने हैदराबाद के निजाम और मैसूर के हैदरअली से चौथ प्राप्त किया। इसी के काल में मुगल बादशाह शाहआलम-II (1772 ई०) ने इलाहाबाद से दिल्ली आकर मराठों की संरक्षिता स्वीकार कर ली।
- 1772 ई० में क्षयरोग से इसकी मृत्यु हो गयी।
- इतिहासकार ग्रांट डफ के अनुसार "पेशवा की इतनी शीघ्र मृत्यु पानीपत के युद्ध क्षेत्र में मराठों की पराजय से कहीं अधिक घातक थी'

❑ **नारायणराव (1772-73 ई०)**

- माधवराव की मृत्यु के बाद उसका छोटा भाई नारायणराव पेशवा बना
- 1773 ई० में चाचा रघुनाथराव ने पेशवा बनने के लिए इसकी हत्या कर दी।

❑ **माधव नारायणराव (1774-95 ई०)**

- नारायणराव की मृत्यु के बाद उसका पुत्र माधव नारायणराव पेशवा बना।
- नांना फड़नवीस के नेतृत्व में मराठा सरदारों ने मराठा राज्य की देखभाल के लिए "बारा भाई कॉउन्सिल " की नियुक्ति की। प्रमुख मराठा सरदारों का सामना रघुनाथराव नहीं कर पाया और पूना भाग गया तथा बम्बई जाकर नाना फड़नवीस के विरुद्ध अंग्रेजों से सहायता माँगी। उसके इस प्रयास ने आंग्ल-मराठा युद्ध की भूमिका तैयार कर दी।

❑ **बाजीराव-II (1795-1818 ई०)**

- यह रघुनाथराव का पुत्र था। 1800 ई०नाना फड़नवीस की मृत्यु के बाद जिन मराठा नेताओं हाथों में शक्ति रही, उनमें पेशवा बाजीराव-II दौलतराव सिंधिया एवं यशवंतराव होल्कर प्रमुख थे।
- बाजीराव II ने भाग कर बसीन में शरण ली और 1802 ई० को अंग्रेजों से एक सन्धि कर ली जिसे **बसीन की सन्धि** कहा जाता है।
- **जिसकी शर्ते निम्नलिखित थी -**
  - पेशवा ने अंग्रेजी संरक्षण स्वीकार कर लिया
  - पूना मेंअंग्रेजी सेना रखना स्वीकार कर लिया गया
  - गुजरात, ताप्ती ,नर्मदा के मध्य के प्रदेश तथा तुंगभदा के समीपवर्ती प्रदेश कम्पनी को दे दिए
  - सूरत नगर कम्पनी को दे दिया गया।
  - निजाम से चौथ प्राप्त करने का अधिकार पेशवा ने छोड़ दिया
  - गायकवाड़ के विरुद्ध युद्ध न करने का वचन दिया।
  - पेशवा ने अन्य यूरोपीय शक्तियों से सम्बन्ध न रखना स्वीकार किया।
  - दूसरे राज्यों से अपने सम्बन्धों को अंग्रेजों के नियंत्रण में दे दिया।
- बाजीराव II ने 1818 ई० को सर जान मेलकम के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। इसे 8 लाख रु० वार्षिक पेंशन पर कानपुर के समीप विठूर भेज दिया गया। उसका राज्य ब्रिटिश नियंत्रण में ले लिया गया। पेशवा के राज्य से सतारा का छोटा राज्य निकालकर प्रताप सिंह को

दिया गया, जो शिवाजी का सीधा वंशज तथा मराठा साम्राज्य का औपचारिक प्रधान था। साम्राज्य के अन्तिम छत्रपति शाहजी अप्पासाहेब थे।

- बाजीराव II का उत्तराधिकारी उनका दत्तक पुत्र धुन्धु पंत (नाना साहेब) थे। जिन्होंने 1857 की क्रांति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

TRICK = पेशवाओं का क्रम
बॉबी ने बाजीराव को नाना माना लेकिन रमा ने इसे दूसरा बाजीराव कहा।
बॉबी = बालाजी विश्वनाथ,
बाजीराव = बाजीराव -I,
नाना = नाना साहेब (बालाजी बाजीराव)
मा = माधव राव
ना = नारायण राव
र = रघुनाथ राव
मा = माधव नारायण राव
दूसरा बाजीराव = बाजीराव -II,

जनजातीय विद्रोह

ब्रिटिश नियंत्रण के तहत भारतीय उपमहाद्वीप के कुछ हिस्सों में जनजातीय विद्रोहों की संख्या बढ़ गई। 19वीं सदी में कोल विद्रोह, संथाल विद्रोह और मुंडा विद्रोह हुए। आधुनिक शिक्षा के विकास, बुद्धजीवी युवाओं की संख्या में वृद्धि और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ, 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राष्ट्रीय आंदोलन भी आकार लेने लगा।

❑ **जनजातीय विद्रोह का महत्व**

- **स्थायी कृषि की शुरुआत:** जनजातियों की पारंपरिक भूमि में गैर-आदिवासी लोगों की आमद के साथ, स्थायी कृषि शुरू की गई थी।
- **मजदूरों के रूप में काम करना शुरू किया:** अंग्रेजों ने आदिवासी लोगों को खानों में काम करने वालों और अन्य छोटे मजदूरों के रूप में काम करने के लिए मजबूर किया क्योंकि उन्होंने उनके पारंपरिक आर्थिक ढांचे को नष्ट कर दिया था।
- **प्राकृतिक संसाधनों का महत्व:** आदिवासी लोगों को यह पसंद नहीं था कि अंग्रेजों ने अपनी भौतिक उन्नति के लिए पृथ्वी के संसाधनों का किस प्रकार दोहन किया।

❑ **जनजातीय आंदोलनों के पीछे जिम्मेदार कारक**

- **अंग्रेजों के अतिक्रमण का विरोध:** जनजातियां ब्रिटिश प्रभाव से खुश नहीं थीं। प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग का विरोध करने के लिए उन्होंने विद्रोह किया और सरकार के खिलाफ एकजुट हुए।
- **सरकार द्वारा पारित पक्षपातपूर्ण अधिनियम:** 1878 ई. के भारतीय वन अधिनियम और 1865 के सरकारी वन अधिनियम ने सरकार को पेड़ों से आच्छादित सभी क्षेत्रों पर पूर्ण अधिकार प्रदान किया।
- **मिशनरियों की गतिविधियाँ:** ईसाई मिशनरियों के प्रयास, जिनसे जनजातियाँ घृणा करती थीं, ये भी सामाजिक उथल-पुथल का कारण बना।
- **साहूकारों का दमनकारी दृष्टिकोण:** साहूकारों ने अज्ञानी जनजातीय सदस्यों का लाभ उठाया। ब्रिटिश सरकार साहूकारों को सुरक्षा प्रदान करती थी।
- **औपनिवेशिक शक्ति में समझ का अभाव :** भारतीय शासकों के विपरीत, ब्रिटिश अपने मूल निवास स्थान के प्रति जनजातियों की प्रतिबद्धता को पूरी तरह से समझने में असमर्थ थे।

❑ **मुख्य जनजातीय विद्रोह/ Main tribal rebellions**

प्रमुख जनजातींय आन्दोलन			
आन्दोलन	सन् / वर्ष	स्थान	नेतृत्वकर्ता
फकीर	1776-1877ई	बंगाल	मजमुन शाह, चिराग अली
रामोसी	1822-1841ई.	महाराष्ट्र	चित्तूर सिंह, नरसिंह, दत्तात्रेय
पागलपंथी	1813-1833ई.	बंगाल	करमशाह, टीपू
अहोम विद्रोहे	1828-1833ई	असम	गोमधर कुवर
कूकी विद्राह	1826-1844ई	मणिपुर एवं त्रिपुरा	-
पाइका विद्राह	1817-1925ई,	उड़ीसा	बक्सी जगबन्धु
गडकरी	1844 ई.	कोल्हापुर (महाराष्ट्र)	बाबा जी अहीरकेर
चुआर विद्रोह	1768-72	बंगाल	जगन्नाथ एवं दुर्जन सिंह
पॉलीगारों का विद्रोह	1801-05	तमिलनाडु	वीर पी कट्टवामन
वेलुथम्पी विद्रोह	1808-09 ई	ट्रावनकोर (केरल)	बेलुथम्पी
भील विद्रोह	1818-1831	महाराष्ट्र	दशरथ
कोल विद्रोह	1831-32 ई.	झारखण्ड	बुद्धो भगत
खासी विद्रोह	1829-33 ई.	असम, मेघालय	तीरत सिंह, मुकुन्द सिंह
सन्थाल विद्रोह	1855-56 ई.	झारखण्ड	सिद्धू-कान्हू
मुण्डा विद्रोह	1899-1900 ई.	झारखण्ड	बिरसा मुण्डा

किट्टूर का विद्रोह	1824-29 ई०	कर्नाटक	चिन्नावा
बघेरा विद्रोह	1818-19 ई०	ओखामण्डल (गुजरात)	बघेर लोग

आदिवासी दूर-दराज के क्षेत्रों में रहते थे। इन्हें 'जनजातीय' शब्द से पहली बार ठक्कर बापा ने सम्बोधित किया। इनका अपना कानून होता था। यह 'झूम' एवं प्राचीन विधि से खेती करते थे। यह जंगलों पर विशेष निर्भर थे। अंग्रेजों द्वारा उनके व्यक्तिगत कानूनों, कृषि के तरीकों आदि में हस्तक्षेप करने के कारण उन्होंने अंग्रेजों को दिकू (बाहरी लोग) कहा। दिकू में महाजन, जमींदार, ठेकेदार आदि आते थे। इस प्रकार जनजातियों का विद्रोह मूलतः जमींदारों और अंग्रेजों के विरुद्ध था।

प्रमुख जनजातीय आन्दोलन निम्नलिखित ये /The major tribal movements are as follows: -

❑ **महाराष्ट्र का भील विद्रोह**

- **वर्ष** -1812-19 ई०
- **स्थान** - खान देश (महाराष्ट्र)
- **नेतृत्वकर्ता** – दशरथ(1820 ई०), हिरिया (1822 ई०), सेवरम (1825 ई०), भागोजी तथा काजल सिंह (1857 ई०)
- **अन्य तथ्य**- कृषि सम्बन्धी कर एवं नई सरकार का भय इस विद्रोह का मूल कारण था।

❑ **राजस्थान का भील विद्रोह**

- **वर्ष** -1821 ई०
- **स्थान** - मेवाड़ (राजस्थान)
- **नेतृत्वकर्ता** - दौलत सिंह , श्री गोविन्द, मोतीलाल तेजावर
- **अन्य तथ्य**- मेवाड़ के भील भोलाई एवं रखवाली लम्बे समय से वसूल करते आ रहे थे। कर्नल रोड की सलाह से मेवाड़ के शासक ने इस का अधिकार समाप्त कर दिया
  - लकड़ी काटने और महुआ के फूल एकत्र करने पर भी रोक लगा दी
  - यहाँ तिसाला नामक नया भूमि कर लगा दिया
  - भीलों में **डाकन प्रथा** का प्रचलन था (कुछ औरता को डाकन या जादूगरनी समझकर भयंकर यातनाएँ दी जाती थीं।)इसी प्रकार सती प्रथा भी प्रचलित थी इन कुरीतियों को समाप्त करने के प्रयत्न किए गए।

❑ **संथाल विद्रोह (1855-1856 ई०)**

- **वर्ष** -1855-56 ई०
- **स्थान** - दामन ए कोह [राजमहल पहाड़ियों के पास की जमीन] (बिहार)
- **नेतृत्वकर्ता** - सीदू और कान्तू
- **अन्य तथ्य**- यह भूमि कर अधिकारियों के दुर्व्यवहार, पुलिस के दमन तथा जमीदारों एवं साहूकारों को वसूलियों के विरुद्ध विद्रोह किया।
  - 1855 ई० में सोदू मार डाला गया।
  - कान्हू फरवरी, 1856 ई० में मारा गया।
  - **आ० सी० मजूमदार ने** लिखा है कि संथाल विद्रोह आर्थिक कारणों से उत्पन्न हुआ था लेकिन शीघ्र ही इसका उद्देश्य विदेशी शासन को खत्म करना हो गया।

❑ **मुण्डा विद्रोह या उलुगखनी विद्रोह**

- **वर्ष** - 1895-1900 ई०
- **स्थान** - छोटा नागपुर (बिहार)
- **नेतृत्वकर्ता** - विरसा मुण्डा
- **अन्य तथ्य**- उलुगखनी या महाविद्रोह भी कहा जाता है।

- यह जनजातीय सामूहिक खेती (खूंटकट्टी) करती थीअंग्रेजो की व्यक्तिगत भूस्वामित्व व्यवस्था को इन्होने अपनी परम्परा पर हमला माना और अंग्रेजो के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।
- इसमें स्त्रियां भी शामिल थी।
- यह विद्रोह सरदारी लड़ाई के नाम से प्रसिद्ध था।
- बिरसा ने अपने आप को भगवान का दूत घोषित किया।

❑ **कोल विद्रोह**

- **वर्ष** – 1830- 1848 ई०
- **स्थान** - छोटा नागपुर
- **नेतृत्वकर्ता** - बुद्धो भगत और गंगा नारायण
- **अन्य तथ्य**- कोल आदिवासी चावल की नशीली शराब का उपयोग करते थे बिटिश सरकार ने इसके उत्पादन पर शुल्क लगा दिया था
  - बिटिश सरकार के भू-राजस्व प्रवन्ध ने परम्परागत व्यवस्था को बदल दिया और इनकी जमीन मुस्लिमों एवं सिक्खों को दे दी गई। इन कारणों से इन्होने विद्रोह किया।

❑ **खासी विद्रोह**

- **वर्ष** - 1828-1833 ई०
- **स्थान** - मेघालय
- **नेतृत्वकर्ता** - तीरथ सिंह
- **अन्य तथ्य**- इनके क्षेत्र को सिलहट के जोड़ने के लिए अंग्रेजों ने सड़क बनाने की योजना बनाई। इस प्रदेश के जमींदार छत्तर सिंह ने अनुमति प्रदान कर दी। खासी मुखिया तीरथ सिंह ने इसका विरोध किया
  - तीरथ सिंह के अतिरिक्त वारमानिक और मुकुन्द सिंह ने भी इस विद्रोह का नेतृत्व किया।
  - 1833 ई० में इन लोगों ने आत्म-समर्पण कर दिया और इस तरह खासी विद्रोह समाप्त हो गया।

❑ **खौड़ एवं सवार विद्रोह**

- **वर्ष** – 1846-57 ई०
- **स्थान** - खौड़माल क्षेत्र (उड़ीसा)
- **नेतृत्वकर्ता** - चक्र विसोई
- **अन्य तथ्य**- इस विद्रोह का मुख्य कारण अंग्रेजो द्वारा इनमें प्रचलित नरबलि प्रथा-मोरिया को रोकने का प्रयास था।

Note :- **नरवलि प्रथा-मोरिया :-** जिन मनुष्यों की बलि दी जाती थी, वे मोरिया कहे जाते थे। ये लोग मोरिया के जरिये भगवान को खुश करते थे ताकि फसलें (हल्दी) अच्छी हो सकें। यह एक प्रकार से पृथ्वी-पूजा का ढंग था।

❑ **सवार विद्रोह**

- **वर्ष** - 1856-57 ई०
- **स्थान** - उड़ीसा
- **नेतृत्वकर्ता** - राधाकृष्ण दण्डसेना
- **अन्य तथ्य**- सवार लोगो को यह आशंका थी कि अंग्रेज उनकी जमीन जब्त कर लेंगे तथा बेगार लेंगे और नए कर लगायेंगे।

❑ **खामती विद्रोह**

- **वर्ष** – 1839-43 ई०
- **स्थान** - असम
- **नेतृत्वकर्ता** - खवागोहाई और रुनूगोहाई
- **अन्य तथ्य**- यह अंग्रेजो की न्याय व्यवस्था, राजस्व वसूली के नियम और अनेक नए कर लगाये जाने से अंग्रेजों से असंतुष्ट थे।
- इस विद्रोह में मेजर व्हाइट मारे गए। सरदारों की आपसी फूट के कारण यह विद्रोह असफल रहा ।

❑ रम्पा विद्रोह

- **वर्ष** -1879 ई०
- **स्थान -** आंध्र प्रदेश
- **नेतृत्वकर्ता -** राजू रम्पा
- **अन्य तथ्य-** यह विद्रोह जागीरदारों के भ्रष्टाचार और नए जंगल कानूनों के खिलाफ था।
  - विद्रोह कर दिया। 1880 ई० में सेना ने इस विद्रोह को दबा दिया।

❑ रामोसी विद्रोह

- **वर्ष** -1822-41 ई०
- **स्थान -** पश्चिमी घाट (महाराष्ट्र)
- **नेतृत्वकर्ता -** चित्तर सिंह एवं नरसिह दत्तात्रेय पेतकर।
- **अन्य तथ्य-** इस विद्रोह का कारण अंग्रेजी शासन पद्धति थी।

❑ चुआर विद्रोह या भूमिन विद्रोह

- **वर्ष** – 1766 से 1772 ई०
- **स्थान -** बंगाल
- **नेतृत्वकर्ता -** जगनाथ , दुर्जन सिंह
- **अन्य तथ्य-** इनकी भूमि चुआर में अंग्रेजों का अधिकार हो गया , अंग्रेजो ने शोषण करना शुरू किया जिसके कारण दलभूमि के राजा जगनाथ ने 1768 ई० में विद्रोह कर दिया तथा कम्पनी को राजस्व देना भी बन्द कर दिया। यह विद्रोह धीरे-धीरे खुद ही समाप्त हो गया।

❑ जनजातीय विद्रोह की सीमाएं

भले ही उन्होंने एक ऐसा माहौल विकसित करने में मदद की, जिसने सत्ता के खिलाफ स्थानीय विरोध की आवाज को सशक्त किया, लेकिन, शुरुआती जनजातीय आंदोलनों में कई कमियां थीं। जनजातीय विद्रोह की कमियां निम्नलिखित थीं -

- **स्थानीयकृत और कमजोर प्रभाव**: वे स्थानीय स्तर तक ही सीमित रहे और एक राष्ट्रीय दृष्टिकोण से ये अलग-थलग घटनाएँ थीं जो राष्ट्रीय हितों के बारे में जागरूकता बढ़ाने में विफल रहीं। इससे इन क्रांतियों के संभावित प्रभाव में कमी आई।
- **स्थानीय मुद्दे**: इसके अतिरिक्त, इनमें से अधिकांश क्रांतियाँ स्थानीय समस्याओं से प्रभावित थीं, और शेष देश उन लोगों के साथ सहानुभूति रखने में असमर्थ था, जो विरोध कर रहे थे।
- **विचारधारा का अभाव :** विद्रोह केवल बाहरी प्रदर्शन के रूप में था; उनमें क्रांतिकारी विचारधारा शामिल नहीं थी।
- **वैकल्पिक दृष्टिकोण का अभाव :** उन्होंने लोगों को वैकल्पिक समाधान प्रदान नहीं किया या उन्हें उचित कदम उठाने के लिए प्रेरित नहीं किया। इनमें से अधिकांश क्रांतियों में अर्ध-सामंती नेता शामिल थे, जो रूढ़िवादी सोच रखते थे।

❑ जनजातीय आंदोलन और मुख्यधारा के मुक्ति आंदोलन में अंतर

जनजातीय विद्रोहों का प्रारंभिक चरण मुख्यधारा के मुक्ति आंदोलन से निम्नलिखित तरीकों से अलग था:

- **विशिष्ट शिकायतें:** राष्ट्रवादियों के विपरीत, आदिवासी लोगों ने अपनी भूमि और परंपराओं पर प्रथागत अधिकार को पुनः प्राप्त करने की मांग की। देश के स्वतंत्र होने की उनकी कोई आकांक्षा नहीं थी।
- **हिंसा का उपयोग:** शांतिपूर्ण आलोचना की वकालत करने वाले मुख्यधारा के राष्ट्रवादी नेताओं के विपरीत जनजातियों ने अपने लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए पारंपरिक हथियारों और हिंसा का इस्तेमाल किया।
- **स्थानीय संगठनात्मक संरचनाएं:** शुरुआती वर्षों में, जनजातियों ने अपनी सेना को संगठित किया, कर एकत्र किया, लेकिन शिक्षित मध्य वर्ग ने बहुत कम समर्थन दिया।

- **बुद्धिजीवियों के समर्थन का अभाव :** जनजातीय लोगों के निशाने पर स्थानीय अधिकारी और साहूकार थे जनजातियों को बुद्धिजीवियों का समर्थन नहीं प्राप्त था।

नागरिक , किसान, आदिवासी और अन्य आंदोलन/ Farmers, tribal and other movements

❑ किसान, आदिवासी और अन्य आंदोलनों की विशेषताएं

- आदिवासी समूहों ने विद्रोह किया, क्योंकि वे नहीं चाहते थे, कि व्यापारी और साहूकार उनकी जीवन शैली में हस्तक्षेप करें।
- **धार्मिक प्रथाओं में हस्तक्षेप** - इन विद्रोहों के अन्य कारणों में से एक यह भी था।
- विद्रोहियों द्वारा अपने उत्पीड़कों के खिलाफ प्रतिरोध व्यक्त करने के लिए हिंसा और लूट की गई।
- विद्रोहों का नेतृत्व उन शासकों ने किया जिन्हें अंग्रेजों ने अपदस्थ कर दिया था, यानी विजित भारतीय राज्यों के पूर्व-अधिकारियों, और गरीब जमींदारों और पोलीगारों ने की थी।

❑ नागरिक विद्रोह

नागरिक विद्रोह के अंतर्गत समाज के ऐसे वर्ग शामिल थे, जो अंग्रेजों से प्रभावित थे। किसान, कारीगर, जनजाति, शासक वर्ग, सैन्यकर्मी, धार्मिक नेता आदि सभी अपने-अपने हितों की रक्षा के लिए संघर्ष में शामिल हुए।

❑ नागरिक विद्रोह की सामान्य विशेषताएं

- **पारंपरिक विरोध:** नागरिक विद्रोह के अर्ध-सामंती नेता पारंपरिक और कट्टर दृष्टिकोण के थे।
- **पारंपरिक रीति रिवाजों को स्थापित करने का उद्देश्य:** उनका मूल उद्देश्य शासन के पुराने रूपों और सामाजिक संबंधों को बहाल करना था। - उदा: संन्यासी विद्रोह
- **विद्रोह स्थानीय स्तर पर केंद्रित थे:** ये विद्रोह स्थानीय कारणों का परिणाम और स्थानीय प्रकृति के भी थे।
- **समाज का प्रभावित पारंपरिक वर्ग:** ऐसे समय में जब शहरी बुद्धिजीवियों का नव निर्मित वर्ग ब्रिटिश शासन का लाभ उठा रहा था, समाज के पारंपरिक वर्ग के जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा था।
- **समान परिस्थितियाँ:** भले ही विद्रोह अलग-अलग समय और स्थानों पर हुए हों, लेकिन ये विद्रोह आम तौर पर व्यापक और समान परिस्थितियों को दर्शाते हैं।

❑ लोगों के आक्रोश और कंपनी के शासन के खिलाफ विद्रोह के लिए जिम्मेदार प्रमुख कारक

- **नीतिगत पक्षाघात:** ब्रिटिश शासन की नीतियों ने भारतीयों के अधिकारों और आर्थिक स्थिति को कमजोर कर दिया।
- **किसानों का नुकसान:** अर्थव्यवस्था, प्रशासन और भू-राजस्व प्रणाली में तेजी से बदलाव, कृषि समाज में विघटन का कारण बने। इसका उन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।
- **जमींदारों में असन्तोष**: कई जमींदार और पोलिगर, अंग्रेजों से व्यक्तिगत रूप से असंतुष्ट थे, क्योंकि औपनिवेशिक शासन के दौरान उन्हें उनकी भूमि और उनकी आय पर नियंत्रण से वंचित कर दिया गया था। साथ ही उन पर नए करों का भारी बोझ भी था।
- **पुरोहित वर्ग पर प्रभाव:** जमींदारों और सामंती शासकों वाली व्यवस्था के समाप्त होने का पुरोहित वर्ग पर सीधा प्रभाव पड़ा और इसलिए उन्होंने विरोध किया।
- **किसानों की, उनकी भूमि से बेदखली:** मध्यस्थ राजस्व संग्राहकों, काश्तकारों और साहूकारों की वृद्धि के साथ-साथ, किसानों का उनकी भूमि से बेदखली करके उनका शोषण हुआ।
- **आदिवासियों की भूमि पर अतिक्रमण:** जनजातीय क्षेत्र पर राजस्व प्रशासन के विस्तार के परिणामस्वरूप कृषि और वन भूमि पर जनजातीय लोगों का नियंत्रण समाप्त हो गया।
- **हस्तकला उद्योग का विनाश:** ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं का प्रचार, और भारतीय उद्योगों पर भारी शुल्क, विशेष रूप से निर्यात शुल्क, भारतीय हथकरघा और हस्तशिल्प उद्योगों की पतन का कारण बने।
- **बेरोजगार कारीगर**: ब्रिटिश नीति के कारण भारतीय हस्तशिल्प उद्योग के पतन के परिणामस्वरूप लाखों कारीगर बेरोजगार हो गए थे।
- **खेती पर अत्यधिक निर्भरता:** स्वदेशी उद्योग के विनाश के कारण श्रमिकों का, उद्योग से कृषि की ओर पलायन हुआ, जिससे भूमि/कृषि पर दबाव बढ़ गया।

- **व्यक्तिगत कारक:** ब्रिटिश शासकों की विदेशी प्रकृति और स्थानीय जनता के प्रति उनके तिरस्कार ने जमींदारों और सामंती शासकों के गौरव को चोट पहुंचाई।

❑ **संन्यासी विद्रोह (1763-1800 ई०)**
- **वर्ष** – 1763-1800 ई०
- **स्थान -** बंगाल
- **अन्य तथ्य-** ये लोग शंकराचार्य के अनुयायी थे।
  - विद्रोही संन्यासी गिरि सम्प्रदाय, के थे।
  - तीर्थ यात्रा पर लगे करों के कारण असंतुष्ट थे।
  - इसे दवाने का श्रेय वारेन हेस्टिंग्स को दिया जाता है।
  - वारेन हेस्टिंग्स ने इस विद्रोह को दबाया।
  - बंकिम चन्द्र चटर्जी की आनन्द मठ का कथानक इसी विद्रोह पर आधारित है।

❑ **फकीर विद्रोह**
- **वर्ष** – 1776-77 ई०
- **स्थान -** बंगाल
- **नेतृत्वकर्ता -** मजमुन शाह और चिराग अली।
- **अन्य तथ्य-** यह विद्रोह धार्मिक था।

❑ **अहोम विद्रोह**
- **वर्ष – 1828-33 ई०**
- **स्थान -** असम
- **नेतृत्वकर्ता -** गोमधर कुँवर और रूपचन्द्र कोनार
- **अन्य तथ्य-** अंग्रेजों ने अहोम लोगो को वचन दिया था की वर्मा युद्ध के बाद वह वापस लौट जायेंगे लेकिन अंग्रेजो ने ऐसा नहीं किया बल्कि अहोम प्रदेश को भी अपने राज्य में सम्मिलित करने का प्रयत्न किया तो यह विद्रोह फूट पड़ा।
- 1833 ई० में उत्तरी असम महाराज पुरन्दर सिह को दे दिया गया। इस तरह अहोम विद्रोह समाप्त हो गया।

❑ **पागलपन्थी विद्रोह**
- **वर्ष** – 1813-1831 ई०
- **स्थान -** बंगाल
- **नेतृत्वकर्ता -** टीपू मीर
- **अन्य तथ्य-** यह विद्रोह जमींदारों के मुजारों (Tenants) पर किए गए अत्याचारों के विरुद्ध था

❑ **फरैजी आन्दोलन**
- **वर्ष** – 1820-1858 ई०
- **स्थान -** बंगाल
- **नेतृत्वकर्ता -** दादू मीर (मोहम्मद मोहसिन)
- **अन्य तथ्य-** यह विद्रोह जमींदारों द्वारा किसानों के शोषण के विरुद्ध था।
  - दादू मीर ने नारा दिया कि "समस्त भूमि का मालिक खुदा है"
  - फौजी आन्दोलन के नेता अन्त में वहावी दल में सम्मिलित हो गए।

❑ **वहाबी आन्दोलन (1830-60 ई०)**
- **वर्ष** – 1830-60 ई०
- **स्थान - पटना**
- **नेतृत्वकर्ता -** सैय्यद अहमद
- **अन्य तथ्य-** इस आन्दोलन को वली उल्लाह आन्दोलन भी कहा जाता है।
  - यह आंदोलन इस्लाम को पुनः स्थापित करने के लिए था इस प्रकार से यह एक पुनरुद्धार आन्दोलन था।
  - इसका मुख्य उद्देश्य काफिरों के देश (दार-उल-हर्ब) को मुसलमानों के देश (दार-उल-इस्लाम) में बदलना था।

❑ कूका आन्दोलन

- **वर्ष** – 1840-1872 ई०
- **स्थान** - उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त
- **नेतृत्वकर्ता** - सेन साहव (भगत जवाहर)
- **अन्य तथ्य-** इसका उद्देश्य सिक्ख धर्म में प्रचलित बुराइयों और अन्ध विश्वासों को दूर कर इस धर्म को शुद्ध करना था
  - बाद में यह आन्दोलन राजनीतिक आन्दोलन में बदल गया।

❑ कूकाओं आंदोलन (राजनीतिक विद्रोह)-

- **स्थान** - फिरोजपुर
- **वर्ष** - 1869 ई०
- **नेतृत्वकर्ता** - राम सिंह
- **अन्य तथ्य-** इनका मूल उद्देश्य अंग्रेजों को भारत से बाहर निकलना था परन्तु 1872 ई० में बाबा राम सिंह को गिरफ्तार कर रंगून भेज दिया गया। जहां 1885 ई० में इनकी मृत्यु हो गयी। नामधारी आन्दोलन भी इन्होने चलाया था। जिसमे मद्य निषेध गोमांस निषेध, वृक्ष पूजा और महिलाओं की समानता पर बल दिया गया था।

NOTE:- **तारकेश्वर आंदोलन:-**
स्थान - बंगाल
वर्ष - 1924 ई.
नेतृत्वकर्ता- स्वामी सच्चिदानंद
अन्य तथ्य- इस आंदोलने का संबंध मंदिरो मे व्याप्त भ्रष्टाचार से था। बंगाल में तारकेश्वर नामक स्थान पर **मंदिर के महंत के खिलाफ** भ्रष्टाचार के विरुद्ध यह सत्याग्रह तीर्थयात्रियों द्वारा किया गया था। इसका स्वामी सच्चिदानंद द्वारा गिरफ्तारी देकर विरोध किया गया।

किसान आंदोलन - कारण, महत्व और सीमाएं/ Peasant Movements – Causes, Importance and Limitations

❑ कारण:

- **दमनकारी भू-राजस्व व्यवस्था**: रैयतवाड़ी व्यवस्था जो जमींदारी व्यवस्था की तरह ही कठोर थी। कम वर्षा और अनाज की कम कीमतों ने किसानों की स्थिति को और खराब कर दिया।
- **कपास की मांग में वृद्धि और गिरावट:** अमेरिकी गृहयुद्ध (1861-65) के चलते भारतीय कपास, इंग्लैंड में अधिक लोकप्रिय हो गया। हालाँकि, यह अल्पकालिक लाभ युद्ध की समाप्ति के साथ जल्द ही कम हो गया। **उदाहरण - नील विद्रोह**
- **दमनकारी साहूकार**: साहूकार, असहाय किसानों का अन्यायपूर्ण दमन करते थे। साहूकार और ब्रिटिश सरकार समान रूप से दमनकारी थे। **उदाहरण- दक्कन के दंगे**
- **आर्थिक मुद्दों पर केन्द्रित**: माँगें लगभग पूर्णतः आर्थिक मुद्दों पर केन्द्रित थीं। आर्थिक कठिनाइयों से खुद को बचाने के लिए किसान जमींदारों और सत्ता के खिलाफ उठ खड़े हुए। उदाहरण - बंगाल में पाबना विद्रोह
- **मूल प्रकृति और चरित्र**: किसान आंदोलन बागान मालिकों , देशी जमींदारों और सूदखोरों के खिलाफ थे।
- **व्यक्तिगत समस्याए :** अधिकांश संघर्ष, विशिष्ट और सीमित उद्देश्यों और व्यक्तिगत समस्याए के निवारण हेतु किये जा रहे थे। उदाहरण - बारदोली सत्याग्रह, नील विद्रोह, पाबना आंदोलन आदि।
- **उपनिवेशवाद के खिलाफ नहीं था:** ये आंदोलन शोषणकारी औपनिवेशिक ब्रिटिश शासन के खिलाफ नहीं थे।
- **कृषक हितों की रक्षा**: इन आन्दोलनों का उद्देश्य किसानों की अधीनता या शोषण की व्यवस्था को समाप्त करना था। उदाहरण - पाबना विद्रोह
- **सीमित क्षेत्रीय विस्तार**: किसान आंदोलन असंगठित थे और विशेष प्रदेश या क्षेत्र तक सीमित थे। इसके अलावा, संघर्ष या दीर्घकालिक संगठन की कोई निरंतरता नहीं थी।
- **किसानों में जागरूकता:** किसान, अपने कानूनी अधिकारों के बारे में जागरूक हुए और अदालतों के भीतर और बाहर इन अधिकारों का दावा किया।

❑ कृषक विद्रोह / किसान आंदोलन

- किसान आंदोलनों ने स्वतंत्रता के बाद के कृषि सुधारों के लिए एक अनुकूल माहौल तैयार किया, उदाहरण के लिए 'जमींदारी उन्मूलन'।
- उन्होंने जमींदार वर्ग की शक्ति को भी कम किया, इस प्रकार कृषि संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए।
- किसानों को जमींदारी संबंधी क्षेत्रों में उच्च लगान, अवैध उगाही, मनमानी बेदखली और अवैतनिक श्रम जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा और रैयतवाड़ी क्षेत्रों में, सरकार ने स्वयं भारी भू-राजस्व लगा दिया।
- अंग्रेजों द्वारा प्राकृतिक और मानव संसाधनों के शोषण के कारण मुख्य रूप से किसानों, आदिवासियों और सैनिकों द्वारा प्रतिरोध किया गया।
- ब्रिटिश शासन के पहले सौ वर्षों में अलग-अलग समय में किसानों और जनजातीय लोगों के असंतोष ने भारत के विभिन्न हिस्सों में विद्रोहों का रूप ले लिया।

❑ **नील आंदोलन** –

- **वर्ष** -1859-60
- **स्थान** - बंगाल
- **प्रमुख नेता** - दिगंबर एवं विष्णु विश्वास
- **अन्य तथ्य**

○ **पृष्ठभूमि**

- ब्रिटिश उपनिवेशीकरण के दौरान, बंगाल में नील की खेती को बढ़ावा दिया गया। यह रंगाई के लिए उपयोग किया जाता था और इसकी बढ़ती मांग के कारण किसानों को नील के लिए अपनी भूमि समर्पित करनी पड़ती थी।
- नील के लिए भूमि का पट्टा जमींदारों द्वारा लिया जाता था, और किसानों को बहुत कम भुगतान किया जाता था। इसके अलावा, उन्हें नील के उत्पादन के लिए उच्च करों का सामना करना पड़ता था।

○ **आंदोलन का आरंभ**

- 1859 में, किसानों ने अपने शोषण और दुर्व्यवहार के खिलाफ विद्रोह करना शुरू किया। यह आंदोलन खासकर नील के जमींदारों और उनके एजेंटों के खिलाफ था।
- इस आंदोलन का नेतृत्व कई स्थानीय नेताओं ने किया, जिनमें से सबसे प्रसिद्ध **डॉ. रायचंद बरुआ** थे।

○ **प्रमुख घटनाएँ**

- किसानों ने नील की फसल की कटाई से इनकार किया और जमींदारों के खिलाफ संगठित होकर विद्रोह किया।
- आंदोलन के दौरान, किसानों ने कई जमींदारों के खिलाफ हिंसक विरोध प्रदर्शन किए, जिससे स्थिति तनावपूर्ण हो गई।

○ **सरकारी प्रतिक्रिया**

- ब्रिटिश सरकार ने आंदोलन को दबाने के लिए पुलिस और सैन्य बलों का इस्तेमाल किया। कई किसान गिरफ्तार हुए और हिंसा का सहारा लिया गया।
- इस आंदोलन के दबाव में, सरकार ने कुछ सुधार किए, लेकिन मुख्यतः जमींदारी प्रणाली पर कोई बड़ा परिवर्तन नहीं आया।

○ **महत्व**

- नील आंदोलन ने किसानों में जागरूकता बढ़ाई और उनके अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी।
- यह आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा बना और आगे चलकर किसानों के आंदोलनों की नींव रखी।
- इस आन्दोलन को बंगाल के बुद्धिजीवी वर्ग का भी पूरा समर्थन प्राप्त था।
- समाचार पत्र इनके शोषण के विषय को छापते रहते थे।
- हिन्दू पैट्रियाट के सम्पादक हरिश्चन्द्र मुखर्जी ने इस आन्दोलन के लिए काफी कार्य किया था।
- इस सम्बन्ध में दीन बन्धु के नाटक 'नील दर्पण' का भो उल्लेख किया जा सकता है ईसाई मिशनरियों ने भी नील आन्दोलन का समर्थन किया था।
- इन सबका सरकार पर असर पड़ा और उसने नील समस्या की जाँच के लिए नील आयोग का गठन 1860 ई० में कर दिया।
- 1860 ई० में एक अधिसूचना जारी को गई कि किसी भी रैय्यत को नील की खेती के लिए बाध्य नहीं किया जाएगा और सारे विवादों का निपटारा विधिपूर्वक किया जाएगा। तब तक नील उत्पादकों ने अपने कारखाने खुद ही समेट लिए।

- Note-
- नील आयोग - सीटोन कार की अध्यक्षता में चार सदस्यीय आयोग
- इस आयोग की रिपोर्ट से यह सिद्ध हो गया कि किसानों का भीषण शोषण होता था।

❑ **पबना विद्रोह**

- **वर्ष** -1873-76
- **स्थान** - बंगाल
- **प्रमुख नेता** - ईश्वर चंद्र राय ,केशवचंद्र राय, शम्भू पाल
- **अन्य तथ्य**

- **पृष्ठभूमि**
  - पबना जिले में जमींदारी प्रणाली का शोषण किसानों पर भारी पड़ रहा था। जमींदारों द्वारा अत्यधिक कर और अन्य शुल्कों के कारण किसान आर्थिक रूप से कमजोर हो गए थे।
  - जमींदारों ने जमीन के पट्टे बढ़ाए और करों में वृद्धि की, जिससे किसानों की स्थिति और भी खराब हो गई।
- **आंदोलन का आरंभ**
  - 1873 में, किसानों ने एकजुट होकर जमींदारों के खिलाफ विद्रोह करने का निर्णय लिया। उन्होंने अपनी समस्याओं और शोषण के खिलाफ आवाज उठाई।
  - इस आंदोलन का नेतृत्व स्थानीय नेताओं ने किया, जिनमें **दीवान हाकिम अली** और **किसान नेता मदन मोहन तालुकदार** शामिल थे।
- **प्रमुख घटनाएँ**
  - किसानों ने जमींदारों के खिलाफ संगठित होकर विद्रोह किया। उन्होंने जमींदारों के खिलाफ धरने और प्रदर्शन किए और कई मामलों में जमींदारों की संपत्तियों को नुकसान पहुंचाया।
  - आंदोलन के दौरान, किसानों ने **किसान सभा** का गठन किया, जिससे उनकी मांगों को उठाने का एक मंच मिला।
- **सरकारी प्रतिक्रिया**
  - ब्रिटिश सरकार ने आंदोलन को दबाने के लिए पुलिस और सैन्य बलों का इस्तेमाल किया। कई किसान गिरफ्तार हुए और आंदोलन को खत्म करने के लिए बल प्रयोग किया गया।
  - हालांकि आंदोलन को दबा दिया गया, लेकिन इसके कारण कुछ सुधारों की मांग उठी, जैसे कि ज़मीनी अधिकार और करों में कमी।
- **महत्व**
  - पबना विद्रोह ने किसानों में जागरूकता बढ़ाई और उन्हें अपने अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा दी।
  - यह आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अन्य आंदोलनों के लिए एक प्रेरणा बना और किसानों के अधिकारों की लड़ाई का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया।
  - अंत में 1885 में बंगाल कश्कारी कानून बनाकर इन्हे संरक्षण दिया गया।

❑ **डक्कन उपद्रव**

- **वर्ष** -1875
- **स्थान** - महाराष्ट्र
- **अन्य तथ्य**

- **पृष्ठभूमि**
  - 19वीं सदी के मध्य में, भारत में कई क्षेत्रों में सूखा, महंगाई, और कृषि उत्पादन में कमी आई, जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति बिगड़ गई।
  - जमींदारों और ब्रिटिश सरकार द्वारा किसानों पर लगाए गए अत्यधिक करों और भूमि के पट्टों के कारण किसानों पर दबाव बढ़ गया।
- **आंदोलन का आरंभ**
  - 1875 में, किसानों ने एकजुट होकर अपनी समस्याओं के खिलाफ आवाज उठाने का निर्णय लिया। उनका मुख्य उद्देश्य जमींदारों के अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष करना था।
  - इस विद्रोह का नेतृत्व कुछ स्थानीय नेताओं ने किया, जो किसानों की मांगों को उठाने के लिए संगठित हुए।
- **प्रमुख घटनाएँ**
  - किसानों ने जमींदारों के खिलाफ प्रदर्शन किए और भूमि के पट्टों के खिलाफ विद्रोह किया। उन्होंने जमींदारों की संपत्तियों पर हमले किए और करों के भुगतान से इनकार किया।
  - आंदोलन के दौरान, किसानों ने अपने अधिकारों के लिए एकजुटता दिखाई और कई गांवों में विरोध प्रदर्शन किए।
- **सरकारी प्रतिक्रिया**
  - ब्रिटिश सरकार ने विद्रोह को कुचलने के लिए पुलिस और सैन्य बलों का इस्तेमाल किया। कई किसान गिरफ्तार हुए और आंदोलन को खत्म करने के लिए बल प्रयोग किया गया।
  - हालांकि आंदोलन को दबा दिया गया, लेकिन इसके कारण कुछ सुधारों की मांग उठी, जैसे भूमि अधिकारों की सुरक्षा और करों में कमी।
- **महत्व**
  - डक्कन उपद्रव ने किसानों में जागरूकता और एकता की भावना बढ़ाई। यह किसानों को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी।
  - यह विद्रोह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना और आगे चलकर किसानों के आंदोलनों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना।
  - दक्कन कृषक राहत अधिनियम, 1879 ई० द्वारा किसानों को साहूकारों के विरुद्ध कुछ संरक्षण प्रदान किए।
  - जस्टिस रानाडे के नेतृत्व में पूना सार्वजनिक सभा ने किसानों की माँगों को उचित ठहराया था।

❑ **मोप्पला विद्रोह**

- **वर्ष** -1921-22
- **स्थान** - मालाबार क्षेत्र (केरल)
- **प्रमुख नेता** - मोप्पला किसान
- **अन्य तथ्य**

- **पृष्ठभूमि**
  - यह विद्रोह मोप्पला मुसलमानों द्वारा ब्रिटिश शासन और जमींदारों के खिलाफ था।

- 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में, मोप्पला किसानों का शोषण जमींदारों और ब्रिटिश प्रशासन के हाथों बढ़ गया। किसानों को अत्यधिक करों का सामना करना पड़ा, और कई किसानों की भूमि जमींदारों के पास चली गई।
- मोप्पला समुदाय की सामाजिक और धार्मिक स्थिति भी विद्रोह के पीछे एक महत्वपूर्ण कारक थी। स्थानीय जमींदारों और प्रशासन की ओर से होने वाले भेदभाव ने असंतोष को बढ़ाया।

○ **आंदोलन का आरंभ**

- विद्रोह का प्रारंभ 1921 में हुआ, जब किसानों ने जमींदारों और ब्रिटिश अधिकारियों के खिलाफ अपनी नाराजगी व्यक्त करना शुरू किया। यह आंदोलन पहले एक स्थानीय विद्रोह के रूप में शुरू हुआ, लेकिन जल्दी ही इसका दायरा बढ़ गया।
- विद्रोह का नेतृत्व **विप्लवी मोप्पला नेताओं** जैसे कि **कुल्लम मौलवी** और **मोहम्मद कुचाक्कड़** ने किया।

○ **प्रमुख घटनाएँ**

- मोप्पला विद्रोह में किसानों ने जमींदारों के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष किया। उन्होंने जमींदारों की संपत्तियों को नष्ट किया, और कई पुलिस थानों पर हमले किए।
- विद्रोह के दौरान मोप्पला किसान संगठित हुए और उनकी मांगों में भूमि अधिकार, करों में कमी, और जमींदारों के खिलाफ न्याय शामिल थे।

○ **सरकारी प्रतिक्रिया**

- ब्रिटिश सरकार ने विद्रोह को कुचलने के लिए पुलिस और सैन्य बलों का इस्तेमाल किया। विद्रोह के नेताओं को गिरफ्तार किया गया, और कई लोग मारे गए।
- आंदोलन को कुचला गया, लेकिन इसके बाद भी मोप्पला किसानों के मुद्दों को उठाने का कार्य जारी रहा।

○ **महत्व**

- मोप्पला विद्रोह ने किसानों में सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता को बढ़ाया। यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था।
- इस विद्रोह ने विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच एकता को भी बढ़ावा दिया, हालांकि इसे बाद में सांप्रदायिक दृष्टिकोण से भी देखा गया।

❑ **संयुक्त प्रांत का किसान आंदोलन**

- **वर्ष** -1920
- **स्थान -** अवध क्षेत्र, आगरा (उत्तर प्रदेश)
- **प्रमुख नेता -** गौरी शंकर मिश्र इन्द्र नारायण द्विवेदी और मदन मोहन मालवीय
- **अन्य तथ्य**

○ **पृष्ठभूमि**

- उत्तर प्रदेश में जमींदारी प्रणाली ने किसानों के शोषण को बढ़ावा दिया। जमींदारों द्वारा किसानों पर लगाए गए उच्च करों और भूमि पट्टों ने उनकी आर्थिक स्थिति को खराब कर दिया था।
- कृषि संकट, सूखा और महंगाई ने किसानों की स्थिति और भी बिगाड़ दी।
- गौरी शंकर मिश्र इन्द्र नारायण द्विवेदी और मदन मोहन मालवीय के प्रयासों से फरवरी, 1918 ई० में 'उत्तर प्रदेश किसान सभा' का गठन हुआ।

○ **आंदोलन का आरंभ**

- 1920 में, किसानों ने एकजुट होकर अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाना शुरू किया। उन्होंने ज़मींदारों के अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष का निर्णय लिया।
- इस आंदोलन का नेतृत्व कई स्थानीय नेताओं ने किया, जिनमें **जवाहरलाल नेहरू** और **सरदार पटेल** जैसे नेता शामिल थे, जो किसानों के मुद्दों को स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा मानते थे।
- प्रतापगढ़ जिले की एक जागीर में 'नाई-धोबी बन्द' सामाजिक बहिष्कार संगठित आंदोलन चलाया गया।
- नाई-धोबी बन्द'आंदोलन में झिगुरी सिंह और दुर्गपाल सिंह ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई
- 1920 ई० में किसान आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन से जुड़ गया।

○ **प्रमुख घटनाएँ**

- किसानों ने जमींदारों के खिलाफ संगठित होकर विद्रोह किया। उन्होंने करों का भुगतान करने से इनकार किया और अपने अधिकारों के लिए प्रदर्शन किए।
- **किसान सभा** और अन्य संगठन किसानों को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाए।
- बाबा रामचन्द्र ने किसान आन्दोलन की नींव सम्भाली।
- ये मूलतः महाराष्ट्र के थे। इन्होंने जमींदारों के विरुद्ध अवध के किसानों को संगठित करने के लिए पहल की ये संन्यासी के वेश में किसानों के बीच रहकर गाँवों में सभायें आयोजित करने लगे।
- रामचरितमानस के पाठ द्वारा किसानों को जागृत एवं संगठित किया।
- इन्हीं के प्रयास से 1920 ई० में प्रतापगढ़ में एक समानान्तर संगठन 'अवध किसान सभा' का गठन हुआ

○ **सरकारी प्रतिक्रिया**

- ब्रिटिश सरकार ने आंदोलन को कुचलने के लिए पुलिस और सैन्य बलों का इस्तेमाल किया। कई किसानों को गिरफ्तार किया गया, और आंदोलन को समाप्त करने के लिए बल प्रयोग किया गया।
- प्रतापगढ़ के डिप्टी कमिश्नर मेहता ने किसानों को उनकी शिकायतें सुनने और उन्हें दूर करने का आश्वासन दिया।
- 6 जनवरी, 1921 ई० को फुरशतगंज बाजार में किसानों ने जमींदारों की निरंकुशता, बनियों के भारी मुनाफे, अनाज और कपड़े की मूल्यवृद्धि के विरोध में आन्दोलन किया। पुलिस ने इन पर गोली चलाई जिसमें कई लोग हताहत हो गए।

○ **महत्व**

- यह आंदोलन किसानों में राजनीतिक जागरूकता और संगठन की भावना को बढ़ाने में मददगार साबित हुआ।
- संयुक्त प्रांत का किसान आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना और आगे चलकर किसानों के अधिकारों की लड़ाई का आधार बना।

- इसी बीच सरकार ने 'अवध मालगुजारी रेन्ट अधिनियम' पारित कर दिया। हालाँकि इससे किसानों को कोई खास राहत तो नहीं मिली लेकिन इस कानून ने किसानों के आन्दोलन को तोड़ने का काम किया।
- इस तरह आन्दोलन कमजोर हो गया।

❑ **एका आंदोलन**

- **वर्ष** -1921
- **स्थान** - हरदोई बहराइच सीतापुर सुल्तानपुर बाराबंकी अवध क्षेत्र (उत्तर प्रदेश),
- **प्रमुख नेता** - मदारी पासी
- **अन्य तथ्य**

○ **पृष्ठभूमि**
- 1920 के दशक की शुरुआत में, किसानों को सूखा, महंगाई, और जमींदारी प्रणाली के कारण कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जमींदारों द्वारा किसानों पर लगाए गए अत्यधिक करों ने उनकी आर्थिक स्थिति को और बिगाड़ दिया।
- जमींदारों का किसानों पर बढ़ता दबाव और कृषि उत्पादों की कीमतों में कमी ने किसानों को असंतोष की ओर अग्रसर किया।

○ **आंदोलन का आरंभ**
- 1921 में, किसानों ने एकजुट होकर अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने का निर्णय लिया। यह आंदोलन मुख्य रूप से एकीकृत रूप में किसानों द्वारा संगठित किया गया।
- आंदोलन का नेतृत्व कुछ प्रमुख स्थानीय नेताओं ने किया, जिन्होंने किसानों को एकजुट किया और उनके अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा दी।

○ **प्रमुख घटनाएँ**
- किसानों ने जमींदारों के खिलाफ संगठित होकर विद्रोह किया। उन्होंने करों का भुगतान करने से इनकार किया और जमींदारों के खिलाफ प्रदर्शन किए।
- आंदोलन के दौरान, किसानों ने अपने अधिकारों के लिए एकजुटता दिखाई और कई गाँवों में विरोध प्रदर्शन किए।

○ **सरकारी प्रतिक्रिया**
- ब्रिटिश सरकार ने आंदोलन को कुचलने के लिए पुलिस और सैन्य बलों का इस्तेमाल किया। कई किसानों को गिरफ्तार किया गया और आंदोलन को समाप्त करने के लिए बल प्रयोग किया गया।

○ **महत्व**
- एका आन्दोलन पहले के 'किसान सभा आन्दोलन' से इस मायने में अलग था कि जहाँ किसान आन्दोलन में मूलतः काश्तकार सम्मिलित थे, जमींदार नहीं, वहीं एका आन्दोलन में छोटे-मोटे जमींदार भी शामिल थे जो बढ़े हुए लगान के बोझ से परेशान एवं सरकार से नाराज थे।

○ **निष्कर्ष**
- एक्का आंदोलन 1921 ने किसानों के अधिकारों और उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति को उजागर किया। यह आंदोलन न केवल स्थानीय स्तर पर महत्वपूर्ण था, बल्कि यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में भी देखा जाता है, जिसने भविष्य के आंदोलनों के लिए एक आधार तैयार किया।

❑ **बर्दोली आंदोलन (1928)**

- **वर्ष** -1928
- **स्थान** - गुजरात के बर्दोली तालुका
- **प्रमुख नेता** - सरदार वल्लभभाई पटेल
- **अन्य तथ्य**

○ **पृष्ठभूमि**
- बर्दोली क्षेत्र में जमींदारों द्वारा किसानों पर लगाए गए करों में अत्यधिक वृद्धि हुई। किसानों को पहले से ही कृषि संकट और सूखा जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था।
- ब्रिटिश सरकार ने 22% तक करों की वृद्धि की घोषणा की, जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति और भी खराब हो गई।

○ **आंदोलन का आरंभ**
- किसानों ने अपनी समस्याओं के खिलाफ एकजुट होकर आंदोलन करने का निर्णय लिया। उन्होंने करों का भुगतान करने से मना कर दिया।

○ **प्रमुख घटनाएँ**
- किसानों ने करों का भुगतान करने से इनकार किया और अपने अधिकारों की रक्षा के लिए धरने और प्रदर्शन किए।
- **किसान सभा** का गठन हुआ, जिसने किसानों को संगठित किया और उनके मुद्दों को उठाया।
- अगस्त, 1928 ई० में गाँधीजी बारदोली पहुँचे और उन्होंने घोषणा की कि यदि सरकार ने सरदार पटेल को गिरफ्तार किया तो वे किसानों का नेतृत्व करेंगे।
- बारदोली सत्याग्रह में महिलाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया।
- इन महिलाओं में कस्तूरबा गाँधी, मनी बेन पटेल , शारदा बेन शाह, मीठू बेन, भक्तिबा और शारदा मेहता ने व्यापक रूप से जन सम्पर्क किया।
- बारदोली की औरतों ने ही पटेल को सरदार की उपाधि से विभूषित किया।

○ **सरकारी प्रतिक्रिया**
- सरकार ने पूरे तालुके को 13 शिविरों में विभाजित कर प्रत्येक में एक अनुभवी नेता तैनात किया।
- अन्त में सरकार ने एक राजस्व अधिकारी मैक्सवेल से इस मामले में जाँच करवाई। इसने लगान वृद्धि को अनुचित बताया।

○ महत्व
- बर्दोली आंदोलन ने किसानों में जागरूकता बढ़ाई और उन्हें अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी।

- इस आंदोलन ने सरदार पटेल को राष्ट्रीय स्तर पर एक प्रमुख नेता के रूप में स्थापित किया।
- अतः लगान वृद्धि 22% से घटाकर 6.03% कर दी गई। इस प्रकार यह अहिंसात्मक कृषक आन्दोलन सफल हुआ।

❑ बिजौली आंदोलन

- **वर्ष** -1921
- **स्थान -** राजस्थान के बिजौली गांव में
- **प्रमुख नेता -** चारण , नारायण वटले और ब्रह्मदेव
- **अन्य तथ्य**

○ **पृष्ठभूमि**
- इसका उद्देश्य भूमि अधिकारों और आर्थिक न्याय की मांग करना था।
- 1920 के दशक में, बिजौली क्षेत्र के किसानों को सूखा और महंगाई का सामना करना पड़ा। जमींदारों द्वारा लगाए गए भारी करों ने उनकी आर्थिक स्थिति को और भी बिगाड़ दिया।
- किसानों पर अत्यधिक कर और जमींदारों का शोषण इस आंदोलन का मुख्य कारण था।
- मेवाड़ के विजौलिया के जागीरदार किसानों से 84 प्रकार की लगान वसूल करते थे। किसानों को अपनी लड़की के विवाह पर 5 रुपये इन्हें देने पड़ते थे।

○ **आंदोलन का आरंभ**
- 1921 में, किसानों ने एकजुट होकर जमींदारों और स्थानीय अधिकारियों के खिलाफ अपनी नाराजगी व्यक्त करने का निर्णय लिया। उन्होंने अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने का संकल्प लिया।
- 1913 ई० में सारे बिजौलिया क्षेत्र के किसानों ने लगान नहीं अदा किया और न ही भूमि पर खेती की।
- अब यहाँ पर सत्याग्रह प्रारम्भ किया गया। यह सत्याग्रह भूप सिंह ने चलाया।

○ **प्रमुख घटनाएँ**
- किसानों ने जमींदारों के खिलाफ धरने और प्रदर्शन किए। उन्होंने करों का भुगतान करने से इनकार किया और अपने अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष किया।
- आंदोलन के दौरान किसानों ने एकजुट होकर अपने मुद्दों को उठाया और स्थानीय अधिकारियों के खिलाफ एकजुटता दिखाई।
- भूप सिंह को रास बिहारी बोस और शचीन्द्र नाथ सान्याल ने राजस्थान में क्रान्तिकारी कार्यों के लिए भेजा था।
- भूप सिंह को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया लेकिन जेल से भाग करके विजय सिंह पथिक के नाम से ये बिजोलिया गए और वहाँ का आन्दोलन तेज किया।

○ **सरकारी प्रतिक्रिया**
- ब्रिटिश सरकार ने आंदोलन को कुचलने के लिए पुलिस बलों का इस्तेमाल किया। कई किसानों को गिरफ्तार किया गया और उनके खिलाफ कार्रवाई की गई।
- राजा पर दबाव बढ़ा और एक जाँच आयोग की नियुक्ति की गई।
- 1922 ई० में भारत सरकार का एक प्रतिनिधि "हालैण्ड" बिजोलिया पहुंचा।
- हालैण्ड की मध्यस्थता से किसानों के साथ समझौता हुआ।
- अब इसमें से 35 करों को हटा दिया गया।
- बाद में माणिक्य लाल वर्मा ने जमना लाल बजाज से मुलाकात कर उन्हें आन्दोलन का नेता बना दिया।

○ **महत्व**
- बिजौली आंदोलन ने किसानों में जागरूकता बढ़ाई और उन्हें अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी।
- यह आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना और आगे चलकर किसानों के आंदोलनों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना।
- बजाज के प्रतिनिधि उपाध्याय ने मेवाड के बन्दोबस्त अधिकारी ट्रेंच से समझौता किया। फिर भी किसानों को पुरानी जमीन वापस नहीं मिलीं। अन्ततः 1941 ई० में काफी संघर्ष के बाद किसानों को उनकी जमीने वापस मिल गई।

❑ बकाश्त किसान संघर्ष

- **वर्ष** -1946-47
- **स्थान -** राजस्थान के बिजौली गांव में
- **प्रमुख नेता -** चारण , नारायण वटले और ब्रह्मदेव
- **अन्य तथ्य**

○ **पृष्ठभूमि**
- बिहार का बकाश्त किसान संघर्ष बहुत उग्र था।
- बिहार में तीन प्रकार की भूमि का वर्णन मिलता है।
- बकाश्त भूमि - जिसे जमींदार अस्थायी काश्तकारों को विभिन्न दरों पर प्रतिवर्ष किराये पर देते थे।
- रैय्यत भूमि- यह स्थायी काश्तकारों की भूमि भी।
- जिस्ती भूमि- यह जमींदारों की स्वयं की भूमि थी जिस पर खेतिहर मजदूर काम करते थे।

○ **आंदोलन का आरंभ**
- बकाश्त किसानों के पास कोई वैधानिक अधिकार नहीं थे।
- जमींदारों को बेदखली में रुचि इसलिए होती थी कि उन्हें नए असामी से अधिक किराया मिलता था।

○ **प्रमुख घटनाएँ**

- 1946 ई० के मई-जून में मुंगेर, गया, शाहाबाद, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, भागलपुर एवं मधुबनी में जमींदारों एवं बकाश्तकारों में जमकर संघर्ष हुआ।

○ **महत्व**

- यह संघर्ष तब तक चलता रहा जब तक कि कांग्रेस सरकार ने बाध्य होकर 'बिहार जमींदारी उन्मूलन अधिनियम, 1948' पारित नहीं कर दिया।

❑ **तेभागा आंदोलन**

■ **वर्ष** -1946-50

■ **स्थान -** पश्चिम बंगाल में

■ **प्रमुख नेता -** कंपराम सिंह और भवन सिंह

■ **अन्य तथ्य**

○ **पृष्ठभूमि**

- यह आंदोलन विशेष रूप से कृषि भूमि के वितरण और किसानों के अधिकारों की रक्षा के लिए लड़ा गया।
- द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, पश्चिम बंगाल में खाद्य संकट और महंगाई बढ़ी, जिससे किसानों की स्थिति और खराब हो गई।
- जमींदारों द्वारा किसानों का शोषण, जिसमें किसानों को अपनी फसल का एक बड़ा हिस्सा जमींदारों को देना पड़ता था, ने असंतोष को बढ़ाया।

○ **आंदोलन का आरंभ**

- 1946 में, किसानों ने अपनी फसल का आधा हिस्सा (तेभागा) जमींदारों के बजाय अपने लिए रखने की मांग की। यह मांग इस बात पर आधारित थी कि किसान अपनी मेहनत से उपजाए गए फसल का अधिक हिस्सा प्राप्त करें।
- इस आंदोलन का नेतृत्व भारतीय किसान संघ और विभिन्न वामपंथी संगठनों ने किया, जिनमें **कम्युनिस्ट पार्टी** का विशेष योगदान रहा।
- इसकी शुरुआत त्रिपुरा के हसनाबाद से हुई।
- यहाँ से यह बंगाल में नोआखोली तक फैल गया।

○ **प्रमुख घटनाएँ**

- इसमें बटाईदार किसानों ने ऐलान किया कि वे फसल का 2/3 हिस्सा लेंगे और जमींदारों को सिर्फ 1/3 हिस्सा ही देंगे। बंटवारे की इसी अनुपात के कारण इसे तेभागा आन्दोलन कहते हैं।

○ **महत्व**

- नोआखोली इस समय भीषण साम्प्रदायिक दंगों में झुलस रहा था। परन्तु इस आन्दोलन में हिन्दू एवं मुस्लिम किसानों ने एकता का प्रदर्शन किया।

○ **निष्कर्ष**

- तेभागा आंदोलन ने भारतीय किसानों के संघर्ष को उजागर किया और जमींदारी प्रथा के खिलाफ एक महत्वपूर्ण आवाज के रूप में सामने आया। यह आंदोलन न केवल स्थानीय स्तर पर महत्वपूर्ण था, बल्कि यह स्वतंत्रता संग्राम के एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में भी देखा जाता है, जिसने भविष्य के आंदोलनों के लिए एक आधार तैयार किया।

❑ **तेलंगाना किसान आंदोलन**

■ **वर्ष -1946-1951**

■ **स्थान -** तेलंगाना क्षेत्र

■ **प्रमुख नेता -** कमरैया

■ **अन्य तथ्य**

○ **पृष्ठभूमि**

- तेलंगाना में जमींदारों का प्रभाव और शोषण किसानों पर अत्यधिक था। किसान अपने उत्पाद का बड़ा हिस्सा जमींदारों को देते थे और इसके अलावा अन्य शुल्कों का भी सामना करना पड़ता था।
- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, क्षेत्र में खाद्य संकट और महंगाई बढ़ी, जिससे किसानों की स्थिति और खराब हो गई।

○ **आंदोलन का आरंभ**

- तेलंगाना उस समय निजाम द्वारा शासित हैदराबाद रियासत का एक अंग था। यहाँ के किसानों का आन्दोलन दूसरे विश्व युद्ध के बाद शुरू हुआ जब उनसे कम दाम पर जबजस्ती अनाज वसूला जा रहा था।

○ **प्रमुख घटनाएँ**

- किसानों के विद्रोह का मुख्य कारण पुलिस द्वारा कमरैया की हत्या थी। ये कम्युनिष्ट नेता थे और स्थानीय किसानों का संगठनकर्ता थे।
- किसानों ने पुलिस और जमींदारों पर हमला किया।

○ **सरकारी प्रतिक्रिया**

- किसानों का यह विद्रोह अपनी चरम सीमा पर था।
- किसानों ने यह मांग की कि हैदराबाद रियासत को समाप्त किया जाए तथा उसे भारत का अंग बना दिया जाए।

○ **महत्व**

- तेलंगाना कृषक आन्दोलन भारतीय इतिहास के सबसे लम्बे छापामार कृषक युद्ध का साक्षी बना।
- स्वतंत्रता के बाद यह आन्दोलन समाप्त हो गया।

प्रमुख किसान आन्दोलन

प्रमुख किसान सभा का गठन			
किसान सभा	सन् / वर्ष	स्थान	नेतृत्वकर्ता
उत्तर प्रदेश किसान सभा	1918	उत्तर प्रदेश	गौरीशंकर मिश्र, इंन्द्र नारायण द्विवेदी, मदन मोहन मालवीय
अवध किसान सभा	1920	उत्तर प्रदेश	बाबा रामचन्द्र
आंध प्रांतीय किसान सभा	1928	आ०प्र०	एन.जी. रंगा
बिहार किसान सभा	1929	बिहार	स्वामी सहजानंनद सरस्वती
कृषक प्रजा पार्टी	1929	बंगाल	फजलुलहक, अकरम खान, अब्दुरहीम
अखिल भारतीय किसान सभा	1936	लखनऊ	स्वामी सहजानंनद सरस्वती
प्रमुख किसान आन्दोलन			
किसान सभा	सन् / वर्ष	स्थान	नेतृत्वकर्ता
नील किसान विद्रोह	1859-60	बंगाल तथा बिहार	दिगम्बर एवं विष्णु विश्वास
पाबना विद्रोह	1873-76	बंगाल	ईशानराय, शंभुपाल, केशवचन्द्र राय
दक्कन किसान विद्रोह	1875	महाराष्ट्र	जस्टिस रानाडे
मोपला किसान विद्रोह	1836-54 एवं 1921	मालाबार क्षेत्र	सैयद अलावी एवं सैयद फजल , अलीमुसलियार
बिजौलिया आंदोलन	1913-41	राजस्थान	गाँधी साधु सीताराम दास, विजय सिंह पथिक
अवध किसान आन्दोलन	1918-20	आगरा तथा अवध क्षेत्र	वावा रामचन्द्र, गौरी शंकर मित्र, इन्द्र नारायण द्विवेदी
एका आन्दोलन	1921-22	उत्तर प्रदेश	मदारी पासी, सहदेव
बारदोली सत्याग्रह	1928	गुजरात	वल्लभभाई पटेल
बकाश्त कृषक आन्दोलन	1938-47	बिहार	राहुल सांकृत्यायन, स्वामी श्रद्धानंद
वर्ली विद्रोह	1945	बम्बई	गोदावरी पुरूलेकर
तेभागा आन्दोलन	1946-47	त्रिपुरा, बंगाल	कम्पाराम, भवन सिंह

महत्त्व

- **भविष्य के आंदोलनों के लिए मंच तैयार किया:** कृषक आंदोलन ने 1857 की क्रांति एवं अन्य क्रांतियों के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य किया, क्योंकि ये सैनिक अंततः किसान ही थे।
- **कानूनी जागरूकता:** कृषक आंदोलन ने लोगों को उनके अधिकारों के लिए जागरूक तो किया ही साथ ही शोषकों के खिलाफ कानूनी जागरूकता को पैदा करने में भी अहम भूमिका निभाई।
- **राष्ट्रीय आंदोलन के लिए पूरक कार्य:** राष्ट्रीय और किसान दोनों क्रांतियाँ एक दूसरे की पूरक हैं किसानों ने स्वतंत्रता संग्राम के लिए बड़े पैमाने पर एक मंच तैयार करने का काम किया।
- **परिवर्तित ग्रामीण शक्ति संरचना:** ग्रामीण क्षेत्रों में, किसान आंदोलनों ने जमींदार वर्ग के प्रभाव को कम करके शक्ति संतुलन को बदल दिया। जैसे, हैदराबाद की सामंती सरकार को तेलंगाना आंदोलन द्वारा उखाड़ फेंका गया था, जिसका नेतृत्व किसानों ने किया था।
- **आजादी के उपरांत के सुधार**: भले ही किसान विद्रोह के परिणाम तुरंत नहीं दिखे , लेकिन आजादी के बाद के बदलावों को प्रभावित किया जिससे जमींदारी का उन्मूलन हुआ और काश्तकारों को राहत मिली।
-

कमियां

- **नवीन दृष्टिकोण का अभाव :** 19वीं शताब्दी के किसानों में नवीन विचारधारा और नये सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण का अभाव था।

- **सामाजिक बाधाएँ:** ये संघर्ष, जो प्रकृति में उग्रवादी थे, पुराने सामाजिक व्यवस्था के ढांचे के भीतर हुए। जो दर्शाता है कि उनमें एक वैकल्पिक समाज के प्रति सकारात्मक अवधारणा का अभाव था।
- **स्थानीय प्रसार:** 19वीं शताब्दी के अधिकांश किसान आंदोलन विशिष्ट क्षेत्रों में स्थानीकृत थे। उदाहरण - महाराष्ट्र का दक्कन विद्रोह।
- **उपनिवेशवाद की समझ का अभाव:** उपनिवेशवाद की पर्याप्त समझ का भी अभाव था। उन्होंने उपनिवेशवाद के खिलाफ लक्ष्य नहीं रखा बल्कि शिकायतों के निवारण पर ध्यान केंद्रित किया।

श्रमिक आंदोलन

❑ **मजदूर संघ आंदोलन (Labour Union Movement)**

- 1853 ई. में लार्ड डलहौजी द्वारा रेलवे की शुरूआत के साथ पोस्ट ऑफिस, टेलीग्राफ जैसी उपयोगी सेवाओं के कारण आधुनिक मजदूर वर्ग का उदय हुआ।
- 1870 में बंगाल में एक समाजसेवी ने श्रमजीवी क्लब की स्थापना की तथा 'भारत श्रमजीवी' नाम की पत्रिका निकाली।
- 1877 ई. में पहली हड़ताल नागपुर एम्प्रेस मिल के मजदूरों द्वारा की गयी। जिसका कारण कम मजदूरी थी।
- 1880 ई. में बम्बई में 'दीन बंधु' नामक अंग्रेजी-मराठी साप्ताहिक पत्रिका निकाली 1890 में नारायण मेघा जी लोखांडे ने प्रथम मजदूर संगठन 'बम्बई मिल हैंड्स एसोसिएशन' की स्थापना की। यद्यपि यह एक ट्रेड यूनियन नहीं था।
- पहली संगठित हड़ताल 1899 ई. में ग्रेट इंडिया पेनिन्सुला (GI.P) रेलवे" में हुई।
- यह कम मजदूरी; काम के घण्टों को लेकर की गयी थी।
- मराठा तथा केसरी जैसे अखबारों ने खुलकर इसका समर्थन किया।
- इसके समर्थन में फिरोजशाह मेहता, डी.ई. वाचा और सुरेन्द्र नाथ टैगोर नें कोष इकट्ठा किया।
- 16 अक्टूबर, 1905 को जब बंगाल विभाजन हुआ उस दिन मजदूरों ने पूरे बंगाल में हड़ताल की।
- 1905 में ही प्रिंटर्स यूनियन, कलकत्ता नामक मजदूर संगठन बना।
- 1907 में 'बम्बई पोस्टल यूनियन' गठित हुआ।
- 1908 को बाल गंगाधर तिलक को 6 वर्ष की सजा होने के पश्चात बंबई के कपड़ा मजदूरों ने एक सप्ताह का हड़ताल किया। यह उस समय मजदूरों की सबसे बड़ी राजनीतिक हड़ताल थी।
- 1918 में बी.पी. वाडिया द्वारा गठित 'मद्रास लेबर यूनियन' भारत का प्रथम आधुनिक मजदूर संगठन था। उसके बाद 1918 में गांधीजी ने 'अहमदाबाद टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन' (A.T.L.A.) की स्थापना की गई। जो कि उस समय की सबसे बड़ी ट्रेड यूनियन थी

प्रमुख मजदूर संगठन			
मजदूर संगठन	स्थापना वर्ष	संस्थापक	विशिष्ट तथ्य
बाम्बे मिल हैण्ड एसोसिएशन	1890	नारायण मेघाजी लोखांडे	भारत का पहला मजदूर संगठन
सोशल सर्विस लीग	1911	एन.एम. जोशी	-
मद्रास लेबर यूनियन	1918	बी.पी. वाडिया	प्रथम वास्तविक एवं व्यवस्थित मजदूर संघ
अमदाबाद टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन	918	महात्मा गांधी	ट्रस्टीशिप सिद्धान्त का प्रतिपादन
अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC)	1920	एन.एम. जोशी, जोसेफ बैपटिस्टा, लाला लाजपत राय, वी.एम. पवार	दीवान चमन लाल (महामंत्री), प्रथम अधिवेशन - बम्बई अध्यक्ष - लाला लाजपत राय
भारतीय ट्रेड यूनियन फेडरेशन (ITUF)	1929	एन.एम. जोशी	AITUC का विभाजन
रेड ट्रेड यूनियन कांग्रेस	1931	देशपांडे तया रणदिवे	AITUC का विभाजन में
हिन्दुस्तान मजदूर सभा	1938	सरदार पटेल एवं राजेन्द्र प्रसाद	-
भारतीय राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस	1947	सरदार वल्लभ भाई पटेल वी. वी. गिरि	1947 AITUC से पृथक

ब्रिटिश सरकार द्वारा पारित कारखाना अधिनियम			
अधिनियम/ Act	वर्ष/ Year	वायसराय/ Viceroy	विशेषता/ Speciality
प्रथम कारखाना अधिनियम	1881 ई.	लॉर्ड रिपन	• प्रथम फैक्ट्री आयोग 1875 ई. के अनुशंसा पर • सात वर्ष से कम उम्र के बच्चों के काम कराने पर प्रतिबंध, • महीने में 4 दिन का अवकाश, • **कमी :-** श्रमिक के मुद्दे को छोड़ दिया गया।
द्वितीय कारखाना अधिनियम	1891ई.	लॉर्ड लैंसडाउन	• द्वितीय फैक्ट्री आयोग 1884 की अनुशंसा पर • सप्ताह में एक दिन का अवकाश • 9 वर्ष से कम के बच्चों के काम करने पर प्रतिबंध • स्त्रियों की कार्यावधि 11 घण्टे प्रतिदिन निर्धारित • यह उन्हीं कारखानों पर लागू जो बिजली का उपयोग करते थे, तया श्रमिकों की संख्या 50 से अधिक हो।
तृतीय कारखाना अधिनियम	1911	लॉर्ड हार्डिंग II	• तृतीय फैक्ट्री आयोग 1908 की अनुशंसा पर • पुरुष कार्यावधि 12 घण्टे निश्चित
चतुर्थ कारखाना अधिनियम	1922	लॉर्ड रीडिंग	• बच्चों की कार्यावधि 7 घण्टे प्रतिदिन निश्चित • 12 से 15 वर्ष की आयु के बच्चों को कारखानों में कार्य करने की अनुमति।
पांचवा कारखाना अधिनियम	1934	लॉर्ड विलिंगटन	• मौसमी तथा गैर-मौसमी कारखानों में अन्तर किया गया • अल्पायु बच्चों की कार्यावधि 5 घण्टे निश्चित • श्रमिकों के चिकित्सा एवं आराम की व्यवस्था।
छठा कारखाना अधिनियम	1944	लॉर्ड वैवेल	• नियमित कारखानों में श्रमिकों की कार्यावधि 9 घण्टे • कैण्टीन की व्यवस्था की गई।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य/ Other Important Facts

- **महात्मा ज्योतिराव फुले और किसान आंदोलन:**
  - उन्होंने किसानों को जागरूक करने का निश्चय किया और कई गाँवों की पैदल यात्रा की।
  - वे जुन्नार गए और वहां सक्रिय रूप से भाग लिया।
  - उन्होंने 'कल्टीवेटर्स व्हिपकार्ड' नामक पुस्तक लिखी जिसमें उन्होंने काश्तकारों के दुखों का वर्णन किया।
  - साप्ताहिक पत्रिका 'दीनबंधु' ने किसानों की समस्याओं पर प्रकाश डाला।
  - उन्होंने 1888 में पुणे के दौरे पर ड्यूक ऑफ कनॉट के सामने किसानों के दुखों को संबोधित किया।
- **विठ्ठल रामजी शिंदे और किसान आंदोलन:**
  - 1928 ई. में, शिंदे ने लघु जोत विधेयक के प्रभाव को रोकने के लिए कदम बढ़ाया।
  - उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भ्रष्ट अधिकारियों, कर्मचारियों और साहूकारों ने किसानों की जमीन लूट ली है।
- **पांडुरंग सदाशिव साने और किसान आंदोलन:**
  - साने गुरुजी, जिन्हें पांडुरंग सदाशिव साने के नाम से भी जाना जाता है, जो किसान आंदोलन के प्रमुख प्रणेता थे।
  - उन्होंने क्षेत्र का भ्रमण कर भूमि कर में छूट की मांग की।
  - उन्होंने **फैजपुर कांग्रेस अधिवेशन** में भी काफी प्रयास किए।

- **डॉ बी आर अम्बेडकर और किसान आंदोलन:**
  - **महार वतन** के खिलाफ उनके प्रभावी अभियान ने ग्रामीण गरीबों के एक बड़े हिस्से को आभासी गुलामी की स्थिति से मुक्त कर दिया।
  - पट्टेदारी की प्रचलित **"खोटी व्यवस्था"** के विरुद्ध अपनी लड़ाई में वो सफल रहे, और उन्होंने विशाल जनसमुदाय को इससे मुक्त करने का प्रयास किया।
  - इसके अलावा, उन्होंने किसानों के चिरनेर सत्याग्रह का भी नेतृत्व किया।
  - डॉ. अंबेडकर ने 15 अगस्त, 1936 ई. को इन सारी समस्याओं का मुकाबला करने के लिए किसानों, प्रवासी श्रमिकों और कपड़ा श्रमिकों को एकत्रित कर एक राजनीतिक संगठन के रूप में **"इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी"** की स्थापना की।

Note:-

महार वतन :- महार , जाति -समूह या कई अंतर्जातीय जातियों का समूह, जो मुख्य रूप से भारत के महाराष्ट्र राज्य और आसपास के राज्यों में रहते हैं। इस व्यवस्था के तहत महारों को अपमानजनक काम और तुच्छ काम करने के लिए मजबूर किया जाता था और उन्हें पैसे के बजाय वस्तुओं के रूप में वेतन मिलता था।

"खोटी व्यवस्था" :- खोट लोग बड़े जमींदार थे। इनका मुख्य काम सरकार की ओर से किसानों से राजस्व वसूलना था और उसे सरकार तक पहुँचाना था "खोट लोग खुद को सरकार समझते थे और गरीब किसानों को लूटते थे

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) और किसान आंदोलन

फैजपुर अधिवेशन और किसान:

- फैजपुर अधिवेशन में किसानों की भलाई के लिए बड़ी संख्या में प्रस्ताव पारित किए गए।
- बैठक में आग्रह किया गया कि कृषि ऋणों की वसूली स्थगित की जाए।
- इसके अतिरिक्त, यह निर्धारित किया गया कि भूमिहीन मजदूरों को पर्याप्त न्यूनतम वेतन मिले है।
- अधिवेशन के अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कार्यकर्ताओं और किसानों को कांग्रेस की गतिविधियों में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया।
- किसान आंदोलनों के विकास ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पर काफी दबाव डाला। इसके बावजूद कराची कांग्रेस चार्टर ने किसानों की समस्याओं पर कोई प्रभावशाली आवाज नहीं उठाई। हालांकि, फैजपुर कांग्रेस के कृषि कार्यक्रम में किसान सभा का राजनीतिक दबाव सफल रहा।

1857 का विद्रोह

विभिन्न समूहों के मध्य ईस्ट इंडिया कंपनी का हमेशा विरोध होता रहा। 1857 का विद्रोह ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक महत्वपूर्ण विद्रोह था यह घटना अचानक नहीं घटी बल्कि कई वर्षो के ब्रटिश शासन की नीतियों के प्रति असंतोष था जिसके बीज इतिहास की कई घटनाओ से सम्बंधित थे। जिसमें असंतुष्ट राजाओं, सैनिकों और भारत की जनता ने भाग लिया था।

भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवादियों और पहले के आक्रमणकारियों के बीच अंतर

- भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना ने देश के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य को बदल दिया। अंग्रेज, 1608 के आसपास भारत पहुंचे। यूरोपीयों के आगमन से भारतीय समाज में कई परिवर्तन हुए।
- प्रारंभिक आक्रमणकारियों और ब्रिटिश साम्राज्य के बीच प्रमुख अंतर यह था कि पिछले आक्रमणों से भारतीय समाज, प्रशासन और अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तन नहीं हुए थे परन्तु ब्रिटिश साम्राज्य ने इन सभी क्षेत्रो पर प्रभाव डाला।

1857 के विद्रोह के कारण/Causes of the revolt of 1857

❑ **राजनीतिक कारण:/ Political reasons:**

- **युद्ध और विजय :**
  - ईस्ट इंडिया कंपनी ने राजवंशों के बीच असंतोष भाव का बीजारोपण किया।
  - उदाहरण के लिए, लॉर्ड डलहौजी ने पंजाब पर कब्जा करके शाही वंश को अपमानित किया। दिलीप सिंह को सिंहासन से हटाकर इंग्लैंड भेज दिया गया और लाहौर दरबार की संपत्ति बिक्री के लिए रख दी गई।
- **सहायक संधि:**
  - इस गठबंधन ने भारत के शासकों को अपनी अलग सशस्त्र सेना रखने से रोक दिया।
  - उन्हें "सहायक बलों" के लिए भुगतान करना पड़ा जिसका उपयोग कंपनी उनकी रक्षा के लिए करेगी ।
  - हैदराबाद (1798), मैसूर (1799), तंजौर (1799), अवध (1801), पेशवा (मराठा) (1802), और सिंधिया (1803) ने सहायक संधि में प्रवेश किया।
  - परिणामस्वरूप, इन भारतीय राजाओं ने अपनी विदेश नीति को अंग्रेजों के हवाले कर दिया, इससे कई सैनिकों की नौकरी चली गई।
  - इस प्रकार, ईस्ट इंडिया कंपनी के "प्रभावी नियंत्रण" के लक्ष्य और भारतीय देशी राज्यों के क्रमिक विलोपन ने एक निश्चित आकार ले लिया।
- **व्यपगत का सिद्धांत: व्यपगत नीति**
  - **प्रचलन -** लॉर्ड डलहौजी
  - सतारा (1848), जैतपुर और संबलपुर (1849), उदयपुर (1852), नागपुर(1853), झांसी(1854) की रियासतों को डलहौजी ने अपने कब्जे में ले लिया था । वाजिद अली शाह (अवध, 1856) के तख्तापलट से पूरे देश में रोष और नफरत फैल गई।
- **क्षेत्रीय शासकों का अनादर:**
  - **डलहौजी**, कैनिंग और ईस्ट इंडिया कंपनी के रवैये से नाममात्र के मुगल सम्राटों के अपमान पर मुसलमानों और हिंदुओं दोनों ने नाराजगी दर्ज की। परिणामस्वरूप, उन्होंने विद्रोहियों के साथ गठबंधन करने का फैसला किया।
- **श्रेष्ठता की भावना:**
  - अंग्रेजों ने भेदभाव और अलगाव की एक सुविचारित नीति के माध्यम से श्वेत श्रेष्ठता के नस्लीय मिथकों को कायम रखने की कोशिश की। इससे भारतीयों में खलबली मच गई।
- **सामाजिक कानून:**
  - अंग्रेजों ने बाल विवाह, शिशुहत्या और सती प्रथा आदि सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने का प्रयास किया। वे रूढ़िवादी कानून के विरोध में थे।
- **अधिकार सम्बन्धी सशक्तिकरण:**

- विरासत के अधिकार, विधवा पुनर्विवाह, और महिलाओं को पश्चिमी शिक्षा प्रदान करने के लिए स्कूलों और कॉलेजों से संबंधित कानून हिंदुओं द्वारा नापसंद किये गए।

- **धार्मिक लोगों के प्रभाव में कमी:**
  - अंग्रेजों ने धार्मिक लोगों को बिना किसी विशेष सुविधा के सामान्य नागरिकों के बराबर माना। इससे वे ब्रिटिश साम्राज्य के कटु शत्रु बन गए।
- **रहस्यमय चीजों का प्रचलन:**
  - रोटियां, केक और कमल के फूल जैसी रहस्यमय वस्तुएं, जो 1850 के आसपास गांवों में बांटी जाती थी, के द्वारा अशांति फैलाने का प्रयास किया गया।

❑ **सैन्य कारण:/ Military reasons:**

- **अफगान युद्ध में पराजय:**
  - प्रथम अफगान युद्ध (1838-42) में हार के बाद ब्रिटिश सेना की शक्ति का ह्रास हो चूका था। इतिहासकारों के अनुसार, अंग्रेजों को अफगानिस्तान से हटने के लिए मजबूर कर दिया गया था और संघर्ष के दौरान केवल एक सैनिक ही बच पाया था।
- **सेना के प्रति वफादारी की कमी:**
  - भारतीय सैनिकों ने यह स्वीकार करना शुरू कर दिया कि उन्होंने अंग्रेजी विस्तारवाद और अपने लोगों के शोषण में सहायता की थी। गोरखाओं और सिखों की भर्ती और पंजाब और अन्य सीमावर्ती क्षेत्रों में अनियमित बलों की स्थापना के कारण उनका भविष्य खतरे में पड़ चुका था।
- **विदेश यात्रा से जुड़ा कानून:**
  - सिपाहियों को समुद्र के पार युद्ध करने के लिए मजबूर करने हेतु सामान्य सेना भर्ती अधिनियम (1856 में लॉर्ड कैनिंग द्वारा) पारित किया गया था। यह ब्रिटिशों के प्रति शत्रुता का कारण बना।
- **भारतीय और ब्रिटिश सैनिकों के बीच असमानता:**
  - ब्रिटिश और भारतीय सैनिकों के बीच असमानता मौजूद थी। भारतीय सैनिकों को यह अहसास होने लगा कि अगर उन्होंने भारत में ब्रिटिश सत्ता पर हमला किया तो वह अपने पैरों पर खड़ी नहीं हो पाएगी।
- **क्रीमिया युद्ध:**
  - भारतीय सेना का एक बड़ा हिस्सा क्रीमिया युद्ध में लड़ने के लिए तैयार हो गए थे, जहाँ ब्रिटिश सैनिकों की विफलता ने भारत में ब्रिटिश सैनिकों के मनोबल को गंभीर रूप से कम कर दिया था।
- **लुब्रिकेटेड कारतूस:**
  - सिपाहियों को इसे इस्तेमाल करने के लिए कारतूस को मुंह लगाना पड़ता था। ऐसी अफवाह थी कि नई एनफील्ड बंदूकों में गाय और सुअर की चर्बी का इस्तेमाल किया जाता था। इससे सिपाही भड़क गए। यह 1857 की क्रांति का तात्कालिक कारण बना।

❑ **विद्रोह की शुरुआत और प्रभाव**

- 1857 का विद्रोह मेरठ से शुरू हुआ था, जहां 85 घुड़सवार रेजिमेंट के सिपाहियों को चर्बी वाले कारतूसों का उपयोग करने से मना करने पर 2-10 साल की जेल की सजा सुनाई गई थी। अगले दिन, 10 मई, 1857 को तीन रेजिमेंट आक्रामक हो गई। उन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या कर दी और अपने साथियों को मुक्त करने के लिए जेल के दरवाजे तोड़ दिए।
- खुले तौर पर कमान की अवहेलना करने वाले मंगल पांडे पहले सैनिक थे। 29 मार्च, 1857 को उन्होंने कलकत्ता के निकट बैरकपुर में दो अंग्रेज अधिकारि सारजेण्ट ह्यूरसन तथा लेफ्टीनेन्ट बाग को गोली मार दी। उन्हें पकड़ा गया, मुकदमा चलाया गया और 8 अप्रैल 1857 को इन्हे फांसी दे दी गयी। बैरकपुर रेजीमेंट (34 वी एन०आई०) को भंग कर दिया गया।
- मुगल वंश का दीर्घकालिक शासन भारत की राजनीतिक एकता का पारंपरिक प्रतीक बन गया था। परिणामस्वरूप, बहादुर शाह को सम्राट घोषित किया गया और, दिल्ली जल्द ही विद्रोह का केंद्र बन गयी।
- बहादुर शाह ज़फ़र, जो वृद्ध और शक्तिहीन थे, को भारत के सम्राट का ताज पहनाया गया।

❑ **विद्रोह में क्षेत्रीय भिन्नता**

- भले ही विद्रोह बड़ा और व्यापक था, फिर भी यह ज्यादातर खंडित, असंगठित और स्थानीय प्रकृति का था।
- **प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. आर. सी. मजूमदार के अनुसार,** विद्रोह अखिल भारतीय होने के बजाय एक स्थानीय और असंगठित विद्रोह था।
- **प्रभावित क्षेत्र :-** पंजाब, संयुक्त प्रांत, रोहिलखंड, अवध, नर्मदा और चंबल के बीच का क्षेत्र, साथ ही उत्तर-पूर्वी सीमा पर बंगाल और बिहार के पश्चिमी भाग
- दोस्त मोहम्मद के शासन के दौरान अफगानिस्तान के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध थे। राजपूताना अंग्रेजों के भरोसेमंद थे, जबकि सिंध शांत इलाका था।

❑ दिल्ली

- 12 मई, 1857 को सिपाहियों द्वारा दिल्ली पर कब्जा कर लिया गया। इंग्लैंड के राजनीतिक एजेंट, साइमन फ्रेजर लेफ्टिनेंट विलोबी ने वापस लड़ने का प्रयास किया, लेकिन अंततः हार गए; परिणामस्वरूप, उसने दिल्ली के गोला-बारूद के ढेर को आग लगा दी।
- बहादुर शाह द्वितीय को दिल्ली का सम्राट घोषित किया गया। वे केवल नेतृत्वकर्ता के रूप में कार्य कर रहे थे; बख्त खान ने सत्ता की बागडोर संभाली। 20 सितंबर, 1857 को अंग्रेजों ने वापस दिल्ली पर अधिकार कर लिया।
- दिल्ली को हेनरी बर्नार्ड और बीजी विल्सन ने आजाद कराया था।
- बहादुर शाह द्वितीय, जिसने हुमायूँ के मकबरे में शरण ली थी, को लेफ्टिनेंट हडसन द्वारा हिरासत में लिया गया था। उन्हें रंगून निष्कासित कर दिया गया। 7 नवंबर 1862 में बहादुर शाह की मृत्यु हो गई।
- जॉन निकोलसन ने कश्मीर गेट पर चढ़ाई की और शहर के प्रवेश द्वार पर नियंत्रण कर लिया, इस संघर्ष में जॉन निकोलसन की मृत्यु हो गयी।

❑ बिहार

- **कुंवर सिंह 1857** के भारतीय विद्रोह के दौरान एक नेता थे। वह जगदीशपुर, बिहार के थे।
- 80 वर्ष की आयु में, उन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की कमान के तहत सैनिकों के खिलाफ सशस्त्र सैनिकों के एक चयनित बैंड का नेतृत्व किया। वे छापामार युद्ध कला के विशेषज्ञ थे।
- उनकी सहायता बाबू अमर सिंह और उनके सेनापति हरे कृष्ण सिंह ने की थी।
- मृत्यु - युद्ध में जख्मी होने के कारण 26 अप्रैल 1858 में
- बिहार के विद्रोह को विलियम टेलर और विसेंट आयर ने दबा दिया था

❑ उत्तर प्रदेश/Uttar Pradesh

स्थान/Place	विद्रोह की विशेषताएं/ Features of the uprising
अवध	• विद्रोह, जिसका नेतृत्व बेगम हज़रत महल (अवध की बेगम) ने किया था, 4 जून, 1857 को लखनऊ में प्रारंभ हुआ था। • उन्होंने अपने अल्पायु बेटे बिरजिस कादिर को अवध का नवाब घोषित किया। • गोरखा रेजिमेंट की सहायता से, सर कॉलिन कैंपबेल ने नवंबर 1857 में शहर में प्रवेश किया और यूरोपीय लोगों को बाहर निकाला। • अंततः विद्रोह को दबा दिया गया और 21 मार्च, 1858 को शहर पर पुनः कब्ज़ा कर लिया गया। बेगम हज़रत महल नेपाल चली गई। • कमिश्नर हेनरी लॉरेंस लखनऊ के विद्रोह में मारे गए थे।
झांसी	• रानी लक्ष्मीबाई विद्रोह में शामिल हो गई थीं क्योंकि अंग्रेजों ने 'व्यपगत सिद्धांत' के तहत उनके दत्तक पुत्र को सिंहासन पर बैठाने से इनकार कर दिया था।

	• तात्या टोपे की सहायता से उन्होंने ग्वालियर के किले पर अधिकार कर लिया। 17 जून, 1858 को जनरल ह्यूरोज़ की कमान वाली अंग्रेजी सेना के खिलाफ लड़ते हुए रानी शहीद हो गई। अंग्रेजों ने 03 अप्रैल, 1858 को झाँसी पर कब्ज़ा कर लिया। • ह्यूरोज ने कहा कि "यहाँ वह महिला पड़ी थी जो विद्रोहियों के बीच एकमात्र पुरुष थी।"
कानपुर	• नाना साहेब पेशवा बाजीराव -II के दत्तक पुत्र थे नाना साहेब को 8 लाख रूपए वार्षिक पेंशन मिलती थी। जिसे ब्रिटिश अधिकारीयों ने बंद कर दी। • 5 जून, 1857 को नाना साहब ने विद्रोह का नेतृत्व किया, जो कानपुर में शुरू हुआ। सर ह्यूज व्हीलर के नेतृत्व वाले अंग्रेजी सेना को नाना साहेब सेना ने 27 जून, 1857 को आत्मसमर्पण हेतु मजबूर किया। • 6 दिसंबर, 1857 को कॉलिन कैंपबेल ने विद्रोही सेना को हराकर कानपुर पर कब्ज़ा कर लिया। • तात्या टोपे ने खुद को झाँसी की रानी के साथ जोड़ लिया जबकि नाना साहब नेपाल चले गए और बिना किसी सुराग के गायब हो गए।
बनारस	• यहाँ विद्रोह आम जनता द्वारा किया गया था। • कर्नल नील द्वारा विद्रोह को निर्दयतापूर्वक दबा दिया गया। • इस विद्रोह के दौरान पकडे गए महिलाओ और बच्चो को भी मृत्युदंड दे दिया गया था।
बरेली	• बरेली के विद्रोह का नेतृत्व खान बहादुर खान ने किया था। • इस विद्रोह को कैंपबेल द्वारा दबा दिया गया। और खान बहादुर खां को फांसी दे दी गयी।
फैजाबाद	• फैजाबाद में विद्रोह का नेतृत्व मौलवी अहमदुल्ला ने किया था। • अहमदुल्ला के बारे में अंग्रेजों ने कहा कि "अदम्य साहस के गुणों से परिपूर्ण दृढ़ संकल्प वाले व्यक्ति तथा विद्रोहियों में सर्वोत्तम सैनिक हैं।" • अहमदुल्लाह की गतिविधियों से अंग्रेज इतने चिन्तित थे कि उन्होंने इन्हें पकड़ने के लिए ₹50,000 का नकद इनाम घोषित किया। • 5 जून, 1858 को रुहेलखण्ड में इनकी गोली मारकर हत्या कर दी गई।

❑ अन्य राज्य/ Other States

स्थान **place**	**विद्रोह की विशेषताएं** **Features of the uprising**
असम Assam	दीवान मनीराम दत्ता ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी Diwan Maniram Dutta fought against the British
महाराष्ट्र Maharashtra	सतारा - रंगो बापूजी गुप्ते Satara - Rango Bapuji Gupte
हिमाचल प्रदेश Himachal Pradesh	कुल्लू- राणा प्रताप सिंह और वीर सिंह Kullu – Rana Pratap Singh and Veer Singh

1857 के महत्वपूर्ण तथ्य		
केन्द्र	**विद्रोही नेता**	**विद्रोह कुचलने वाले सैन्य अधिकारी**
दिल्ली	बहादुरशाह, बख्त खाँ	निकल्सन, हडसन
कानपुर	नाना साहब, तांत्या टोपे	कॉलिन कैम्पबेल
लखनऊ	बेगम हजरत महल, बिरजिस कादिर	कॉलिन कैम्पबेल
झाँसी, ग्वालियर	रानी लक्ष्मीबाई, ताँत्या टोपे	जनरल ह्यूरोज

जगदीशपुर	कुँवर सिंह, अमर सिंह	मेजर विलियम टेलर
फैजाबाद	मौलवी अहमदुल्ला	जनरल रेनॉर्ड
इलाहाबाद	लियाकत अली	कर्नल नील
बरेली	खान बहादुर खाँ	विंसेण्ट आयर

Note :- दिल्ली में कब्जे के एक महीने के भीतर विद्रोह लगभग सभी बड़े केन्द्रों कानपुर, लखनऊ, बनारस, प्रयागराज, बरेली, जगदीशपुर और झाँसी तक फैल गया। **उत्तर भारत में इस विद्रोह के प्रमुख केन्द्र थे-**

केन्द्र	**अवधि**
मेरठ	10 मई, 1857
दिल्ली	11 मई, 1857 से 20 सितम्बर, 1857
लखनऊ	04 जून, 1857 से 31, मार्च, 1858
कानपुर	05 जून, 1857 से 21 दिसम्बर, 1857
झाँसी	05 जून, 1857 से 17 जून, 1858
प्रयागराज	06 जून 1857 से 1858

❑ प्रमुख व्यक्तित्वों के विचार और दृष्टिकोण

- **मौलाना अबुल कलाम आजाद :-** भारतीय राष्ट्रीय चरित्र बहुत नीचे गिर गया था और विद्रोह के लिए अंग्रेजों को जिम्मेदार ठहराया और लोगों में सामान्य असंतोष को स्वीकार किया
- **पं. जवाहर लाल नेहरू :-** सिपाही विद्रोह ही नहीं, नागरिक विद्रोह का रूप ले लिया। वास्तविक रूप सामंतवाद था, हालांकि कुछ राष्ट्रवादी तत्व भी मौजूद थे।
- **स्टेनली वोलपर्ट :-** यह एक विद्रोह से कहीं अधिक था ... फिर भी स्वतंत्रता के प्रथम युद्ध से बहुत कम था
- **डॉ. ताराचंद :-** विद्रोह विशेष रूप से मध्य चरित्र का था और अपनी खोई हुई शक्ति को वापस पाने के लिए शक्तिहीन वर्ग का प्रतिनिधित्व किया

❑ विद्रोह की प्रकृति

विद्रोह की प्रकृति पर इतिहासकारों के दृष्टिकोण भिन्न हैं। अंग्रेजों ने इसे केवल "एक सैन्य विद्रोह" के रूप में मान्यता दी जिसमें लोगों या प्रमुख नेताओं के समर्थन की कमी थी।

- **1857 के विद्रोह की प्रकृति और चरित्र को आम तौर पर इस रूप में देखा गया था::**

- सैन्य विद्रोह
- मुगल सत्ता की स्थापना का प्रयास
- अभिजात प्रतिक्रिया
- किसान प्रतिक्रिया
- एक राष्ट्रीय क्रांति
- काले और गोरों के बीच वर्चस्व के लिए नस्लीय संघर्ष
- पूर्वी और पश्चिमी सभ्यता के बीच संघर्ष और
- संस्कृति
- राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम

Note:- इनमें से, सैन्य विद्रोहों और राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम को इतिहासकारों द्वारा सबसे अधिक समर्थन दिया गया है।
Note:- Of these, military rebellions and national independence struggle have been given the most support by historians.

प्रमुख व्यक्तित्वों के विचार और दृष्टिकोण	
विद्रोह का स्वरूप	इतिहासकार/विद्वान
" यह सुनियोजित स्वतन्त्रता संग्राम था"	वी.डी. सावरकर
'तथाकथित प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम न प्रथम, न ही राष्ट्रीय और न ही स्वतन्त्रता संग्राम था।'	रमेश चन्द्र मजूमदार
यह विद्रोह राष्ट्रीयता के अभाव में स्वतन्त्रता संग्राम था।	डॉ. एस.एन. सेन
यह 'राष्ट्रीय विद्रोह' था	बेल्जामिन डिजरेली एवं अशोक मेहता
अंग्रेजों के विरुद्ध 'हिन्दू-मुस्लिम षड्यंत्र' था	जेम्स आउट्स एवं डब्ल्यू टेलर
'ईसाइयों के विरुद्ध धर्मयुद्ध' था	एल.आर. रीस
यह स्वतन्त्रता संग्राम था	डॉ. ईश्वरी प्रसाद
एक सामंतवादी प्रतिक्रिया थी	एस.बी. चौधरी
यह पूर्णतया सिपाही विद्रोह था	के. मालेसन, टेबिलियन, सर जान लारेंस व सीले
1857 का विद्रोह एक सैनिक विद्रोह था, जिसका तत्कालिक कारण चर्बीयुक्त कारतूस था।"	पी. रावर्टस

❑ **परिप्रेक्ष्य: एक सैन्य विद्रोह/ Perspective: A military coup**

- **इतिहासकारों के विचार:**
- सर जॉन लॉरेंस और सीले जैसे इतिहासकारों के अनुसार 1857 ई. का विद्रोह एक सैन्य विद्रोह था।
- मुंशी जीवन लाल, मोइनुद्दीन, सर सैय्यद अहमद खान, दुर्गादास बंदोपाध्याय आदि सहित समकालीन भारतीयों ने भी यही राय साझा की।
- " द सिपाय म्यूटिनी एंड द रिवोल्ट ऑफ 1857" पुस्तक में, आर. सी. मजूमदार ने कहा- यह विद्रोह स्वतंत्रता संग्राम नहीं था।
- **इस तर्क के कारण:**
- विद्रोह केवल उत्तरी भारत के एक छोटे से हिस्से तक फैला था; यह उत्तर भारत और दक्षिणी भारत के कई क्षेत्रों में नहीं फैल सका था।
- विद्रोह, सैन्य छावनी क्षेत्र में शुरू हुआ और सैन्य केंद्रों में विकसित हुआ।
- जब सैनिकों ने अंग्रेजों के खिलाफ हथियार उठाना शुरू किया, तब नाना साहब, बहादुर शाह और झाँसी की रानी जैसे महान व्यक्तित्व आगे आए।
- यदि यह राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम होता, तो ब्रिटिश सैनिकों का एक छोटा सा हिस्सा विद्रोह को दबा नहीं सकता था।
- 1857 के विद्रोह में बहुत कम भागीदारी देखी गई और यह शहरों और कस्बों तक ही सीमित था, और आसपास के गाँवों में नहीं फैला।

❑ **परिप्रेक्ष्य: स्वतंत्रता का प्रथम युद्ध/ Perspective: First War of Independence**

- डॉ. के.एम. पणिकर ने उस विद्रोह को राष्ट्रीय क्रांति कहा है।
- वी.डी. सावरकर और अशोक मेहता ने इसे स्वतंत्रता संग्राम कहा है।
- पंडित नेहरू के शब्दों में: विद्रोह एक सैन्य विद्रोह से कहीं अधिक था और ये तेजी से फैल गया और यह भारतीय स्वतंत्रता का युद्ध था।
- कंजर्वेटिव पार्टी के समकालीन नेता बेंजामिन दासरेली ने इसे राष्ट्रीय विद्रोह कहा। उन्होंने उल्लेख किया कि - विद्रोह किसी तात्कालिक कारण का परिणाम नहीं था, बल्कि यह एक सुविचारित और संगठित योजना का परिणाम था।
- **इस तर्क के कारण:**
- इसका व्यापक प्रसार हुआ और इसमें समाज के सभी वर्गों के लोगों ने भाग लिया।
- देशी सैनिकों, जमींदारों और देशी शासकों ने भी अपनी सक्रिय भागीदारी दिखाई।

- विद्रोह कई महीनों तक बना रहा जो आम लोगों के समर्थन के बिना संभव नहीं था।
- अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह में हिंदुओं और मुसलमानों दोनों ने संयुक्त रूप से भाग लिया।
- अधिकतर, आम लोगों और नागरिकों को अंग्रेजों द्वारा दंडित किया गया था।
- पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं ने भी उस विद्रोह में सक्रिय भाग लिया।

❑ **1857 के विद्रोह में हिंदू-मुस्लिम एकता**

- 1857 की घटनाएँ हिंदू-मुस्लिम एकता की परंपराओं के एक महान प्रमाण के रूप में सामने आईं, जो बाद की पीढ़ियों के लिए एक उदाहरण के रूप में स्थापित हुई।
- 'दीन' और 'धर्म' के झंडे तले रैली करने के बावजूद, विद्रोह एकजुट था। विदेशी प्रभुत्व के प्रतिरोध में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच कोई विभाजन नहीं था।
- 10 मई, 1857 को शुरू हुए भारत के पहले स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदुओं और मुसलमानों के बड़े हिस्से ने मिलकर साम्राज्यवादी सत्ता, ब्रिटेन को चुनौती दी थी।
- विद्रोह पर मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के लेखन में उन्होंने कहा कि हिंदू और मुसलमानों के बीच भाई-चारे की भावना ना केवल सेना में बल्कि नागरिक आबादी में भी देखी गई।

❑ **1857 के क्षेत्रीय युद्धों में धार्मिक एकता**

- **अयोध्या (बाबा रामचरण दास और मौलाना अमीर अली):**

- मौलाना अमीर अली (अयोध्या के मौलवी) और हनुमान गढ़ी के पुजारी, बाबा रामचरण दास ने सशस्त्र प्रतिरोध के आयोजन का नेतृत्व किया।
- बाद में, दोनों को पकड़ लिया गया और अयोध्या में कुबेर टीला में एक इमली के पेड़ पर एक साथ फांसी दे दी गयी।

- **रोहिलखंड (खान बहादुर खान और खुशी राम):**

- 11 मई, 1857 को दिल्ली में एक स्वतंत्र भारत सरकार की घोषणा के बाद, खान बहादुर खान को मुगल सम्राट के वायसराय के रूप में नियुक्त किया गया था।
- उन्होंने राज्य के मामलों का संचालन करने के लिए हिंदुओं और मुसलमानों दोनों से मिलकर आठ सदस्यों की एक समिति नियुक्त की, उनके उप-प्रभारी खुशी राम थे।
- इस सरकार ने स्थानीय हिंदुओं की भावनाओं का सम्मान करते हुए गोहत्या पर रोक लगा दी।

- **बरेली में युद्ध:**

- खान और ख़ुशी राम ने कई लड़ाइयों में अंग्रेजों और उनके सैनिको को हराने के लिए सेना का नेतृत्व किया लेकिन बरेली में एक महत्वपूर्ण लड़ाई में हार गए।
- उन दोनों को 20 मार्च, 1860 को पुरानी कोतवाली के बाहर उनके सैकड़ों अनुयायियों के साथ फाँसी दे दी गई थी।

- **मध्य भारत:**

- **झांसी**: रानी लक्ष्मीबाई ने अपने मुस्लिम कमांडरों गुलाम गौस खान (तोपखाने के प्रमुख), और खुदा बख्श (पैदल सेना के प्रमुख) के साथ एक बड़ा प्रतिरोध किया।
- 18 जून, 1858 को ग्वालियर के कोटा की सराय युद्ध में मुस्लिम महिला मंजर (निजी अंगरक्षक) ने रानी लक्ष्मीबाई के साथ अपने प्राणों की आहुति दे दी।
- मालवा क्षेत्र: तात्या टोपे, राव साहब, लक्ष्मी बाई, फिरोजशाह और मौलवी फजल हक की संयुक्त कमान 70-80 हजार लड़ाकों की एक विशाल विद्रोही सेना को संगठित करने में सक्षम थी। इस सेना ने अंग्रेजों के खिलाफ अनगिनत लड़ाइयां जीतीं।
- दिल्ली: दोनों समुदायों ने ब्रिटिश सरकार को कमजोर करने के लिए एक संयुक्त प्रयास किया और अपनी एकता दिखाने के लिए उन्होंने दिल्ली के सुल्तान बहादुरशाह जफर को अपना नेता घोषित किया और उन्होंने कसम खाई कि अगर वे सफल हुए तो बहादुरशाह जफर दिल्ली के सुल्तान होंगे।

❑ 1857 के विद्रोह के असफलता के कारण

- **स्थानीय प्रकृति:**
  - 1857 का विद्रोह उग्र होने के बावजूद छोटे स्तर का और सीमित था। डॉ. आर.सी. मजूमदार के अनुसार, यह अखिल भारतीय होने के बजाय, स्थानीय और असंगठित था।
- **असमान प्रभाव:**
  - भारत के उत्तरी और मध्य क्षेत्रों में अधिकांश विद्रोह देखे गए। पूर्वी, दक्षिणी और पश्चिमी भारत कम प्रभावित हुए। **मद्रास** और **बंबई** में सेना दृढ़ता से कंपनी के प्रति समर्पित रही।
- **समय से पहले विद्रोह की शुरुआत:**
  - देश में एक साथ विद्रोह की तारीख 31 मई 1857 तय की गई थी। तारीख केवल प्रत्येक संगठनात्मक केंद्र के नेताओं और प्रत्येक रेजीमेंट के तीन अधिकारियों को ही पता थी। हालाँकि, यह मेरठ में मंगल पांडे की फांसी, 19वीं और 34वीं भारतीय रेजीमेंट के सैनिकों के विघटन आदि जैसी कुछ घटनाओं के कारण 10 मई को शुरू हो गया।
- **एकता का अभाव :**
  - भारतीय विद्रोही संगठित नहीं थे, साथ ही केंद्रीय नेतृत्व कमजोर था। इसके नेतृत्व में वीरता और साहस की कमी नहीं थी, बल्कि संगठन और अनुभव की कमी थी।
- **नेतृत्व का अभाव:**
  - बाबू कुँवर सिंह, झाँसी की रानी, तात्या टोपे और नाना साहब जैसे कुछ ही सक्षम नेता थे।
- **विद्रोहियों में व्यक्तिगत प्रतिद्वंद्विता:**
  - मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के अनुसार, विद्रोह के नेताओं के मध्य व्यक्तिगत प्रतिद्वंद्विता थी। वे एक-दूसरे से ईर्ष्या करते थे और लगातार एक-दूसरे के खिलाफ साज़िश भी करते थे।
- **बहादुर शाह जफर का कमजोर नेतृत्व:**
  - मुगल वंश का अंतिम सम्राट अंग्रेजों की तरह मजबूत और साधन संपन्न नहीं था। उसके पास सशक्त नेतृत्व की भी कमी थी और इसलिए वह 1857 के विद्रोह के दौरान अपने क्षेत्रों की रक्षा नहीं सका।
- **कमजोर हथियार और गोला-बारूद:**
  - विद्रोहियों के पास हथियारों का अभाव था, जबकि अंग्रेजों के पास समकालीन राइफलें और हथियार थे। भारतीयों के पास पुरानी तोपें और तलवारें थीं।
- **युद्ध प्रौद्योगिकी में अंग्रेजों की श्रेष्ठता:**
  - ब्रिटिश नौसेना श्रेष्ठ मानी जाती थी। इसी अवधि के दौरान ब्रिटिश नौसैनिक शक्ति भी बेजोड़ थी।
  - विद्युत प्रणाली ने विद्रोहियों के पूर्व निर्धारित इरादों के बारे में सारी जानकारी दी।
  - ब्रिटिश शाही साम्राज्य के पास असीमित संसाधन थे।

विद्रोह के परिणाम/ Consequences of the uprising

❑ सकारात्मक प्रभाव

- **सत्ता का हस्तांतरण:**
  - भारत सरकार अधिनियम 1858 के माध्यम से ईस्ट इंडिया कंपनी से ब्रिटिश ताज को राजनीतिक और प्रशासनिक शक्ति का हस्तांतरण हुआ।
  - इस अधिनियम के तहत शासन, सेक्रेटरी ऑफ स्टेट के माध्यम से ब्रिटिश ताज के अधीन हो गया।
  - उन्हें सीधे तौर पर ब्रिटिश संसद के प्रति उत्तरदायी बनाया गया। देश के मामलों के लेन-देन में सहायता और सलाह देने के लिए भारत परिषद बनाई गई थी।

- गवर्नर जनरल को वायसराय बना दिया गया। भारतीय सेना का पुनर्गठन: प्रमुख परिवर्तन जैसे कि अंग्रेजी और भारतीय सेना के बीच अनुपातों को फिर से व्यवस्थित करना, सेनाओं का संगठन, आदि लागू किये गए।

- **शासन में भागीदारी की वृद्धि:**
  - **भारत सरकार अधिनियम 1858 के तहत,** इंग्लैंड की गृह सरकार (जिसमें भारत के राज्य सचिव शामिल थे) द्वारा ब्रिटिश ताज के अंतर्गत शासन किया जाना था।
  - कानून ने लगभग साठ वर्षों तक भारत में एक नई ब्रिटिश रणनीति की आधारशिला के रूप में कार्य किया।
- **विलय की नीति को समाप्त कर दिया:**
  - ब्रिटिश सरकार ने विलय के सिद्धांत जैसी विलय नीतियों को त्याग दिया और भारतीय राज्यों की अखंडता की गारंटी दी।
- **गोद लेने का अधिकार:**
  - ब्रिटिश अधिकारियों ने रियासतों के महत्व को महसूस किया और इसलिए देशी राजकुमारों द्वारा गोद लेने के अधिकार को उचित रूप से स्वीकार किया गया।
- **धार्मिक स्वतंत्रता और समान व्यवहार:**
  - घोषणा के अनुसार, भारत में सभी लोगों को धार्मिक स्वतंत्रता दी गई और प्रशासन ने धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप न करने का संकल्प लिया।

❑ **अन्य सुधार:**

- कलकत्ता और मद्रास में विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई (1857ई.)
- दंड प्रक्रिया संहिता की शुरुआत (1860 ई.)
- भारतीय उच्च न्यायालय अधिनियम का अधिनियमन(1861 ई.)
- भारतीय दंड संहिता (1858 ई.)
- भारतीय परिषद अधिनियम, 1861 के पारित होने से भारत में एक पोर्टफोलियो प्रणाली की शुरुआत हुई
- महारानी विक्टोरिया की उद्घोषणा (1858)
- कंपनी के नियमों का उन्मूलन
- भारत के वायसराय का नया पदनाम
- दोहरी सरकार की प्रणाली को सक्षम किया
- भारत के राज्य सचिव के कार्यालय की स्थापना की
- भारतीय परिषद की स्थापना

❑ **नकारात्मक प्रभाव**

- **नस्लीय दुर्भावना में वृद्धि:**
  - भारतीयों को शर्मिंदा और अपमानित किया गया क्योंकि अंग्रेजों ने उन्हें अविश्वसनीय लोगों के रूप में चित्रित किया। इसके परिणामस्वरूप अंग्रेजों और भारतीयों के बीच नस्लीय शत्रुता बढ़ गई।
- **सामाजिक सुधारों का उत्क्रमण:**
  - विद्रोह ने अंग्रेजों को समझा दिया कि भारत की स्थापित सामाजिक-धार्मिक प्रथाओं में हस्तक्षेप प्रतिकूल था। सामाजिक नियमों के तीव्र प्रतिरोध के परिणामस्वरूप अंग्रेजों को पीछे हटने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- **प्रशासनिक परिवर्तनों पर ध्यान बढ़ाया गया:**
  - 1857 के विद्रोह के बाद, अंग्रेजों ने पश्चिमी अवधारणाओं को लाने और एक स्थापित एशियाई समाज में सुधार के बजाय एक स्थिर और प्रभावी प्रशासन स्थापित करने पर ध्यान केंद्रित करने का निर्णय लिया।
- **बांटो और राज करो की नीति :**

- विद्रोह के बाद, अंग्रेजों ने भारतीयों को जातियों और वर्गों में विभाजित करने की नीति लागू की। एक समुदाय को दूसरे के खिलाफ इस्तेमाल किया गया। हिंदू आक्रोशित थे, और मुसलमानों को हिंदुओं से लड़ने के लिए मजबूर किया गया था।

- **आर्थिक शोषण के साथ प्रादेशिक विजय का प्रतिस्थापन:**
  - इस विद्रोह की विफलता के साथ, ब्रिटिश प्रादेशिक विजय का युग समाप्त हो गया और प्रादेशिक विजय की जगह अंग्रेजों ने भारतीयों के आर्थिक शोषण को स्थान दिया।
- **सेना में संरचनात्मक परिवर्तन:**
  - इसके कारण 1857 में भारतीय सैनिकों की संख्या 2.4 लाख से घटकर 1863 तक 1.4 लाख हो गई, दूसरी ओर, यूरोपीय सैनिकों की संख्या 45,000 से बढ़कर 65,000 हो गई।
  - सेना के पुनर्गठन हेतु **पील आयोग** का गठन किया गया
  - सैनिकों का अनुपात सुधारकर 2 : 1 (भारतीय 2, 1 यूरोपीय) किया गया, जो विद्रोह के पूर्व 5 : 1 था।

❑ निष्कर्ष/ conclusion

- 1857 के विद्रोह को श्वेत या अश्वेत (Black & White) के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है। हालाँकि, इसने साम्राज्यवाद के खिलाफ बीज अवश्य बोये थे और राष्ट्रवाद के लिए एकजुट किया। अपनी कमियों और कमजोरियों के बावजूद, देश को विदेशी शासन से मुक्त कराने के लिए सिपाहियों का प्रयास एक देशभक्तिपूर्ण कार्य था। इसने ब्रिटिश शासन के प्रतिरोध की स्थानीय परंपराओं की स्थापना की, जिसने एक आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन का मार्ग प्रशस्त किया।

सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन

- 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में, जाति व्यवस्था, पतन और कठोरता भारतीय समाज की विशेषता थी। इसने कुछ प्रथाओं का पालन किया जो मानवतावादी मान्यताओं या मूल्यों के खिलाफ थीं लेकिन धर्म के नाम पर कायम थी। इसलिए समाज में बदलाव की जरूरत थी। भारतीय समाज की संरचना का आधुनिकीकरण करने के उद्देश्य से कई आंदोलन हुए।
- समाज को सुधारने और पुनरुत्थान करने के प्रयास में, बहुत से लोगों और आंदोलनों ने सामाजिक और धार्मिक मानदंडों को बदलने के लिए काम किया।

❑ सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों का स्वरूप

- धार्मिक और सामाजिक मुद्दों के बीच संबंधों की पहचान, आंदोलनों और उनके नेताओं के सुधार के दृष्टिकोण की विशेषता है। उन्होंने धार्मिक अवधारणाओं का उपयोग कर सामाजिक मानदंडों और रीति-रिवाजों को बदलने का प्रयास किया।
- उदाहरण के लिए, समाज में जातिवाद को समाप्त करने के लिए, केशव चंद्र सेन ने "ईश्वरत्व की एकता और मानव जाति के भाईचारे" की व्याख्या की।

- **मुख्य सामाजिक मुद्दे जिन्हें सुधार आंदोलनों में संबोधित करने की मांग की गई थी**

- जातिवाद और छुआछूत
- महिलाओं की मुक्ति- सती प्रथा, शिशुहत्या, बाल विवाह और विधवा विवाह, महिला शिक्षा
- धार्मिक मुद्दे - बहुदेववाद, मूर्तिपूजा, धार्मिक अंधविश्वास, और पुरोहितों द्वारा शोषण ।

- **आंदोलन की प्रकृति**

1. सुधारवादी
2. पुनरुत्थानवादी आंदोलन

- सुधारवादी और पुनरुत्थानवादी दोनों आंदोलनों ने समाज में सामाजिक-धार्मिक सुधारों की उन्नति में योगदान दिया, जिसने अंततः एक समकालीन और दूरदर्शी समाज के उद्भव का मार्ग प्रशस्त किया।

सुधारवादी	पुनरुत्थानवादी आंदोलन
▪ ये समूह किसी सामाजिक रीति-रिवाज या धार्मिक संस्था को अपनाने या अस्वीकार करने के निष्कर्ष पर तर्क और तर्कवाद पर अधिक निर्भर थे। ▪ सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्र में आधुनिक पश्चिमी मूल्य, जैसे लैंगिक समानता और अपने जीवन साथी का चयन करने की स्वतंत्रता, उदार विचार आदि इन आंदोलनों की विशेषताएं थीं। ▪ आधुनिक पश्चिमी सिद्धांतों को स्वीकार करने के बावजूद, इन आंदोलनों के नेताओं ने पश्चिमी तर्ज पर समाज को पूरी तरह से पुनर्गठित करने से इनकार कर दिया। ▪ पश्चिमीकरण के स्थान पर आधुनिकता उनका लक्ष्य था। ▪ उदाहरण के लिए: ब्रह्म समाज, अलीगढ़ आंदोलन।	▪ ये आंदोलन उस धर्म की खोई हुई पवित्रता पर मजबूती से टिके हुए थे जिसे वे पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रहे थे । ▪ यह आंदोलन विवेक की तुलना में परंपरा के अनुरूप अधिक था। ▪ इन पहलों ने पारंपरिक भारतीय सामाजिक- सांस्कृतिक मान्यताओं के प्रगतिवाद और तर्कवाद को दिखाने की कोशिश की। ▪ उदाहरण के लिए: वहाबी आंदोलन, देवबंद आंदोलन और आर्य समाज आंदोलन।

❑ सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों के कारण

- महिलाओं को सबसे अधिक परेशान करने वाली स्थितियों का सामना करना पड़ रहा था। जन्म के समय कन्या भ्रूण हत्या, बाल विवाह और बहुविवाह प्रथाएँ व्यापक थीं।
- उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय समाज, सामाजिक अज्ञानता और धार्मिक अंधविश्वासों, जैसे - जातिवाद और अस्पृश्यता के चक्रव्यूह में उलझा हुआ था।

- इसने सभी प्रकार के क्रूर रीति-रिवाजों, अंधविश्वासों और अन्य प्रथाओं के खिलाफ उनकी लड़ाई में सुधारकों की सहायता की।
- भारत के वैभव के बारे में उनके बढ़ते ज्ञान के परिणामस्वरूप भारतीय लोगों ने अपनी सभ्यता के प्रति सम्मान की भावना का अनुभव किया।
- शिक्षा, समकालीन पश्चिमी विचारों का प्रभाव, और वैश्विक समुदाय की गहरी समझ ने सुधार को प्रोत्साहित किया।
- राष्ट्रवाद और लोकतंत्र के प्रसार ने भी भारतीय लोगों की सामाजिक संरचनाओं और विश्वदृष्टि को लोकतांत्रिक बनाने के आंदोलनों में अभिव्यक्ति पाई।
- ब्रिटिश भारत का पुन: एकीकरण और समेकन, क्रमशः टेलीग्राफ और रेलवे लाइनों के माध्यम से संचार और परिवहन प्रणालियों में हुआ सुधार, लोगों को एक साथ लाया और उन्हें सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों के लिए प्रोत्साहित किया।
- 1813 ई. में ईसाई पादरियों का भारत में आगमन हुआ। इन धर्म-प्रचारकों ने सामाजिक कुरीतियो पर प्रहार कर हिन्दू तथा इस्लाम धर्मों की मूल प्रवृत्ति पर आघात किया।
- इन आन्दोलन के प्रसार में अंग्रेजी भाषा की शिक्षा का विशिष्ट योगदान रहा। अंग्रेजी भाषा के माध्यम से पश्चिम की स्वतन्त्रता, समानता, लोकतन्त्र एवं राष्ट्रीयता के विचारों से भारतीय प्रभावित हुए। अतः उनमें भी इन तत्त्वों को अपनाने की रुचि बढ़ी।

❑ सुधार लाने के लिए लागू की गई पद्धति

- **सामाजिक-धार्मिक प्रथाओं को बदलने के प्रयास में निम्नलिखित चार तकनीकों का उपयोग किया गया:**

- **भीतर से सुधार:** राममोहन राय ने इस तकनीक का आविष्कार किया। उनके अनुसार, किसी भी सुधार को सफल होने के लिए लोगों में जागरूकता बढ़ाकर समाज के भीतर ही इसकी जरूरत है। इस पद्धति की वकालत करने वाले लोगों ने विशिष्ट उद्देशिका प्रकाशित की थी
  - उदाहरण के लिए, सती प्रथा के खिलाफ राममोहन का अभियान, विधवा विवाह पर विद्यासागर के लेख और बी.एम. मालाबारी द्वारा सम्मति आयु बढ़ाने के प्रयास।
- **पुनरुत्थान :** यह सरकारी कार्रवाई की प्रभावशीलता का प्रतीक था। इस दृष्टिकोण के समर्थकों का मानना था कि सुधार की पहल को सफल बनाने के लिए सरकारी सहायता आवश्यक है।
  - उदाहरण के लिए, बंगाल में केशव चंद्र सेन, महाराष्ट्र में महादेव गोविंद रानाडे, और आंध्र में वीरेशलिंगम जैसे व्यक्तियों ने सरकार से कानून का समर्थन करने की अपील की, जो सम्मति आयु में वृद्धि, नागरिक संघों की वैधता और विधवा विवाह की अनुमति से सम्बंधित था।
- **परिवर्तन के प्रतीक के माध्यम से सुधार:** यह व्यक्तिगत, अपरंपरागत गतिविधि के माध्यम से परिवर्तन के प्रतीक उत्पन्न करने का एक प्रयास था।
  - उदाहरण के लिए, 'डेरोज़ियन' या 'यंग बंगाल', सुधार आंदोलन के भीतर एक आक्रामक धारा का प्रतीक था। वे पश्चिमी दुनिया के नए विचारों से बहुत अधिक प्रभावित थे और सामाजिक मुद्दों पर उनका कठोर तार्किक दृष्टिकोण था।
- **सामाजिक कार्य के माध्यम से सुधार:** रामकृष्ण मिशन, आर्य समाज और ईश्वर चंद्र विद्यासागर की गतिविधियों ने इस पद्धति को प्रदर्शित किया।
  - उदाहरण के लिए, रामकृष्ण मिशन और आर्य समाज सामाजिक कार्य में लगे हुए थे जिसके माध्यम से उन्होंने सुधार और उत्थान की अवधारणाओं को फैलाने का प्रयास किया।

सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों का वर्गीकरण		
धर्म के आधार पर	**भूगोल के आधार पर**	**वर्ग के आधार पर**
▪ हिंदू सुधार आंदोलन	▪ पूर्वी भारत	▪ महिलाओं की स्थिति
▪ मुस्लिम सुधार आंदोलन	▪ पश्चिम भारत	▪ जातिगत भेदभाव
▪ सिख सुधार आंदोलन	▪ उत्तर भारत	
▪ पारसी सुधार आंदोलन	▪ दक्षिण भारत	

हिंदू सुधार आंदोलन/ Hindu reform movements

हिंदू सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन प्रकृति में ज्यादातर सुधारवादी थे, हालाँकि, कुछ आंदोलन, जैसे आर्य समाज आंदोलन, पुनरुत्थानवादी थे।

❑ राजा राम मोहन राय (ब्रह्म समाज)

परिचय: वे एक उत्कृष्ट विद्वान, मानवतावादी और देशभक्त थे। राष्ट्र के प्रति उनके गहन प्रेम के कारण उनका जीवन भारतीयों के सामाजिक, धार्मिक, बौद्धिक और राजनीतिक नवीनीकरण के लिए समर्पित था।

- **जन्म -**. बंगाल में, एक ब्राह्मण परिवार में, (1772 ई)
- **मृत्यु -** ब्रिस्टल (इंग्लैंड), (1833 ई.)
- 1831 में तत्कालीन मुगल बादशाह अकबर द्वितीय के प्रतिनिधि के तौर पर राम मोहन राय इंग्लैण्ड गए थे। अकबर द्वितीय ने ही उन्हें 'राजा' की उपाधि दी थी।
- 1803 - ईस्ट इंडिया कंपनी के रंगपुर स्थित कलेक्ट्रेट में लिपिक की नौकरी ग्रहण की और बाद में दीवान भी बने किन्तु 1814 में इस्तीफा दे दिया।
- वे संस्कृत, फारसी, अरबी, अंग्रेजी, ग्रीक, यहूदी, फ्रेंच, लैटिन आदि 12 भाषाओं के ज्ञाता थे।
- राजाराम मोहन राय को - "भारत के नवजागरण का अग्रदूत", "सुधार आन्दोलन के प्रवर्तक", "अतीत और भविष्य के मध्य सेतु", "भारतीय राष्ट्रवाद के जनक","आधुनिक भारत का पिता" तथा "नव दिन का प्रातः तारा" आदि की उपाधि से विभूषित किया जाता है।

संबंधित संगठन: आत्मीय सभा (1814), ब्रह्म सभा (1828) बाद में इसका नाम बदलकर ब्रह्म समाज रखा गया, 1821 ई. में 'कलकत्ता एकतावादी समिति' की स्थापना

- **योगदान:**

- बहुदेववाद, मूर्तियों की पूजा की निंदा की और मानवीय तर्क और विवेक का समर्थन किया क्योंकि वे किसी भी धार्मिक पाठ से अधिक महत्वपूर्ण हैं।
- अवतारों में विश्वास को त्याग दिया और नैतिकता, अच्छाई और एक अपरिवर्तनीय, शाश्वत ईश्वर की पूजा को प्रोत्साहित किया।
- जाति व्यवस्था की आलोचना और समाज में व्याप्त अस्पृश्यता की आलोचना।
- सती, बहुविवाह और बाल विवाह जैसी प्रथाओं का विरोध किया। 4 दिसम्बर 1829 (नियम XVII) में राजा राममोहन राय के प्रयासों से ही सती प्रथा की समाप्ति संबंधी कानून बना।
- वह कलकत्ता के हिंदू कॉलेज (प्रेसीडेंसी कॉलेज) की स्थापना में शामिल थे। इसके अतिरिक्त, उन्होंने अपने संसाधनों पर कलकत्ता में अंग्रेजी स्कूल का समर्थन किया।
- 1817 में डेविड हेयर की सहायता से कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना की। बाद में यही प्रेसीडेन्सी कॉलेज बना। 1817 में कलकत्ता में एक अंग्रेजी विद्यालय की स्थापना की एवं 1825 में वेदांत कॉलेज की स्थापना की।
- **साहित्यिक कार्य:**
  - 1809 में फारसी भाषा में तुहफात-उल- मुवाहिदीन (एकेश्वरवाद का उपहार) नामक पत्रिका प्रकाशित की।
  - यीशु के उपदेश (1820)
  - वेदों और उपनिषदों का बंगाली में अनुवाद
  - 1821 में बंगाली भाषा में प्रथम साप्ताहिक पत्रिका 'संवाद कौमुदी' का शुभारंभ,
  - 1822 में फारसी भाषा में मिरात-उल-अखबार पत्रिका का प्रकाशनारंभ,
  - आत्मीय सभा प्रकाशन (बंगाल गजट)
  - 1820 में 'प्रीसेप्ट्स ऑफ जीसस' पुस्तक का प्रकाशन।
  - वैदिक ज्ञान विज्ञान के अध्ययन हेतु 'वेद मंदिर' नामक अन्य पत्र का संचालन किया।
  - 1822 में राजा राम मोहन राय ने अपनी पुस्तक **'हिन्दू उत्तराधिकार नियम'** प्रकाशित किया।

❑ दयानंद सरस्वती (आर्य समाज)

- **परिचय:**

- **जन्म -** 12 फ़रवरी 1824 , गुजरात में
- **मृत्यु -** 30 अक्टूबर 1883
- **बचपन का नाम -** मूल शंकर तिवारी
- **गुरु -** वीरजानन्द दंडीष

- आधुनिक भारत में एक महान हिंदू सुधार आंदोलन के रूप में, मूल शंकर (जिन्हें बाद में स्वामी दयानंद सरस्वती के नाम से जाना जाता था) ने 1875 में आर्य समाज की स्थापना की।
- **संबंधित संगठन:** आर्य समाज, दयानंद एंग्लो वैदिक (डीएवी) कॉलेज, शुद्धि आंदोलन।
- **साहित्यिक रचनाएँ:** सत्यार्थ प्रकाश
- **शुद्धि आंदोलन:**

- आर्य समाजियों ने भारत के सामाजिक-धार्मिक और राजनीतिक एकीकरण को लाने के लिए शुद्धि आंदोलन को एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में देखा।
- यह उन हिंदुओं को पुन: धर्म में शामिल करने के लिए था, जो पहले स्वेच्छा से या जबरन दूसरे धर्मों में परिवर्तित हो गए थे, और हिंदू धर्म में लौटने के लिए तैयार थे, साथ ही साथ किसी और धर्मांतरण को रोकने पर भी ध्यान केंद्रित किया।

- **योगदान:**

- एक संयुक्त (धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर) वर्ग और जाति-मुक्त समाज का दृष्टिकोण रखते हुए सभी आर्य धर्म का पालन करते थे।
- वैदिक शिक्षा और धार्मिक शुद्धता को पुनर्जीवित किया गया। उनका मानना था कि भगवान ने मनुष्य को जो ज्ञान दिया है, और आधुनिक विज्ञान की नींव सब वेदों में निहित है
- हिंदू रूढ़िवादिता, जातिगत कठोरता, अस्पृश्यता, मूर्तिपूजा, बहुदेववाद, जादू में विश्वास, आकर्षण, और पशु बलि, आदि पर हमला किया गया।
- वह पश्चिमी विज्ञान के बारे में सीखने को प्राथमिकता देते थे। एंग्लो-वैदिक (डीएवी) कॉलेज की भी स्थापना की।

❑ स्वामी विवेकानंद (राम कृष्ण मिशन)

- **परिचय:**

- **जन्म -**. 12 जनवरी 1863 , कलकत्ता में
- **मृत्यु -** 4 जुलाई 1902
- **बचपन का नाम -** नरेन्द्र नाथ
- इन्होंने भारतीय दर्शन के साथ-साथ पाश्चात्य दर्शन का भी अध्ययन किया था।
- 1891 में इन्होंने सम्पूर्ण भारत की यात्रा की और यहाँ की गरीबी व भुखभरी का प्रत्यक्ष अनुभव किया।
- **उपाधि -**
  - "नव हिन्दू जागरण" का संस्थापक कहा गया।
  - सुभाष चन्द्र बोस ने लिखा "जहाँ तक बंगाल का संबंध है हम विवेकानन्द को आधुनिक राष्ट्रीय आन्दोलन का आध्यात्मिक पिता कह सकते हैं।"
  - सृजन की प्रतिभा (रविंद्र नाथ टैगोर जी ने कहा)
  - इन्हें 'तूफानी क भ्रमण करने वाला साधू' भी कहा गया।
  - इण्डियन अनरेस्ट के लेखक चिरोल ने कहा "वह प्रथम हिन्दू थे जिनके व्यक्तित्व से भारत की प्राचीन सभ्यता और राष्ट्र होने के उसके नवजात हक के लिए विदेश में निर्णायक स्वीकृति प्राप्त है।"

- **रामकृष्ण मिशन**

- रामकृष्ण परमहंस ने धार्मिक मोक्ष पाने के लिए त्याग, ध्यान और भक्ति की सदियों पुरानी प्रथाओं की ओर रुख किया।
- वह एक संत व्यक्ति थे जिन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भगवान और मोक्ष के कई मार्ग हैं और दूसरों की सेवा करना भगवान की सेवा करना है। उन्होंने सभी धर्मों की मूलभूत समानता को भी पहचाना।
- रामकृष्ण मिशन की स्थापना 1887 में रामकृष्ण परमहंस की शिक्षाओं पर की गई थी।
- **मिशन के दो मुख्य उद्देश्य थे:**
- त्याग और व्यावहारिक आध्यात्मिकता के लिए प्रतिबद्ध भिक्षुओं के एक समूह का गठन करना जिसके शिक्षकों और कार्यकर्ताओं को रामकृष्ण के जीवन के सार्वभौमिक सत्य के वैदिक संदेश को फैलाने के लिए भेजा जाएगा।
- जाति, पंथ या रंग की परवाह किए बिना सभी पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को ईश्वर की सच्ची अभिव्यक्ति के रूप में देखते हुए उपदेश देना।
- **साहित्य -**
- 'मैं समाजवादी हूँ' (पुस्तक)
- आयरिश मूल की महिला मारग्रेट नोबल (सिस्टर निवेदिता) विवेकानन्द की शिष्या बनी और रामकृष्ण मिशन के माध्यम से स्वामी जी के विचारों का प्रचार-प्रसार किया।
- **गुरु - रामकृष्ण परमहंस**
- विवेकानन्द के गुरू रामकृष्ण परमहंस (1836-86) का मूल नाम गदाधर चट्टोपाध्याय था।
- वह कलकत्ता में दक्षिणेश्वर में काली देवी मंदिर के पुजारी थे और दक्षिणेश्वर संत के नाम से विख्यात थे।
- इन पर भैरवी और तोतापुरी जैसे संतो का प्रभाव था। इन्होंने इस्लाम व ईसाई धर्म के द्वारा भी ईश्वर का साक्षात्कार किया और कहा कि संसार के सभी धर्म सच्चे रूप में ईश्वर तक पहुँचने के विभिन्न मार्ग हैं। उन्होंने धर्म की एकता और मानव सेवा पर सर्वाधिक बल दिया।
- **संबंधित संगठन:**
- विवेकानंद तीन वर्ष तक शिकागो में रहे और इस दौरान फरवरी 1896 ई. में न्यूयार्क, में 'वेदान्त सोसायटी' और कैलिफोर्निया में 'शान्ति आश्रम' की स्थापना की।
- 1897 ई. में - स्वदेश वापस आने पर इन्होंने रामकृष्ण मिशन' की स्थापना की।
- 1899 में कलकत्ता के पास 'वेलूर' में राम कृष्ण मिशन का मुख्यालय स्थापित किया और दूसरा मुख्यालय अल्मोड़ा के पास मायावती स्थान पर बनाया
- **योगदान:**
- इन्होने मानव सेवा को सबसे बड़ा धर्म बताया तथा मूर्तिपूजा व बहुदेववाद का समर्थन किया।
- राजस्थान में खेतड़ी रियासत के महाराजा कुँवर अजीत राज सिंह के सुझाव पर इन्होंने अपना नाम बदलकर विवेकानन्द रखा और महाराजा के खर्च पर 1893 में अमेरिका के शिकागो शहर में ने आयोजित प्रथम विश्व धर्म सम्मेलन में हिन्दू धर्म (सनातन धर्म) की के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। 11 सितम्बर 1893 को इन्होंने अपना ओजपूर्ण भाषण दिया और सुप्रसिद्ध हो गये।
  - 1899 में पुनः अमेरिका गये तथा 1900 ई. में इन्होंने पेरिस में आयोजित द्वितीय धर्म सम्मेलन (जिसका शीर्षक था-कांग्रेस ऑफ हिस्ट्री ऑफ रिलिजंस) में भाग लिया।
- वेदांत की सदस्यता ली।
- जीव (जीवित वस्तुओं) की सेवा के दर्शन का प्रचार शिव की पूजा है।

❑ हेनरी विवियन डेरोजियो (यंग बंगाल आंदोलन)

- 1828 में यंग बंगाल आंदोलन स्थापित हुआ इसका प्रमुख उद्देश्य प्रेस की स्वतंत्रता, जमींदारों के अत्याचारों से रैयतों की सुरक्षा, सरकारी नौकरियों में उच्च पदों पर भारतीयों की नियुक्ति हेतु आवाज उठाना था।
- आंदोलन का नेतृत्व हेनरी विवियन डेरोजियो ने किया था।
- आधुनिक भारत के पहले राष्ट्रवादी कवि, जो प्रगतिशील प्रवृत्तियों के प्रेरणास्रोत भी थे।

- कोलकाता के हिंदू कॉलेज ने युवा बंगाल आंदोलन के जन्मस्थान के रूप में कार्य किया, जो हिंदू समाज में सुधार के लिए एक कट्टरपंथी प्रयास था।
- **संबंधित संगठन:**
  - 'एकेडमिक एसोसिएशन, 'सोसायटी फॉर द एग्जीविशन ऑफ जेनरल नॉलेज' की स्थापना की।
  - इन्होंने 'एग्लो-इंडियन हिन्दू एसोसिएशनः 'बंगहित सभा' एवं 'डिबेटिंग क्लब' की भी स्थापना की।
  - डेरोजियो ने 'ईस्ट इंडिया' नामक दैनिक पत्र का भी संपादन किया।

डेरोजियो ने अपने विद्यार्थियों को निम्न के लिए प्रोत्साहित किया:

- आलोचनात्मक और तर्कसंगत रूप से सोचना
- सत्ता के सभी रूपों को चुनौती देना
- स्वाधीनता, समानता और स्वतंत्रता को महत्व देना
- महान फ्रांसीसी क्रांति से प्रेरणा लेकर पुरानी प्रथाओं और परंपराओं को अस्वीकार करना
- शिक्षा और महिला अधिकारों के पक्ष में आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया

❑ एम.जी. रानाडे (प्रार्थना समाज)

- डॉ. आत्मा राम पांडुरंग ने 1876 में बंबई में प्रार्थना समाज की स्थापना की। इसने महाराष्ट्र में वही किया जो ब्रह्म समाज ने बंगाल में किया।
- समाज की स्थापना हिंदू धर्म में सुधार और एक ईश्वर की पूजा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई थी।
- महादेव गोविंद रानाडे और आर. जी. भंडारकर, प्रार्थना समाज के प्रमुख नेता थे।
- **प्रार्थना समाज के सामाजिक एजेंडे के निम्नलिखित चार बिंदु थे:**
  1. जाति व्यवस्था की अस्वीकृति
  2. महिला शिक्षा
  3. विधवा पुनर्विवाह
  4. पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए विवाह की आयु में वृद्धि
- **महादेव गोविंद रानाडे का योगदान:**
- धार्मिक और सामाजिक सुधार एक-दूसरे में एकीकृत हैं। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में सफलता के लिए धार्मिक रीति रिवाज कठोर नहीं होने चाहिए।
- विधवा पुनर्विवाह संघ (1861) और डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी की स्थापना की। उन्होंने पूना सार्वजनिक सभा की भी स्थापना की।
- प्रार्थना समाज ने ब्रह्म समाज के विचारों से प्रभावित होने के बावजूद मूर्ति पूजा पर सख्त प्रतिबंध लगाने की वकालत नहीं की ।
- जाति व्यवस्था के खिलाफ थे।

❑ ज्योतिबा फुले (सत्यशोधक समाज)

- 1873 में ज्योतिबा फुले द्वारा 'सत्यशोधक' समाज (सत्य चाहने वालों का समाज) की स्थापना की गई थी। फुले ने ब्राह्मणों के राम के प्रतीक के विपरीत राजा बली के प्रतीक का उपयोग किया।
- नारी शिक्षा के लिए पूना में एक बालिका विद्यालय खुलवाया। इसमें इनका सहयोग इनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले के द्वारा किया गया। इन्होंने निम्न जातियों के लोगों, स्त्रियों आदि के कल्याण के लिए कार्य करते हुए, 1876 ई. में पूना नगरपालिका की सदस्यता ग्रहण की। 1888 ई. के बाद लोग इन्हें महात्मा कहने लगे।

उद्देश्य

- सामाजिक सेवाएं
- महिलाओं और निम्न जातियों के सदस्यों के बीच शिक्षा का प्रसार करना
- सामाजिक और आर्थिक असमानता के उन्मूलन का लक्ष्य

साहित्यिक कार्य

- ज्योतिबा फुले ने 1872 ई. में एक पुस्तक गुलामगिरी लिखी, जिसमें इन्होंने निम्न जातियों को पाखण्डी ब्राह्मणों तथा उनके अवसरवादी धर्म ग्रन्थों से सुरक्षा दिलाने के सन्दर्भ में प्रकाश डाला। इनकी एक अन्य पुस्तक सार्वजनिक सत्य धर्म भी है। दोनों आम जनता के लिए प्रेरणा के स्रोत बने।

❑ मैडम ब्लावात्स्की (थियोसोफिकल सोसाइटी)

- इसकी स्थापना 1875 में मैडम एच.पी. बलावत्स्की (रूसी महिला) और अमेरिकी सेना के कर्नल एम.एस. अलकॉट द्वारा न्यूयार्क (अमेरिका) में की गई।
- 1879 ई. में इसका प्रधान कार्यालय न्यूयार्क से मुम्बई स्थानान्तरित किया गया।
- 1882 में इस सोसायटी का अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय अड्डयार (मद्रास) में स्थापित किया।
- बंग्लौर, बम्बई, सूरत तथा लुधियाना आदि में सोसाइटी की शाखाएँ स्थापित की गई।

एनी बेसेंट :

- 1893 में मैडम ब्लावात्स्की के निधन के बाद, एनी बेसेंट ने भारत की यात्रा की और आंदोलन को पुनर्जीवित करने और सुधार करने में मदद की।
- 1907 में ओल्कोट की मृत्यु के बाद एनी बेसेंट इस सोसायटी की अध्यक्ष बनी।
- आंदोलन का निर्देशन और समर्थन पश्चिमी लोगों द्वारा किया गया था जिन्होंने भारतीय धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं का महिमामंडन किया था। इससे भारतीयों को अपना आत्मविश्वास पुनः प्राप्त करने में सहायता मिली।
- शिक्षा के क्षेत्र में, उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया और बनारस में सेंट्रल हिंदू कॉलेज की स्थापना की।
- थियोसोफिकल सोसाइटी के मुख्यालय में संस्कृत की दुर्लभ पुस्तकों का एक पुस्तकालय जोड़ा गया, जो ज्ञान के एक केंद्र के रूप में विकसित हुआ।

NOTE :- ऐनी बेसेण्ट

- इन्होने 1898 ई. में बनारस में सेण्ट्रल हिन्दू कॉलेज की स्थापना की थी, जिसे वर्ष 1916 में मदन मोहन मालवीय जी ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के रूप में विकसित किया था।
- 1916 में इनके द्वारा भारत में होमरूल लीग की स्थापना की गई थी।
- ऐनी बेसेण्ट कांग्रेस के 33वें अधिवेशन (कलकत्ता, 1917) में प्रथम महिला अध्यक्षा बनी थीं।
- इन्होंने हिन्दू धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए मद्रास में हिन्दू सम्मेलन का आयोजन किया।

❑ ईश्वर चंद विद्यासागर (महिला उत्थान)

- **परिचय**
- **जन्म :-** बंगाल में 1820 में एक गरीब ब्राह्मण परिवार में
- 1851 में, उन्होंने संस्कृत कॉलेज के प्राचार्य का पद ग्रहण किया। वो एक प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान थे।
- विद्यासागर के विचार पाश्चात्य और भारतीय सिद्धांतों के सम्मिश्रण थे। उनके पास उच्च नैतिक मानक थे, एक गहन मानवतावादी थे, और वंचितों के प्रति दयालु थे।
- **योगदान**
- उन्होंने विधवा पुनर्विवाह के पक्ष में एक अभियान चलाया, जिसके कारण 1856 में इस अधिनियम को लागू किया गया। उन्होंने बहुविवाह और नाबालिग विवाह के खिलाफ भी लड़ाई लड़ी।
- विद्यासागर ने महिला शिक्षा के लिए बहुत प्रयास किया। 1849 में, उन्होंने बेथ्यून के साथ मिलकर पहला भारतीय लड़कियों का स्कूल, बेथ्यून स्कूल स्थापित किया। उन्होंने स्कूलों के एक सरकारी निरीक्षक के रूप में सहायता की और उन्हें अपने खर्च पर चलाया।

धार्मिक तथ सामाजिक सुधार			
संस्था	**वर्ष**	**स्थान**	**संस्थापक**
आत्मीय सभा	1814 ई.	बंगाल	राजा राममोहन राय
हिन्दू कालेज	1815 ई.	कलकत्ता	डेविड हेयर
ब्रह्म समाज	1829 ई.	बंगाल	राजा राममोहन राय
वेदांत कालेज	1825 ई.	कलकत्ता (बंगाल)	राजा राममोहन राय
धर्म सभा	1830 ई.	कलकत्ता	राधाकान्त देव
स्वामी नारायण सम्प्रदाय	1830 ई.	गुजरात	स्वामी सहजानन्द
तत्वबोधिनी सभा	1839 ई.	बंगाल	देवेन्द्रनाथ टैगोर
मानव धर्म सभा	1844 ई.	पश्चिम भारत (सूरत)	मंचाराम
परमहंस मण्डली	1849 ई.	बम्बई	दादोबा पांडुरंग, दुर्गा राम मेहता
वेद समाज	1864 ई.	मद्रास	धरालू नायडू
आदि ब्रह्म समाज	1866 ई.	कलकत्ता	देवेन्द्रनाथ टैगोर
प्रार्थना समाज	1867 ई.	महाराष्ट्र	महादेव गोविन्द रानाडे, आत्माराम पांडुरंग , आर. जी. भंडारकर
आर्य समाज	1875 ई.	बम्बई	स्वामी दयानन्द सरस्वती
थियोसोफिकल सोसाइटी	1875 ई.	न्यूयार्क, अमेरिका	मैडम एच.पी. एवं कर्नल आलकॉट
थियोसोफिकल सोसाइटी	1882 ई.	अड्यार (मद्रास)	मैडम ब्लावट्स्की
साधारण ब्रह्म समाज	1878 ई.	कलकत्ता	आनंद मोहन बोस
दक्कन एजुकेशन सोसाइटी	1884 ई.	पूना	एम. जी. रनाडे
सेवा सदन	1885 ई.	मुम्बई	बहराम जी मालाबारी
इंडिया नेशनल सोशल कॉन्फ्रेंस	1887 ई.	मुम्बई	एम. जी. रनाडे
देवसमाज	1887 ई.	लाहौर	शिवनारायण अग्निहोत्री
रामकृष्ण मठ	1897 ई.	कलकत्ता (वेल्लोर)	स्वामी विवेकानन्द
सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी	1905 ई.	मुम्बई	गोपालकृष्ण गोखले
भारतीय हिन्दू महासभा	1907 ई.	महाराष्ट्र	वी.डी. सावरकर
पूना सेवा सदन	1909 ई.	पूना	रमाबाई रानाडे
सोशल सर्विस लीग	1911 ई.	बम्बई	नारायण मल्हार जोशी
सेवा समिति	1914 ई.	इलाहाबाद	हृदयनाथ कुंजरू
सेवा समिति ब्वाय स्काउट एसोसिएशन	1914 ई.	बम्बई	श्रीराम वाजपेयी
अखिल भारतीय हिन्दू महासभा	1915 ई.	हरिद्वार	पं. मदनमोहन मालवीय
भील सेवा मण्डल	1922 ई.	बम्बई	अमृत लाल विठ्ठल दास ठक्कर उर्फ ठक्कर बापा

मुस्लिम सुधार आंदोलन

- मुसलमानों में सुधारवादी सामाजिक और धार्मिक आंदोलन देर से उभरे।
- बहुसंख्यक मुसलमानों को डर था कि पश्चिमी शिक्षा उनके विश्वास को खतरे में डाल देगी क्योंकि यह इस्लाम के विपरीत है।
- नवाब अब्दुल लतीफ़ ने 1863 में मुहम्मडन लिटरेरी सोसाइटी की स्थापना की, जो आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा देने वाले प्रारंभिक संगठनों में से एक थी। उन्होंने सामाजिक अन्याय को समाप्त करने और मुसलमानों और हिंदुओं के बीच सद्भाव को आगे बढ़ाने के लिए भी काम किया।
- सरकार के अनुसार, 1857 के विद्रोह के षड्यंत्रकारियों में से अधिकांश मुसलमान थे। वहाबियों ने भी इसका समर्थन किया।
- सर सैयद अहमद खान सहित कई उदार मुसलमानों ने समुदाय की सामाजिक स्थिति में सुधार के लिए मुसलमानों के सहयोग को महत्पूर्ण बताया।

सुधारवादी	पुनरुत्थानवादी आंदोलन
▪ **अलीगढ़ आंदोलन**	▪ देवबंद आंदोलन ▪ वहाबी आंदोलन

❑ सैयद अहमद खान (अलीगढ़ आंदोलन)

- **परिचय**
- **जन्म :-** 1817 में कंपनी की सेवा में शामिल होने वाले एक न्यायिक अधिकारी सैयद अहमद खान का जन्म एक मुस्लिम कुलीन परिवार में हुआ था।
- अलीगढ़ आंदोलन के प्रवर्तक सर सैय्यद अहमद खाँ थे।
- **मृत्यु -** 1898 में सैय्यद अहमद खां की मृत्यु हो गई। उनके मृत्योपरान्त इस आंदोलन का नेतृत्व **नवाब मोहसिनुल मुल्क** ने किया।

योगदान:

- **आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा देना:** उन्होंने मुसलमानों को पश्चिमी शिक्षा ग्रहण करने और सरकारी प्रणाली में प्रवेश करने के लिए प्रोत्साहित किया।
- **पीरी मुरीदी की प्रथा समाप्त :** इन्होंने पीरी मुरीदी की प्रथा को समाप्त करने का प्रयत्न किया।

नोट - पीरी मुरीदी प्रथा

पीर लोग अपने आपको सूफी मानते थे और अपने मुरीदों को कुछ रहस्य मय शब्द देकर गुरू बन जाते थे और उनसे दासों जैसी सेवा लेते थे।

- **स्थापित संगठन:** उन्होंने 1862 में विज्ञान और अन्य विषयों पर साहित्य का उर्दू में अनुवाद करने के उद्देश्य से **साइंटिफिक सोसाइटी** की स्थापना की।
- 1864 में इन्होंने गाजीपुर में 'साइन्टिफिक सोसाइटी' की स्थापना की जिसका बाद में स्थायी कार्यालय अलीगढ़ में स्थापित किया गया।
- 1863 ई० में गाजीपुर में अंग्रेजी स्कूल की स्थापना की।
- सैय्यद अहमद खां जो ने 1888 में कांग्रेस के विरोध में बनारस के राजा शिवप्रसाद के सहयोग से "यूनाइटेड इण्डियन पैट्रियाटिक एसोसिएशन" का का गठन किया।
- **साहित्यिक कार्य:** इसके अतिरिक्त, उन्होंने एक अंग्रेजी-उर्दू पत्रिका का शुभारंभ किया जिसके माध्यम से उन्होंने सामाजिक सुधार सिद्धांतों का प्रसार किया।
- सैय्यद अहमद ने अपने विचारों का प्रचार करने के लिए 1870 में 'तहजीब-उल-अखलाख' नामक फारसी पत्रिका निकाली।
- 'राजभक्त मुसलमान' पत्रिका का भी प्रकाशन किया
- 'असबाब-ए-बगावत- ए-हिन्द' नामक पुस्तक 1857 के विद्रोह पर लिखी।
- सैय्यद साहब ने सबसे महत्वपूर्ण कार्य 'कुरान पर टीका' लिखकर किया
- **शिक्षा केंद्र स्थापित किया:** उन्होंने मोहम्मडन ओरिएंटल कॉलेज के निर्माण का प्रयास किया, जो बाद में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय बन गया।
- 1875 में महारानी विक्टोरिया के वर्षगांठ के अवसर पर 'अलीगढ़ स्कूल' (प्राइमरी) की स्थापना की
- 1877 में इसे 'मुहम्मडन एंग्लो-ओरिएन्टल कालेज' का नाम दिया।
- माना जाता है कि लार्ड लिटन ने इस कॉलेज का शिलान्यास किया तथा विलियम म्योर ने इसे भूमि प्रदान की थी।
- इस कालेज के प्रथम प्रिसंपल थियोडर बैक थे।
- 1920 में इसे 'अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय' के रूप में परिवर्धित कर दिया गया।
- **अलीगढ़ आंदोलन का उद्देश्य:**
- **मुख्य उद्देश्य था-** मुसलमानों को अंग्रेजी शिक्षा देकर ब्रिटिश राज का भक्त बनाना।

- भारतीय मुसलमानों को उनके इस्लाम के प्रति आस्था को कम किए बिना आधुनिक शिक्षा प्रदान करना।
- मुस्लिम सामाजिक सुधारों में तलाक, बहुविवाह, विधवा पुनर्विवाह, महिला शिक्षा, दासता और पर्दा प्रथा जैसे अन्य मुद्दे शामिल हैं।
- इसने अपने अनुयायियों के बीच एक समकालीन मानसिकता के निर्माण में सहायता की। सैयद ने अपने प्रकाशन तहदीब-उल-अखलाक के माध्यम से अपने उदारवादी सामाजिक विचारों का प्रसार किया।
- **अलीगढ़ आंदोलन के अन्य सदस्य -** चिराग अली, नजीर अहमद, अल्ताफ हुसैन अली, मौलाना शिबली नोमानी ' आदि

❑ मोहम्मद कासिम नानौतवी और राशिद अहमद गंगोही (देवबंद आंदोलन)

- देवबंद आंदोलन एक पुनर्जागरण आन्दोलन था
- **उद्देश्य -** कुरान तथा हदीस की शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना और विदेशी शासकों के विरुद्ध 'जिहाद' की भावना को जीवित रखना था।
- मोहम्मद कासिम नानौतवी और राशिद अहमद गंगोही ने एक पुनरुत्थानवादी संगठन के रूप में देवबंद संगठन की स्थापना की थी।
- यह आंदोलन अलीगढ़ आंदोलन के विरोध में था, किन्तु बहावी आंदोलन से अनुप्रेरित था।
- 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का इस आंदोलन ने स्वागत किया।
- 1888 में देवबंद के उलेमाओं ने सर सैय्यद अहमद खाँ द्वारा बनाई गयी 'यूनाइटेड इण्डियन पैट्रियाटिक - एसोसिएशन' तथा मुस्लिम एंग्लो ओरिएण्टल सभा' के विरुद्ध फतवा जारी किया था।
- अन्य सदस्य - महमूद-उल-हसन, शिबली नोमानी
- **योगदान**
- पाश्चात्य शिक्षा पर बल दिया।
- विदेशी नियंत्रण के विरुद्ध जिहाद की भावना का संरक्षण।
- राजनीतिक मुद्दों पर सर सैय्यद अहमद खां का यह विरोध करता था।
- 1894-96 में लखनऊ में **'नदवतुल-उलूम मदरसा'** की स्थापना की जिसमें अंग्रेजी शिक्षा भी दी जाती थी।

देवबंद आंदोलन और अलीगढ़ आंदोलन (अंतर)	
देवबंद आंदोलन	**अलीगढ़ आंदोलन**
देवबंद आंदोलन का आयोजन मुस्लिम उलेमाओं के बीच रूढ़िवादी वर्ग द्वारा एक पुनरुत्थानवादी आंदोलन के रूप में किया गया था, जिसका उद्देश्य मुसलमानों के बीच कुरान और हदीस की पवित्र शिक्षाओं का प्रचार करना तथा विदेशी शासकों के खिलाफ जिहाद की भावना को जीवित रखना था।	यह एक व्यवस्थित आंदोलन था जिसका उद्देश्य मुस्लिम समुदाय के सामाजिक, राजनीतिक और शैक्षिक पहलुओं में सुधार करना था।
देवबंद आंदोलन की शुरुआत वर्ष1866 में सहारनपुर ज़िले (संयुक्त प्रांत) के दारुल उलूम (या इस्लामिक शैक्षणिक केंद्र), देवबंद में मोहम्मद कासिम नानोत्वी और राशिद अहमद गंगोही द्वारा मुस्लिम समुदाय के लिये धार्मिक नेताओं को प्रशिक्षित करने हेतु की गई थी।	अलीगढ आंदोलन की शुरुआत वर्ष 1875 में अलीगढ ज़िले में सर सैय्यद अहमद खां द्वारा की गई थी।
देवबंद आंदोलन का उद्देश्य मुस्लिम समुदाय का नैतिक और धार्मिक उत्थान था।	इस आंदोलन ने पारंपरिक शिक्षाओं पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय अंग्रेज़ी सीखने और इसे पश्चिमी शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाने के लिये मुस्लिम शिक्षा के आधुनिकीकरण का बीड़ा उठाया।
राजनीतिक मोर्चे पर देवबंद स्कूल ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गठन का स्वागत किया और वर्ष 1888 में सैयद अहमद खान के संगठनों- यूनाइटेड पैट्रियटिक एसोसिएशन और मोहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल एसोसिएशन के खिलाफ एक फतवा (धार्मिक फरमान) जारी किया।	वह पश्चिमी वैज्ञानिक शिक्षा को कुरान की शिक्षाओं के साथ समेटना चाहते थे, जिनकी व्याख्या समकालीन तर्कवाद और विज्ञान के प्रकाश में की जानी थी, भले ही उन्होंने कुरान को अंतिम सत्ता भी माना था।

इस्लामी सिद्धांतों और राष्ट्रवादी आकांक्षाओं के संश्लेषण पर काम किया।	आलोचनात्मक दृष्टिकोण और विचार की स्वतंत्रता की वकालत की, न कि परंपरा या प्रथा पर पूर्ण निर्भरता की।
शिक्षा प्रणाली में अंग्रेज़ी भाषा और यूरोपीय विज्ञान को शामिल करने का समर्थन किया।	अलीगढ़ आंदोलन ने मुस्लिम पुनरुत्थान में मदद की। इसने उन्हें उर्दू जैसी आम भाषा दी।
वह कांग्रेस के आदर्शवाद में विश्वास करते थे	अलीगढ़ आंदोलन कांग्रेस का विरोधी था।

मुस्लिम सामाजिक धार्मिक आंदोलन

आंदोलन	वर्ष	स्थान	संस्थापक
फरायजी आंदोलन	1838 ई.	फरीदपुर (पू० बंगाल)	हाजी शरीयत उल्ला, दादू मियां इस्लाम
तैय्यूनी आंदोलन	1839 ई.	ढाका	करामत अली जौनपुरी
मोहम्डन लिटरेटी सोसायटी	1863 ई.	कलकत्ता	अब्दुल लतीफ
दार-उल-उलूम देवबंद	1866 ई.	देवबंद	कासिम ननौत्वी, राशिद गंगोही, हुसैन अहमद
अलीगढ़ आंदोलन	1875 ई.	अलीगढ़	सर सैयद अहमद खान
अहमदिया आंदोलन	1889 ई.	गुरुदासपुर	मिर्जा गुलाम अहमद
नदवतुल आंदोलन	1894 ई.	लखनऊ	मौलाना शिवली नूमानी

पारसी सुधार आंदोलन

1851 में पारसी धार्मिक सुधार संघ की स्थापना हुई। इसने धार्मिक रूढ़िवादिता के खिलाफ लड़ाई लड़ी।

- **निम्नलिखित सुधारों की शुरुआत की गई:**

- नौरोजी फरदोनजी, दादाभाई नौरोजी, एस.एस. बेंगाली और अन्य लोगों ने विशेष रूप से लड़कियों के बीच शिक्षा के प्रसार के लिए रहनुमाई मजदायस्नान सभा या धार्मिक सुधार संघ बनाया।
- उन्होंने पारसी धर्म में रूढ़िवादी प्रथाओं और बाल विवाह के खिलाफ भी अभियान चलाया।
- **धार्मिक सुधार**: पारसी धर्म की प्राचीन शुद्धता की पुनर्स्थापना।
- नेताओं ने सगाई, शादी और अंतिम संस्कार के रीति-रिवाजों का विरोध किया।
- उन्होंने लोगों को ज्योतिष के प्रयोग करने से हतोत्साहित किया और वैज्ञानिक विकास को बढ़ावा दिया।

❑ **दादा भाई नौरोजी का योगदान**

- उन्हें समाज सुधारक, अंतरराष्ट्रीय संबंधों और सांख्यिकीय उदारवाद के लिए जाना जाता था।
- **सामाजिक सुधार**:

- नौरोजी का प्रयास लैंगिक समानता के लिए उनके सुधारवादी उत्साह से प्रेरित था। बाद में उन्होंने स्टूडेंट्स लिटरेरी एंड साइंटिफिक सोसाइटी (SLSS) के तत्वावधान में अक्टूबर 1849 में लड़कियों के लिए छह स्कूल खोले।
- इन सुधारों को उन धार्मिक अनुष्ठानों को युक्तिसंगत बनाने के लिए लागू किया गया था जिन्हें सामाजिक कठिनाइयों के अतिरिक्त अनुचित माना जाता था।
- 1851 में नौरोजी और उनके सहयोगियों द्वारा रहनुमा मजदायस्नान सभा (मजदायस्नान पथ के मार्गदर्शकों की संस्था) और एक गुजराती पत्रिका रास्त गोफ्तार की स्थापना की गई थी।
- रहनुमा मजदायस्नान सभा ने पारसी धर्म में रूढ़िवादी प्रथाओं के खिलाफ और साथ ही महिलाओं के उत्थान के लिए अभियान चलाया।

❑ **आर्थिक और राजनीतिक सुधार**

- दादा भाई नौरोजी ने आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसे संक्षेप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है -
- **आर्थिक नीति के आलोचक:** ब्रिटिश आर्थिक नीति के सबसे बड़े आलोचक और धन की निकासी' के सिद्धांत को प्रस्तुत किया।

- सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा करने के उद्देश्य से 'लंदन इंडियन सोसाइटी' की स्थापना में सहायक।
- ब्रिटिश लोगों को भारतीय दृष्टिकोण से अवगत कराने के लिए 'ईस्ट इंडिया एसोसिएशन' (1867)' की स्थापना में सहायता की।
- यूके हाउस ऑफ कॉमन्स में लिबरल पार्टी के सदस्य और संसद सदस्य (सांसद) के रूप में सेवा की।

दलित : जाति आधारित शोषण के खिलाफ लड़ाई

❑ **मुद्दे:**

- हिंदू 'चतुर्वर्ण आश्रम' की अवधारणा के अनुसार, एक व्यक्ति की जाति जनसंख्या के विभिन्न वर्गों की स्थिति और सापेक्ष शुद्धता निर्धारित करती है।
- जातिगत कारकों ने कपड़े, भोजन, निवास स्थान, पीने और सिंचाई के लिए पानी के स्रोत और मंदिरों में प्रवेश जैसी गतिविधियों को नियंत्रित किया।
- जाति की भेदभावपूर्ण संस्था से अनुसूचित जाति/दलित सबसे ज्यादा प्रभावित थे। उन पर लगाया गया भेदभाव अपमानजनक, अमानवीय और जन्म असमानता के सिद्धांत पर आधारित था।

❑ **जाति-आधारित भेदभाव को कम करने में योगदान देने वाले कारकों में शामिल हैं:**

- **ब्रिटिश शासन:** अंग्रेजी शासन ने शायद अनजाने में ऐसी स्थिति पैदा कर दी जिसने जाति चेतना को कुछ हद तक कमजोर कर दिया।
- **समाज सुधार आन्दोलन:** उन्होंने जाति आधारित शोषण को समाप्त करने के लिए भी कार्य किया। ये आंदोलन समाज को विभाजित करने वाली ताकतों के खिलाफ अपनी लड़ाई में स्वतंत्रता और समानता के सिद्धांतों से प्रेरित थे।
- **साक्षरता और वैज्ञानिक प्रवृत्ति:** शैक्षिक अवसरों में वृद्धि तथा सामान्य जागृति के कारण निम्न जातियों में हलचल मची हुई थी।
- **गांधी जी की भूमिका:** उन्होंने 1932 में अखिल भारतीय हरिजन संघ की स्थापना की। "अस्पृश्यता के जड़ और शाखा उन्मूलन" के लिए उनका धर्मयुद्ध मानवतावाद और तर्क पर आधारित था। गांधी जैसे नेताओं के लिए अस्पृश्यता का उन्मूलन सभी सार्वजनिक गतिविधियों में सबसे आगे था।

❑ **सुधारकों की भूमिका:**

- महाराष्ट्र में उच्च-जाति आधारित के प्रभुत्व के खिलाफ अपनी लड़ाई के हिस्से के रूप में, ज्योतिबा फुले ने ब्राह्मणवादी धार्मिक सत्ता के खिलाफ आजीवन धर्मयुद्ध शुरू किया।
- बी.आर. अम्बेडकर ने अपना जीवन जाति आधारित अत्याचार का विरोध करने के लिए समर्पित कर दिया, इस
- प्रक्रिया में अखिल भारतीय अनुसूचित जाति महासंघ की स्थापना की।
- अखिल भारतीय दलित वर्ग संघ कई अन्य अनुसूचित जाति के नेताओं द्वारा बनाया गया था।
- समकालीन विकसित मानवाधिकारों की अवधारणा: समानता और मानवाधिकार मूल्यों के विकास ने भी समाज से जातिगत भेदभाव को दूर करने में मदद की।
- यह राष्ट्रीयता की भावना के विकास और आधुनिक भारत में लोकतंत्र के प्रसार में एक प्रमुख बाधा बन गया, जिसने जातियों के आधार पर भेदभाव के उन्मूलन को बढ़ावा दिया। स्वतंत्र भारत के संविधान में जाति के आधार पर समानता और गैर-भेदभाव की आवश्यकता है।

दलित : धार्मिक तथा सामाजिक सुधार			
संस्था	वर्ष	स्थान	संस्थापक
सत्यशोधक समाज	1873 ई.	महाराष्ट्र	ज्योतिबा फुले
अखिल भारतीय दलित वर्ग	1926 ई.	नागपुर	बी. आर. अम्बेडकर
वायकोम सत्याग्रह	1924 ई.	केरल	नारायण गुरु, एन. कुमारन, टी.के. माधवन, के.पी. मेनन
गुरुवायूर सत्याग्रह	1931-32 ई.	केरल	के. केलप्पण
अखिल भारतीय अस्पृश्यता निवारण संघ	1933 ई.	-	महात्मा गांधी
डिस्प्रेस्ड क्लासेज मिशन सोसाइटी	1906 ई.	पूना (बम्बई)	वी. आर. शिन्दे
आत्मसम्मान आन्दोलन	1925 ई.	दक्षिण	ई.वी. रामास्वामी नायकर
राजामुंद्री सामाजिक सुधार आन्दोलन	1881 ई.	दक्षिण में	बीरेश लिंगम
हरिजन सेवक संघ	1932 ई.	पूर्ण भारत	गाँधी जी

सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों में महिलाओं के मुद्दे

19वीं शताब्दी के प्रारंभ में भारतीय महिलाओं की स्थिति अच्छी नहीं थी। सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या, वधू मूल्य, और बहुविवाह जैसी कुरीतियों के कारण उनका जीवन अत्यंत भयानक हो गया था। शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक संभावनाओं के संबंध में, भारत में पुरुषों और महिलाओं के बीच कोई समानता नहीं थी। परिणामस्वरूप, 19वीं शताब्दी के दौरान महिलाओं से संबंधित निम्नलिखित महत्वपूर्ण मुद्दे थे:

- **कानूनों में लैंगिक पक्षपात:**
  - अंग्रेजों ने इस्लाम और हिंदू धर्म के निजी कानूनों का सम्मान किया।
  - विवाह, तलाक, संपत्ति, उत्तराधिकार और गोद लेने के मामले में, ये नियम महिलाओं को दोयम दर्जे के नागरिकों के रूप में देखते थे और पितृसत्तात्मक परिवार के अधिकारों का सम्मान करते थे।
  - ऐसा प्रतीत होता है कि इस संदर्भ में महिलाओं को पारिवारिक जीवन और दासता के अधीन करने के लिए राष्ट्रवादी पुरुष अभिजात वर्ग और औपनिवेशिक राज्य के बीच एक "व्यापक सहमति" थी।
  - भारतीय बुद्धिजीवियों ने भारत के गौरवशाली अतीत का सम्मान करने के लिए महिलाओं के लिए नैतिक संहिता का उपयोग किया। उसे पश्चिम के "दूषित करने वाले प्रभाव" से बचाने की आवश्यकता थी।
  - परिणामस्वरूप, बंगाल और महाराष्ट्र के मुस्लिम और हिंदू दोनों अभिजात्य वर्ग ने पर्दा प्रथा में अलग-थलग पड़ी महिलाओं की अवधारणा को सार्वभौमिक बना दिया।
  - उदाहरण के लिए, भले ही अंग्रेजों ने विधवा पुनर्विवाह को अधिकृत किया था, फिर भी भारतीय लोगों ने अपनी महिलाओं को तपस्वी विधवाओं का जीवन व्यतीत कराना शुरू कर दिया क्योंकि यह एक प्रतिष्ठा का प्रतीक बन गया था।
  - भारतीयों और ब्रिटिश दोनों ने महिलाओं की कठिनाइयों को सामाजिक मामलों के रूप में देखा, सामाजिक संरचनाओं, जातिगत असमानताओं, या धार्मिक हठधर्मिता पर सवाल उठाने से इंकार कर दिया, जो महिलाओं की हीन स्थिति को बरकरार रखते थे। उनके पास लैंगिक समानता को बढ़ावा देने की कोई योजना नहीं थी।
  - भारतीय व्यवसायी और बागान मालिकों ने महिला श्रम को अप्रतिबद्ध और क्षमताओं की कमी के रूप में चित्रित करना शुरू कर दिया। इसके अतिरिक्त, पुरुषों की तुलना में महिलाओं के लिए मजदूरी कम थी।
  - 19वीं शताब्दी में भारतीय बुद्धिजीवियों और ब्रिटिश नौकरशाहों दोनों ने भारतीय महिलाओं की स्थिति को ऊपर उठाने के लिए संघर्ष किया।
  - हालाँकि, महिलाओं की शिक्षा, श्रम अनुबंध, और परिवार और समाज में स्थिति के मुद्दे घरेलू चरित्र द्वारा सीमित थे। इनमें लैंगिक समानता, धार्मिक रूढ़िवादिता और जातिगत असमानताओं के मुद्दों को संबोधित करने की उपेक्षा की गई।
- **महिलाओं द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका**
  - **सरला देवी चौधरानी:** उन्होंने 1910 में इलाहाबाद में भारतीय महिला संगठन की स्थापना की। इसके लक्ष्यों में महिलाओं की शिक्षा को आगे बढ़ाना और पूरे भारत में महिलाओं की सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक स्थिति को बढ़ाना शामिल है।
  - **पंडिता रमाबाई:** अपनी शिक्षा इंग्लैंड और संयुक्त राज्य अमेरिका दोनों में प्राप्त की। उन्होंने भारतीय महिलाओं के प्रति हो रहे अनुचित व्यवहार के बारे में लिखा।
    - उन्होंने जरूरतमंद विधवाओं की सहायता के लिए पुणे में आर्य महिला सभा और शारदा सदन की स्थापना की।
    - उन्होंने भारतीय महिलाओं की शैक्षिक स्थिति में सुधार की वकालत की,
    - लेडी डफ़रिन कॉलेज ने उनके अनुरोध पर महिलाओं को चिकित्सा शिक्षा प्रदान करना शुरू किया।
  - **महरीबाई टाटा:** भारत में महिलाओं की राष्ट्रीय परिषद की स्थापना 1925 में अंतर्राष्ट्रीय महिला परिषद के राष्ट्रीय सहयोगी के रूप में की गई थी।
  - **मार्गरेट कजिन्स:** 1917 में, मारिट कजिन्स ने महिलाओं के मतदान के अधिकार का मुद्दा उठाया और महिलाओं के मतदान के अधिकार के मामले को उठाने के लिए सरोजिनी नायडू के साथ वायसराय से मुलाकात की।

महिलाओं के लिए विधायी उपाय	
ब्रिटिश प्रशासन द्वारा पारित अधिनियम	**विशेषताएँ**
बंगाल सती विनियमन अधिनियम (1829)	सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाना और इसे अवैध प्रथा बनाना
1856 का हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम (अधिनियम XV, 1856)	विधवाओं के पुनर्विवाह को कानूनी मान्यता प्रदान करना
नेटिव मैरिज एक्ट (1872)	निषेध के लिए विधायी कार्रवाई का इरादा था लेकिन, हिंदुओं, मुसलमानों और अन्य मान्यता प्राप्त धर्मों पर लागू नहीं था।
सम्मति-आयु का अधिनियम (1891)	12 वर्ष से कम आयु की बालिका के विवाह पर रोक लगा दी
शारदा अधिनियम (1929)	विवाह के लिए न्यूनतम आयु बढ़ाकर 14 वर्ष कर दी गई
1843 का अधिनियम V	गुलामी की प्रथा को अवैध घोषित कर दिया गया

सामाजिक सुधार अधिनियम : एक नजर में			
अधिनियम	वर्ष	गवर्नर जनरल	विषय
शिशु वध प्रतिबंध	1785-1804	वेलेजली	शिशु हत्या पर प्रतिबंध (धारा 21 व 31)
सतीप्रथा प्रतिबंध	1829 ई.	लार्ड विलियम बैंटिक	सती प्रथा पर पूर्ण प्रतिबंध (धारा 17)
हिन्दू विधवा पुनर्विवाह	1856 ई.	लॉर्ड कैनिंग	विधवा विवाह की अनुमति (धारा 15)
नैटिव मैरिज एक्ट	1872 ई.	नार्थबुक	अन्तर्जातीय विवाह
एज ऑफ कंसेट एक्ट	1891 ई.	लैंसडाउन	विवाह की आयु 12 वर्ष लड़की के लिए निर्धारित
शारदा एक्ट	1929 ई.	इरविन	विवाह की आयु 18 वर्ष लड़के के लिए निर्धारित
दास प्रथा पर प्रतिबंध	1843 ई.	एलनबरो	1833 के चार्टर द्वारा 1843 में दासता को प्रतिबंधित कर दिया गया।

19वीं सदी के प्रमुख सामाजिक सुधार/Major social reforms of the 19th century	
सामाजिक बुराई	उन्मूलन के प्रयास
सती प्रथा	▪ भारत में सती प्रथा का प्रथम उल्लेख 510 ई. के एरण अभिलेख में मिलता है। ▪ सबसे पहले 15वीं शताब्दी मे कश्मीर के शासक सिकन्दर ने इस प्रथा को बन्द करवाया था। ▪ पुर्तगालो वायसराय अल्बुकर्क ने 1510 ई. में गोवा में इस प्रथा को बन्द करवाया था। ▪ राजा राममोहन राय के प्रयासों के ही फलस्वरूप लॉर्ड विलियम बैण्टिक ने 4 दिसम्बर, 1829 को 17वें संविधान संशोधन अधिनियम के अन्तर्गत बंगाल में सती प्रथा पर रोक लगा दी।
बाल विवाह	▪ 1830 ई. के मुम्बई एवं मद्रास सहित अन्य क्षेत्रों में भी सती प्रथा पर रोक लगा दी गई। ▪ बाल विवाह के विरुद्ध सर्वप्रथम आवाज राजा राममोहन राय ने उठाई थी, परन्तु केशवचन्द्र सेन एवं बी एम मालाबारी के प्रयासों से सर्वप्रथम 1872 ई. में देशी बाल विवाह अधिनियम पारित हुआ था। इस अधिनियम में 14 वर्ष से कम आयु की बालिकाओं तथा 18 वर्ष से कम आयु के बालकों के विवाह को प्रतिबन्धित किया गया। ▪ बी एम मालाबारी के प्रयासों के फलस्वरूप 1891 ई. में ब्रिटिश सरकार ने ऐज ऑफ कन्सेण्ट एक्ट पारित किया, जिसमे 12 वर्ष से कम आयु की बालिकाओं के विवाह पर रोक लगा दी गई। ▪ बाल गंगाधर तिलक ने ऐज ऑफ कन्सेण्ट एक्ट का विदेशी हस्तक्षेप के आधार पर विरोध किया था। ▪ वर्ष 1929 में बाल विवाह को रोकने के लिए समाज सुधारक हरविलास शारदा के प्रयासों से शारदा अधिनियम पारित किया गया, जिसमें विवाह की आयु बालिकाओं के लिए 14 वर्ष तथा बालकों के लिए 18 वर्ष निर्धारित की गई।

	▪ स्वतन्त्रोत्तर भारत सरकार द्वारा बाल विवाह निरोधक अधिनियम में संशोधन करके बालकों की आयु न्यूनतम 21 वर्ष एवं बालिकाओं के लिए 18 वर्ष निर्धारित की गई।
विधवा पुनर्विवाह	▪ विधवा पुनर्विवाह के क्षेत्र में सर्वाधिक योगदान कलकत्ता के संस्कृत कॉलेज के आचार्य ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने दिया। उन्होंने एक हजार हस्ताक्षरों से युक्त पत्र डलहौजी को भेजकर विधवा विवाह को कानूनी रूप देने का अनुरोध किया था। ▪ ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के प्रयासों के फलस्वरूप ब्रिटिश सरकार (लॉर्ड कैनिंग) ने 1856 ई. में हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित किया, जिसमे विधवा पुनर्विवाह को कानूनी मान्यता दी गई। प्रो. डी के कर्वे एवं वीरेशलिगम पन्तुलू ने भी विधवा पुनर्विवाह के लिए कार्य किया। ▪ प्रो. कर्वे ने 1899 ई. में विधवा आश्रम की पूना में स्थापना की तथा स्वयं एक विधवा से विवाह भी किया था। ▪ अन्ततः लॉर्ड कैनिंग ने हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1956 के द्वारा विधवा विवाह को वैध मान लिया।
बाल हत्या प्रथा	▪ राजपूतों एवं बंगाल में अधिक प्रचलित थी। ऐसा दहेज प्रथा एवं विदेशी आक्रमण की समस्या के कारण किया जाता था। ▪ 1795 ई. में बंगाल नियम XXI और 1804 ई. में नियम 3 के तहत क्रमशः नवजात कन्या एवं शिशु हत्या को साधारण हत्या के बराबर माना गया। ▪ इन नियमों का विस्तार करते हुए लॉर्ड विलियम बेण्टिक (1828-35) ने राजपुताना में शिशु हत्या पर प्रतिबन्ध लगाया तथा लॉर्ड हार्डिंग (1844-48) ने सम्पूर्ण भारत में बालिका शिशु हत्या का निषेध किया।
दास प्रथा	▪ भारतीय समाज में प्रचलित दास प्रथा को बन्द करने के लिए 1823 ई. में लिस्टर स्टैनहोप ने इंग्लैण्ड के ड्यूक ऑफ दास प्रथा ग्लोस्टर से अनुरोध किया था। फलस्वरूप 1789 ई. में दासो के निर्यात को बन्द कर दिया गया। ▪ 1833 के चार्टर एक्ट के द्वारा ब्रिटिश सरकार ने दासता पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया था तथा प्रतिबन्ध को 1843 ई. में सम्पूर्ण भारत पर लागू किया गया। ▪ 1860 ई. में दासता को भारतीय दण्ड संहिता के द्वारा अपराध घोषित कर दिया गया।
स्त्री शिक्षा	▪ भारतीय समाज में स्त्रियों की दयनीय स्थिति को देखते हुए सर्वप्रथम ईसाई मिशनरियों ने 1819 ई. में कलकत्ता में तरुण स्त्री सभा की स्थापना की थी। ▪ इसी क्रम में 1849 ई. में जे डी बेथुन शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष ने कलकत्ता में एक बालिका विद्यालय की स्थापना की थी। ▪ स्त्री शिक्षा के लिए सर्वाधिक प्रयास ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने किए। उन्होंने बंगाल में लगभग 35 बालिका विद्यालय स्थापित किए। 1854 ई. में गठित शिक्षा आयोग चार्ल्स के वुड डिस्पैच में भी स्त्री शिक्षा पर बल दिया गया था। ▪ वर्ष 1926 में महिलाओं के उत्थान के लिए अखिल भारतीय महिला संघ की स्थापना की गई थी। ▪ प्रो. कर्वे ने स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 1916 में पुणे में भारतीय महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की थी।

अन्य धार्मिक तथा सामाजिक सुधार			
संस्था	वर्ष	स्थान	संस्थापक
ब्रह्म समाज ऑफ साउथ इंडिया	1828	मद्रास	श्री घरालू नायडू
दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज	1886	पूरे भारत में	हंसराज और लाजपत राय
गुरुकुल	1897	हरिद्वार	स्वामी श्रद्धानन्द, मुंशीराम लेखराम
सेन्ट्रल हिन्दू कालेज	1898	बनारस	एनी बेसेन्ट
मुस्लिम एंग्लो ओरियन्टल स्कूल	1877	अलीगढ़	सैय्यद अहमद खाँ
नामधारी आन्दोलन	1857	पंजाब	रामसिंह
भारतीय ब्रह्म समाज	1866	कलकत्ता	केशवचन्द्र सेन
रहनुमाई मजदायनसन समाज	1851	बम्बई	नौरोजी फरदोनजी, दादाभाई नौरोजी, एम.एस. बंगाली
यंग बंगाल आन्दोलन	1826-1832	बंगाल	हेनरी विवियन डिरोजियो
मुहम्मडन लिटरेरी सोसाइटी	1863 ई.	कलकत्ता	नवाब अब्दुल लतीफ
साइंटिफिक सोसाइटी	1864	गाजीपुर	सर सैय्यद अहमद खाँ
दीनबन्धु सार्वजनिक सभा	1884 ई.	पूना	ज्योतिबा फुले
विधवा आश्रम	1896	पूना	प्रो. डी. के. कर्वे

भारतीय महिला विश्वविद्यालय	1916	बम्बई	प्रो. डी. के. कर्वे
जस्टिस पार्टी	1917	दक्षिण	मुदलियार, टी.एम. नायकर, पी.टी. चेत्री

उत्तर प्रदेश - धार्मिक तथा सामाजिक सुधार			
संस्था	**वर्ष**	**स्थान**	**संस्थापक**
धर्म महामण्डल	1857	हरिद्वार	पंडित दीनदयाल शर्मा
राधास्वामी सत्संग	1861	आगरा	तुलसीराम शिवदयाल अग्निहोत्री

❑ सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों की सामान्य विशेषताएं

- **एकेश्वरवाद**: एक ईश्वर में विश्वास और सभी धर्मों की मौलिक समानता का प्रसार सभी सुधारकों द्वारा किया गया था। इसलिए, उन्होंने विभिन्न धार्मिक दृष्टिकोणों के बीच अंतर को कम करने का प्रयास किया।
- **धार्मिक सुधार**: सुधारकों द्वारा पुरोहितवाद, समारोह, मूर्तिपूजा और बहुदेववाद सभी की निंदा की गई थी। इन सुधार आंदोलनों ने जाति व्यवस्था और बाल विवाह की प्रथा का भी विरोध किया जो उनके मानवीय पक्ष के स्पष्ट उदाहरण थे।
- **महिलाओं की स्थिति पर ध्यान :** सुधारकों का उद्देश्य समाज में महिलाओं और लड़कियों की स्थिति को ऊपर उठाना था। सभी ने महिलाओं को शिक्षित करने के महत्व पर बल दिया।
- **सामाजिक समानता:** जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता को चुनौती देकर, सुधारकों ने भारत के लोगों को एक राष्ट्र में समेकित करने में योगदान दिया।
- **आत्म-सम्मान**: सुधार आंदोलनों ने भारतीयों में सम्मान, स्वतंत्रता और देशभक्ति की भावना को बढ़ावा दिया।

❑ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों का प्रभाव

- **धर्मों का पुनरुत्थान:** उन्नीसवीं शताब्दी में ईसाई धर्म और इस्लाम के उदय के बाद अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने के लिए एक तर्कसंगत, सहिष्णु धर्म के रूप में हिंदू धर्म का पुनरुत्थान।
- **सशक्त सीमांत समाज:** भारतीय समाज में महिलाओं, अछूतों और अन्य दमित और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के खिलाफ किए गए अपमानजनक कृत्यों पर हमला।
- **बढ़ा हुआ वैज्ञानिक भाव**: निःस्वार्थता, धर्मपरायणता और तर्कवाद की भावनाओं को बढ़ावा देना
- **जाति व्यवस्था के खिलाफ**: सुधार आंदोलनों ने जाति व्यवस्था की कठोरता और वंशानुगत लक्षणों की आलोचना के रूप में कार्य किया।
- **समाज में सहिष्णुता को बढ़ावा:** समानता, राष्ट्रीयता और विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के सह-अस्तित्व में विश्वास को प्रोत्साहित किया।
- **राष्ट्रवाद**: सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों ने जनसंख्या के बीच एक राष्ट्रीय जागृति पैदा की।
- **साहित्य का विकास:** इन सुधारकों ने अपने संदेशों को बढ़ावा देने के लिए पुस्तकों, नाटकों, लघु कथाओं, कविता और प्रेस का उपयोग किया।

❑ सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों की सीमाएं

- **संकीर्ण सामाजिक आधार:** सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों में मुख्य रूप से शिक्षित और शहरी मध्यम वर्ग के प्रतिभागी शामिल थे, जबकि अधिकांश किसानों और शहरी गरीबों की चिंताओं की उपेक्षा की गई थी।
- **छद्म वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा दिया:** सुधारकों की अतीत के गुणों का गुणगान करने और शास्त्रों से चिपके रहने की प्रवृत्ति ने आध्यात्मिकता को प्रच्छन्न रूप से प्रोत्साहित किया और छद्म वैज्ञानिक विचारों को बढ़ावा दिया।
- **वर्ग विभाजन:** अतीत को धर्मों के आधार पर विभाजित करने की प्रवृत्ति। उदाहरण शुद्धि आंदोलन और देवबंद आंदोलन।
- **साम्प्रदायिकता**: अन्य बातों के अलावा, धार्मिक सुधार आंदोलनों की प्रकृति ने साम्प्रदायिकता के विकास में भूमिका निभाई।

- **कला और संस्कृति पर कम जोर:** कला, वास्तुकला, साहित्य, संगीत, विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहित अन्य सांस्कृतिक तत्वों की तुलना में धर्म और दर्शन पर अधिक ध्यान दिया गया।

❑ 19वीं सदी के दौरान भारत में सामाजिक सुधार के प्रति सरकार का रवैया

हालांकि 19वीं शताब्दी की शुरुआत में ब्रिटिश नीतियों ने सामाजिक बुराइयों को दूर करने में सहायता की, साथ ही, उन्होंने उत्तरोत्तर भारत के सामाजिक धार्मिक ताने-बाने में भी दरार पैदा किया क्योंकि वे ज्यादातर अंग्रेजी दृष्टिकोण पर आधारित थे।

- **सामाजिक सुधारों के प्रति अंग्रेजों के दृष्टिकोण को संक्षेप में इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है -**
- **डाउनवर्ड फिल्ट्रेशन थ्योरी :** अंग्रेजों का इरादा दुभाषियों के एक वर्ग का निर्माण करने के लिए उच्च और मध्यम वर्ग के लोगों के एक चुनिंदा समूह को प्रशिक्षित करना था।
- **कामकाजी पेशेवर:** सामाजिक-धार्मिक सुधारों ने ब्रिटिश नीतियों को क्रियान्वित करने के लिए लोगों को उपलब्ध कराया और सेना और बागान कार्यों के लिए मानव बल उपलब्ध कराया। उदा: समुद्र को पार करने जैसी प्रतिबंधित गतिविधियां सामान्य हो गई।
- **मिशनरी गतिविधियों की उन्नति**: पोस्ट चार्टर अधिनियम 1813, मिशनरियों को धार्मिक गतिविधियों के विस्तार की अनुमति दी गई और सामाजिक-धार्मिक सुधारों ने उनके प्रयासों को सुचारू बनाया।
- **स्थानीय लोगों के बीच कानून का शासन स्थापित करना:** बाल विवाह, सती प्रथा, विधवा पुनर्विवाह को बढ़ावा देना आदि को प्रतिबंधित करने के लिए कानून जनता के बीच कार्रवाई के माध्यम से बनाए गए और लागू किए गए।

❑ निष्कर्ष

- अंग्रेजों ने भी सुधारों के माध्यम से लोगों को धर्म, वर्ग और जातियों के आधार पर विभाजित करने का प्रयास किया। **उदा:** सैय्यद अहमद खान अंग्रेजों के समर्थन के लिए मुखर थे जबकि हिंदू सुधार आंदोलन ब्रिटिश प्रशासन के पक्ष में नहीं थे । सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन ने पारंपरिक संस्कृति के पिछड़े तत्वों की धार्मिक और सामाजिक दोनों बुराइयों का समग्र रूप से विरोध किया। पारंपरिक संस्थानों का पुनरुद्धार, जैसे कि चिकित्सा, शिक्षा, दर्शन, और इसी तरह के अन्य, मुख्य केंद्र थे। उन्होंने समाज के लोकतंत्रीकरण, अंधविश्वासों और पुरानी परंपराओं के उन्मूलन और ज्ञान के प्रसार के लिए संघर्ष किया। इससे भारत की देशव्यापी जागृति का संचार हुआ।

भारत का स्वतंत्रता संघर्ष

भारतीय राष्ट्रवाद का उद्भव/ Emergence of Indian Nationalism

भारतीय राष्ट्रवाद ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के लिए एक महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी प्रतिक्रिया थी। यह स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में एक महत्वपूर्ण चरण को चिह्नित करता है, जिसने देश की नियति को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीय राष्ट्रवाद 19वीं शताब्दी के अंत में शुरू हुआ और 20वीं शताब्दी की शुरुआत में इसका विकास हुआ।

इस संघर्ष गाथा के निम्नलिखित चरण थे :-

- ❑ आंदोलन का प्रथम चरण (1885-1905 ई.) - उदारवादी काल
- ❑ आंदोलन का द्वितीय चरण (1905-1919) ई.) - उग्रराष्ट्रवाद का काल
- ❑ आंदोलन का तृतीय चरण - क्रान्तिकारी आंदोलन
- ❑ आंदोलन का चतुर्थ चरण (1919-1942 ई.)- गांधीवादी युग
- ❑ आंदोलन का अन्तिम चरण - स्वतंत्रता प्राप्ति की ओर

- "1885 से 1905 की अवधि भारतीय राष्ट्रवाद के बीज बोने का समय था और शुरुआती राष्ट्रवादियों ने बीज अच्छी तरह से और गहराई से बोया" **- बिपिन चंद्रा**

❑ भारत में राष्ट्रवाद के उदय के कारण

भारतीय राष्ट्रवाद के उदय को कई कारकों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है जो देश के इतिहास और राजनीतिक परिदृश्य को आकार देते हैं।

- **भारत के शानदार अतीत का अन्वेषण:** भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण ने राष्ट्रवादी भावनाओं को बढ़ावा दिया। विद्वानों, लेखकों और कलाकारों ने भारतीय संस्कृति, इतिहास और परंपराओं को बढ़ावा दिया।
  - यूरोपीय शोधकर्ताओं का विश्वास था कि इंडो-आर्यन्स एक ही जातीय समूह के थे।
  - राष्ट्रवादियों ने अपने नए आत्मविश्वास के साथ औपनिवेशिक मिथकों को ध्वस्त कर दिया।
- **पश्चिमी शिक्षा और विचार:** अंग्रेजों ने विविध भाषाई क्षेत्रों के राष्ट्रवादी नेताओं को संवाद स्थापित करने में सक्षम बनाया।
  - इंग्लैंड में अध्ययन करने वाले वकील, डॉक्टर और अन्य उदारवादी पेशेवर मौजूद थे।
  - उन्होंने एक स्वतंत्र देश में आधुनिक राजनीतिक संस्थानों की तुलना भारतीय प्रणाली के साथ की, जो नागरिकों को बुनियादी अधिकारों से भी वंचित करता है।
- **मध्य वर्ग का उद्भव:** इन नए अवसरों ने पारंपरिक भारतीय सामाजिक विभाजनों को बांट दिया और बंगाल के भद्रलोक, बॉम्बे के चितपावन ब्राह्मणों और मद्रास के तमिल ब्राह्मणों जैसे विशेषाधिकार प्राप्त स्वदेशी समूहों को मिलाकर एक नया समूह बनाया जिसका नाम था- पश्चिमी शिक्षित अभिजात वर्ग।
- **सामाजिक-धार्मिक आंदोलन:** 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों ने सांस्कृतिक गौरव और सामाजिक सुधार को बढ़ावा दिया।
  - आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन और सिंह सभा ने भारतीय परंपराओं को पुनर्जीवित करने, सामाजिक अन्याय से लड़ने और राष्ट्रीय पहचान बनाने की मांग की।
- **प्रेस और साहित्य का उपयोग:** प्रेस ने सरकार की नीतियों की आलोचना की और एकता का आह्वान किया।
  - इसने लोकतंत्र, नागरिक स्वतंत्रता, औद्योगीकरण और स्वशासन को भी बढ़ावा दिया।
- **अंग्रेजों द्वारा निर्मित संस्थान:** चूंकि अंग्रेजों ने अधिक सहयोगियों की भर्ती के लिए स्थानीय स्वशासन और चुनाव प्रणाली की शुरुआत की और हित समूहों ने अपने प्रभाव क्षेत्र का विस्तार किया।
- **भारत का राजनीतिक और प्रशासनिक एकीकरण:** ब्रिटिश नीतियों ने भारत को राजनीतिक रूप से एकीकृत किया।
  - सिविल सेवा, समान न्यायपालिका, और देश भर में संहिताबद्ध नागरिक और आपराधिक कानूनों ने भारत की सदियों पुरानी सांस्कृतिक एकता में राजनीतिक एकता को भी जोड़ा।

- **भारत का आर्थिक एकीकरण:** ट्रेन, सड़क, बिजली और टेलीग्राफ सहित आधुनिक परिवहन और संचार अवसंरचना ब्रिटिश आर्थिक पैठ और वाणिज्यिक शोषण को बढ़ावा देने के लिए थी।
  - इस प्रकार, विभिन्न क्षेत्रों के निवासियों की आर्थिक गतिविधियाँ आपस में जुड़ गई।
- **नेताओं द्वारा संचार के आधुनिक साधनों का भरपूर उपयोग:** आधुनिक यात्रा और संचार के माध्यम विविध क्षेत्रों नेताओं के एकजुट होने में सहायक बने।
  - इसने आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों पर राजनीतिक संवाद और जनमत जुटाने की सुविधा प्रदान की।

❑ **वैश्विक मामलों का प्रभाव:**

- **अंग्रेजों की रूढ़िवादी एवं प्रतिक्रियावादी नीतियां:** अकाल के दौरान 1877 के दिल्ली दरबार, वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट (1878) और आर्म्स एक्ट (1878) की व्यापक आलोचना हुई।
  - इल्बर्ट बिल विवाद के कारण, राष्ट्रवादियों ने महसूस किया कि यूरोपीय हित निष्पक्षता को रोकते हैं।
- **सांस्कृतिक दमन:** ब्रिटिश शासन ने भारतीय संस्कृति का दमन किया। पश्चिमी शिक्षा और नैतिकता को बढ़ावा भारतीय भाषा और परंपरा की अवहेलना, और ब्रिटिश कानूनों और संस्थानों को प्रोत्साहित किया गया।
  - सांस्कृतिक उत्पीड़न ने सांस्कृतिक पहचान और भारतीय विरासत को फिर से हासिल करने की इच्छा उत्पन्न की।
- **वर्नाक्युलर लिटरेचर का विकास:** बंकिम चंद्र चटर्जी के उपन्यास "आनंदमठ" और दीनबंधु मित्र के नाटक "नील दर्पण" ने भारतीयों को प्रभावित किया और उन्हें ब्रिटिश विरोधी बना दिया।
  - भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा लिखित नाटक "भारत दुर्दशा" में ब्रिटिश शासन के तहत भारतीयों की दुर्दशा को दर्शाया गया।
- **प्रथम स्वतंत्रता संग्राम:** 1857 के विद्रोह ने भारतीय राष्ट्रवाद के उत्प्रेरक के रूप में कार्य किया।
  - अंग्रेजों के नापाक इरादों को जानने के बाद, लोगों ने रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहब, तांत्या टोपे और अन्य वीरों को याद किया।
- **अंग्रेजों का आर्थिक शोषण:** दादा भाई नौरोजी की "ड्रेन थ्योरी" में कहा गया, कि अंग्रेजों ने भारत का शोषण करके भारत से धन की निकासी की।
  - इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के बाद ब्रिटेन को कच्चे माल और बाजारों की जरूरत थी। भारत ने दोनों की आपूर्ति की।
- **पूर्व-कांग्रेस संगठन:** इनमें से कई संगठन विशिष्ट क्षेत्रों में संचालित होते थे, उनके लक्ष्य क्षेत्रीय थे, ना कि पूरे भारत वर्ष के लिए।
  - आधुनिक राष्ट्रवाद और संप्रभुता उनके मार्गदर्शक सिद्धांत थे। उनका मानना था कि भारतीयों को अपना निर्णय लेने में सक्षम होना चाहिए।
- **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म:** भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने वैचारिक रूप से अंग्रेजों से लड़कर भारत को स्वतंत्रता प्राप्त करने में मदद की।
  - दादा भाई नौरोजी और एस एन बनर्जी जैसे नरमपंथियों और बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्र पाल और लाला लाजपत राय जैसे चरमपंथियों ने भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना का विकास करने में मदद की।
  - इन तत्वों ने राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया। भारतीयों को एक नया जोश मिला। वे जागृत हुए और स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हुए। अंग्रेजी शासन समाप्त हो रहा था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की 1885 की स्थापना ने इसे और गति दी।

❑ **भारत में प्रारंभिक राजनीतिक संगठन और उनकी उपलब्धियां**

  - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक विजयी राजनीतिक संघर्ष का नेतृत्व किया। हालाँकि, कांग्रेस पहली राजनीतिक संस्था नहीं थी। राजनीतिक अधिकार संघ पहले से अस्तित्व में थे।

❑ **कांग्रेस से पहले के राजनीतिक संस्थान**

- राजा राम मोहन राय बंगाल के पहले राजनीतिक कार्यकर्ता थे। पश्चिमी विचारों ने उन्हें प्रोत्साहन दिया। अंग्रेजों ने सबसे पहले उन्हीं की वजह से भारतीय मुद्दों पर ध्यान दिया।
- 1836 के चार्टर एक्ट के कई उदारवादी प्रावधानों का श्रेय उन्हें ही दिया जाता है।

❑ बंगभाषा प्रकाशन सभा:-

- **वर्ष** -1836
- **संस्थापक** - राजा राममोहन राय

- **अन्य सदस्य -** प्रसन्ना कु. ठाकुर, कालीनाथ चौधरी, द्वारकानाथ टैगोर
- **विवरण-**
  - वे उच्च सरकारी पदों, प्रेस की स्वतंत्रता और रैयतों द्वारा जमींदारी उत्पीड़न की वकालत कर रहे थे।
  - संगठन ने जनमत के माध्यम से बंगाली शिक्षा और बंगाली साहित्य को बढ़ावा दिया।

❑ जमींदारी संघ ("लैंडहोल्डर्स एसोसिएशन"):-

- **वर्ष -**1838
- **संस्थापक -** द्वारकानाथ टैगोर
- **विवरण-**
  - द्वारकानाथ टैगोर ने जमींदारों के हितों की रक्षा के लिए जमींदारी एसोसिएशन की स्थापना की, जिसे "लैंडहोल्डर्स एसोसिएशन" के रूप में भी जाना जाता है।
  - जमींदारी संघ भारत का पहला राजनीतिक संगठन था।
  - अपने लक्ष्यों के लिए, यह संवैधानिक प्रदर्शन का उपयोग करने वाला पहला संघ था।

❑ बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसायटी:-

- **वर्ष -**1843
- **संस्थापक -** जॉर्ज थॉमसन
- **सचिव -** प्यारी चंद्र मित्र
- **विवरण-**
  - इस सोसाइटी ने राष्ट्रवाद और राजनीतिक शिक्षा को बढ़ावा दिया।
  - कंपनी के नए चार्टर में अपनी कुछ सिफारिशों को शामिल करने के लिए इसने ब्रिटिश संसद में आवेदन किया, जैसे लोकलुभावन लक्ष्यों के साथ एक अलग विधायिका की स्थापना करना।
  - कम वेतन, नमक, उत्पाद शुल्क और डाक शुल्क का उन्मूलन।
  - 1846 तक यह निष्क्रिय हो गयी।

❑ इंडियन लीग:-

- **वर्ष -**1875
- **संस्थापक -** शिशिर कुमार घोष
- **अस्थायी अध्यक्ष -** शम्भू चंद्र मुखर्जी
- **विवरण-**
  - **इसके उद्देश्य थे:-**
  - राजनीतिक प्रणाली के लिए लोकप्रिय समर्थन करना।
  - भारतीयों को समान राजनीतिक चेतना के प्रति एकजुट करना।
  - संघ ने कई बंगाली और गैर-बंगाली शाखाएं खोलीं।
  - कम आय वाले सदस्यों को आकर्षित करने के लिए संघ ने बहुत कम शुल्क लिया।

❑ इण्डियन एसोसिएशन

- **स्थापना -**26 जुलाई, 1876 ई०
- **स्थान -** कलकत्ता का अल्बर्ट हाल
- **संस्थापक -** सुरेन्द्रनाथ बनर्जी
- **सचिव -** आनन्द मोहन बोस
- **अध्यक्ष -** वैरिस्टर मनमोहन घोष
- इण्डियन लीग की स्थापना के 1 वर्ष के भीतर ही 26 जुलाई, 1876 ई० को इसका स्थान इण्डियन एसोसिएशन ने ले लिया

- इसका उद्देश्य मध्यम वर्ग के साथ-साथ साधारण वर्ग को भी इसमें सम्मिलित करना था
- इसमें चन्दे की दर, ब्रिटिश इण्डियन एसोसिएशन के 30 रुपये वार्षिक के विपरीत मात्र 5 रुपये वार्षिक रखा गया।
- **उद्देश्य -**
    - देश में जनमत की एक शक्तिशाली संस्था का गठन करना।
    - भारतीयों को सूत्रबद्ध करना।
    - हिन्दू एवं मुसलमानों के बीच मैत्रीभाव को बढ़ाना।
- इस एसोसिएशन में जमींदारों के स्थान पर मध्यमवर्ग को प्रधानता दी गई। इस संगठन ने सिविल सर्विसेज आन्दोलन चलाया जिसे "भारतीय जनपद सेवा आन्दोलन" कहा जाता है।
- इसके अतिरिक्त वर्नाक्युलर प्रेस ऐक्ट, आर्म्स ऐक्ट और इल्बर्ट बिल के विरोध में आन्दोलन चलाया गया।
- इल्बर्ट बिल विवाद के दौरान अपने पत्र "बंगाली" में कलकत्ता हाईकोर्ट के जज जे० एफ० मारिश की आलोचना करने के कारण सुरेन्द्रनाथ बनर्जी को 5 मई, 1883 ई० को 2 माह की सजा मिली।
- 4 जुलाई, 1883 ई० को इन्हें रिहा कर दिया गया।
- इण्डियन एसोसिएशन ने 29 दिसम्बर, 1883 ई० को कलकता के अल्बर्ट हाल में आनन्द्र मोहन बोस की अध्यक्षता में नेशनल कांफ्रेंस का आयोजन किया।
- दूसरी इण्डियन बशनल कांफ्रेंस कलकत्ता में 25 दिसम्बर, 1885 ई० को हुई।
- इसकी अध्यक्षता सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने की। इसी कारण वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन

बंबई में राजनीतिक संगठन

❑ बॉम्बे एसोसिएशन:-

- **वर्ष -** अगस्त, 1852
- **संस्थापक -** दादा भाई नौरोजी
- **विवरण-**
    - कलकत्ता ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन के मॉडल पर स्थापित, यह बंबई में पहला राजनीतिक संगठन था।
    - इसका उद्देश्य भेदभावपूर्ण सरकारी नियमों के बारे में सरकार को प्रस्ताव देना और विभिन्न दोषों को ठीक करने के लिए प्रशासन को एक ज्ञापन प्रदान करना था।

❑ पूना सार्वजनिक सभा:-

- **वर्ष -**1870
- **संस्थापक -** महादेव गोविंद रानाडे
- **विवरण-**
    - वे सरकार और आम जनता के बीच एक कड़ी के रूप में सेवा करने के इच्छुक थे।
    - इस संस्था ने किसानों के कानूनी अधिकारों की भी वकालत की।

❑ बॉम्बे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन:-

- **वर्ष -**1885
- **संस्थापक -** फिरोशाह मेहता, बदरुद्दीन तैयबजी और केटी तेलंग
- **विवरण-**
    - मेहता, तैयबजी और तेलंग ने लिटन की प्रतिक्रियावादी नीतियों और इल्बर्ट बिल का विरोध करने के लिए 1885 में इसकी स्थापना की।

मद्रास में राजनीतिक संगठन

❑ मद्रास नेटिव एसोसिएशन:-

- **वर्ष -** फरवरी ,1852

- **संस्थापक -** गुजलू लक्ष्मी नरसुचेट्टी
- **अध्यक्ष -** सी. वाई. मुदलियार
- **सचिव -** वी. रामानुजाचारी
- **विवरण-**
  - यह मद्रास का पहला राजनीतिक संगठन था।

❑ मद्रास महाजन सभा:-

- **वर्ष -**1884
- **संस्थापक -** बी. सुब्रमण्यम अय्यर, पी. आनंद चालू और एम. वीराघवाचारी
- **अध्यक्ष -** पी. रंगियानायडू
- **सचिव -** पी. आनंद चालू ,एम. वीराघवाचारी
- **विवरण**
  - सबसे पहले, इसने सरकार की नीतियों का विरोध किया।

लंदन में राजनीतिक संगठन/ Political organisations in London

19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में लंदन में भारतीयों ने तीन संगठन बनाए-

❑ लंदन इण्डियन कमेटी

- **स्थापना -** 1862 ई०, लन्दन
- **संस्थापक -** पुरुषोत्तम मुदलियार

❑ लंदन इण्डिया सोसायटी

- **स्थापना -** 1865 ई०, लंदन
- **संस्थापक -** दादाभाई नौरोजी

❑ ईस्ट इण्डिया एसोसिएशन

- **स्थापना -** 1 दिसम्बर, 1866 ई०, लन्दन
- **संस्थापक -** दादाभाई नौरोजी

❑ **पूर्व- कांग्रेस संगठनों की असफलता के कारक**

- **एकता की कमी**: प्रारंभिक भारतीय राजनीतिक दलों ने एकता बनाए रखने के लिए संघर्ष किया। विघटन, टकराती विचारधाराओं और व्यक्तिगत संघर्षों ने अक्सर उनके राजनीतिक प्रभाव को कम कर दिया।
- **समर्थन का सीमित आधार**: इन संगठनों ने पर्याप्त जमीनी समर्थन के बिना ब्रिटिश औपनिवेशिक नियंत्रण से लड़ने के लिए संघर्ष किया।
- **ब्रिटिश दमन**: ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता ने अपने नियंत्रण के लिए खतरा समझी जाने वाली राजनीतिक गतिविधियों को तुरंत दबा दिया।
  - प्रारंभिक राजनीतिक संगठनों में प्रभावी तरीकों और लक्ष्यों का अभाव था। वे समर्थन हासिल करने के लिए संघर्ष कर रहे थे क्योंकि उन्होंने स्थानीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया था और भारत की स्वतंत्रता के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण नहीं प्रस्तुत किया था।
- **संचार सम्बन्धी चुनौतियाँ:** खराब संचार अवसंरचना के कारण राजनीतिक संगठनों को विशाल और विविध भारतीय उपमहाद्वीप में लामबंदी और समन्वय करने में परेशानी होती थी।
  - हालांकि, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से पहले के कई राजनीतिक संगठन अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में विफल रहे, उन्होंने भविष्य के आंदोलनों के लिए रूपरेखा तैयार की और भारत में राष्ट्रवादी चेतना को बढ़ाया। 1885 में स्थापित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भारत को स्वतंत्रता दिलाने में मदद की।

आंदोलन का प्रथम चरण (1885-1905 ई.) - उदारवादी काल

❑ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना

- "कांग्रेस" शब्द उत्तरी अमेरिका से लिया गया है, जिसका अर्थ है **"लोगों का समूह"**। कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन दिसम्बर, 1885 ई० तक बम्बई के ग्वालिया टैंक स्थित गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कालेज में हुआ। प्रारम्भ में इसका नाम **'भारतीय राष्ट्रीय संघ'** था, दादाभाई नौरोजी के सुझाव पर इसका नाम **'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस'** कर दिया गया।

कांग्रेस की नींव रखने वाले कारक

- **जनता की राजनीतिक जागृति**: 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कोई ऐतिहासिक दुर्घटना नहीं थी।
  - यह एक राजनीतिक जागृति की पराकाष्ठा थी जो 1860 और 1870 के दशक में शुरू हुई और 1870 के दशक 1880 के दशक की शुरुआत में तेज हुई।
- **ए.ओ. ह्यूम की पहल:** ब्रिटिश नागरिक अधिकारी एलन ऑक्टेवियन ह्यूम ने एक राजनीतिक प्रतिनिधित्व मंच की आवश्यकता को पहचाना और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की। 1885 में, ह्यूम ने कांग्रेस की बैठक बुलाई और उसके महासचिव बने।
- **नरमपंथी और प्रारंभिक नेतृत्व:** इन राजनेताओं ने ब्रिटिश औपनिवेशिक ढांचे के भीतर संवैधानिक सुधारों, शांतिपूर्ण साधनों और भारतीय हितों को बढ़ावा दिया।
- **सुधारों की मांग:** भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने शुरू में ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार के तहत प्रशासन, सिविल सेवाओं और विधान परिषदों में भारतीयों के लिए प्रतिनिधित्व बढ़ाने की मांग की।
- **जन लामबंदी:** ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक व्यापक आंदोलन स्थापित करने के लिए, पार्टी आम लोगों (कार्यकर्ता, किसान और अन्य) के साथ जुड़ी हुई थी।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

- **स्थापना-** 28 दिसम्बर, 1885 ई०
- **स्थान-**बम्बई (गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कालेज का भवन)
- **संस्थापक-**एलन आक्टेवियन ह्यूम
- **अध्यक्ष-**व्योमेश चन्द्र बनर्जी
- **सदस्य संख्या-**72
- **अन्य सदस्य -** दादाभाई नौरोजी, फीरोजशाह मेहता, दीनशा एदलजी वाचा, काशीनाथ तैलंग, वी० राघवाचारी, एन० जी० चन्द्रावरकर, एस० सुब्रह्मण्यम आदि।

कांग्रेस के लक्ष्य और उद्देश्य

- बिपिन चन्द्र के अनुसार, कांग्रेस के दो मूल उद्देश्य थे-
  - राष्ट्र निर्माण और भारतीय पहचान को बढ़ावा देना।
  - लोगों को इकट्ठा करने और लामबंद करने के लिए पूरे भारत में राजनीतिक कार्यकर्ताओं के लिए एकल राजनीतिक कार्यक्रम या मंच प्रदान करना।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पहले अध्यक्ष व्योमेश चंद्र बनर्जी ने तीन लक्ष्य निर्धारित किए:

- **राष्ट्रीय एकता को मजबूत करना:** इसके लिए देश भर में कांग्रेस के अधिवेशन आयोजित किए गए। विभिन्न क्षेत्रों के अध्यक्षों ने इन सत्रों की अध्यक्षता की।
- **सभी धर्मों तक पहुंच और अल्पसंख्यकों की चिंताओं को दूर करना:** बहुसंख्यक हिन्दू या मुसलमान को किसी भी प्रस्ताव पर साथ लाना था। सभी धर्मों की चिंताओं को दूर करना था |
- **कांग्रेस एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के निर्माण के लिए संकल्पित थी:** दादा भाई नौरोजी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में स्पष्ट किया कि कांग्रेस को केवल राष्ट्रीय मुद्दों को ही संबोधित करना चाहिए। उनका मानना था सामाजिक सुधार कांग्रेस के लिए निषिद्ध था।

अपने प्रारंभिक चरण में कांग्रेस की कमजोरियाँ

- **असमान प्रतिनिधित्व और गैर- अभिजात्य समूहों का पूर्ण बहिष्कार**: शहरी अभिजात वर्ग, पेशेवर, और उच्च-जाति के हिंदू भूमिहीन कुलीन वर्गों का कांग्रेस के शुरूआती समय में वर्चस्व। कुछ समय बाद सम्मेलनों का स्थान कलकत्ता की जगह बम्बई हो गया। बंबई में 38 गैर-सरकारी भारतीय प्रतिनिधि थे, मद्रास में 21 और बंगाल में चार।
- **उच्च जाति के हिन्दू संगठन पर हावी थें:** शुरुआती कांग्रेस सदस्य ज्यादातर उच्च जाति के हिंदू थे, और यह प्रणाली दो दशकों से अधिक समय तक बनी रही।

- **उग्रता और जन आधार की कमी:** भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अपने शुरुआती वर्षों में कभी भी उग्र नहीं थी क्योंकि सरकार के लिए खुले प्रतिरोध ने अभी तक जड़ें नहीं जमाई थीं।
  - सुरेंद्र नाथ बनर्जी ने जिसे भारत में "अन-ब्रिटिश रूल" कहा, वे उसे सुधारने के लिए प्रार्थना, याचिकाएं और मेमो भेजने वाले सुधारक थे।
  - हालाँकि, इसने भारतीय राजनीति का आधुनिकीकरण किया।

नरमपंथी एवं चरमपंथी विचारधारा में अंतर

नरमपंथी

- **सामाजिक आधार**: शहरों में ज़मींदार और उच्च मध्य वर्ग।
- **वैचारिक प्रेरणा**: पश्चिमी उदारवादी विचार और यूरोपीय इतिहास।
- **विश्वासपूर्ण राजनीतिक संबंध:** भारत के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक हितों में ब्रिटेन का होना।
- **वफादार:** ब्रिटिश क्राउन के प्रति वफादारी का दावा किया।
- **जनता तैयार नहीं:** माना जाता है कि आंदोलन को मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों तक सीमित होना चाहिए; जनता तब राजनीतिक कार्यों में भाग लेने के लिए तैयार नहीं थी
- **संवैधानिक मांगें:** संवैधानिक सुधारों और सेवाओं में भारतीयों के लिए हिस्सेदारी की मांग की।
- **संवैधानिक साधन:** केवल संवैधानिक तरीकों के उपयोग पर जोर दिया।
- **दलाल नहीं थे:** वे देशभक्त थे और दलाल वर्ग की भूमिका नहीं निभाते थे।
- **प्रमुख उदारवादी राष्ट्रीय नेता -** दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, महादेव गोविन्द रानाडे, दीनशावाचा, ब्योमेश चन्द्र बनर्जी, गोपालकृष्ण गोखले, मदन मोहन मालवीय आदि।

गरमपंथी

- **सामाजिक आधार**: शहरों में शिक्षित मध्य और निम्न मध्यम वर्ग।
- **वैचारिक प्रेरणा:** भारतीय इतिहास, सांस्कृतिक विरासत और हिंदू पारंपरिक प्रतीक।
- **उनका मानना था कि राजनीतिक संबंध:** ब्रिटेन के साथ भारत का ब्रिटिश शोषण जारी रहेगा।
- **अयोग्य ब्रिटिश क्राउन:** माना जाता है कि ब्रिटिश क्राउन भारतीय वफादारी का दावा करने के योग्य नहीं था।
- **जनता में विश्वास:** जनता की भाग लेने और बलिदान करने की क्षमता में अपार विश्वास था।
- **स्वराज:** भारत की बीमारियों के लिए रामबाण के रूप में स्वराज की मांग की।
- **अतिरिक्त संवैधानिक साधन:** अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए बहिष्कार और निष्क्रिय प्रतिरोध जैसे गैर-संवैधानिक तरीकों का उपयोग करने में संकोच नहीं किया।

नरमपंथी चरण के दृष्टिकोण और कमियां (1885-1905)

- कांग्रेस अपने शुरुआती वर्षों में अपनी मांगों और तरीकों के कारण "उदारवादी " थी
- **परिषद का विस्तार:** इसका उद्देश्य सरकार में भारतीय प्रतिनिधित्व को मजबूत करने के लिए प्रांतीय और केंद्रीय परिषदों की शक्तियों का विस्तार करना और उनके निर्वाचित सदस्यों को बढ़ाना था।
  - 1892 के भारतीय परिषद अधिनियम ने शाही और प्रांतीय विधान परिषदों का विस्तार किया।
  - विधान परिषदों ने बजट पर बहस की और कार्यपालिका पर सवाल उठाए।
- **चुनाव और मतदान की शक्तियों की मांग :** कुछ ही वर्ग और समुदाय के सदस्य ही स्वविवेक से और स्वतंत्र रूप से चुनाव करने की शक्ति का प्रयोग करने में सक्षम" थे।
  - केंद्रीय और प्रांतीय विधान परिषदों में नामांकन का उपयोग किया जाता था।
  - सिविल सेवा का भारतीयकरण करने के लिए इंग्लैंड और भारत में सिविल सेवा परीक्षा आयोजित कराना आवश्यक था। 1877-80 में, एक विशाल अभियान ने सार्वजनिक सेवाओं के भारतीयकरण की मांग की और लॉर्ड लिटन की महंगी अफगान यात्रा का विरोध किया, जिसका भुगतान भारतीय वित्त से किया गया था।

- **सत्ता के बंटवारे की मांग :** कांग्रेस भी प्रशासन और न्यायपालिका को अलग करना चाहती थी और ज्यूरी ट्रायल का विस्तार करना चाहती थी।
- **प्रेस की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष -** भारतीय प्रेस और संघों ने 1878 के वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट का भी विरोध किया।
- **आर्थिक सुधारों और नागरिक अधिकारों की मांग:** शुरुआती कांग्रेस नेताओं ने भारत की गरीबी के बारे में चिंता की और समाधान प्रदान किया।
    - उन्होंने घरेलू शुल्क को कम करने की मांग की, विशेष रूप से महंगे सैन्य उपक्रमों स्थायी बंदोबस्त का विस्तार, आयकर और पुलिस में सुधार, वन कानूनों को निरस्त करने और नमक कर वृद्धि का विरोध करने के लिए।
    - इस तरह के उपाय औद्योगिक विकास को बढ़ावा देंगे, धन के बहिर्वाह को रोकेंगे, रोजगार सृजित करेंगे और स्थिति में सुधार करेंगे।
    - उन्होंने "प्रतिनिधित्व के बिना कोई कराधान नहीं" जैसी शर्त रखी।

नरमपंथियो द्वारा अपनाए गए तरीके

- **प्रार्थना और याचिका:** संजय सेठ के अनुसार, सरकारी कार्रवाई या निष्क्रियता या कार्रवाई के नए तरीके का सुझाव देने वाले कांग्रेस के प्रस्तावों में हमेशा 'निंदा' के बजाय 'अफसोस' और 'मांग' के बजाय "सुझाव" होता है।
    - आत्म-सम्मान की कमी के संकेत के रूप में 'चरम' कांग्रेस नेताओं द्वारा इस तरह की विनय को अंततः 'भिक्षुता' का रूप समझा गया।
- **भारत के लोगों का प्रतिनिधित्व:** दूसरी ओर, अनुरोध 'भारत के लोगों' के नाम पर किए गए थे और इसका उद्देश्य लोगों को "इसमें उनका उचित और वैध हिस्सा" देने के लिए सरकार की नींव को व्यापक बनाना था।
- **उपनिवेशवाद की आर्थिक समालोचना:** कांग्रेस की बहसों और प्रस्तावों में गरीबी हावी रही।
    - दादाभाई नौरोजी और अन्य लोगों ने गरीबी और उसके कारणों का अध्ययन किया और ऐसे "ब्रिटिश" शासन की वकालत की जिससे भारत को लाभ होगा।
- **नौरोजी की प्रमुख रचना, पॉवर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया के अलावा, कई अन्य प्रकाशनों ने भारत पर साम्राज्यवाद आर्थिक प्रभावों की आलोचनात्मक जाँच की।**
    - भारत में गरीबी की समस्या (1895), भारतीय अर्थशास्त्र पर महादेव गोविंद रानाडे का निबंध (1896), रोमेश चंद्र दत्त का दो खंडों वाला भारत का आर्थिक इतिहास (1902), और सुब्रह्मण्य अय्यर का भारत में ब्रिटिश शासन के कुछ आर्थिक पहलू (1903) तथा दूसरों ने, भारत से इंग्लैंड की ओर लगातार "धन की निकासी" के लिए औपनिवेशिक शासन को जिम्मेदार ठहराया।
    - उन्होंने देश के आर्थिक "ड्रेनेज" "ग्रामीणीकरण," और "डी-औद्योगिकीकरण" का विरोध किया और भारत की औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था पर ध्यान केंद्रित करके शास्त्रीय आर्थिक सिद्धांत की अमूर्तता और ऐतिहासिकता को चुनौती दी।
- **सार्वजनिक बैठकें और सम्मेलन:** नरमपंथियों ने भारतीय मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए सार्वजनिक बैठकें और सम्मेलन आयोजित किए। इनमें भाषण और वाद विवाद किया जाता था।
- **प्रेस और प्रकाशन:** नरमपंथी, मीडिया के प्रभाव को समझते थे। उन्होंने अपने विचारों को फैलाने और जनता को शिक्षित करने के लिए समाचार पत्र, पत्रिकाएँ और पर्चे प्रकाशित किए।
- **सहायक ब्रिटिश अधिकारियों के साथ सहयोग**: उदारवादी ब्रिटिश अधिकारियों के साथ गठबंधन और संबंध बनाने में विश्वास करते थे, जो भारतीय समस्याओं के प्रति सहानुभूति रखते थे। उन्होंने सुधारों के लिए सरकारी अधिकारियों की पैरवी की और भारतीय चिंताओं को दूर किया।
- **शिक्षा:** नरमपंथी समझ गए थे कि शिक्षा भारतीयों को सशक्त बनाती है। उन्होंने स्कूलों की स्थापना की और साक्षरता को प्रोत्साहित करने के लिए शैक्षिक परिवर्तनों की वकालत की।
- **परिषद का उपयोग:** अंग्रेज चाहते थे कि परिषदें, अधिक मुखर भारतीय नेताओं की उपेक्षा करें
    - इन परिषदों का इस्तेमाल चिंताओं को व्यक्त करने, एक असावधान नौकरशाही को बेनकाब करने, सरकारी नीतियों/प्रस्तावों का विरोध करने और बुनियादी आर्थिक मुद्दों, विशेष रूप से सार्वजनिक धन की निकासी जैसे मुद्दों को उठाने के लिए किया।
- **अंतर्राष्ट्रीय मंच**: नरमपंथियों ने विदेशों में भारतीय मुद्दों को बढ़ावा दिया। उन्होंने भारतीय औपनिवेशिक पीड़ा के बारे में जागरूकता बढ़ाने और उनकी मांगों का समर्थन करने के लिए विश्वव्यापी सम्मेलनों में भाग लिया।
- Methods adopted by the Moderates

भारतीय परिषद अधिनियम 1892 और प्रारंभिक राष्ट्रवादियों द्वारा प्रतिक्रियाएँ

इस अधिनियम ने केंद्रीय और प्रांतीय विधान परिषदों में वृद्धि की और सीमित अप्रत्यक्ष चुनावों का प्रावधान किया। इस अधिनियम ने पूर्ण स्वशासन प्रदान नहीं किया, लेकिन इसने राजनीतिक भागीदारी की अनुमति दी, जिसने प्रारंभिक राष्ट्रवादियों को विविध प्रतिक्रियाओं के लिये प्रेरित किया। 1892 के भारतीय परिषद अधिनियम में प्रारंभिक भारतीय राष्ट्रवादी प्रतिक्रियाओं में मुख्यतः शामिल हैं:

- **कुछ राष्ट्रवादियों ने इस एक्ट का स्वागत किया:** नौरोजी ने कहा कि इस कदम से पता चलता है कि ब्रिटिश, भारतीयों को अधिक शक्ति देने के इच्छुक थे।
  - उन्होंने महसूस किया कि यह धीरे-धीरे भारतीय स्वशासन को विकसित करेगा।
- **कुछ राष्ट्रवादियों द्वारा आलोचना:** तिलक ने दावा किया कि यह एक धोखा था। उन्होंने दावा किया कि अंग्रेज भारतीयों को सरकार की भागीदारी का झूठा आश्वासन देना चाहते थे। उन्होंने भारतीयों से बहिष्कार करने और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने का आग्रह किया।
  - इस एक्ट में बजट पर मतदान या संशोधन शामिल नहीं किया गया था।
  - पूरक प्रश्नों की चर्चा निषिद्ध थी।
- **दो प्रतिस्पर्धी राष्ट्रीय विचारधाराओं का उद्भव**: जिसमे नौरोजी के नेतृत्व में उदारवादी धारा, जो स्वशासन प्राप्त करने के लिए व्यवस्थित ढांचे के भीतर काम करने का समर्थन करती थी, और तिलक के नेतृत्व में उग्रवादी विचारधारा, जिसने स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए अधिक शक्तिशाली साधनों का उपयोग करने पर जोर डाला।
- **सार्वजनिक ज्ञान और संघटन :** इस अधिनियम ने राष्ट्रवादी बहसों को प्रेरित किया, जिससे राजनीतिक अधिकारों और महत्वाकांक्षाओं के बारे में सार्वजनिक ज्ञान बढ़ा ।
  - राष्ट्रवादी नेताओं ने लोगों को अधिनियम के प्रभाव, राष्ट्रवादी आंदोलन के लक्ष्यों और सार्वजनिक बैठकों, सम्मेलनों और प्रकाशनों के माध्यम से और सुधारों की आवश्यकता के बारे में शिक्षित किया।
- **स्वशासन की मांग:** धीरे-धीरे संवैधानिक मांगों का विस्तार हुआ। दादाभाई नौरोजी (1904), गोपाल कृष्ण गोखले (1905), और लोकमान्य तिलक (1906), कनाडा और ऑस्ट्रेलिया की तरह स्वशासन चाहते थे।

नरमपंथियों की कमियां

- **कांग्रेसी नरमपंथियों द्वारा मामूली राजनीतिक सुधारों का समर्थन:** उन्होंने ब्रिटिश प्रशासन के साथ संवैधानिक साधनों का उपयोग करने और संचार करने पर प्रकाश डाला, जिसे आलोचकों ने औपनिवेशिक वर्चस्व का विरोध करने के लिए तात्कालिकता और आक्रामकता की कमी के रूप में समझा।
- **नरमपंथियों का राजनीति में सुधार के लिए ब्रिटिश प्रशासन पर विश्वास:** वे स्वशासन के बजाय ब्रिटिश न्याय और निष्पक्षता चाहते थे। ब्रिटिश सरकार अक्सर उनके अनुरोधों को अनसुना कर देती थी।

आंदोलन का द्वितीय चरण (1905-1919) ई.) - उग्रराष्ट्रवाद का काल

इस काल की प्रमुख राजनीतिक घटनाएँ -

1. बंगाल विभाजन, स्वदेशी आंदोलन (1905)
2. मुस्लिम लीग की स्थापना (1906)
3. सूरत अधिवेशन (1907)
4. मार्ले मिण्टो सुधार (1909)
5. दिल्ली दरबार (1911)
6. प्रथम विश्व युद्ध (1914)
7. लखनऊ पैक्ट (1916)
8. होमरुल आंदोलन (1916)
9. मांटेग्यू घोषणा (1917)
10. रौलेट एक्ट (1919)

बंगाल का विभाजन और कर्जन की प्रतिक्रियावादी नीतियां

30 दिसंबर, 1898 को लॉर्ड कर्जन भारत के नए वायसराय बने। बंगाल के विभाजन की घोषणा 1903 में एक रॉयल उद्घोषणा द्वारा की गई थी, जिसमें पूर्वी बंगाल का एक नया प्रांत बनाकर बंगाल के पिछले प्रांत के क्षेत्र को घटा दिया गया था, जो बाद में पूर्वी पाकिस्तान और वर्तमान बांग्लादेश बन गया।

लॉर्ड कर्जन की प्रतिक्रियावादी नीतियां

- **1899 का कलकत्ता निगम अधिनियम:** कर्जन ने भारतीयों को स्वशासन से वंचित करने के लिए 1899 के कलकत्ता निगम अधिनियम द्वारा निर्वाचित विधायिकाओं की संख्या को सीमित कर दिया।
- **भारतीयों के प्रति घृणा:** उन्होंने भारतीयों के साथ अनादर का व्यवहार किया। उन्होंने बंगालियों को कायर, हवाबाज़, फालतू बात करने वाला और बेवकूफ देशभक्त करार दिया।
- **भारतीयों के प्रति दुर्व्यवहार**: उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष से मिलने से इनकार कर दिया।
- **बंगाल का विभाजन:** बंगाल का विभाजन उनकी सबसे बड़ी भूल थी। यह भविष्य में अंग्रेजों के लिए विनाशकारी साबित हुआ।

कर्जन की प्रतिगामी नीतियां और उनके प्रभाव

- **राजनीतिक अस्थिरता के लिए मार्ग प्रशस्त:** कर्जन के अराजनैतिक बयानों और साम्राज्यवादी मंसूबों ने भारत की राजनीतिक अस्थिरता को और बढ़ा दिया। कर्जन की साम्राज्यवादी नीतियों ने भारतीय राजनीतिक प्रतिक्रिया को जन्म दिया।
- **राष्ट्रीयता की भावना:** उसके अत्याचार ने राष्ट्रवाद की गहरी भावना को जन्म दिया। इस वजह से कर्जन भारत का अनायास हितैषी सिद्ध हुआ।
- **स्वदेशी आंदोलन:** स्वदेशी आंदोलन की स्थापना 1905 में ब्रिटिश उत्पादों के बहिष्कार की मांग के साथ बंगाल में हुई थी। 1857 के विद्रोह के बाद संभवत: यह पहला बड़ा आंदोलन था।
- **उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन:** उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन का नेतृत्व पहले नरमपंथियों ने किया था, लेकिन बाद में इसे चरमपंथियों ने आगे बढ़ाया और पूरे देश में इसका प्रसार हुआ। तिलक, बिपिन पाल और अरबिंदो घोष कांग्रेस को नियंत्रित करने लगे थे।
- **क्रांतिकारी गतिविधियों का उदय:** ब्रिटिश विरोधी क्रांतिकारी संगठनो का उदय होने लगा जिसमे युगांतर जैसे संगठन शामिल थे। उन्होंने उपनिवेश विरोधी अभियानों में सक्रिय भूमिका निभाई और युवाओं में राष्ट्रवाद की भावना जगाने का प्रयास किया।

लॉर्ड कर्जन के द्वारा किए गए सुधार

- **विश्वविद्यालय आयोग, 1902:** उन्होंने देश में विश्वविद्यालय शिक्षा के पूरे मुद्दे को देखने के लिए 1902 में एक विश्वविद्यालय आयोग की स्थापना की।
- **1904 का भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम**: कर्जन ने आयोग के निष्कर्षों और सिफारिशों के जवाब में 1904 का भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पारित किया, जिससे भारत में सभी विश्वविद्यालयों को इस एक्ट के अधिकार में लाया गया।
- **वैज्ञानिक सुधार**: पूसा (बिहार-बंगाल प्रेसीडेंसी) में कृषि अनुसंधान संस्थान की स्थापना की गई।
- **प्रशासनिक:** उन्होंने पुलिस में सुधार, भ्रष्टाचार को खत्म करने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए काम किया।
- **रूढ़िवाद का पुनर्जन्म:** उन्होंने लॉर्ड मेयो की नीतियों की मुख्य विशेषताओं को अद्यतन करके भारत में रूढ़िवाद को पुनर्जीवित किया।
- **पुलिस सुधार**: 1902 में उन्होंने पुलिस आयोग की स्थापना की, जिसके अध्यक्ष सर एंड्रयू फ्रेजर थे। कर्जन ने सभी सिफारिशों को स्वीकार किया और लागू किया।
- प्रशिक्षण विद्यालयों की स्थापना की उन्होंने अधिकारियों और कांस्टेबलों दोनों के लिए प्रशिक्षण विद्यालयों की स्थापना की और प्रांतीय पुलिस सेवाओं की स्थापना की।
- **NWFP की स्थापना:** नॉर्थवेस्ट फ्रंटियर प्रांत (NWFP) कर्जन शासन के दौरान स्थापित किया गया था, और सिंधु नदी का ऊपरी हिस्सा भी शामिल था।
- **इंपीरियल कैडेट कॉर्प्स की स्थापना की गई:** इंपीरियल कैडेट कॉर्प्स की स्थापना की गई, जो बाद में सेना के भारतीयकरण के लिए एक उपकरण के रूप में काम करता था।

बंगाल विभाजन की पृष्ठभूमि और सरकार का मकसद

- **वायसराय :** लार्ड कर्जन
- **20 जुलाई :** विभाजन का निर्णय
- **7 अगस्त :** विभाजन के विरोध में आन्दोलन प्रारम्भ
- **16 अक्टूबर :** विभाजन प्रभावी - इस दिन पुरे बंगाल में शोक दिवस के रूप में मनाया गया तथा रविंद्रनाथ टैगोर के सुझाव पर इस दिन राखी दिवस के रूप में मनाया गया।
- **1911 :** विभाजन रद्द (लार्ड हार्डिंग II के समय)
- **आधिकारिक कारण:** बंगाल एक एकल प्रांत था जिसमें बिहार, उड़ीसा, बंगाल और ढाका राज्य शामिल थे। विभाजन मुस्लिम आबादी को पूर्वी बंगाल और बिहार, साथ ही उड़ीसा और बंगाल के एक हिस्से को एक अन्य प्रांत के रूप में अलग करने की और लक्षित था।
- **प्रशासनिक सुगमता:** सरकार ने कहा कि यह बंगाल के अविकसित पूर्वी भाग में विकास को बढ़ावा देने और प्रशासनिक सुगमता के लिए किया गया था क्योंकि जनसंख्या के मामले में बंगाल सबसे बड़ा प्रांत था, जिससे प्रशासन चुनौतीपूर्ण हो गया था।
- **असली मकसद -** फूट डालो और राज करो: हालांकि, प्रमुख लक्ष्य उस समय देश के सबसे उन्नत वर्ग के मध्य 'फूट डालो और राज करो' था, और मुस्लिम समुदाय उनके एक अलग प्रांत के वादे के कारण दूर हो गया था।
- **बंगाली संस्कृति और भाषा पर हमला:** राष्ट्रवादियों ने इसे भारतीय राष्ट्रवाद के लिए एक चुनौती के रूप में देखा, ना कि केवल एक नौकरशाही उपाय के रूप में। वे इसे बंगाली संस्कृति और भाषा पर हमला मानते थे।
- **राष्ट्रवादी आंदोलन को तोडना:** कर्जन के शब्दों में, इसका उद्देश्य **"कलकत्ता को अलग करना"** था, क्योंकि वह उस समय कांग्रेस की गतिविधियों का और राष्ट्रवादी आंदोलन का एक प्रमुख केंद्र था।

रिजले (भारत सरकार के गृह सचिव, 1904)

- एकजुट बंगाल एक शक्ति है। विभाजित बंगाल कमजोर पड़ जायेगा. हमारा एक मुख्य उद्देश्य इसे विभाजित करना है और इस तरह हमारे शासन के विरोधियों को कमजोर करना है।

Risley (Home Secretary to the Government of India, 1904)

- A united Bengal is a strength. A divided Bengal will be a weakness. One of our main objects is to divide it and thus weaken the opponents of our rule.

विभाजन के लिए राष्ट्रवादी प्रतिक्रिया

- **कांग्रेस के भीतर फूट:** विभाजन ने कांग्रेस के भीतर एक फूट भी पैदा की, क्योंकि नरमपंथियों ने विभाजन अभियान को केवल बंगाल तक सीमित करने की मांग की।
- **राष्ट्रव्यापी आंदोलन:** दूसरी ओर, चरमपंथियों ने एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन शुरू करके और स्वदेशी आंदोलन की स्थापना करके अपने प्रभाव को महसूस कराया।
- **बढ़ते तनाव:** इसने दोनों पक्षों के बीच तनाव को बढ़ा दिया, जो कांग्रेस के 1906 के सत्र में समाप्त हो गया जब दादाभाई नौरोजी को अध्यक्ष के रूप में चुनकर विवाद को टाल दिया गया (वह दोनों गुटों के हितैषी थे और परिणामस्वरूप, तिलक जोकि उग्र नेता थे - उन्होंने भी उनके नाम पर सहमति जताई। हालाँकि, वह इस बार अध्यक्ष पद के लिए पसंदीदा थे) ।

दृष्टिकोण

- मानवतावादी कवि-दार्शनिक रवींद्रनाथ टैगोर ने लॉर्ड कर्जन (जिसने 1905 में बंगाल को विभाजित करने की योजना बनाई थी) की सरकार के लिए एक आक्रोशित कर देने वाला गीत लिखा। इस गीत ने रोष और दृढ़ संकल्प दोनों को व्यक्त किया। उन्होंने इसका भी संकेत दिया कि उपनिवेश एक दमनकारी औपनिवेशिक सरकार के सत्ता के नशे में तय किए गए निर्णयों का सामना करने के लिए तैयार थे।

स्वदेशी आंदोलन (1905)

- अगस्त 1905 में, कलकत्ता टाउन हॉल असेंबली में एक बहिष्कार प्रस्ताव पारित किया गया और स्वदेशी आंदोलन आधिकारिक तौर पर शुरू किया गया।

बाल गंगाधर तिलक

- स्वधर्म के अभ्यास के लिए स्वराज या स्वशासन आवश्यक है। स्वराज के बिना कोई सामाजिक सुधार नहीं हो सकता, कोई औद्योगिक प्रगति नहीं हो सकती, कोई उपयोगी शिक्षा नहीं हो सकती और राष्ट्रीय जीवन की पूर्ति नहीं हो सकती। हम यही चाहते हैं, इसीलिए भगवान ने हमें दुनिया में भेजा है कि हम उसे पूरा करें।

पृष्ठभूमि और आंदोलन के दौरान किए गए कार्य

- **विभाजन विरोधी अभियान:** स्वदेशी आंदोलन विभाजन विरोधी अभियान से उभरा, जो बंगाल को विभाजित करने के ब्रिटिश फैसले के जवाब में शुरू किया गया था।
- **स्वदेशी आंदोलन:** स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को और मजबूती प्रदान की ।
- **शोक दिवस:** विभाजन 16 अक्टूबर, 1905 को हुआ और इसे शोक दिवस के रूप में मनाया गया।
- **हिंदू मुस्लिम एकता**: हिंदू-मुस्लिम सद्भाव के लिये राखी बांधने की शुरुआत की गई। लोगों ने पवित्र नदियों में स्नान किया।
- **राष्ट्रगान और गीत**: लोगों ने बंदे मातरम गीत गाया, जो राष्ट्रगान बना। टैगोर ने इस आयोजन के लिए "आमार सोनार बांग्ला" की रचना की, जो 1971 में बांग्लादेश का राष्ट्रगान बन गया।
- **तिरंगा झंडा:** बंगाल में स्वदेशी आंदोलन के दौरान एक तिरंगा झंडा (लाल, हरा और पीला) बनाया गया था। इसमें ब्रिटिश भारत के आठ प्रांतों का प्रतिनिधित्व करने के लिए आठ कमल और हिंदुओं और मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक चंद्रमा शामिल था।
- **प्राचीन गौरव:** भारत की उपलब्धियों को खोजने के लिए भारतीयों ने प्राचीन इतिहास को देखना शुरु किया जिसकी अपनी समृद्ध संस्कृति थी। उन्होंने उस अद्भुत समय के बारे में लिखा जब कला और वास्तुकला, विज्ञान और गणित, धर्म और संस्कृति, कानून और दर्शन, शिल्प और व्यापार फले-फूले।
- **आयात पर प्रतिबंध:** आंदोलन के दौरान कई बार विदेशी वस्त्रों की मांग गिर गई। मैनचेस्टर कपड़े और लिवरपूल नमक के बहिष्कार की व्यापक रूप से वकालत की गई।
- **स्वयंसेवकों का दल:** चरमपंथियों ने स्वयंसेवकों के एक दल या "समितियों" का भी आयोजन किया। बंगाल में, अश्विनी कुमार दत्त की स्वदेशी बांधव समिति इसका उदाहरण है। इसने राजनीतिक चेतना के विकास में सहायता की।

तथ्य-वार

- **आयातित कपास के सामान की मात्रा में गिरावट:** अगस्त 1905 और सितंबर 1906 के बीच, कपास में 44 प्रतिशत, नमक में 11 प्रतिशत, सिगरेट में 55 प्रतिशत और जूते में 68 प्रतिशत में गिरावट आयी ।
- **स्वदेशी उत्थान से अधिक:** बहिस्कार आंदोलन, यूरोपीय उत्पादों को खारिज करने वाले 'देशीय उत्थान' से कहीं अधिक था।

आंदोलन का नेतृत्व

- **नेतृत्व:** नरमपंथियों, विशेष रूप से सुरेंद्रनाथ बनर्जी, कृष्ण कुमार मित्रा और पीसी रे ने प्रारंभिक नेतृत्व प्रदान किया। आंदोलन के दौरान नरमपंथी और उग्रवादी दोनों ने मिलकर काम किया।
- **पंजाब:** पंजाब में आंदोलन का नेतृत्व अजीत सिंह और लाजपत राय ने किया था।
- **दिल्ली:** दिल्ली में सैयद हैदर रजा ने सत्ता संभाली।
- **मद्रास:** चिदंबरम पिल्लई ने मद्रास प्रेसीडेंसी में आंदोलन का नेतृत्व किया, जिसे बिपिन चंद्र पाल के लंबे व्याख्यान दौरे से और ऊर्जा मिली।
- **बंबई प्रेसीडेंसी:** जी.के. गोखले और बी.जी. तिलक

स्वदेशी आंदोलन और विभाजित कांग्रेस

- कलकत्ता अधिवेशन में संकल्प विभाजन से पूर्व दादा भाई नौरोजी के कलकत्ता अधिवेशन में चार प्रस्तावों पर मतदान हुआ- बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा, स्वदेशी एवं विभाजन की निंदा ।
- **संकल्प पर विवाद**: इन प्रस्तावों को बरकरार रखा जाना चाहिए या अस्वीकार, यह मुद्दा कांग्रेस में विवाद का एक प्रमुख स्रोत बन गया।
- **नरमपंथी आंदोलन को सीमित रखना चाहते थे:** नरमपंथियों के नेतृत्व वाले एक गुट ने आंदोलन के दायरे को सीमित करने की मांग की।
- **अखिल भारतीय आंदोलन:** चरमपंथी इसे एक व्यापक लड़ाई के रूप में एक अखिल भारतीय आंदोलन बनाना चाहते थे।
- **विभाजन की राजनीति और स्वराज से परे:** इसके अलावा, चरमपंथी विभाजन की राजनीति से अलग जाना चाहते थे और पूर्ण स्वराज को अपनाना उनकी आखिरी लड़ाई थी, जबकि नरमपंथियों का मानना था कि देश अभी तक ऐसी मांगों और जन आंदोलन के लिए तैयार नहीं है।

स्वदेशी आंदोलन की सफलता

- **प्रमुख राजनीतिक विचारधाराओं के लिए उत्प्रेरक:** स्वदेशी आंदोलन ने भविष्य की सभी प्रमुख राजनीतिक प्रवृत्तियों को जन्म दिया, जिसमें आक्रामक राष्ट्रवाद, समाजवाद आदि शामिल हैं।
- **जन भागीदारी:** पहली बार व्यापक भागीदारी सामने दिखी।
- **श्रम भागीदारी**: कारखानों में हडताल करके श्रमिक इस आन्दोलन में शामिल हुए।
- **महिलाओं और छात्रों की भागीदारी:** पहली बार काफी संख्या में महिलाओं और छात्रों ने भाग लिया।
- **जनता के लिए राजनीतिक जागरण:** यह देश की जनता का पहला राजनीतिक जागरण था।
- **स्वदेशी शिक्षा-** अरबिंदो बंगाल नेशनल कॉलेज के प्राचार्य थे। 1906 में राष्ट्रीय शिक्षा परिषद की स्थापना की गई।
- **सांस्कृतिक आन्दोलन:** इस आन्दोलन द्वारा सांस्कृतिक आन्दोलन भी प्रारम्भ किये गये। रजनीकांत सेन, मुकुंद दास और द्विजेद्रलाल रे जैसे कई प्रमुख लेखकों और कवियों ने देशभक्ति की गीतों की रचना की।
- राष्ट्रीय पहचान के प्रतीक रवींद्रनाथ टैगोर ने उस समय **'आमार सोनार बांग्ला'** की रचना की, जो बांग्लादेश का राष्ट्रगान बना।
- **वैज्ञानिक सोच**: पी.सी. रे और जगदीश चंद्र बसु ने विज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आचार्य पी. सी. रे द्वारा स्थापित बंगाल केमिकल फैक्ट्री एक सफल सरल व्यवसाय का एक शानदार उदाहरण था। इन सभी ने बंगाल पुनर्जागरण में योगदान दिया।
- **उग्रवादी राष्ट्रवाद का उदय**: उग्रवादी राष्ट्रवादियों ने नए विचारों का प्रस्ताव रखा, और प्रचार के नए रूप विकसित किये।

विफलता के कारण

- **सूरत विभाजन:** कांग्रेस में असंतोष फैल चुका था, और 1907 में इसके टूटने (सूरत विभाजन) से नेतृत्व कमजोर हो गया।
- **सरकारी दमन:** 1908 में, तिलक को छह साल की कैद हुई, और अश्विनी कुमार दत्त और अन्य को निर्वासित कर दिया गया।
- **नेतृत्व का निर्वात:** बिपिन चंद्र पाल और अरबिंदो घोष दोनों ने राजनीति से सन्यास ले लिया जिससे शून्यता उत्पन्न हुई।
- **स्थिरता का अभाव:** स्थिरता की कमी के कारण आंदोलन में बाधा उत्पन्न हुई।
- **बहिष्कार के आर्थिक प्रभाव:** सीमित घरेलू आपूर्ति और आर्थिक प्रभाव के कारण, आम लोग अब आयातित वस्तुओं का बहिष्कार जारी नहीं रख सकते थे। एक और चिंता नौकरी छूटने की भी थी।
- **सरकार की कठोर प्रतिक्रिया :** सरकार ने कठोर प्रतिक्रिया दी, और छात्रों को निष्कासित कर दिया गया, अन्य को निकाल दिया गया और गिरफ्तारियां की गई।

स्वदेशी आंदोलन का विश्लेषण/ Analysis of the Swadeshi Movement

स्वदेशी आंदोलन का महत्व

- **व्यापक जुड़ाव:** स्वदेशी और बहिष्कार अभियान भारत के पहले बीसवीं सदी के आंदोलन थे जिन्होंने आधुनिक राष्ट्रवादी राजनीति में व्यापक जुड़ाव को प्रोत्साहित किया।
- **महिलाओं की भागीदारी:** पहली बार, विदेशी वस्तुओं को बेचने वाली दुकानों के खिलाफ जुलूस और धरना में शामिल होने के लिए महिलाएं अपने घरों से बाहर निकलीं।
- **आईएनसी की प्रकृति को बदल दिया:** स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलनों ने भी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) की प्रकृति को ज्यादातर नरमपंथियों द्वारा संचालित प्रमुख एजेंडे में स्थानांतरित कर दिया, जिसे अब चरमपंथियों द्वारा परिभाषित किया जा रहा था, जिन्होंने कांग्रेस के 1906 के कलकत्ता सत्र में स्वराज या स्वशासन के लिए आह्वान किया था।
- **निष्क्रिय प्रतिरोध के आदर्श उभरे:** असहयोग और निष्क्रिय प्रतिरोध के आदर्श, जिन्हें महात्मा गांधी ने कई वर्षों बाद प्रभावी रूप से इस्तेमाल किया, बीसवीं सदी की शुरुआत में स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलनों की शुरुआत हुई।

स्वदेशी आंदोलन का प्रभाव

- **स्वदेशी वस्तुओं को पुनर्जीवित किया:** आंदोलन के परिणामस्वरूप स्वदेशी वस्तुओं को पुनर्जीवित किया गया।
- **घरेलू वस्तुओं की मांग:** विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार से घरेलू वस्तुओं की मांग बढ़ी। बॉम्बे और अहमदाबाद के मिल मालिक आंदोलन की मदद के लिए आगे आए।

- **मिल मालिकों के लिए अवसर**: बंगाल में बहिष्कार आंदोलन ने भारत की कपास मिलों को एक प्रेरक शक्ति और ऊर्जा प्रदान की और मिल मालिकों ने अवसर का लाभ उठाया।
- **बंगाली भावुकता:** इसने उस समय शिकायत की कि बॉम्बे मिल मालिक "बंगाली भावुकता" या किसी भी कीमत पर स्वदेशी कपड़ा खरीदने की प्रथा से बहुत पैसा कमा रहे थे।
- **बुनाई उद्योग फला-फूला:** बंगाल में बुनाई उद्योग तब तक फलता-फूलता रहा जब तक कि 18वीं शताब्दी में अंग्रेजों ने इस क्षेत्र पर अपना प्रभुत्व स्थापित नहीं कर लिया।

स्वदेशी आंदोलन की आलोचना

- **अखिल भारतीय भागीदारी की कमी:** दक्षिणी राज्य ज्यादातर आंदोलन से अप्रभावित थे।
- **किसान वर्ग अप्रभावित:** किसान वर्ग भी अप्रभावित रहा और इस प्रकार मध्यवर्गीय आंदोलन के रूप में इसकी अक्सर आलोचना की जाती है।
- **मुस्लिम भागीदारी का अभाव :** अधिकांश मुसलमानों ने भाग नहीं लिया, या उनकी भागीदारी सीमित थी। अंत में 1906 में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई।
- **सांप्रदायिक कोण:** जब हिंदुओं ने अतीत को आदर्श बनाया तो अन्य समुदायों के सदस्यों ने खुद को अकेला महसूस किया। मुस्लिम लीग (1906)
- अखिल भारतीय मुस्लिम लीग (मुस्लिम लीग के रूप में भी जाना जाता है), 1906 में ब्रिटिश भारत में स्थापित एक राजनीतिक दल था। इसे भारतीय मुसलमानों के हितों को साधने के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के राजनीतिक विकल्प के रूप में स्थापित किया गया था।

अरुण्डेल कमेटी (1906 ई०)

- तत्कालीन वायसराय मिण्टो II ने राजनीतिक सुधारों के विषय में सलाह देने के लिए अगस्त, 1906 ई० में **'अरुण्डेल कमेटी'** का गठन किया।
- इस कमेटी ने विभाजित बंगाल को पुनः संयुक्त करने की आवश्यकता पर बल दिया। इसके फलस्वरूप ब्रिटिश सरकार ने विवश होकर बंगाल विभाजन को 1911 ई० में रद्द कर दिया।

सूरत विभाजन (1907) और इसका प्रभाव

- 1906 में दादाभाई नौरोजी के नए अध्यक्ष के रूप में चयन के साथ, एक आसन्न टकराव टाला गया; दोनों पक्षों को शांत किया गया क्योंकि दोनों ही उनका सम्मान करते थे। असहमति को दूर करने के लिए नौरोजी ने इस अधिवेशन में 'स्वराज' की अवधारणा प्रस्तुत की और इसे कांग्रेस का उद्देश्य घोषित किया गया।

सूरत विभाजन के कारण

तत्काल कारण

- **बंगाल का विभाजन:** कर्जन के शासनकाल के दौरान, बंगाल का विभाजन हुआ, और यह भारतीय मुक्ति संग्राम के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण क्षणों में से एक बन गया।
- **अन्य घटनाओं:** जैसे म्यूनिसिपल एक्ट और दिल्ली दरबार, ने जनता के आक्रोश को हवा दी।
- **शुरुआती उग्रवादी राष्ट्रवादियों की विफलता:** वे आंदोलन को एक स्पष्ट दिशा देने में विफल रहे। वे आम जनता तक पहुंचने में भी विफल रहे।
- **असहमति:** चार प्रस्तावों के जारी रहने और देश के बाकी हिस्सों में आंदोलन के विस्तार को लेकर असहमति पैदा हुई।
    - 1905 ई० में कांग्रेस का अधिवेशन बनारस में गोखले की अध्यक्षता में हुआ। इसमें बंग - भंग की आलोचना की गयी और स्वदेशी तथा बहिष्कार आन्दोलन का समर्थन किया गया। इस अधिवेशन में प्रथम मतभेद 'प्रिंस ऑफ वेल्स' के स्वागत प्रस्ताव पर हुआ। नरम पंथी 'प्रिंस ऑफ वेल्स' का स्वागत करना चाहते थे, परन्तु राष्ट्रवादियों ने इसका विरोध किया। फिर भी प्रस्ताव पारित हो गया।
- **नरमपंथियों की विफलता:** जब नरमपंथी महत्वपूर्ण पैठ बनाने में विफल रहे, तो उग्रवादी उत्तेजित हो गए।
- **अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव:** चरमपंथी भी भारत के बाहर दो घटनाओं से प्रेरित थे, अर्थात् जापान द्वारा रूस की हार और इथियोपियाई लोगों द्वारा इतालवी सेना की हार, दोनों ने यूरोपीय शक्ति की छवि को चकनाचूर कर दिया।
- **मॉर्ले की निष्क्रियता:** चरमपंथी एक नए राज्य सचिव, मॉर्ले के नामांकन के बारे में आशावादी थे, लेकिन उन्होंने विभाजन के प्रश्न के बारे में कुछ नहीं किया, जिससे चरमपंथी नाराज हो गए।

- **अध्यक्ष पद को लेकर विवाद**: दोनों के बीच दरार 1906 ई० के कांग्रेस अधिवेशन में और बढ़ गयी। तिलक का सुझाव था कि लाला लाजपत राय को कांग्रेस अध्यक्ष बनाया जाय। परन्तु राष्ट्रवादियों को कांग्रेस के अध्यक्ष पद से दूर रखने के लिये नरमपंथियों ने वयोवृद्ध नेता दादाभाई नौराजी को अध्यक्ष बनाया। चरमपंथी तिलक या लाला लाजपत राय को अध्यक्ष बनाना चाहते थे, लेकिन नरमपंथी चाहते थे कि 1907 के सत्र में रास बिहारी बोस अध्यक्ष बनें।

प्रभाव:

- **दो दलों में विभाजन:** सूरत में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) के विभाजन के परिणामस्वरूप पार्टी को दो दलों, उग्रवादियों और नरमपंथियों में विभाजित किया गया।
- **कमजोर कांग्रेस:** इस विद्वता ने कांग्रेस को कमजोर कर दिया और भारतीय स्वतंत्रता के लिए लड़ने की उसकी क्षमता में बाधा उत्पन्न की।
- **चरमपंथियों की प्रमुखता:** चरमपंथियों को प्रमुखता मिल रही थी और अंततः कांग्रेस को स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए अधिक उग्रवादी और चरम दृष्टिकोण की ओर ले जा रही थे।
- **सरकार के रवैये में बदलाव:** इसने उदारवादी राष्ट्रवादियों के प्रति सरकार के रवैये और नीति में बदलाव का भी संकेत दिया।
- **सुधारों के लिए प्रोत्साहन :** सूरत का विभाजन 1909 के मिंटो-मॉर्ले सुधार के लिए प्रेरणा स्रोत था।
- उदारवादी और अतिवादी राष्ट्र के मस्तिष्क और हृदय थे। सूरत विभाजन को राष्ट्रीय आपदा कहा जाता है। कांग्रेस से चरमपंथियों के जाने का नरमपंथियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा और राष्ट्रीय आंदोलन कुछ समय के लिए रुक गया । उग्रवादियों की विचारधारा और क्रांतिकारी प्रयासों ने लोगों को अंग्रेजों का सामना करने की नई आशा और शक्ति प्रदान की। आठ साल के अलगाव के बाद, 1916 में नरमपंथी और उग्रवादी लखनऊ में फिर से मिले।

उग्रवादी और क्रांतिकारी राष्ट्रवाद का उदय

- अतिवादियों या उग्रवादी राष्ट्रवाद के विकास के कारण उल्लेखनीय रूप से भारत में राष्ट्रवाद के उदय के कारणों के समान हैं। तिलक, अश्विनी कुमार दत्त, और अन्य नेता उग्रवादी राष्ट्रवाद को उसके आरंभ से ही फैलाने में शामिल रहे हैं। स्वदेशी आंदोलन का नेतृत्व नरमपंथियों से उग्रवादियों जैसे बिपिन चंद्र पाल, अरबिंदो घोष, तिलक और अन्य में स्थानांतरित हो गया।

उद्भव के पीछे कारण

- **मध्यम विफलता**: राजनीतिक रूप से जागरूक राष्ट्रवादियों ने सोचा कि ब्रिटिश शोषण जारी रहेगा क्योंकि उचित मांगों का ब्रिटिश नीतियों पर बहुत कम प्रभाव था। नरमपंथियों का मानना था कि विदेशी शासन को बदला जा सकता है, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।
- **कर्जन का कांग्रेस विरोधी रुख:** कर्जन के कांग्रेस विरोधी रुख ने कई लोगों को आश्वस्त किया कि कांग्रेस एक बेकार संगठन बनकर रह जाएगी।
- **कांग्रेस की उन्नत स्थिति:** कांग्रेस को काफी हद तक एक जमींदार और उच्च-मध्यम वर्ग के अभिजात्य दल की स्थिति तक पहुँचाया गया था। बंकिम चंद्र जैसे कवियों ने कांग्रेस अधिवेशन को "तीन दिवसीय वार्षिक शो" के रूप में वर्णित किया।
- **आईसीए 1892 की विफलता :** 1892 का भारतीय परिषद अधिनियम एक बहुत बड़ी विफलता थी जिसने नरमपंथियों की रणनीति को सवालों के घेरे में ला दिया।
- **अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव:** जापान ने अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों में रूस को हराया। इथियोपियाई लोगों द्वारा इटली की सेना की हार ने पश्चिमी श्रेष्ठता की धारणा को ध्वस्त कर दिया।
- **गंभीर दमन:** 1907 में राष्ट्रवादी नेताओं लाला लाजपत राय और अजीत सिंह का निर्वासन। 1908 में के.के. मित्रा और अश्विनी कुमार दत्त को निर्वासित किया गया। 1908 में तिलक को 6 साल जेल की सजा सुनाई गई थी।
- **प्रतिबंधित स्वतंत्रता:** आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम ने पत्रकारिता की स्वतंत्रता पर गंभीर रूप से अंकुश लगाया। मुकदमे के बिना निर्वासन: 1897 में नाटू ब्रदर्स की गिरफ्तारी और निर्वासन, यहां तक कि उनके खिलाफ आरोपों को सार्वजनिक किए बिना, जनता को नाराज कर दिया।
- **तिलक को कैद**: तिलक और अन्य अखबारों के संपादकों को उसी वर्ष सार्वजनिक आक्रोश भड़काने के लिए जेल की सजा सुनाई गई थी।
- **राजनीतिक चेतना:** राजनीतिक ज्ञान के प्रसार ने भारतीयों को यह एहसास कराया कि ब्रिटिश शासन भारत के लिए लाभदायक नहीं था, और इसके परिणामस्वरूप व्हाइट मैन की बर्डन थीसिस को भी खारिज कर दिया गया।

मॉर्ले-मिंटो रिफॉर्म्स (1909) और प्रतिक्रियाएँ

- मॉर्ले-**मिंटो** सुधार 1909 में किए गए थे, जब लॉर्ड मिंटो भारत के गवर्नर जनरल थे।

लॉर्ड मॉर्ले

- सुधार भले ही राज को नहीं बचा सकते, लेकिन अगर वे नहीं बचाते हैं, तो कोई और नहीं बचा पाएगा।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- **नेताओं की मांग**: अक्टूबर 1906 में, आगा खान के नेतृत्व में शिमला प्रतिनिधिमंडल ने लॉर्ड मिंटो से मुलाकात की और मुसलमानों के लिए अलग निर्वाचक मंडल के साथ-साथ ब्रिटिश साम्राज्य को बचाने में उनके "योगदान " के बदले उनकी संख्या से अधिक प्रतिनिधित्व की मांग की।
- **मुस्लिम लीग:** उसी समूह ने तेजी से मुस्लिम लीग पर कब्जा कर लिया, जिसकी स्थापना दिसंबर 1906 में ढाका के नवाब सलीमुल्लाह, नवाब मोहसिन- -उल-मुल्क और वकार-उल-मुल्क ने की थी।
- **साम्राज्यवादी निष्ठा:** मुस्लिम लीग ने मुस्लिम अभिजात वर्ग को कांग्रेस से दूर रखते हुए साम्राज्यवादी निष्ठा को बढ़ावा देने का प्रयास किया।
- **कार्रवाई पर्याप्त नहीं:** भारत के कंजर्वेटिव वायसराय, मिंटो और भारत के लिबरल सेक्रेटरी ऑफ स्टेट, जॉन मॉर्ले, दोनों इस बात पर सहमत थे कि लॉर्ड कर्जन के विभाजन के बाद बंगाल में विद्रोह पर कार्रवाई करना महत्वपूर्ण था, लेकिन ब्रिटिश राज की सुरक्षा बहाल करने के लिए पर्याप्त नहीं था।
- **आशा जगाना:** उनका मानना था कि भारतीय उच्च वर्गों और आबादी के बढ़ते पश्चिमीकृत हिस्से में आशा जगाने के लिए एक कठोर कदम की आवश्यकता थी ।

सकारात्मक विशेषताएं

- **स्वशासन का तत्व:** इसमें अप्रत्यक्ष चुनाव की अनुमति देकर स्वशासन का एक तत्व शामिल किया गया।
- **बजट संबंधी वोटिंग:** इसमें बजट के एक हिस्से पर वोट देने की क्षमता शामिल थी।
- **प्रश्न करने का अधिकार:** पूछताछ के संदर्भ में अधिक अधिकार दिए गए थे।
- **प्रतिनिधित्व:** अधिक प्रतिनिधित्व था।

नकारात्मक विशेषताएं

- **पृथक निर्वाचक मंडल:** सुधारों में, अन्य बातों के अलावा, मुसलमानों के लिए एक पृथक निर्वाचक मंडल शामिल था।
- **साम्प्रदायिकता को बढ़ावा:** इसने साम्प्रदायिकता के बीज बोए और भारत की एकता की ऐतिहासिक प्रगति में बाधा उत्पन्न की।
- **लॉर्ड मिंटो को "सांप्रदायिक मतदाताओं का पिता" कहा जाता है।**
- **दुर्दशा से ध्यान भटकाना:** इसने भारतीयों का ध्यान आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों से भी हटा दिया।
- **कोई वास्तविक शक्ति नहीं:** विस्तारित विधान परिषदें, लेकिन सदस्यों को अभी भी अप्रत्यक्ष रूप से चुना गया था और परिषदों के पास बजट बहस जैसी कोई वास्तविक शक्तियां नहीं थीं, हालांकि अब उन्हें प्रस्ताव पारित करने की अनुमति थी, आदि।
- **भारतीयों का सीमित संघ:** वायसराय और राज्यपालों की कार्यकारी परिषद के साथ। सत्येंद्र प्रसाद सिन्हा (एसपी सिन्हा)
- वायसराय की कार्यकारी परिषद के कानूनी सदस्य के रूप में नियुक्त होने वाले पहले भारतीय थे। (संख्या एक तक सीमित थी)।
- **सीमित मताधिकार**: मताधिकार पहली बार पेश किया गया था - यह प्रतिबंधित था, क्योंकि महिलाओं के पास मतदान का अधिकार नहीं था, और यह अन्य तरीकों से भी सिमित था।

मूल्यांकन

- **राजनीतिक दुविधा का कोई समाधान नहीं:** 1909 के परिवर्तनों ने भारतीय राजनीतिक दुविधा का कोई समाधान नहीं किया।
- **कोई स्वशासन नहीं:** लॉर्ड मॉर्ले ने स्पष्ट रूप से कहा कि औपनिवेशिक स्वशासन भारत के लिए अनुपयुक्त था, और वह भारत में संसदीय या जवाबदेह प्रशासन की स्थापना के विरोध में थे।
- **विभाजन:** वास्तव में, पृथक निर्वाचन के अलोकप्रिय उपकरण का इस्तेमाल राष्ट्रवादी ताकतों को **विभाजन:** विभाजित करने के लिए किया गया था, नरमपंथियों को उलझाकर और भारतीयों के बीच एकजुटता के उद्भव में बाधा डालने के लिए किया गया।
- **अप्रत्यक्ष चुनाव:** इसके अलावा, चुनाव प्रक्रिया बहुत अप्रत्यक्ष थी।
- **कोई जवाबदेही नहीं:** संसदीय रूप स्थापित किए गए थे, परन्तु इसकी जवाबदेही नहीं थी, जिसके परिणामस्वरूप प्रशासन की आलोचना होती थी ।

- **राष्ट्रवादी एकता के उभार को दबाना:** इसके बावजूद, पुनर्गठित परिषद के पास बहुत कम शक्ति थी। वास्तव में, परिवर्तनों का लक्ष्य उदारवादी राष्ट्रवादियों को भ्रमित करना और राष्ट्रवादी एकता के उदय को रोकना था।
- 1909 के सुधारों ने देश के नागरिकों को एक झलक मात्र प्रदान की। लोग स्व-सरकार चाहते थे, लेकिन उन्हें जो कुछ मिला वह "परोपकारी निरंकुशता" था।

दिल्ली दरवार (1911 ई०)

- दिसम्बर, 1911 ई० में विटिश सम्राट् जार्ज पंचम् का दिल्ली आगमन हुआ। 12 दिसम्बर, 1911 को दिल्ली में एक राजदरबार का आयोजन हुआ। यहाँ पर वायसराय हार्डिंग II ने सम्राट् की ओर से घोषणा की "बंगाल विभाजन रद्द किया जाएगा और भारत की राजधानी कलकत्ता से हटाकर दिल्ली बनायी जायेगी।" इस प्रकार दिल्ली 1912 ई० में कलकत्ता के स्थान पर भारत की राजधानी बन गयी।

प्रथम विश्व युद्ध (1914-1919), इसका प्रभाव और प्रतिक्रियाएँ

- प्रथम विश्व युद्ध (1914-1919) में, ब्रिटेन जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी और तुर्की के खिलाफ फ्रांस, रूस, संयुक्त राज्य अमेरिका, इटली और जापान के साथ शामिल हो गया।

प्रथम विश्वयुद्ध की प्रतिक्रिया

- **चरमपंथी** :- **दिग्भ्रमित धारणा का समर्थन**: तिलक ने युद्ध के प्रयास का समर्थन इस भ्रामक धारणा में किया कि ब्रिटेन भारत की निष्ठा को स्वशासन के रूप में कृतज्ञतापूर्वक पुरस्कृत करेगा।
- **नरमपंथी:- समर्थन और पारस्परिकता की अपेक्षा:** दूसरी ओर, नरमपंथियों ने सरकार के लिए अपना समर्थन व्यक्त किया, यह उम्मीद करते हुए कि यह उन पर ढील देकर पारस्परिकता करेगा।
- **क्रांतिकारी :- युद्ध छेड़ने का अवसर:** क्रांतिकारी ब्रिटिश शासन के खिलाफ युद्ध छेड़ने और देश को आजाद कराने के अवसर का लाभ उठाने के लिए दृढ़ थे।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव

- **भारत का राजकोषीय और मानवीय नुकसान:** युद्ध में उपयोग के लिए भारत से लाखों रुपये स्थानांतरित किए गए, और भारतीय सैनिक यूरोप में लड़ते हुए मारे गए।
- **मजदूर वर्ग:** चूंकि यूरोप की सेवा के लिए नए उद्योगों का निर्माण किया गया था, मध्य वर्ग के पास काम के अधिक विकल्प थे। मजदूरी कम थी, और काम करने की स्थिति खराब थी। श्रमिकों के पास सौदेबाजी की शक्ति सीमित थी क्योंकि ट्रेड यूनियनवाद को अभी लोकप्रियता हासिल करनी थी।
- कृ**षि:** भुखमरी के संकट के बाद, प्रथम विश्व युद्ध के कारण दुनिया भर के बाजारों में कृषि वस्तुओं की कीमतों में गिरावट आई। इससे किसान और कर्ज में डूब गए।
- **राजनीति और राष्ट्रवाद**: राष्ट्रवादी नेताओं ने इसे आगे के अधिकारों की बातचीत के लिए एक अवसर के रूप में माना, और इस उम्मीद में सशर्त समर्थन दिया गया कि ब्रिटेन युद्ध के बाद भारतीयों के पक्ष में राजनीतिक कदम उठाएगा।
- **आर्थिक दुर्दशा:** युद्ध के बाद आर्थिक स्थिति खराब हो गई। युद्ध के दौरान फलने-फूलने वाले उद्योग को अब बंद होने और उत्पादन में गिरावट का सामना करना पड़ा।
- **नकारात्मक पारस्परिकता:** युद्ध के दौरान किए गए वादों की अवहेलना की गई और राष्ट्रवाद को आगे बढ़ाया गया। जबकि उपनिवेशों को लोकतंत्र का वादा किया गया था, बदले में उन्हें एक खराब सौदा मिला। पूर्व में पराजित राष्ट्रों के उपनिवेश युद्ध के पुरस्कार के रूप में विजेताओं के बीच बिखरे हुए थे।
- **असंतोष**: युद्ध के बाद, राष्ट्रीय नेता सरकार के कार्यों से असंतुष्ट थे। 1919 का भारत सरकार अधिनियम एक बहुत बड़ी विफलता थी।
- **क्रुद्ध मुसलमान:** सेवर्स की संधि के बाद तुर्क साम्राज्य के साथ किए गए बुरे बर्ताव ने मुस्लिम भावनाओं को जगाया और खिलाफत आंदोलन और असहयोग के लिए रास्ता तैयार किया।
- **अंकुरित ट्रेड यूनियन**: युद्ध के बाद, ट्रेड यूनियनवाद भी विकसित हुआ, 1920 में एनएम जोशी के नेतृत्व में AITUC की स्थापना के साथ प्रारंभिक प्रगति हुई।

गदर पार्टी और कामागाटामारू प्रकरण (1915)

पहला विश्वयुद्ध और गदर आंदोलन

- **अवसर:** विश्व युद्ध ने गदर क्रांतिकारियों को ब्रिटिश अधिपतियों का शोषण करने का अवसर भी प्रदान किया।

- **अप्रवासियों का उपयोग करना:** गदर नेताओं ने संयुक्त राज्य अमेरिका के पश्चिमी तट पर अप्रवासियों को भारत लौटने और सेना की मदद से सशस्त्र क्रांति शुरू करने के लिए प्रेरित किया। भारतीयों को वापस लौटने के लिए राजी करने हेतु कुछ नेताओं को सुदूर पूर्वी देशों में स्थानांतरित कर दिया गया।
- **सेना की भक्ति को परिवर्तित करने का प्रयास**: गदरियों ने पंजाब राज्य को काफी अलग पाया। किसी ने भी उनका समर्थन नहीं किया, और खालसा ने उन्हें "गिरे हुए सिख" भी कहा। मजबूत नेतृत्व के बिना, सेना की भक्ति को परिवर्तित करने के उनके भोले-भाले प्रयास विफल रहे।
- **क्रांति की ओर मुड़े:** अंततः मार्गदर्शन के लिए क्रांतिकारी नेताओं की ओर रुख किया लेकिन सरकार ने उनका दमन कर दिया और, क्रांति से पहले उनमें से अधिकांश को गिरफ्तार कर लिया गया था। सरकार की प्रतिक्रिया कठोर थी, और राजनीतिक नेताओं की एक पूरी पीढ़ी का सफाया कर दिया गया था।

कामागाटामारू प्रकरण

- **चिंगारी:** इस घटना का महत्व इस तथ्य से उपजा है कि इसने पंजाब में एक विस्फोटक परिदृश्य को जन्म दिया।
- **सिंगापुर से वैंकूवर**: कामागाटामारू **एक जहाज का नाम** था जो सिंगापुर से वैंकूवर तक 370 लोगों को ला रहा था, जिनमें ज्यादातर सिख और पंजाबी मुस्लिम अप्रवासी थे। दो महीने की कठिनाई और अनिश्चितता के बाद, उन्हें कनाडा के अधिकारियों द्वारा वापस भेज दिया गया था।
- **ब्रिटिश प्रभाव:** यह व्यापक रूप से माना जाता था कि कनाडा के अधिकारियों को ब्रिटिश प्रशासन द्वारा प्रभावित किया गया था। सितंबर 1914 में, जहाज ने आखिरकार कलकत्ता में लंगर डाला। बंदियों ने पंजाब जाने वाली ट्रेन में चढ़ने से इनकार कर दिया। कलकत्ता के पास बजबज में पुलिस के साथ हुई झड़प में 22 लोग मारे गए थे।
- **क्रोधित ग़दर नेता:** ग़दर नेता इससे क्रोधित हुए, और प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत के साथ, उन्होंने भारत में ब्रिटिश नियंत्रण को उखाड़ फेंकने के लिए एक हिंसक हमले का संकल्प लिया। उन्होंने सेनानियों को भारत की यात्रा करने के लिए प्रोत्साहित किया।

गदर पार्टी और आंदोलन (1915)

- **ग़दर आंदोलन :**ग़दर पार्टी के क्रांतिकारी नेताओं द्वारा ब्रिटिश भारत पर हिंसक हमला करने का एक प्रयास था। प्रथम विश्व युद्ध के प्रकोप और कामागाटा मारू की घटना ने गदर आंदोलन को जन्म दिया। भारत भर में कई स्थलों में हिंसक विद्रोह की तिथि 21 फरवरी, 1915 निर्धारित की गई थी।
- **क्रान्तिकारी:** प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान क्रान्तिकारीवाद में भी वृद्धि हुई। इनमें से सबसे उल्लेखनीय ग़दर पार्टी थी, जिसकी स्थापना सैन फ्रांसिस्को में लाला हरदयाल, सोहन सिंह बखना, मोहम्मद बरकतुल्लाह और अन्य ने की थी।
- **विस्तारित प्रभाव:** यह एक धर्मनिरपेक्ष पार्टी थी, और इसका प्रभाव अन्य एशियाई देशों तक फैला हुआ था जहाँ भारतीय रहते थे।
- **असफल प्रयास:** प्रथम विश्व युद्ध छिड़ते ही गदर पार्टी ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ लड़ाई में शामिल हो गई। 21 फरवरी 1915 को पंजाब में शुरू होने के लिए भारत में विद्रोह के दिन के रूप में नामित किया गया था। हालाँकि, योजना को ब्रिटिश सीआईडी द्वारा विफल कर दिया गया था, और ग़दरियों को पकड़ लिया गया, मुकदमा चलाया गया और कई को फांसी दे दी गई।
- **ब्रिटिश प्रतिक्रिया:** अंग्रेजों ने दमनकारी उपायों के एक जबरदस्त शस्त्रागार के साथ युद्ध के खतरे का जवाब दिया, 1857 के बाद से सबसे व्यापक, भारत की रक्षा अधिनियम के नेतृत्व में, जो मार्च 1915 में विशेष रूप से ग़दर आंदोलन को कुचलने के लिए पारित किया गया था।

सफलता:

- **वैचारिक सफलता:** ग़दर आंदोलन की सफलता विचारधारा के क्षेत्र में थी।
- **राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया:** इसने पूरी तरह धर्मनिरपेक्ष होते हुए राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया।

सीमाएं:

- **कम करके आंका गया:** इस आन्दोलन का मुख्य दोष यह था कि उन्होंने किसी भी हिंसक विद्रोह से पहले - संगठनात्मक, बौद्धिक, वित्तीय, और इसी तरह - हर स्तर पर आवश्यक तैयारी को पूरी तरह से कम करके आंका।
- **असंगठित:** अन्य महत्वपूर्ण मुद्दा एक संगठनात्मक ढांचे की कमी थी; ग़दर आंदोलन उग्रवादियों के जोश से अधिक कायम रहा ना कि उनकी खुद को संगठित करने की क्षमता से।
- **लंबे समय तक चलने वाले नेतृत्व का अभाव :** ग़दर आंदोलन में एक मजबूत और दीर्घकालिक नेतृत्व का भी अभाव था जो आंदोलन के विभिन्न हिस्सों को एकजुट करने में सक्षम था।

- **नज़रअंदाज़ :** उन्होंने इस बात को नज़रअंदाज़ कर दिया कि कुछ हज़ार असंतुष्ट अप्रवासी भारतीयों को इकट्ठा करना, जो पहले से ही गोरे विदेशियों के हाथों नस्लीय उत्पीड़न के कारण भावनात्मक रूप से आरोपित थे, भारत में लाखों किसानों और सैनिकों को एक करने और प्रेरित करने से बहुत अलग कार्य था।
- हालाँकि, यह राजनीतिक और सैन्य मोर्चों पर बहुत कुछ हासिल करने में विफल रहा क्योंकि इसमें संगठित और निरंतर नेतृत्व की कमी थी, हर स्तर पर आवश्यक तैयारी की सीमा को कम करके आंका - संगठनात्मक, वैचारिक, वित्तीय और सामरिक रणनीतिक - और शायद लाला हरदयाल एक आयोजक के रूप में अनुपयुक्त थे।

लखनऊ पैक्ट (1916 ई.)

- **अध्यक्षता -**अम्बिकाचरण मजुमदार
- इसमें कांग्रेस के नरमपंथी और गरमपंथी दलों का सम्मिलत हुआ तथा मुस्लिम लीग और कांग्रेस में समझौता हुआ।
- प्रथम विश्व युद्ध के दौरान की ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीति ने मुसलमानों के मन में अंग्रेजों के प्रति कटुता भर दी थी।
- उदाहरण के लिए फारस के मुद्दे पर तथा तुर्की के यूरोपीय हिस्सों पर ब्रिटिश कब्जा इत्यादि।
- 1916 में लखनऊ में भी कांग्रेस और लीग के अधिवेशन साथ-साथ हुए।
- मुस्लिम लीग के अधिवेशन की अध्यक्षता मुहम्मद अली जिन्ना ने की।
- इसी समय कांग्रेस और लीग में राजनीतिक समझौता हुआ। जिसे लखनऊ पैक्ट भी कहते हैं।
- **तथ्य -**
    - इसके अनुसार कांग्रेस ने लीग और उसके सभापति मुहम्मद अली जिन्ना की अल्पसंख्यकों को उनकी जनसंख्या से अधिक अनुपात में व्यवस्थापिका-सभाओं में स्थान (Weightage) देने, साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व-प्रणाली को अपनाने और साम्प्रदायिक निषेधाधिकार (Communal Veto) अर्थात् यदि कोई प्रस्ताव किसी विशेष सम्प्रदाय पर प्रभाव डालता है तो उसे तब तक स्वीकार न किया जाये जब तक कि उस सम्प्रदाय की व्यवस्थापिका सभा के सदस्य उसे स्वीकार न कर लें, आदि मांगों को स्वीकार कर लिया।
    - इस प्रकार राष्ट्रीय आंदोलन का 1916 वाला वर्ष एकता के दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण रहा। कांग्रेस और लीग का समझौता एक दूषित परम्परा की शुरूआत थी। क्योंकि साम्प्रदायिक आधार पर जिस सुविधा के सिद्धान्त को कांग्रेस ने स्वीकार कर लिया था, अंततः देश का विभाजन भी इसी सुविधा के सिद्धान्त का ही परिणाम था।

होम रूल आन्दोलन

- होम रूल आंदोलन प्रथम विश्व युद्ध के लिए भारत की प्रतिक्रिया थी जो कम आक्रामक लेकिन अधिक प्रभावी थी। लोगों को पहले से ही भारी कराधान और मूल्य वृद्धि के कारण युद्धकालीन कठिनाइयों का बोझ महसूस हो रहा था, तिलक और एनी बेसेंट अभियान का नेतृत्व संभालने के लिए तैयार थे, जो काफी उत्साह के साथ शुरू हुआ था। संघ के अभियान ने घरेलू शासन के माध्यम से स्वशासन के संदेश को आम आदमी तक पहुँचाने का प्रयास किया।

आन्दोलन की पृष्ठभूमि

- **1909 के अधिनियम की निराशा:** 1909 के अधिनियम की निराशा और नरमपंथियों की प्रगति करने में विफलता के साथ, एक नए आंदोलन की नींव रखी गई।
- **तिलक की भूमिका:** 1914 में तिलक जेल से रिहा हुए, वे एक बड़ी भूमिका निभाने के लिए तैयार थे; हालाँकि, कांग्रेस का नेतृत्व नरमपंथियों के साथ था, जिससे उन्हें एक अलग संगठन बनाने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- **रूसी क्रांति का प्रभाव:** जबकि 1917 की रूसी क्रांति अभी भी कार्रवाई में थी, इसने एक अतिरिक्त धार दी।
- **लखनऊ समझौता:** दिसंबर 1915 में कांग्रेस के दोनों पक्षों में समझौता हो गया। कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने अगले साल ऐतिहासिक लखनऊ समझौता किया, जिसमें देश में प्रतिनिधि सरकार के लिए मिलकर काम करने का वादा किया गया था।

होम रूल लीग आंदोलन (सितंबर 1916)

- होमरूल आयरलैण्ड का शब्द है।
- सर्वप्रथम आयरलैण्ड में आयरिश नेता 'रेडमाण्ड' के नेतृत्व में 'होमरूल लीग' की स्थापना हुई थी।

- बाल गंगाधर तिलक और श्रीमती ऐनी बेसेन्ट ने आयरलैण्ड की तर्ज पर देश में राष्ट्रीय आन्दोलन को नया जीवन प्रदान करने, होमरूल आन्दोलन चलाने का निर्णय लिया।
- 23 अप्रैल , 1916 ई० को तिलक ने पूना में "होमरूल लीग" की स्थापना की और सितम्बर, 1916 ई० में ऐनी बेसेन्ट ने मद्रास में "अखिल भारतीय होमरूल लीग" को स्थापना की।

तिलक का होमरूल लीग-

- **स्थापना:** 28 अप्रैल, 1916 ई०
- **स्थान :** पूना प्रथम
- **अध्यक्ष :** जोसेफ बैपटिस्टा
- **सचिव-** एन० सी० केलकर तिलक
- **अन्य सदस्य -** जी० एस० खापर्डे, वो० एस० मुंजे एवं आर० पी० करंडीकर
- **प्रभाव क्षेत्र -** कर्नाटक, महाराष्ट्र (बम्बई को छोड़कर), मध्यप्रांत एवं बरार
- तिलक ने अपने पत्र 'मराठा' और 'केसरी' के माध्यम से अपने होमरूल की अवधारणा को स्पष्ट किया।
- इन्होंने पूरे देश में दौरा करके स्वराज के लिए जनमत तैयार करने का प्रयास किया और नारा दिया- "स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।"

ऐनी बेसेण्ट की 'आल इण्डिया होमरूल लीग'

- **स्थापना :** सितम्बर, 1916 ई०
- **स्थान :** मद्रास
- संस्थापक: ऐनी बेसेन्ट
- सचिव- जार्ज अरुण्डेल
- अन्य सदस्य - मोतीलाल नेहरू , सुब्रमण्यम अव्यर , तेज बहादुर सप्रू
- श्रीमती ऐनी बेसेण्ट आयरिश महिला थीं। इन्होंने ही मूलतः होमरूल लीग की स्थापना करने के सम्बन्ध में योजना बनायी।
- तिलक के क्षेत्रों को छोड़कर देश के बाकी सभी हिस्सों में होमरूल आन्दोलन को फैलाने का दायित्व ऐनी बेसेन्ट पर था।
- इन्होंने अपने होमरूल का प्रचार अपने दैनिक पत्र 'न्यू इण्डिया' (14 जुलाई, 1914 ई० से प्रकाशित) एवं साप्ताहिक पत्र 'कॉमनवील' (2 जनवरी, 1914 ई० से प्रकाशित) के माध्यम से किया जिसमें 'न्यू इण्डिया' का प्रमुख योगदान रहा। होमरूल लीग के सर्वाधिक कार्यालय मद्रास में थे।

आन्दोलन का उद्देश्य

- **अधिराज्य पद (डोमिनियन स्थिति):** 'डोमिनियन स्थिति का आनंद लेने के लिए, जैसा कि ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका और न्यूजीलैंड जैसे अन्य ब्रिटिश उपनिवेश करते हैं' ।
- **राजनीतिक शिक्षा को बढ़ावा देना:** स्वशासन के लिए समर्थन पैदा करने के लिए राजनीतिक शिक्षा और बहस को बढ़ावा देना।
- **भारतीयों को प्रेरित करें:** भारतीयों को सरकार के दमन के खिलाफ बोलने के लिए प्रेरित करना।
- ब्रिटिश सरकार पर दबाव भारतीय राजनीतिक प्रतिनिधित्व बढ़ाने के लिए ब्रिटिश सरकार पर दबाव डालना।
- **पुनर्जीवित राजनीतिक गतिविधि:** कांग्रेस पार्टी के सिद्धांतों का पालन करते हुए भारत में राजनीतिक गतिविधि को पुनर्जीवित करना।

पतन के पीछे कारण

- **नरमपंथियों को खुश करना:** बेसेंट की रिहाई के बाद, नरमपंथियों को खुश किया गया और गुस्सा शांत हो गया।
- **अगस्त घोषणा:** ब्रिटेन की संसद में, राज्य के नए सचिव मॉन्टेग्यू ने दावा किया कि भारतीयों को प्रशासन में अतिरिक्त भूमिकाएं दी जाएंगी (उनके पूर्ववर्ती मॉर्ले के विपरीत, जिन्होंने ऐसी किसी भी संभावना से इनकार किया था)। मॉन्टेग्यू की उद्घोषणा को 'अगस्त घोषणा' नाम दिया गया था।

- **गांधी का उदय:** गांधी के उदय और सविनय अवज्ञा की चर्चाओं ने राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित किया।
- **नेतृत्व में खाली स्थान:** तिलक नेतृत्व छोड़कर संयुक्त राज्य अमेरिका चले गए।
- **साम्प्रदायिक दंगे:** 1917-18 में साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे।

आन्दोलन की सफलता

- **जन समर्थन:** आंदोलन जनता को आकर्षित करने में सफल रहा, नरमपंथियों की कुलीन भागीदारी प्रतिमान से दूर एक बदलाव का संकेत मिला।
- **मजबूत कांग्रेस:** तिलक और बेसेंट के प्रयासों ने 1916 के लखनऊ पैक्ट के बाद कांग्रेस को पुनर्जीवित किया।
- **सरकार पर दबाव डाला:** उन्होंने 1919 के मोंट- फोर्ड सुधारों के आकार में और अधिक परिवर्तन करने के लिए सरकार पर दबाव डाला। इसके अलावा, इस अभियान ने जन लामबंदी की राजनीति की नींव रखी।
- **नया मार्ग प्रशस्त हुआ**: होम रूल लीग और संबंधित गतिविधियों के कुछ अच्छे प्रभाव थे और आने वाले वर्षों में स्वतंत्रता आंदोलन के नए पाठ्यक्रम को आकार देने में मदद मिली।
- इसने शहर और देश के बीच एक संगठनात्मक कड़ी स्थापित की, जो बाद में महत्वपूर्ण होगी जब राष्ट्रीय आंदोलन अपने जन चरण में प्रवेश करेगा। इसने राष्ट्रीय आंदोलन को एक नया आयाम और तात्कालिकता की भावना प्रदान की।

मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार (1919)

1918 में, मोंट-फोर्ड (मोंटेग्यू चेम्सफोर्ड) आयोग ने अपनी रिपोर्ट जारी की। इसने भारतीय स्वशासन के लिए रास्ता तैयार करने का दावा किया, लेकिन इसने भारतीयों को प्रथम विश्व युद्ध (1914-18) के दौरान अंग्रेजों की सहायता करने के लिए प्रेरित करने की भी मांग की। पहली बार, भारत सरकार ने धीरे-धीरे एक जिम्मेदार सरकार शुरू करने की इच्छा व्यक्त की।

Note : एम. के. गांधी- मोंटफोर्ड रिफॉर्म्स... भारत से उसके धन को और अधिक निकालने और उसकी दासता को बढ़ाने का एक तरीका मात्र था।
तिलक ने इसे - "सूर्यविहीन उषा काल की संज्ञा दी हैं"।

उल्लेखनीय विशेषताएं

- **द्विसदनीय प्रणाली:** केंद्र में बनाई गई और इस द्विसदनीय प्रणाली में दोनों सदनों के अधिकांश सदस्यों को सीधे निर्वाचित किया गया। एक सदनीय प्रांतीय विधान परिषदों का गठन किया गया।
- **केंद्रीकरण:** केंद्रीय विधानमंडल को भारत के पूरे देश के लिए कानून पारित करने का अधिकार दिया गया था।
- **गवर्नर जनरल की वीटो शक्ति :** गवर्नर जनरल को अध्यादेश बुलाने, सत्रावसान करने, भंग करने और प्रकाशित करने का अधिकार दिया गया था।
- **भारतीयों का अनुपात**: वायसराय की कार्यकारी परिषद में भारतीयों का अनुपात बढ़ाकर आठ में से तीन कर दिया गया। संख्या बढ़ा दी गई थी, लेकिन परिषद केवल एक सलाहकार निकाय बनी रही जिसमें कोई वास्तविक शक्ति नहीं थी।
- **सुधार प्रावधान की जांच:** मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड अध्ययन के अनुसार, दस साल बाद समीक्षा होनी चाहिए थी। सर जॉन साइमन ने समीक्षा के प्रभारी समूह (साइमन कमीशन) का नेतृत्व किया, जिसने अतिरिक्त संवैधानिक परिवर्तनों का सुझाव दिया।
- **भारतीयों के लिए स्व-शासन**: परिवर्तनों का एक महत्वपूर्ण प्रभाव था कि राष्ट्रवादियों की स्व-शासन या होम रूल की मांग को अब देशद्रोही नहीं माना जा सकता था क्योंकि भारतीयों के लिए स्व-शासन प्राप्त करना अब आधिकारिक रूप से एक सरकारी नीति बन गई थी, जैसा कि मोंटाग की अगस्त घोषणा में व्यक्त किया गया था।

मोंटफोर्ड रिफॉर्म्स की कमियां

- **सीमित मताधिकार**: मताधिकार काफी सीमित था। इस तथ्य के बावजूद कि भारत की जनसंख्या 260 मिलियन से अधिक होने का अनुमान लगाया गया था, केंद्रीय विधानमंडल के लिए मतदाताओं की संख्या लगभग 1.5 मिलियन तक बढ़ा दी गई थी।
- **वायसराय की वीटो शक्ति :** केंद्र में वायसराय और उनकी कार्यकारी परिषद पर विधायिका का कोई अधिकार नहीं था।
- **अपर्याप्त विषय विभाजन:** केंद्र का विषय विभाजन अपर्याप्त था। प्रांतीय स्तर पर, विषय विभाजन और दो भागों का एक साथ प्रशासन अतार्किक और अव्यवहारिक था। सिंचाई, वित्त, पुलिस, प्रेस और न्याय सभी विषय आरक्षित थे।

- **प्रांतों को कम शक्ति:** प्रांतीय मंत्रियों का बजट या नौकरशाही पर बहुत कम अधिकार था, जिसके परिणामस्वरूप दोनों के बीच अक्सर संघर्ष होता था।
- **मंत्रियों से सलाह नहीं ली गई :** प्रमुख विषयों पर भी मंत्रियों से अक्सर सलाह नहीं ली जाती थी; वास्तव में, राज्यपाल द्वारा असाधारण समझे जाने वाले किसी भी मामले में उन्हें राज्यपाल द्वारा पलटा जा सकता था।

भारत में स्वागत

- नरमपंथी नेताओं ने सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के नेतृत्व में 17 अगस्त, 1918 ई० को एक सभा करके उस रिपोर्ट का स्वागत किया और कांग्रेस से अलग होकर राष्ट्रीय "उदारवादी संघ" (नेशनल लिबरल लीग) का गठन किया जो बाद में "अखिल भारतीय उदारवादी संघ" (आल इण्डिया लिबरल फेडरेशन) के रूप में प्रसिद्ध हुआ।
- कांग्रेस के उदारवादियों ने माण्टेग्यू घोषणा को "भारत का पैग्नाकार्टा" कहा। इस प्रकार कांग्रेस का दूसरा विभाजन हो गया।

माण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार (1919)-

- इसे 'भारत शासन अधिनियम' के नाम से भी जाना जाता है। इसके अन्तर्गत प्रांतीय विधायी परिषदों का आकार बढ़ा दिया गया तथा यह निश्चित किया गया कि उनके अधिकांश सदस्य चुनाव जीतकर आयेंगे। प्रांतों में पहली वार द्वैध शासन लागू किया गया।
- इस द्वैध शासन का जन्मदाता **"लाओनिश कर्टिश"** था इसके अन्तर्गत प्रांतीय विषयों को आरक्षित एवं हस्तांतरित दो भागों में बाँट दिया गया।
- आरक्षित विषयों में अत्यंत महत्वपूर्ण विषय जैसे- वित्त, कानून व्यवस्था, अकाल आदि रखे गए। इसका प्रशासन गवर्नर और उसकी एक्जीक्यूटिव काउन्सिल के जिम्में रखा गया।
- हस्तांतरित विषयों में कम महत्वपूर्ण विषयों जैसे- शिक्षा, स्वास्थ्य, स्थानीय स्वशासन आदि रखे गए। इसका प्रशासन गवर्नर जनरल अपने मंत्रियों की सहायता से करता था।
- गवर्नर जनरल और उसकी एक्जीक्यूटिव काउन्सिल पर विधानमण्डल का कोई नियंत्रण न था।
- दूसरी ओर केन्द्र सरकार का प्रांतीय सरकारों पर अबाध नियंत्रण था तथा इनका वोट का अधिकार भी बहुत सीमित था।
- इस अधिनियम के द्वारा भारत में पहली बार **"लोक सेवा आयोग"** की स्थापना का प्रावधान रखा गया तथा भारतीय विधानमण्डल को बजट पास करने के सम्बंध में पहली बार अधिकार दे दिए गए।
- 1919 ई० के अधिनियम द्वारा पंजाब में सिक्खों को और मद्रास में गैड ब्राह्मणों को पृथक् निर्वाचक मण्डल प्रदान करके इसका विस्तार किया गया।
- इस अधिनियम के खण्ड पाँच में इस अधिनियम के पारित होने के दस वर्ष बाद शासन व्यवस्था की कार्यप्रणाली की जाँच के लिए एक वैधानिक आयोग नियुक्त करने के सम्बंध में प्रावधान रखा गयी।
- इसी प्रावधान के अन्तर्गत **'साइमन आयोग'** की नियुक्ति की गई।
- तिलक ने इस अधिनियम को **"निराशाजनक और असंतोषजनक"** बताया और कांग्रेस ने इस अधिनियम के अन्तर्गत नवम्बर, 1920 ई० में आयोजित चुनाव का बहिष्कार किया ।

❑ The first Phase of the revolutionary movement (क्रांतिकारी आंदोलन का पहला चरण)

- जिन कारणों से उग्रवाद का विकास हुआ था उन्हीं के चलते भारतीय राजनीति में क्रांतिकारी आन्दोलन का भी उदय हुआ।
- यह दल बलपूर्वक अंग्रेजी सत्ता को समाप्त करना चाहता था। इसके लिए इसने षड्यंत्रों एवं सशस्त्र संघर्ष का रास्ता अपनाया।
- यह आंदोलन दो चरणों में हुआ-

(i) प्रथम चरण (1905-15)

(ii) द्वितीय चरण (1924-46)

❑ महाराष्ट्र में क्रान्तिकारी आंदोलन -

- व्यायाम मंडल
- मित्रमेला और अभिनव भारत
- नासिक षड्यंत्र केस
- महाराष्ट्र राष्ट्रवादियों का सबसे पहला केन्द्र बना।
- पूना जिले के चितपावन ब्राह्मणों में सर्वप्रथम स्वराज के प्रति प्रेम की उग्र भावना का विकास हुआ।

- तिलक ने जो कि स्वयं चितपावन ब्राह्मण थे, 1893 ई० में "गणपति उत्सव एवं 1895 ई० में "शिवाजी महोत्सव" मनाया।
- इस से महाराष्ट्र के लोगों में राष्ट्रवादी भावना का काफी विकास हुआ।

❑ **व्यायाम मंडल**

- चापेकर बंधुओं (दामोदर हरि और बालकृष्ण हरि) ने 1896-97 ई० में पूना में 'व्यायाम मण्डल' की स्थापना की।
- इसकी स्थापना के पीछे उनका उद्देश्य विशुद्ध राजनीतिक था।
- पूना में 1897 ई० की रात को पूना प्लेग कमिश्नर मिस्टर रैण्ड तथा उनके साथी लेफ्टिनेंट एवर्स्ट की हत्या चापेकर बंधुओं ने कर दी।
- रैण्ड एवं एयर्स्ट की हत्या भारत में "यूरोपियों की पहली राजनीतिक हत्या थी।"
- पूना में प्लेग रोकने के नाम पर इन दोनों अंग्रेजो ने घरों में घुसकर जोर-जबर्दस्ती की थी।
- इनकी हत्या के आरोप में दामोदर हरि चापेकर को 1898 ई० को फांसी दे दी गयी।
- 1899 ई० को व्यायाम मण्डल के सदस्यों ने उन द्राविड़ बंधुओं को मृत्युदण्ड दे दिया जिन्होंने 20 हजार रुपये के इनाम के लालच में दामोदर चापेकर को गिरफ्तार कराया था।
- 1899 ई० को व्यायाम मण्डल के सदस्यों ने उन द्राविड़ बंधुओं को मृत्युदण्ड दे दिया जिन्होंने 20 हजार रुपये के इनाम के लालच में दामोदर चापेकर को गिरफ्तार कराया था।
- द्राविड़ बंधुओं की हत्या के आरोप में व्यायाम मण्डल के सदस्यों को गिरफ्तार किया गया और उनमें बालकृष्ण चापेकर, वासुदेव चापेकर और विनायक रानाडे को फाँसी दे दी गयी।
- इस तरह व्यायाम मण्डल का पतन हो गया।
- तिलक ने 'केसरी' के अपने एक लेख में इस हत्या की तुलना शिवाजी द्वारा अफजल खाँ की हत्या से की। इस लेख के कारण उन पर राजद्रोह का आरोप लगाकर उन्हे 18 माह की सजा दी गई।

❑ **मित्रमेला और अभिनव भारत**

- इसकी स्थापना 1904 में नासिक में वी. डी. सावरकर ने की थी।
- वी. डी. सावरकर द्वारा 1899 में स्थापित मित्र मेला ही एक गुप्त सभा अभिनव भारत (1904) में परिवर्तित हो गई।
- अभिनव भारत की शाखाएँ महाराष्ट्र के अलावा कर्नाटक व मध्य प्रदेश में भी स्थापित की गईं।
- 1906 में वी. डी. सावरकर लंदन चले गये।
- अभिनव भारत ने पाण्डुरंग महादेव बापट को रूसी क्रान्तिकारियों से बम बनाने की कला सीखने के लिए पेरिस भेजा था।

❑ **नासिक षड्यंत्र केस**

- 1909 ई० की रात को नासिक के जिला मजिस्ट्रेट 'जैक्सन' को कर्वे गुट के अनन्त लक्ष्मण कन्हारे ने गोली मार दी।
- कन्हारे को गिरफ्तार कर लिया गया।
- जैक्सन हत्याकाण्ड में कन्हारे, कृष्णजी गोपाल कर्वे और विनायक देशपाण्डे को 19 अप्रैल 1911 ई० को फांसी दे दी गयी।
- वी० डी० सावरकर को लंदन से गिरफ्तार करके नासिक लाया गया और 37 व्यक्तियों के साथ नासिक षड्यंत्र केस चला जिसमें सावरकर को आजीवन कारावास की सजा मिली।
- नासिक पड्यंत्र के बाद महाराष्ट्र के क्रान्तिकारियों की रीढ़ टूट गयी।

❑ **बंगाल में क्रान्तिकारी आंदोलन -**

- अनुशीलन समिति
- मुजफ्फरपुर बम कांड
- अलीपुर षड्यंत्र केस
- हावड़ा षड्यंत्र केस
- 1905 ई० के बंगाल विभाजन के बाद यहाँ नए सिरे से राजनीतिक चेतना जागृत हुई।
- बंगाल में क्रान्तिकारी आन्दोलन का सूत्रपात "भद्रलोक समाज ने किया।
- यहाँ क्रान्तिकारी विचारधारा को फैलाने का श्रेय वारीन्द्र कुमार घोष एवं भूपेन्द्रनाथ दत्त को दिया जाता है।

- 1906 ई० में इन दोनों युवकों ने मिलकर 'युगान्तर' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन किया।

❑ अनुशीलन समिति

- मिदनापुर में इसकी स्थापना 'सतीश चन्द्र बसु ने की जबकि इसका गठन कलकत्ता में 'पी. मित्रा' ने किया।
- क्रान्तिकारी सदस्य - जतीन्द्रनाथ बनर्जी, बारीन्द्र कुमार घोष तथा भूपेन्द्रनाथ दत्त
- इस समिति से 'युगान्तर' साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ।
- इसका पुनर्गठन 1907 (1902 में स्थापित) में कलकत्ता में पी. मित्रा, जतीन्द्रनाथ बनर्जी, बारीन्द्र घोष व भूपेन्द्र दत्त बही ने किया था।
- इसका प्रमुख उद्देश्य था खून के बदले खून।
- इस समिति का निर्माण एक व्यायामशाला के रूप में हुआ था।
- इसका नाम एम. एन. राय ने सुझाया।
- 1906 में इसका पहला सम्मेलन कलकत्ता में सुबोध मलिक के घर में हुआ था।

❑ मुजफ्फरपुर बम कांड

- किंग्सफोर्ड बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के न्यायाधीश थे। इन पर 1908 ई० को मुजफ्फरपुर में खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी ने बम फेंका।
- किंग्सफोर्ड बच गया, परन्तु दुर्भाग्य से मिस्टर कैनेडी की पत्नी एवं पुत्री मारी गई।
- प्रफुल्ल चाकी ने आत्महत्या कर ली
- खुदीराम बोस को 1908 ई० में 15 वर्ष की आयु में फांसी दे दी गयी।
- खुदीराम बोस सबसे कम उम्र में फांसी पाने वाले क्रन्तिकारी थे।

❑ अलीपुर षड्यंत्र केस

- 1908 ई० को कलकत्ता के अलीपुर अदालत में 34 व्यक्तियों को अवैध शस्त्र रखने के कारण पेश किया गया।
- इन व्यक्तियों को अवैध शस्त्र रखने के कारण गिरफ्तार किया गया था। यही मुकदमा "अलीपुर पयंत्र केस" के नाम से प्रसिद्ध है।
- इस केस में सरकारी गवाह 'नरेन्द्र गोसाई' की अलीपुर जेल में सत्येन्द्रनाथ घोष ने हत्या कर दी।
- इसके अतिरिक्त सरकारी वकील तथा पुलिस अधीक्षक की भी हत्या कर दी गई।
- वारीन्द्र गुट के लगभग सभी सदस्यों को आजीवन काला पानी की सजा मिली। परन्तु अरविन्द घोष छोड़ दिए गए।
- अरविन्द घोष ने 'कर्मयोगिन्' नामक पत्र अंग्रेजी में निकाला।
- इस पत्र के आपत्तिपूर्ण लेखों के लिए इनके विरुद्ध वारण्ट जारी किया गया।
- तब ये फरार हो गए और पाण्डिचेरी में जाकर रहने लगे।
- वहीं पर 'अरोविल' में 1916 ई० में एक आश्रम की स्थापना की।

❑ हावड़ा षड्यंत्र केस

- जतीन्द्रनाथ मुखर्जी को 1910 ई० में डिप्टी पुलिस सुपरिटेंडेंट 'शमसुल आलम' की हत्या का अभियुक्त बनाया गया और उन पर "हावड़ा षड्यंत्र केस" चलाया गया।
- परन्तु इस मामले में वे किसी तरह फाँसी से बच गए।

❑ पंजाब में क्रान्तिकारी आंदोलन

- पंजाब में क्रान्तिकारी आन्दोलन का उदय बार-बार पड़ने वाले अकालों और भूराजस्व तथा सिचाई करों में वृद्धि के परिणामस्वरूप हुआ।
- पंजाब में क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रणेता जतिन मोहन चटर्जी थे।
- इन्होंने 1904 ई० में सहारन पुर में भारत माता सोसायटी' नामक गुप्त संस्था बनाई था।
- इनके साथ लाला हरदयाल, अजीत सिंह और सूफी अम्बा भी शामिल थे।
- इन्होंने 1904 ई० में सहारन पुर में भारत माता सोसायटी' नामक गुप्त संस्था बनाई था।

- इनके साथ लाला हरदयाल, अजीत सिंह और सूफी अम्बा भी शामिल थे।

❑ **दिल्ली में क्रान्तिकारी आंदोलन -**

- 1912 ई० में कलकत्ता से दिल्ली राजधानी परिवर्तन के अवसर पर वायसराय लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका गया, परन्तु वह बच गया।
- लार्ड हार्डिंग की हत्या के षड्यन्त्र की योजना रास बिहारी बोस ने बनाई थी।
- बम फेंकने वालो में बसंत विश्वास और मन्मच विश्वास प्रमुख थे।
- लार्ड हार्डिंग की हत्या से सम्बन्धित मुकदमा दिल्ली षड्यंत्र केस के नाम से जाना जाता है।
- इस मुकदमे में बसंत विश्वास, बाल मुकंद, अवध बिहारी तथा मास्टर अमीर चन्द्र को फांसी हो गई।
- इस षड्यंत्र का रहस्य खुल जाने पर रास बिहारी बोस भागकर जापान चले गए जहाँ उन्होंने अपनी क्रान्तिकारी गतिविधियाँ जारी रखी।

❑ **मद्रास में क्रान्तिकारी आंदोलन -**

- मद्रास प्रान्त में क्रान्तिकारी विचारों का प्रसार का श्रेय नीलकण्ठ ब्रह्मचारी और वंची अय्यर को जाता हैं।
- इन दोनो ने गुप्त रूप से "भारत माता समिति" की स्थापना की।
- अय्यर ने 1911 ई० को तिन्नेवेल्ली के जिला जज 'आशे' की गोली मारकर हत्या कर दी और बाद में आत्म हत्या कर ली।

❑ **विदेशो में क्रान्तिकारी आंदोलन**

- इंडियन होमरूल सोसाइटी
- कर्जन वाइली की हत्या
- मैडम भीकाजी कामा
- राष्ट्रवादी क्रान्तिकारियों ने भारत की स्वतंत्रता के बारे में वैध प्रचार करने तथा विदेशियों से सहायता प्राप्त करने के उद्देश्य से अपने आन्दोलन का केन्द्र ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, अफगानिस्तान जर्मनी आदि स्थलों को बनाया।

❑ **इंडियन होमरूल सोसाइटी**

- स्थान - लन्दन
- संस्थापक - श्यामजी कृष्ण वर्मा
- उपाध्यक्ष- अब्दुल्ला सुहरावर्दी
- अन्य सदस्य - वी० डी० सावरकर, लाला हरदयाल और मदनलाल धींगरा
- यह भारत के बाहर सबसे पुरानी क्रान्तिकारी समिति थी
- श्यामजी कृष्ण वर्मा ने भारत के लिए स्वशासन की प्राप्ति के उद्देश्य से इण्डिया होमरूल सोसाइटी' की स्थापना की थी।
- इसकी स्थापना ब्रिटेन के समाजवादी नेता हिडमैन के सुझाव पर की गई।
- श्यामजी कृष्ण वर्मा ने एक पत्र 'इण्डियन सोसियोलॉजिस्ट' निकालना प्रारम्भ किया।
- इसमें उन्होंने स्पष्ट कहा कि इसका उद्देश्य भारत के लिए स्वराज प्राप्त करना और ब्रिटेन में अपने पक्ष का प्रचार करना है।
- श्यामजी कृष्ण वर्मा ने लंदन में भारतीयों के लिए "इण्डिया हाउस" नामक हास्टल की स्थापना की।
- बाद में यही इण्डिया हाउस क्रान्तिकारियों का अड्डा बन गया।
- लन्दन के 'द टाइम्स' तथा अन्य समाचार पत्रों ने श्यामजी तथा उनके साथियों की आलोचना की। इसके बाद श्यामजी लन्दन छोड़कर पेरिस में बस गए
- इण्डिया हाउस का राजनीतिक नेतृत्व वी० डी० सावरकर ने संभाला।
- 1908 ई० को इण्डिया हाउस में गदर दिवस मनाया गया।
- इसी समय वी० डी० सावरकर ने प्रसिद्ध पुस्तक "इण्डियन वार आफ इण्डिपेण्डेन्स 1857" लिखी।
- इसी पुस्तक में 1857 ई० के विद्रोह को "भारत का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम" कहा गया।

❑ कर्जन वाइली की हत्या

- लन्दन में 1909 ई० को मदन लाल धींगरा ने इण्डिया आफिस के राजनीतिक सलाहकार कर्जन वायली की गोली मारकर हत्या कर दी।

- धींगरा को गिरफ्तार कर लिया गया और फाँसी दे दी गई।

❑ मैडम भीकाजी कामा

- मैडम भीका जी कामा का जन्म 1861 में मुम्बई के पारसी परिवार में हुआ था। परिजनों ने उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए उन्हें इंग्लैण्ड भेजा, किन्तु वहाँ पढ़ाई में मन नहीं लगा और भारत की स्वतंत्रता के लिए श्याम जी कृष्ण वर्मा के संगठन से जुड़ गई।
- 1907 को जर्मनी के स्टुटगार्ड में आयोजित विश्व समाजवादी देशों के सम्मेलन में भारत का सर्वप्रथम झण्डा (हरा ,पीला, लाल ध्वज) फहराया।
- उनकी इस क्रांतिदर्शिता के कारण उन्हें "भारतीय क्रांतिकारियों की जननी" कहा जाता है।

Second phase of the revolutionary movement (क्रांतिकारी आंदोलन का द्वितीय चरण)

- हिन्दुस्तान रिपब्लिकन असोसिएशन
- काकोरी काण्ड
- हिन्दुस्तान सोशलिस् रिपब्लिकन असोसिएशन
- सांडर्स हत्या कांड
- सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली बमकांड
- लहौर षणयंत्र मुकदमा
- नौजवान सभा (1926)
- चंद्र शेखर आज़ाद - क्रन्तिकारी आंदोलन
- चटगांव आर्मरी रेड
- वामपंथी आंदोलन
- भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना
- पेशावर षणयंत्र केस
- कानपूर षणयंत्र केस
- मेरठ षणयंत्र केस
- कांग्रेस समाजवादी पार्टी

❑ हिन्दुस्तान रिपब्लिकन असोसिएशन

- स्थापना -1924 में कानपुर
- संस्थापक - सचेन्द्र सान्याल
- सदस्य - अशफाक उल्ला खाँ, राम प्रसाद बिस्मिल, रोशन लाल, राजेन्द्र लाहिड़ी,सुखदेव ने चन्द्रशेखर आजाद ,भगत सिंह तथा भगवती चरण बोहरा
- अन्य तथ्य -
- उत्तर प्रदेश में विजय कुमार सिन्हा, शिव वर्मा, और जयदेव कपूर भी इसमें शामिल थे।
- एच. आर. ए. ने पैसा एकत्र करने के लिए पहली बड़ी कार्रवाई काकोरी में की।

❑ काकोरी काण्ड

- तिथि -9 अगस्त, 1925
- प्रमुख क्रन्तिकारी - अशफाक उल्ला खाँ, राम प्रसाद बिस्मिल, रोशन लाल, राजेन्द्र लाहिड़ी, चन्द्रशेखर आजाद
- अन्य क्रन्तिकारी - चन्द्रभानुगुप्त, मोहन लाल सक्सेना, अजीत प्रसाद जैन और कृपाशंकर हेजला
- अन्य तथ्य -
- उत्तर रेलवे के लखनऊ सहारनपुर संभाग के काकोरी नामक स्थान पर '8 डाउन ट्रेन' पर डकैती डालकर हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन नामक संगठन के क्रांतिकारियों द्वारा खजाने को लूट लिया गया।
- इस लूट में क्रांतिकारियों को 8000 रू. प्राप्त हुए।

- सरकार ने षड्यंत्र में शामिल 29 क्रांतिकारियों को पकड़ लिया।
- चंद्रशेखर आजाद को पुलिस पकडनें में असफल रहीं।
- काकोरी केस के अभियुक्तों के बचाव के लिए गोविन्द वल्लभ पंत की अध्यक्षता में कांग्रेस ने बचाव समिति का गठन किया था।
- काकोरी षड्यंत्र केस में राम प्रसाद बिस्मिल (गोरखपुर), असफाकउल्ला खां (फैज़ाबाद), रोशन सिंह (इलाहबाद), राजेन्द्र लाहिड़ी (गौडा) को मुकदमा चलाकर फाँसी दे दी गयी।
- असफाकउल्ला खां फाँसी पाने वाले पहले रिकॉर्डेड मुस्लिम थे।

❑ नौजवान सभा (1926)

- स्थापना -1926 ई० में पंजाब
- संस्थापक - भगत सिंह
- अन्य सदस्य - छबीलदास , चंद्र शेखर आज़ाद , केदारनाथ शहगल और यशपाल
- अन्य तथ्य
- सारे भारत में संपूर्ण स्वतंत्र मजदूर और किसानों के राज्य की स्थापना ।
- देश के युवकों में देश-भक्ति की भावना उत्तेजित करना ।
- ऐसे आर्थिक, औद्योगिक और सामाजिक आन्दोलनों के साथ सहानुभूति प्रकट करना जो संपूर्ण आजादी तथा किसान और मजदूर राज्य लाने में सहायता करे ।
- मजदूरों और किसानों को संगठित करना।

❑ हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन असोसिएशन

- स्थापना -10 सितम्बर, 1928 में दिल्ली के फीरोजशाह कोटला मैदान
- संस्थापक - चन्द्रशेखर आजाद
- सदस्य - उत्तर प्रदेश के विजय कुमार सिन्हा, शिव वर्मा, जयदेव कपूर तथा पंजाब के भगत सिंह, भगवती चरण वोहरा और सुखदेव
- अन्य तथ्य -
- हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन (H.R.A.) का नाम बदलकर हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन (H.S.R.A.) कर दिया।
- इस संगठन का मुख्य उद्देश्य समाजवाद की स्थापना करना था।
- इसमें सब लोग बहुमत के निर्णय को मानने के लिए बाध्य थे।

❑ सांडर्स हत्या कांड

- तिथि - 17 दिसम्बर, 1928 ई०
- प्रमुख क्रान्तिकारी - भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद और राजगुरु
- अन्य तथ्य -
- हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन का पहला क्रान्तिकारी कार्य लाहौर के सहायक पुलिस अधीक्षक साण्डर्स की हत्या था।
- इसने 30 अक्टूबर, 1928 ई० को लाहौर में साइमन कमीशन विरोधी अभियान के दौरान लाला लाजपत राय पर लाठी चार्ज करवाकर उन्हें घातक रूप से घायल कर दिया था।
- भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद और राजगुरु ने लाहौर रेलवे स्टेशन पर साण्डर्स की हत्या कर दी।

❑ सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली बमकांड

- तिथि - 8 अप्रैल, 1929 ई०
- प्रमुख क्रान्तिकारी - भगत सिंह एवं बटुकेश्वर दत्त
- अन्य तथ्य

- हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन का अगला महत्वपूर्ण कार्य दिल्ली की केन्द्रीय असेम्बली में बम और पर्चे फेंकना था।
- केन्द्रीय विधानसभा में 'सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक' तथा 'व्यापार विवाद विधेयक' पर बहस चल रही थी।
- पर्चे में लिखा हुआ था-" बहरों को सुनाने के लिए बमों की आवश्यकता है।"
- इन दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया तथा केन्द्रीय एसेम्बली बम कांड में उन पर मुकदमा चलाया गया।

❑ लहौर षणयंत्र मुकदमा

- वर्ष – 1929
- सांडर्स हत्या और केन्द्रीय विधान मण्डल में बम फेंकने व कुछ अन्य षड़यंत्रों को जोड़कर लाहौर षड़यंत्र मामला बनाया गया।
- लाहौर षड्यंत्र मामले में भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरु को 23 मार्च 1931 को फॉसी दी गई थी।
- लाहौर षड्यंत्र केस 5 मई, 1930 से 11 सितम्बर 1930 तक चला था।
- जेल में रहते हुए जिन कैदियों पर मुकदमा चलाया जा रहा था, उन्होंने साधारण अपराधियों के बजाय राजनीतिक बन्दियों का दर्जा प्राप्त करने के लिए भूख हड़ताल की।
- इन भूख हड़तालियों में जतिनदास का 13 सितम्बर, 1929 ई० को अनशन के 64 वें दिन देहान्त हो गया।

❑ चंद्र शेखर आज़ाद - क्रन्तिकारी आंदोलन

- चन्द्रशेखर आजाद यशपाल को रूस भेजना चाहते थे ताकि वहाँ से भारतीय स्वतंत्रता के संघर्ष में किसी प्रकार कुछ सहायता मिल सके।
- 27 फरवरी, 1931 ई० चन्द्रशेखर आजाद ,यशपाल , सुखदेव राज (इलाहबाद के अल्फ्रेड पार्क में) एक गहन मंत्रणा कर रहे थे।
- इतने में वहाँ पुलिस आ पहुँची। आज़ाद ने मुठभेड़ के दौरान खुद को गोली मार ली और शहीद गए ।
- चन्द्रशेखर आजाद की मृत्यु के बाद हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी ने यशपाल को अपना नेता चुना।
- यशपाल ने बिखरे हुए दल को पुनः संगठित किया। 23 जनवरी, 1932 ई० को यशपाल किसी से मिलने के लिए इलाहाबाद गए। उन्हें पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।
- यशपाल को 14 वर्ष की सजा दी गई परन्तु 1937 ई० में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री पंडित गोविन्द बल्लभपन्त ने 2 मार्च, 1938 ई० को इन्हें जेल से रिहा कर दिया। उन्होंने जेल से छूटने के बाद कई उपन्यास लिखे।
- सूर्यसेन द्वारा स्थापित 'इण्डियन रिपब्लिकन आर्मी' (आई० आर० ए०) की स्थापना की गयी थी।
- कल्पना दत्त (महिला क्रन्तिकारी) सूर्यसेन की 'इण्डियन रिपब्लिकन आर्मी' से जुडी थी।

विदेशों में क्रांतिकारी संगठन			
संगठन	संस्थापक	**वर्ष**	**जगह**
इंडिया होमरूल सोसायटी	श्यामजी कृष्ण वर्मा	**1905**	इंग्लैंड
पेरिस इंडियन सोसायटी	मैडम कामा	**1905**	पेरिस
सोसाइटी फार दि एडवांसमेंट ऑफ इंडिया	मो. बरकतुल्ला	**1906**	न्यूयार्क (USA)
इंडियन इंडिपेंडेंस लीग	द्वारिकानाथ दास	**1907**	कैलिफोर्निया (अमेरिका
यूनाइटेड इंडिया हाउस	तारक नाथ दास एवं जी.डी. कुमार	**1908**	सिएटल (U.S.A.)
हिंद एसोसिएशन ऑफ अमेरिका	सोहन सिंह भाकना	**1913**	अमेरिका
गदर पार्टी	लाला हरदयाल, रामचंद्र, बरकतुल्ला	**1913**	सेनफ्रांसिस्को (अमेरिका)
इंडियन इंडिपेंडेंस लीग व स्वतंत्र सरकार	राजा महेन्द्र प्रताप	**1915**	अफगानिस्तान
इंडियन इंडिपेंडेंस लीग	रासबिहारी बोस	**1942**	जापान
आजाद हिंद फौज	मोहन सिंह	**1942**	जापान

भारतीय क्रांतिकारी संगठन			
संगठन	संस्थापक	वर्ष	जगह
व्यायाम मंडल	दामोदर तथा बालकृष्ण चापेकर बन्धु	1896-97	पूना
मित्र मेला	विनायक दामोदर सावरकर व गणेश सावरकर	1899	महाराष्ट्र बंगाल

अभिनव भारत	सावरकर बन्धु	1904	महाराष्ट्र
भारत माता सोसायटी	अजीत सिंह व अम्बा प्रसाद	1904	ढाका
अनुशीलन समिति	वारीन्द्र कुमार घोष, भूपेन्द्र नाथ दत्त, प्रबोध मित्र, पुलिन दास सतीशचन्द्र बोस	1907	कलकत्ता
HRA	सचींद्रनाथ सान्याल, रामप्रसाद बिस्मिल, योगेश चटर्जी	1924	कानपुर
नौजवान सभा	भगत सिंह	1926	पंजाब
HSRA	चंद्रशेखर आजाद	1928	दिल्ली
इण्डियन रिपब्लिकन (बंगाल)	सूर्यसेन	1930	चटगांव

मुख्य क्रांतिकारी घटनाएँ			
घटनाएँ	**संस्थापक**	**वर्ष**	**जगह**
आयर्स्ट एवं कमिश्नर रेंड हत्याकांड	पुणे	1897	चापेकर बंधु
मुजफ्फरपुर बम काण्ड	मुजफ्फरपुर	1908	खुदीराम बोस प्रफुल्ल चाकी
जैक्सन हत्याकांड	नासिक	1909	अनन्त लक्षमण कन्हारे
कर्जन वायली हत्याकांड	लंदन	1909	मदनलाल धींगरा
दिल्ली बम कांड	दिल्ली	1912	रास बिहारी बोस व बसंत कुमार, सचीन्द्र सान्याल
सांडर्स हत्याकांड	लाहौर	1928	सरदार भगत सिंह
जनरल डायर हत्याकांड	लंदन	1940	ऊधमसिंह

LEFTIST MOVEMENT

❑ वामपंथी आंदोलन

- वामपंथी का अर्थ हैं जो समाज को बदलकर उसमे आर्थिक समानता लाना चाहता हो।
- वामपंथी शब्द का प्रयोग पहली बार फ्रासीसी क्रान्ति में किया गया।
- आधुनिक काल में समाजवाद और साम्यवाद को वामपंथी कहा जाता हैं
- भारत में वामपंथी आंदोलन का विकास लगभग 20 वी शताब्दी में हुआ।
- साम्यवाद का नियंत्रण वैदेशिक था
- यह मुख्यतः रूस के अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी संगठन से अनुशासित था जबकि समाजवाद का मूल स्रोत भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का वामपंथी दल था।

❑ भारत की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना

- 1919 ई० में महेन्द्र प्रताप के नेतृत्व में भारतीयों के पहले प्रतिनिधिमण्डल ने लेनिन रे साथ मास्को में मुलाकात की।
- इस मुलाकात का परिणाम यह हुआ कि भारतीय क्रान्तिकारियों और नौजवान मुहाजिरों के एक हिस्से ने अक्टूबर, 1920 ई० में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की।
- मानवेन्द्रनाथ राय, (वास्तविक नाम नरेन्द्रनाथ भट्टाचार्य) ने 17 अक्टूबर, 1920 ई० में ताशकन्द में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की।
- भारत की कम्यूनिस्ट पार्टी के सदस्य - एम० एन० राय , ए० टी० राय, अवनी मुखर्जी, रोजा फिटिगॉफ, मुहम्मद अली, मुहम्मद शफीक और आचार्य प्रतिवादी ।

❑ भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना

- तिथि - 1 सितम्बर, 1924
- स्थान - कानपुर ,उत्तर प्रदेश
- संस्थापक - सत्यभक्त (सचिव)

- अन्य सदस्य - मौलाना हसरत मोहानी, वी० एम० जोशी, उपाशंकर अवस्थी और पण्डित रामगोपाल थे।

❑ **पेशावर षणयंत्र केस**

- वर्ष - 1922-23 ई०
- क्रन्तिकारी - एम० एन० राय
- एम० एन० राय और कुछ मुस्लिम सहयोगी युवको को मास्को की कम्युनिस्ट युनिवर्सिटी में प्रशिक्षित कर भारत में कम्युनिस्ट आन्दोलन करने के लिए भेजा। ब्रिटिश सरकार को इस बात की सूचना मिल चुकी थी।
- अतः उन्हें भारतीय पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और उन पर मुकदमा चलाने के लिए उन्हें पेशावर लाया गया।
- यही पेशावर षड्यंत्र केस के नाम से प्रसिद्ध है।
- इन पर आरोप लगाया गया कि इन्होंने ब्रिटिश सम्राट् की सत्ता को उखाड़ने की साजिश की।
- बैरिस्टर अब्दुल कादिर की जोरदार पैरवी के कारण ज्यादा लम्बी सजायें नहीं दी जा सकीं।

❑ **कानपूर षणयंत्र केस**

- तिथि - 21 फरवरी, 1924 ई०
- क्रान्तिकारी - एम० एन० राय, मुजफ्फर अहमद, श्रीपाद अमृतडांगे, उस्मानी, गुलाम हुसैन, रामचरण लाल शर्मा और सिंगार वेलुचेट्टियार
- अन्य तथ्य
- कम्युनिस्ट आन्दोलन की शक्ति एवं बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए कानपुर में एक षड्यंत्र को आधार बनाकर कुछ कम्युनिस्टों पर मुकदमा चलाया गया।
- यह मुकदमा कानपुर पड्यंत्र केस के नाम से प्रसिद्ध है।
- ब्रिटिश सरकार गुलाम हुसैन को गवाह बनाने में सफल रही।
- इस मुकदमें में नलिन गुप्त, शौकत उस्मानी, डांगे और मुजफ्फर अहमद को चार वर्ष की सजा दी गयी।

❑ **मेरठ षणयंत्र केस**

- तिथि - 20 मार्च, 1929 ई०
- क्रान्तिकारी - मुजफ्फर अहमद
- अन्य तथ्य
- सरकार ने देश भर में कम्युनिस्टों के प्रभाव को रोकने के लिए 31 कम्युनिस्टों को गिरफ्तार कर लिया और उन पर मेरठ षड्यंत्र केस चलाया गया।
- यह केस साढ़े तीन वर्ष तक चलता रहा।
- कांग्रेस कार्यकारिणी ने इनके मुकदमे के लिए एक केन्द्रीय सुरक्षा समिति का गठन किया।
- इस मुकदमे में जवाहर लाल नेहरू, कैलाश नाथ काटजू और डॉ० एफ० एच० अंसारी जैसे लोग प्रतिवादी की तरफ से पेश हुए।
- गाँधी जी इनसे जेल में मिलने गए
- मेरठ षड्यंत्र केस का फैसला 16 जनवरी, 1933 ई० को सुनाया गया।
- 27 अभियुक्तों को कड़ी सजा दी गई।
- मुजफ्फर अहमद को आजीवन काले पानी की सजा दी गई।
- अंग्रेजी सरकार ने जुलाई, 1934 ई० में भारतीय साम्यवादी दल' को अवैध घोषित कर दिया।

❑ **कांग्रेस समाजवादी पार्टी**

- स्थापना - अक्टूबर, 1934 ई०
- स्थान - बम्बई
- संस्थापक - आचार्य नरेन्द्र देव एवं जय प्रकाश नारायण
- अन्य सदस्य - अशोक मेहता, अच्युत पटवर्धन, मीनू मसानी, डॉ० राम मनोहर लोहिया, पुरुषोत्तम विक्रम दास, यूसुफ मेहराले, गंगा शरण सिंह, कमला देवी चट्टोपाध्याय आदि
- अन्य तथ्य
- इस संगठन ने किसान और मजदूरों को संगठित किया
- इस संगठन के प्रभाव से 1936 ई० में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में नेहरू ने कांग्रेस का लक्ष्य 'समाजवाद' घोषित किया
- 1937 के फैजपुर अधिवेशन में कृषि सम्बन्धी आर्थिक प्रस्ताव पारित किये गए।
- इन्होने व्यापार संघों और फेडरेशनों को एक सूत्र में बांधा।

❑ **अन्य वामपंथी दल-**

- भारत में 1939-40 ई० के बीच साम्यवादी आन्दोलन ने अनेक लघु वामपंथी आन्दोलनों को जन्म दिया।
- इन दलों का वर्णन निम्नलिखित है-

❑ **भारतीय बोल्शेविक पार्टी**

- स्थापना - 1939 ई०
- संस्थापक - एन० दत्त मजूमदार
- अन्य सदस्य - अजीत राय, शिशिर राय तथा विश्वनाथ दूबे
- स्थान – बंगाल
- अन्य तथ्य -
- इसकी स्थापना बंगाल में लेबर पार्टी के नेताओं द्वारा की गई थी।
- इस पार्टी ने ब्रिटेन के द्वितीय विश्व युद्ध में सम्मिलित होने की कार्यवाही का समर्थन किया था ।
- भारत छोड़ो आन्दोलन का विरोध किया था।

❑ **फॉरवर्ड ब्लॉक**

- स्थापना - मार्च, 1939 ई०
- संस्थापक - सुभाष चन्द्र बोस
- अन्य सदस्य - देवव्रत विश्वास (महासचिव) विश्वम्भर दयाल त्रिपाठी , स्वामी सहजानन्द
- अन्य तथ्य -
- मार्च, 1939 ई० में त्रिपुरी अधिवेशन से इस्तीफा देने के बाद सुभाष चन्द्र बोस ने फारवर्ड ब्लाक का गठन किया।
- जून 1942 में फारवर्ड ब्लाक को अवैध घोषित कर दिया गया।
- फारवर्ड ब्लाक के प्रथम अखिल भारतीय अधिवेशन (मुम्बई) में पूर्ण स्वतंत्रता और तत्पश्चात् समाजवादी राज्य की स्थापना का उद्देश्य स्वीकार किया गया।
- उन्होंने वामपंथी एकीकरण समिति का गठन किया
- यद्यपि बोस ने कांग्रेस के उद्देश्य, नीति, कार्यक्रम आदि सभी स्वीकार किए, परन्तु उन्हें कांग्रेस के उच्च आदर्शों पर भरोसा नहीं था।
- 1947 ई० में फारवर्ड ब्लाक ने शक्ति के हस्तांतरण को 'झूठे शक्ति हस्तान्तरण' की संज्ञा दी।

❑ क्रन्तिकारी समाजवादी पार्टी

- स्थापना-1940 ई०
- स्थान - बंगाल
- संस्थापक - योगेश चंद्र चटर्जी
- अन्य तथ्य -
- इसका उद्देश्य अंग्रेजों को शक्ति द्वारा बाहर निकाल फेंकना और फिर भारत में समाजवाद स्थापित करना था।
- त्रिपुरी कांग्रेस में इसने बोस का समर्थन किया।
- भारत छोड़ो भान्दोलन का पार्टी ने स्वागत किया।

❑ दि रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी

- स्थापना - 1940 ई०
- संस्थापक - एम० एन० राय
- स्थान - बंगाल
- अन्य तथ्य
- एम० एन० राय देश विभाजन के पक्ष में नहीं थे इन्होने एक दल विशेष को सत्ता हस्तान्तरित किए जाने की आलोचना की।
- माउण्टबेटेन योजना को स्वीकार कर लिया

❑ बोल्शेविक लेनिनिस्ट पार्टी

- स्थापना -1941 ई०
- स्थान - बंगाल
- संस्थापक - इन्द्रसेन व अजीत राय
- अन्य तथ्य
- यह कांग्रेस का घोर-विरोधी थी।
- द्वितीय विश्व युद्ध का इस पार्टी ने विरोध किया।
- श्रीलंका व बर्मा की समाजवादी पार्टियों के सहयोग से इसकी स्थापना हुई।

❑ भारतीय क्रन्तिकारी साम्यवादी दल

- स्थापना-1942 ई०
- स्थान - बंगाल
- संस्थापक - सौमेन्द्रनाथ टैगोर अन्य तथ्य
- इस पार्टी ने भारत छोड़ो आन्दोलन का समर्थन किया
- इसके अनुसार सत्ता हस्तान्तरण ब्रिटिश साम्राज्यवाद व भारतीय बुर्जुआ के मध्य हुए राजनीतिक षड्यंत्र का परिणाम था।
- इसमें गाँधी जी को बुर्जुवावादी नेता की उपाधि दी।

गांधी युग से पूर्व की प्रमुख घटनाएं/ Major events before Gandhi era

रोलेट ऐक्ट (1919) –

- भारत में क्रान्तिकारियों के प्रभाव को समाप्त करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने 1917 ई० में सर सिडनी रोलेट को अध्यक्षता में एक कमेटी नियुक्त की।
- यह कमेटी यह जांच करने के लिए नियुक्त की गई कि भारत में किस स्तर तक क्रान्तिकारी आन्दोलन सम्बन्धी षड्यंत्र फैले हुए हैं और इनका मुकाबला करने के लिए, किस- प्रकार के कानूनों की आवश्यकता है।
- रोलेट ऐक्ट लागू करने का मुख्य कारण यह था कि 'भारत रक्षा कानून की अवधि समाप्त होने को थी।

- इस कानून को क्रान्तिकारी एवं अराजकतावादी कानून , रोलट एक्ट या काला कानून के नाम से जाना जाता हैं।
- इस कानून में यह व्यवस्था की गई थी कि मजिस्ट्रेट किसी भी संदेहास्पद व्यक्ति को गिरफतार करके जेल में डाल सकता था, साथ ही उसे अनिश्चित काल के लिए जेल में रख सकता था।
- इस ऐक्ट को "विना वकील, विना अपील तथा बिना दलील का कानून" भी कहा गया। इसे "काला अधिनियम" एवं "आतंकवादी अपराध नियम" के नाम से भी जाता जाता था।
- गाँधीजी का अब तक भारतीय राजनीति में प्रवेश हो चुका था। उन्होंने इस ऐक्ट के विरोध में 6 अप्रैल, 1919 ई० को एक देशव्यापी हड़ताल का आह्वान किया। उन्होंने "सत्याग्रह सभा" की स्थापना भी की।
- स्वामी श्रद्धानंद एवं डॉ० सत्यपाल के निमंत्रण पर महात्मा गांधी पंजाब की ओर चले। परन्तु, मार्ग में ही 8 अप्रैल, 1919 को उन्हें हरियाणा के 'पलवल' नामक स्थान पर गिरफ्तार कर बम्बई भेज दिया गया।

जलियाँवाला बाग हत्या काण्ड (1919) –

- गाँधी जी तथा कुछ अन्य नेताओं के पंजाब प्रवेश पर प्रतिबंध लगे होने के कारण वहाँ की जनता में पर्याप्त आक्रोश था।
- यह आक्रोश तब अधिक बढ़ गया जब पंजाब के दो लोकप्रिय नेता डॉ० सत्यपाल' एवं 'डॉ० सैफुद्दीन किचलू" को अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर द्वारा बिना किसी कारण के 9 अप्रैल, 1919 ई० को गिरफ्तार कर लिया गया।
- इनकी गिरफ्तारी का आदेश पंजाब प्रांत के लेफ्टिनेंट गवर्नर "माइकल ओ० डायर" ने दिया
- इनकी गिरफ्तारी के विरोध में जनता ने एक शान्तिपूर्ण जुलूस निकाला।
- अमृतसर शहर की स्थिति से बौखला कर सरकार ने 10 अप्रैल, 1919 ई० को शहर का प्रशासन सैन्य अधिकारी बिग्रेडियर जनरल "आर० डायर" को सौंप दिया। इसने 12 अप्रैल को कुछ गिरफ्तारी करवाई।
- 13 अप्रैल, 1919 को बैशाखी के दिन अमृतसर के जलियाँवाला बाग में एक विशाल सभा का आयोजन हुआ जिसमें करीब 20 हजार व्यक्ति इकडे हुए। यह सभा'हंसराज' नामक व्यक्ति ने बुलाई थी। यही व्यक्ति बाद में सरकारी गवाह बन गया था।
- सभा में गांधीजी, डॉ० किचलू और सत्यपाल को रिहाई एवं रोलेट ऐक्ट के विरोध में भाषणबाजों की जा रही थी।
- ऐसे में डायर ने सैनिकों को भीड़ पर गोलिया चलाने का आदेश दे दिया। वे तब तक गोलियां चलाते रहे जब तक गोलियां खत्म न हो गई। हजारों लोगों को जान से हाथ धोना पड़ा एवं हजारों लोग घायल हो गए। वैसे सरकारी रिपोर्ट के अनुसार 379 व्यक्ति मारे गए एवं 1,200 घायल हुए।
- दीनबंधु एफ० एण्डूज ने इस उत्याकाण्ड को "जानबूझकर की गई हत्या कहा
- जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के समय पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर माइकल ओ० डायर ने इस कृत्य के संदर्भ में कहा कि "तुम्हारी कार्यवाही ठीक है, गवर्नर इसे स्वीकार करता है।

भारतीय प्रतिक्रिया –

- रवीन्द्रनाथ टैगोर ब्रिटिश सरकार द्वारा दो गई 'नाइट' की उपाधि वापस कर दो
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष सर शंकरन हायर ने वायसराय की कार्यकारिणी परिषद् की अपनी सदस्यता से इस्तीफा दे दिया।
- टैगोर ने कहा- समय आ गया है जब सम्मान के तमगे अपमान के बेतुके संदर्भ में हमारे कलंक को सुस्पष्ट कर देते हैं, जहाँ तक मेरा प्रश्न है मैं सभी विशेष उपाधियों से रहित होकर अपने देशवासियों के साथ खड़ा होना चाहता हूँ।"

हण्टर कमेटी (1919)-

- सरकार ने विवशता में जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड की जाँच हेतु एक अक्टूबर, 1919 ई० को लॉर्ड हण्टर की अध्यक्षता में एक आयोग की स्थापना की।
- इस आयोग में आठ सदस्यू थे जिसमें पाँच अंग्रेज और तीन भारतीय थे।
- **पाँचों अंग्रेजों के नाम-** 1. लार्ड हण्टर , 2. जस्टिस रैस्किन, 3. डब्लू० एफ० राइस, 4. मेजर जनरल सर जार्ज बैरो, 5. सर टॉमस स्मिथ
- **तीन भारतीय सदस्य निम्नलिखित थे-** 1. सर चिमन लाल सीतलवाड़, साहबजादा सुल्तान अहमद, जगत नारायण हण्टर कमेटी ने मार्च, 1920 ई० में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।
- इसके पहले ही सरकार ने दोषी लोगों को बचाने के लिए 'इण्डेम्निटी बिल' पास कर लिया था। कमेटी ने सम्पूर्ण प्रकरण पर लीपा-पोती करने का प्रयास किया। पंजाब के गवर्नर को निर्दोष घोषित किया गया।

- समिति ने डायर पर दोषों का हल्का बोझ डालते हुए कहा कि डायर ने कर्तव्य को गलत समझते हुए जरूरत से ज्यादा बल प्रयोग किया; परन्तु जो कुछ किया, निष्ठा से किया।
- तत्कालीन भारतीय सचिव माण्टेग्यू ने कहा-जनरल डायर ने जैसा उचित समझा, उसके अनुसार बिल्कुल नेक नियती से कार्य किया। अतः, उसे परिस्थिति को ठीक-ठीक समझने में गलती हो गई।
- डायर को उसके अपराध के लिए नौकरी से हटाने का दण्ड दिया गया। बितानी अखबारों ने उसे ब्रिटिश साम्राज्य का रक्षने एवं बितानी लार्ड सभा ने उसे ब्रिटिश साम्राज्य का शेर" कहा।
- सरकार ने उसकी सेवाओं के लिए उसे मान की तलवार" को उपाधि प्रदान की। इंग्लैण्ड के एक अखबार **"मार्निंग पोस्ट"** ने डायर के लिए 30 हजार पाउण्ड धनराशि इकट्ठा किया था।
- पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर 'माइकल ओ० डायर' की ऊधम सिंह ने मार्च, 1940 ई० में लंदन में हत्या कर दी। इन्हें गिरफ्तार कर मृत्युदण्ड दे दिया गया

तहकीकात कमेटी (1919)-

- **अध्यक्ष -** मदन मोहन मालवीय'
- **अन्य सदस्य -** महात्मा गाँधी, मोती लाल नेहरू, अब्बास तैय्यवजी, सी० आर० दास एवं पुपुल जयकर
- जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड की जाँच के लिए कांग्रेस ने भी एक समिति की नियुक्ति की, जिसे **'तहकीकात कमेटी'** कहा जाता है। इस समिति ने अपनी रिपोर्ट में अधिकारियों के इस बर्बर कृत्य के लिए उन्हें निंदा का पात्र बनाया एवं सरकार से दोषी लोगों के खिलाफ कार्यवाही एवं मृतकों के परिवारों को आर्थिक सहायता देने की माँग की, परन्तु सरकार ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। फलस्वरूप गाँधीजी ने असहयोग आन्दोलन चलाने का निर्णय लिया।

आंदोलन का चतुर्थ चरण (1919-1942 ई.)- गांधीवादी युग
Fourth Phase of the Movement (1919-1942 A.D.)- Gandhian Era

गांधी युग की शुरुआत

- गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में 20 वर्ष से अधिक समय व्यतीत किया।
- उनके सत्याग्रह प्रयोग वहीं से शुरू हुए। दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए, उन्होंने डेली इंडियन ओपिनियन की स्थापना की। 9 जनवरी, 1915 को गांधी भारत लौट आए।
- 1916 में अहमदाबाद में साबरमती आश्रम की स्थापना करने से पहले, उन्होंने अपने जीवन का पहला वर्ष भारत में घूमते हुए, भारतीय परिस्थितियों और लोगों का अध्ययन करते हुए बिताया।

दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी का प्रारंभिक जीवन और सत्य के प्रयोग

- **जन्म और पालन-पोषण:** मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को गुजरात के पोरबंदर में काठियावाड़ रियासत में हुआ था। उनके पिता राज्य के दीवान (मंत्री) थे।
- **प्रारंभिक कैरियर:** इंग्लैंड में कानून का अध्ययन करने के बाद, गांधी ने अपने मुवक्किल दादा अब्दुल्ला से जुड़े एक मामले के सिलसिले में 1898 में दक्षिण अफ्रीका की यात्रा की।
- **दक्षिण अफ्रीका का अनुभव:** दक्षिण अफ्रीका में, उन्होंने श्वेत नस्लवाद के भद्दे चेहरे को देखा, साथ ही दक्षिण अफ्रीका में मजदूरों के रूप में आए एशियाई लोगों के प्रति अपमान और अवमानना दिखाई दी।

- गाँधी जी को मेरित्सवर्ग नामक स्टेशन पर डरबन से प्रिटोरिया की यात्रा के दौरान प्रथम श्रेणी के डिब्बे से अंग्रेजों ने जबरन धक्का देकर नीचे उतार दिया। क्योंकि दक्षिण अफ्रीका में किसी भी भारतीय को गोरों के साथ प्रथम श्रेणी में यात्रा की अनुमति नहीं थी।
- 'मेरित्सबर्ग काण्ड' ने गाँधी जी के जीवन यात्रा की दिशा ही परिवर्तित कर दी।
- उन्होंने भारतीय मजदूरों को संगठित करने के लिए दक्षिण अफ्रीका में रहने का फैसला किया ताकि वे अपने अधिकारों के लिए लड़ सकें। 1914 में भारत लौटने तक वह वहीं रहे।
- दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों को तीन समूहों में विभाजित किया गया था: चीनी बागानों पर काम करने के लिए अनुबंधित भारतीय मजदूर; व्यापारी, अधिकतर मेमन मुस्लिम; और पूर्व अनुबंधित मजदूर ।
- ये भारतीय काफी हद तक अशिक्षित थे और बहुत कम या कोई अंग्रेजी नहीं बोलते थे। उन्होंने नस्लीय भेदभाव को जीवन के सामान्य पहलू के रूप में स्वीकार किया।

- उन्हें मतदान करने की अनुमति नहीं थी। वे केवल निर्दिष्ट क्षेत्रों में ही रह सकते थे जो अस्वास्थ्यकर और भीड़भाड़ वाले थे। एशियाई और अफ्रीकियों को रात 9 बजे के बाद अपने घरों से निकलने की अनुमति नहीं थी, न ही उन्हें सार्वजनिक फुटपाथों का उपयोग करने की अनुमति थी।

दक्षिण अफ्रीका में गांधी का उदारवादी संघर्ष (1894-1906)

- इस चरण के दौरान, गांधी दक्षिण अफ्रीका और ब्रिटेन के अधिकारियों को याचिकाएं और स्मृतिपत्र भेजने पर विश्वास करते थे।
- उन्होंने नेटाल इंडियन कांग्रेस की स्थापना की और भारतीयों के विभिन्न समूहों को एकजुट करने के लिए भारतीय विचारों को प्रकाशित करना शुरू किया।

गांधी का निष्क्रिय प्रतिरोध या दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह (1906-1914)

- दूसरा चरण, जो 1906 में शुरू हुआ, गांधी की निष्क्रिय प्रतिरोध या सविनय अवज्ञा की रणनीति के उपयोग से प्रतिष्ठित था, जिसे उन्होंने सत्याग्रह करार दिया।
- दक्षिण अफ्रीका में एक नए कानून के तहत भारतीयों को हर समय अपनी उंगलियों के निशान के साथ पंजीकरण प्रमाणपत्र (1906) ले जाने की आवश्यकता थी।
- उन्होंने गांव की साफ-सफाई, स्कूलों और अस्पतालों का निर्माण, और ग्रामीण नेताओं को पर्दा, अस्पृश्यता और महिलाओं के उत्पीड़न के उन्मूलन करने के लिए प्रोत्साहित करना शुरू किया।
- गांधी ने जमींदारों के खिलाफ संगठित विरोध और हड़ताल का नेतृत्व किया, जिन्होंने क्षेत्र के
- गरीब किसानों की खेती पर अधिक मुआवजे और अधिकार की पेशकश करते हुए ब्रिटिश सरकार के साथ एक समझौता किया।
- इस संघर्ष के दौरान ही गांधी को लोगों ने बापू और महात्मा के रूप में संदर्भित किया था।

गाँधी जी के प्रमुख आंदोलन/ Gandhiji's major movements

चम्पारण सत्याग्रह (1917 ई०)

- गाँधी जी ने सत्याग्रह का पहला प्रयोग 1917 ई० में बिहार के चम्पारण जिले में किया।
- यहाँ नील के खेतों में काम करने वाले किसानों पर यूरोपीय मालिक बहुत अधिक अत्याचार करते थे।
- किसानों को अपनी जमीन के कम से कम 3/20 भाग पर नील की खेती करना तथा उन मालिकों द्वारा तय दामों पर उन्हें बेचना पड़ता था। इसे "तिनकठिया पद्धति" भी कहा जाता है।
- जर्मनी के रासायनिक रंगों ने नील बाजार को लगभग समाप्त कर दिया।
- चम्पारण के यूरोपीय निलहे अपने कारखाने बंद करने के लिए बाध्य हुए। इस कारण किसान भी नील की खेती से मुक्ति चाहते थे।
- अंग्रेज निलहों ने इसका फायदा उठाया और उन्हें अनुबंध से मुक्त करने के लिए लगान और अन्य गैर कानूनी करो को बढ़ा दिया।
- 1917 ई० में चम्पारण के एक किसान 'राजकुमार शुक्ल' ने गाँधी जी से लखनऊ में भेंट की और उनसे चम्पारण आने का आग्रह किया।
- अन्य सहयोगी - बाबू राजेन्द्र प्रसाद, जे० बी० कृपलानी, महादेव देसाई, मजहरुल हक, नरहरि पारिख व युज किशोर थे।
- सरकार ने पूरे मामले की जाँच के लिए एक चम्पारण कृषि जाँच समिति गठित की।
- इस समिति का गठन बिहार के लेफटिनेंट गवर्नर एडवर्ड गाइड ने किया
- इसके अध्यक्ष एफ जी. स्लाई थे।
- गाँधी जी को भी इसका सदस्य बनाया गया।
- एन जी रंगा ने चम्पारण सत्याग्रह का विरोध किया था।
- गाँधीजी आयोग को यह समझाने में सफल रहे कि तिनकठिया प्रणाली समाप्त होनी चाहिए।
- जो धन अवैध रूप से वसूल किया गया है, उसके लिए हर्जाना दिया जाना चाहिए।
- यूरोपीय निलहे किसानों की 25% राशि वापस करने के लिए राजी हो गए और गाँधी जी ने इसे स्वीकार कर लिया।
- रवीन्द्रनाथ टैगोर ने चम्पारण सत्याग्रह के दौरान हो इन्हें "महात्मा" की उपाधि दी।

खेड़ा सत्याग्रह, 1918

- उन्होंने गुजरात के खेड़ा जिले के किसानों का समर्थन करने के लिए एक सत्याग्रह का आयोजन किया।
- फसल की विफलता और प्लेग महामारी के कारण, खेड़ा के किसान राजस्व का भुगतान करने में असमर्थ थे जिस कारण उन्होंने इसे कम करने की मांग की।
- चुनौतियों के बावजूद ब्रिटिश सरकार ने राजस्व में वृद्धि की। सरदार वल्लभभाई पटेल और अन्य समर्पित गांधीवादियों ने ग्रामीण इलाकों का दौरा किया व ग्रामीणों को संगठित किया और उन्हें राजनीतिक नेतृत्व और दिशा प्रदान की।
- एक संयुक्त विरोध का सामना करने के बाद, ब्रिटिश सरकार एक समझौते पर पहुंची और उस वर्ष और अगले वर्ष के लिए राजस्व माफ कर दिया गया।

अहमदाबाद में मिलों की हड़ताल, 1918

- महात्मा गांधी ने 1918 में सूती मिल मजदूरों के बीच सत्याग्रह आंदोलन आयोजित करने के लिए अहमदाबाद की यात्रा की।
- श्रमिकों ने महामारी के बाद अन्य बातों के साथ-साथ 'प्लेग बोनस' को जारी रखने की मांग की।
- महात्मा गांधी ने विवाद में हस्तक्षेप किया और अहमदाबाद के श्रमिकों और मिल मालिकों के बीच मध्यस्थता की।
- उन्होंने कर्मचारियों को हड़ताल पर जाने और 35% वेतन वृद्धि की मांग करने का आह्वान किया। उन्होंने पहली बार आमरण अनशन किया जिससे मिल मालिकों ने श्रमिकों की वेतन वृद्धि करने का निर्णय लिया।
- गांधी के प्रमुख सहयोगी **अनसूया बेन** सत्याग्रह के दौरान गांधी के प्रमुख सहायकों में से एक थीं। हालांकि वह मिल मालिकों में से एक और गांधी के करीबी दोस्त अंबालाल साराभाई की बहन थीं।
- उन्होंने मिल हड़ताल के दौरान 'अहमदाबाद टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन' की भी स्थापना की। इसने गांधी को एक शहरी और औद्योगिक आधार प्रदान किया और उन्हें शहर में औद्योगिक संबंधों को स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त किया।

चंपारण, अहमदाबाद और खेड़ा से लाभ

- गांधी ने लोगों को अपनी सत्याग्रह तकनीक के उपयोगिता का प्रदर्शन किया।
- उन्होंने जनता के बीच अपने पैर जमा लिए जिससे उनके लोकप्रिय अनुयायी बनाना शुरू हुए।
- उन्होंने जनता के बीच अपनी पैठ बनाई और उनकी ताकत और कमजोरियों का बेहतर ज्ञान प्राप्त किया
- उन्होंने कई लोगों, विशेषकर युवाओं से सम्मान और समर्पण प्राप्त किया।

गांधी की प्रमुख विचारधाराएँ

- गांधीवादी विचारधारा के दो मूलभूत तत्व, सत्य और अहिंसा हैं।
    - **सत्य:** गांधी जी के अनुसार वचन और आचरण की सत्यता का सापेक्ष सत्य है, साथ ही परम सत्य - परम सत्य है, ईश्वर परम सत्य है (चूंकि ईश्वर भी सत्य है), और नैतिकता - नैतिक नियम और संहिता - इसकी नींव है।
    - **अहिंसा:** केवल शांतिपूर्ण होने या प्रत्यक्ष हिंसा की कमी के बजाय, महात्मा गांधी द्वारा सक्रिय प्रेम का प्रतिनिधित्व करने को अहिंसा माना जाता है - जो हर तरह से हिंसा के विपरीत ध्रुव है।
- गांधी जी ने अपनी व्यापक अहिंसक कार्रवाई की रणनीति को सत्याग्रह के रूप में संदर्भित किया। इसमें हर अन्याय, दमन और शोषण के खिलाफ शुद्धतम आत्मबल को प्रवाहित करने पर जोर दिया जाता है।
- यह दूसरों को कोई हानि न पहुँचाते हुए व्यक्तिगत पीड़ा द्वारा अधिकार प्राप्त करने का साधन है।
- सर्वोदय एक वाक्यांश है जिसका अर्थ है 'सार्वभौमिक उत्थान' या 'सभी की प्रगति' । गांधी जी ने राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर जॉन रस्किन की पुस्तिका, **"अनटू दिस लास्ट"** के अपने अनुवाद के शीर्षक के रूप में वाक्यांश गढ़ा।
- हालाँकि स्वराज शब्द का शाब्दिक अर्थ है "स्व-शासन", गांधी जी ने इसे संपूर्ण क्रांति का अर्थ दिया जो जीवन के सभी पहलुओं को समाहित करती है।
- गांधी जी के लिए, लोगों का स्वराज, व्यक्तिगत स्वराज (स्व - शासन) का ही रूप था,
- गांधी जी ने **न्यासिता** को एक सामाजिक आर्थिक सिद्धांत के रूप में प्रस्तावित किया।

- यह धनी लोगों के न्यासों के न्यासियों के रूप में सेवा करने के लिए एक तंत्र स्थापित करता है जो लोगों के सामान्य कल्याण की देखभाल करता है।
- स्वदेशी किसी स्थानीय समुदाय के भीतर राजनीतिक और आर्थिक दोनों रूपों में कार्य करने पर जोर देता है।
- यह समुदाय और आत्मनिर्भरता के बीच का संबंध है।

वर्तमान संदर्भ में गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता

- सत्य गांधीवादी दर्शन का केंद्र है, क्योंकि उन्होंने अपने पूरे जीवन में सत्यवादी होने का प्रयास किया। संकट की तात्कालिकता की परवाह किए बिना, विभिन्न स्थितियों में सत्य पर गांधीवादी विचार अपरिवर्तनीय थे।
- व्यापक भ्रष्टाचार के समय में, स्वयं के लिए और जनता के लिए सत्यता का यह मूल्य लोक सेवकों के लिए महत्वपूर्ण है।
- गांधीवाद का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो ब्रिटिश राज के खिलाफ भारत के स्वतंत्रता अभियानो के दौरान गांधीजी द्वारा प्रयोग किया जाने वाला प्रमुख हथियार था।
- गांधीवाद, आस्था के लिहाज से सहिष्णु था। आज दुनिया के उन स्थानों पर ज्यादा धार्मिक और आस्था के लिहाज से लोगों को सहिष्णु होने की जरूरत है जहां धर्म के नाम पर हिंसा की जाती है।
- समाज में अन्य बातों के अलावा धर्म, जाति, जातीयता और क्षेत्र के आधार पर दैनिक आधार पर होने वाली दुनिया में जातीय पूर्वाग्रहों को बेअसर करने में सहायता मिलेगी।
- गांधीजी जाति व्यवस्था के विरोधी थे और उन्होंने निचली जाति के लोगों को सम्मानित करने के लिए हरिजन शब्द गढ़ा था।
- समाजवाद के लिए गांधी का दृष्टिकोण राजनीतिक से अधिक सामाजिक है, जैसे कि गांधीजी ने शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल तक सार्वभौमिक पहुंच के साथ गरीबी, भूख और बेरोजगारी से मुक्त समाज की कल्पना की थी।
- गरीबी उन्मूलन से लेकर सर्व शिक्षा अभियान और सार्वभौमिक स्वास्थ्य देखभाल (आयुष्मान भारत) से लेकर कौशल भारत कार्यक्रमों तक, गांधीवाद के मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में कार्य करता है।
- सत्ता के विकेंद्रीकरण की गांधीवादी अवधारणा को जमीनी स्तर पर सशक्त स्थानीय स्वशासन के माध्यम से लोकतंत्र में प्राप्त किया जा रहा है।
- उदाहरण के लिए, भारत सरकार ने क्रमशः ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में पंचायती राज और नगर पालिका प्रणाली को लागू करके स्थानीय स्वशासन को अपनाया है।
- गांधीजी ने स्वच्छता या स्वच्छता को उच्च मूल्य दिया, जैसा कि वे कहा करते थे, 'स्वच्छता ही सेवा है'।
- हालाँकि, यह स्वच्छता आंदोलन केवल शारीरिक स्वच्छता से कहीं अधिक, व्यक्ति की आंतरिक स्वच्छता पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता पर जोर देती है।
- स्वच्छ भारत के लिए स्वच्छ सड़कों और शौचालयों के अलावा, हमें अधिक पारदर्शिता और जवाबदेही के साथ भ्रष्टाचार मुक्त समाज की आवश्यकता है।
- गांधीजी का मानना था कि "पृथ्वी के पास मानव की जरूरतों के लिए पर्याप्त है, लेकिन मानव के लालच के लिए नहीं।"
- गांधीवाद का अब बहुत अधिक नैतिक और व्यवहारिक महत्व है क्योंकि समाज के मूल्यों में गिरावट दिख रही है।
- गांधीजी के राजनीतिक प्रयासों ने हमें स्वतंत्रता प्रदान की, लेकिन उनके दर्शन इतने वर्षों के बाद भी भारत और दुनिया को आलोकित कर रहे हैं। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को सुखी, समृद्ध, स्वस्थ, शांतिपूर्ण और स्थायी भविष्य के लिए अपने दैनिक जीवन में प्रमुख गांधीवादी विचारों का पालन करना चाहिए।

रॉलेट एक्ट (1919 ई0)

- इंग्लैण्ड हाईकोर्ट के न्यायाधीश **सिडनी रॉलेट** की अध्यक्षता में **10 दिसम्बर, 1917 ई०** को एक समिति का गठन जो क्रांतिकारी गतिविधियों को रोकने का उपाय सुझा सके।
- समिति ने इसके लिए कठोर नियमों की सिफारिश की।
- किसी भी व्यक्ति को मात्र संदेह के आधार पर गिरफ्तार किया जाए, उसकी गतिविधियों पर निगरानी रखी जाए, गुप्त रूप से मुकदमा चलाकर दंडित किया जाए इत्यादि।
- भारतीय नेताओं के कड़े विरोध के बावजूद सरकार ने 18 मार्च, 1919 को रॉलेट ऐक्ट पास कर दिया।

- भारतीयों ने इसे 'काला कानून' कहा और इसका विरोध किया।
- भारतीयों ने इसके खिलाफ नारा लगाया, **"कोई वकील नहीं, कोई दलील नहीं, कोई अपील नहीं।"**
- जिन्ना, मदनमोहन मालवीय और मजहरुल हक ने कानून के विरोध में केंद्रीय व्यवस्थापिका सभा से इस्तीफा दे दिया।
- महात्मा गाँधी ने भी इसका विरोध किया।
- गाँधी के सुझाव पर कांग्रेस ने पूरे देश में कानून का विरोध करने के लिए **6 अप्रैल, 1919 ई०** को हड़ताल का आह्वान किया तथा सत्याग्रह सभा की स्थापना की।
- फलस्वरूप दिल्ली, अमृतसर, लाहौर, मुल्तान, जालंधर अहमदाबाद इत्यादि जगहों में हड़ताल एवं प्रदर्शन किए गए तथा सभाएं की गई।
- सरकार के आदेश पर अनेक स्थानों पर निहत्थी भीड़ पर पुलिस ने गोलियां चलाई जिसमें अनेक व्यक्ति मारे गए।
- पंजाब की स्थिति सबसे ख़राब थी, गाँधी जी के पंजाब-प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया गया तथा मार्ग में ही **8 अप्रैल 1919 ई0** को उन्हें पंजाब के पलवल (हरियाणा) में गिरफ्तार कर बम्बई भेज दिया गया।
- पंजाब के उप-गवर्नर **जनरल ओ० डायर** ने पूरे पंजाब में मार्शल लॉ लागू कर दिया था।
- इसी बीच 9 अप्रैल को रामनवमी के त्योहार पर हिंदू-मुसलमानों ने संयुक्त रूप से एक विशाल जुलूस निकाला।
- सरकार ने दो प्रमुख नेताओं, **डॉ० सत्यपाल और किचलू** को गिरफ्तार कर अमृतसर से निर्वासित कर दिया।

जलियाँवाला बाग हत्याकांड (13 अप्रैल, 1919)

- 13 अप्रैल, 1919 को (वैशाखी के दिन) अमृतसर के जलियांवाला बाग में गोलीकाण्ड और नेताओं (किचलू, सत्यपाल) की गिरफ्तारी के विरुद्ध एक शान्तिपूर्ण सभा का आयोजन किया गया था।
- सभास्थल चारों ओर से ऊँची-ऊंची दीवारों से घिरा था।
- सभा स्थल पर उपस्थित अंग्रेज जनरल ओ डायर ने बिना किसी पूर्व सूचना व चेतावनी के भीड़ पर गोली चलवा दी, जिसमें लगभग 1000 लोग मारे गये।
- इस घटना ने राष्ट्र की सोयी हुई आत्मा को झकझोर डाला और राष्ट्रीय आन्दोलन की दिशा बदल दी।
- **दीनबंधु सी.एफ. एण्ड्रूज** ने इस हत्याकाण्ड को जानबूझ कर की गई क्रूर हत्या की संज्ञा दी।
- ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमन्स के एक सदस्य ने कहा कि **"ऐसी वर्बरता की मिसाल संसार में कहीं भी मिलना कठिन है।"**
- इस हत्याकाण्ड के विरोध में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने **'नाइट'/'सर'** की उपाधि वापस कर दी,
- शंकर नायर ने वायसराय की **कार्यकारिणी के सदस्यता** से त्यागपत्र दे दिया। सरकार ने इस हत्याकाण्ड की जाँच हेतु हण्टर समिति की नियुक्ति की।

हण्टर कमेटी (1919)-

- अक्टूबर, 1919 ई० को लॉर्ड हण्टर की अध्यक्षता में इस आयोग की स्थापना की।
- इस आयोग में आठ सदस्य थे जिसमें पाँच अंग्रेज और तीन भारतीय थे।
- पाँचों अंग्रेजों के नाम- 1. लार्ड हण्टर 2. जस्टिस रैस्किन 3. डब्लू० एफ० राइस 4. मेजर जनरल सर जार्ज बैरो 5. सर टॉमस स्मिथ
- तीन भारतीय सदस्य निम्नलिखित थे- 1. सर चिमन लाल सीतलवाड़ 2 साहबजादा सुल्तान अहमद 3. जगत नारायण
- मार्च, 1920 ई० में इसने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।
- सरकार ने दोषियों को बचाने के लिए पहले ही "इण्डेम्निटी बिल" पास कर लिया था।
- कमेटी ने सम्पूर्ण प्रकरण पर लीपा-पोती करने का प्रयास किया।
- पंजाब के गवर्नर को निर्दोष घोषित किया गया।
- समिति ने कहा कि डायर ने कर्तव्य को गलत समझते हुए जरूरत से ज्यादा बल प्रयोग किया परन्तु जो कुछ किया, निष्ठा से किया।
- डायर को उसके अपराध के लिए नौकरी से हटाने का दण्ड दिया गया।

Note:-

- ब्रितानी अखबारों ने उसे बिटिश साम्राज्य का रक्षक एवं वितानी लार्ड सभा ने उसे "ब्रिटिश साम्राज्य का शेर कहा।
- सरकार ने उसकी सेवाओं के लिए उसे मान की तलवार की उपाधि प्रदान की। पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर 'माइकल ओ० डायर' की अधम सिंह ने मार्च 1940 ई० में लंदन में हत्या कर दी।
- इन्हें गिरफ्तार कर मृत्युदण्ड दे दिया गया।

तहकीकात कमेटी (1919)

- जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड की जाँच के लिए कांग्रेस ने एक समिति नियुक्ति की जिसे 'तहकीकात कमेटी' कहा जाता है।
- इसके अध्यक्ष मदन मोहन मालवीय थे।
- इस समिति की रिपोर्ट का प्रारूप लिखने का कार्य गाँधी जी को दिया गया था।
- अन्य सदस्य - महात्मा गांधी, मोती लाल नेहरू, अब्बास योगी०आर० दास एवं पुपुल जयकर थे।
- इस समिति ने अपनी रिपोर्ट में सरकार से दोषी लोगो के खिलाफ कार्यवाही एवं मृतकों के परिवारों को आर्थिक सहायता देने की मांग की , परन्तु सरकार ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। फलस्वरूप गाँधीजी ने असहयोग आन्दोलन, चलाने का निर्णय लिया।

खिलाफत आन्दोलन (1919-24 ई.)

- 1916 के लखनऊ समझौते ने राष्ट्रीय संघर्ष में हिंदू मुस्लिम एकता की नींव रखी। तुर्की के मुद्दे ने गांधी को अंग्रेजों के खिलाफ एक संयुक्त प्रयास कर हिंदुओं और मुसलमानों के बीच एकता स्थापित करने का अवसर प्रदान किया।
- भारत के मुसलमान तुर्की के सुल्तान को इस्लाम का 'खलीफा' मानते थे।
- अंग्रेजो ने भारतीय मुसलमानों को वचन दिया था कि वे प्रथम के बाद तुर्की साम्राज्य को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचायेंगे।
- लेकिन युद्ध की समाप्ति के बाद 10 अगस्त, 1920 को सेव्रेस की संधि हुई।
- संधि के अनुसार तुर्की के साम्राज्य को मित्र राष्ट्रों ने आपस में बांट लिया।
- इस प्रकार तुर्की का साम्राज्य छित्र-भित्र हो गया। इससे भारतीय मुसलमान बहुत ही क्षुब्ध हो उठे।
- मित्र राष्ट्रों ने खलीफा का अपमान किया और इस्लाम की पवित्र भूमि पर अवांछनीय अधिकार स्थापित कर लिया। यही खिलाफत आन्दोलन का प्रमुख कारण था।
- तुर्की के मुद्दे ने गांधी को अंग्रेजों के खिलाफ एक संयुक्त प्रयास कर हिंदुओं और मुसलमानों के बीच एकता स्थापित करने का अवसर प्रदान किया।
- तुर्की के समर्थक - हकीम अजमल खान, डॉ. मुख्तार अहमद अंसारी, मौलाना अल हसन, अब्दुल वारी, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, मोहम्मद अली, शौकत अली आदि थे।
- अली बंधुओं (मोहम्मद और शौकत अली) ने अपने पत्र कामरेड में तुर्की एवं इस्लामी की परम्पराओं के प्रति सहानुभूति व्यक्त की।
- 17 अक्टूबर, 1919 को अखिल भारतीय स्तर पर खिलाफत दिवस मनाया गया।
- सितम्बर, 1919 में अखिल भारतीय खिलाफत कमेटी का गठन किया गया।
- दिल्ली में 1919 को होने वाले खिलाफत कमेटी के सम्मेलन की अध्यक्षता महात्मा गाँधी ने की।
- भारतीय खिलाफत कमेटी ने 1924 ई. में विरोध प्रदर्शन के लिए एक प्रतिनिधि मंडल तुर्की भेजा।
- मुस्तफा कमाल पासा ने इस प्रतिनिधि मण्डल की केवल उपेक्षा ही नहीं किया, बल्कि मार्च, 1924 ई. को खलीफा का पद भी समाप्त कर दिया।
- उसके बाद भारत में खिलाफत आन्दोलन का अन्त हो गया।

कांग्रेस का नागपुर अधिवेशन

- वर्ष - दिसम्बर, 1920,
- स्थान - नागपुर
- अध्यक्ष - विजय राघवाचार्य
- इसमें कलकत्ता में कांग्रेस के विशेष अधिवेशन (सितम्बर 1920 ई०) में पारित असहयोग आन्दोलन की पुष्टि कर दी गई।
- इस अधिवेशन में असहयोग आन्दोलन से सम्बद्ध प्रस्ताव, सी० आर० दास ने रखा था।

- कांग्रेस का नेतृत्व अब 15 सदस्यों की एक वर्किंग कमेटी को सौंपा गया जिसमें अध्यक्ष और सचिव शामिल थे।

असहयोग की अवधारणा की उत्पत्ति:

- महात्मा गांधी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक हिंद स्वराज (1909) में कहा है कि भारत में ब्रिटिश शासन भारतीयों की भागीदारी से स्थापित हुआ था और केवल उनके सहयोग के कारण ही कायम था।
- यदि भारतीय असहयोग करने में सफल रहे, तो भारत में ब्रिटिश नियंत्रण एक वर्ष में समाप्त हो जाएगा, और स्वराज इसका स्थान ले लेगा।
- उनके नेतृत्व में रोलेट सत्याग्रह की सफलता के साथ, गांधीजी ने सत्याग्रह से असहयोग तक कार्यक्रमों को अगले स्तर तक ले जाने का फैसला किया।

सहयोग बनाम असहयोग

- जबकि गांधी शुरू में अंग्रेजों के साथ सहयोग कर रहे थे कुछ ऐसी घटनाएँ घटी जो असहयोग की ओर ल गई जैसे पंजाब में घटनाऐं (जलियांवाला बाग, मार्शल लॉ, हंटर रिपोर्ट) और तुर्की के खलीफा के प्रतिकार ने उन्हें असहयोग के मार्ग को अपनाने के लिए प्रेरित किया।
    - भारतीयों ने सहयोग करना बंद कर दिया, शासन चरमरा गया, जैसा कि पहले कहा गया था कि यह केवल भारतीयों का सहयोग ही था जिसने भारत में ब्रिटिश नियंत्रण को बनाए रखा और यदि भारतीय सहयोग करना बंद कर देते, तो शासन चरमरा जाएगा।

असहयोग आंदोलन की पृष्ठभूमि:

- 1 अगस्त, 1920 को 'असहयोग आंदोलन शुरू किया गया था।
- सितंबर 1920 में, कांग्रेस ने कलकत्ता में एक प्रस्ताव पारित किया, जिसकी अध्यक्षता लाला लाजपत राय ने की, जिसमें गांधीजी की सरकार के साथ असहयोग की योजना पर सहमति व्यक्त की गई, जब तक कि पंजाब (जलियांवाला बाग) और खिलाफत की गलतियों को पूर्ववत नहीं किया गया और स्वराज की स्थापना की गई।
- विभिन्न सामाजिक आर्थिक समूह इस आंदोलन में लगे हुए थे, प्रत्येक का अपना विशेष उद्देश्य था, और दिसंबर 1920 में नागपुर सत्र में इसकी पुष्टि की गई थी।
- उन सभी ने स्वराज की अपील पर प्रतिक्रिया व्यक्त की, हालांकि इस शब्द का अर्थ अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग था।
- 1857 के विद्रोह के बाद पहली बार असहयोग आंदोलन ने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को चुनौती दी।
- गांधीजी ने प्रसिद्ध रूप से कहा, "यदि असहयोग को एक आंदोलन के रूप में बनाए रखा जाए तो एक वर्ष के भीतर स्वराज संभव है।"
- हजारों छात्रों ने ब्रिटिश स्कूलों और विश्वविद्यालयों को छोड़ दिया, और जामिया मिलिया, काशी विद्यापीठ, बिहार विद्यापीठ और अन्य सहित राष्ट्रीय स्कूलों और संस्थानों की का उदय हुआ।
- इन संस्थानों का नेतृत्व सुभाष चंद्र बोस, लाला लाजपत राय और जाकिर हुसैन समेत कई नेताओं ने किया था।
- तिलक के सम्मान और राष्ट्रीय भावनाओं को बढ़ावा देने के लिए स्थापित तिलक-स्वराज फंड को 1 करोड़ रुपये से अधिक की राशि मिली।
- जिन्ना और मालवीय ने स्वराज के विचार का विरोध किया और जिन्ना ने 15 साल के सहयोग के बाद कांग्रेस छोड़ दी।
- मोतीलाल नेहरू, पुरुषोत्तम दास टंडन, गणेश शंकर विद्यार्थी, जीबी पंत और लाल बहादुर शास्त्री सहित मध्य प्रांत के कई प्रमुख राष्ट्रवादियों ने भाग लिया।
- लाला लाजपत राय ने पंजाब के किसानों का नेतृत्व किया, बाबा राम चंद्र ने अवध के किसानों का नेतृत्व किया और पट्टाभाई सीतारमैया ने आंध्र के किसानों का नेतृत्व किया।
- शहरों में मध्यम वर्ग की भागीदारी के साथ आंदोलन शुरू हुआ। हजारों छात्रों ने सरकार द्वारा संचालित संस्थानों और कॉलेजों को छोड़ दिया, प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों ने इस्तीफा दे दिया और वकीलों ने अभ्यास करना बंद कर दिया।
- मद्रास को छोड़कर सभी प्रांतों में 1920 के परिषद चुनावों का बहिष्कार किया गया था, जहाँ जस्टिस पार्टी, गैर-ब्राह्मण पार्टी, का मानना था कि परिषद में प्रवेश करना सत्ता प्राप्त करने का एक तरीका था।

असहयोग आंदोलन का महत्व:

- **आर्थिक परिणाम:** असहयोग के आर्थिक परिणाम अधिक नाटकीय थे। विदेशी सामानों का बहिष्कार किया गया, शराब की दुकानों पर धरना दिया गया और बड़े पैमाने पर अलाव में विदेशी कपड़ों को जलाया गया।
- **शहरी इलाकों में दबिश :** हालांकि, कई कारणों से शहरी क्षेत्रों में आंदोलन को दबा दिया गया था, जिसमें यह तथ्य भी शामिल था कि खादी बड़े पैमाने पर उत्पादित मिल के कपड़े की तुलना में अधिक महंगी थी, और शहरी गरीब इसे वहन नहीं कर सकते थे। ब्रिटिश संस्थानों के पूर्ण बहिष्कार में कठिनाइयाँ थीं क्योंकि वे महत्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान करते थे।
- **ग्रामीण क्षेत्रों में असहयोग**: आंदोलन शहरों से ग्रामीण क्षेत्रों में फैल गया, जिसमें किसान और आदिवासी क्षेत्र शामिल हैं।

असहयोग के बारे में कांग्रेस की चिंताएँ:

- हालांकि, कांग्रेस के कई सदस्य सुझावों को लेकर आशंकित थे। वे नवंबर 1920 के परिषद चुनावों का बहिष्कार करने में हिचकिचा रहे थे क्योंकि उन्हें लगा कि इस पहल से सार्वजनिक अशांति फैल जाएगी।
- सितंबर से दिसंबर के बीच कांग्रेस के भीतर गरमागरम बहस हुई। एक समय के लिए ऐसा लगा कि आंदोलन के समर्थकों और विरोधियों के बीच अभिसरण का कोई बिंदु नहीं था।
- महात्मा गांधी ने असहयोग अभियान (1920-22) का नेतृत्व किया। बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्र पाल, मोहम्मद अली जिन्ना और एनी बेसेंट जैसे दिग्गजों ने प्रस्ताव का जोरदार विरोध किया। हालाँकि, भारतीय राष्ट्रवादियों की युवा पीढ़ी ने गांधीजी की जय-जयकार की और उनका समर्थन किया।
- उनकी पहल को कांग्रेस पार्टी ने अपनाया, और उन्हें अबुल कलाम आज़ाद, मुख्तार अहमद अंसारी, हकीम अजमल खान, अब्बास तैयबजी, मौलाना मोहम्मद अली और मौलाना शौकत अली जैसे मुस्लिम नेताओं का व्यापक समर्थन मिला।

उपलब्धियां

- **कांग्रेस एक लोकप्रिय पार्टी:** पहले, कांग्रेस के खिलाफ की गई सबसे गंभीर आलोचनाओं में से एक यह थी कि यह कुलीन वर्ग की पार्टी थी जो आबादी के एक छोटे से हिस्से का प्रतिनिधित्व करती थी।
- **सभी वर्गों की भागीदारी:** पहली बार सभी वर्गों से प्रतिभागी आए। 1920 के कांग्रेस अधिवेशन से, शामिल होने की लागत में काफी कटौती की गई, जैसा कि शामिल होने की उम्र थी, इसे गांवों तक ले जाकर अपने जनाधार का विस्तार किया।
- **शक्तिशाली नेता उभरे**: खिलाफत आंदोलन ने मौलाना आज़ाद, सैफुद्दीन किचलू, एम ए अंसारी और अन्य सहित कई शक्तिशाली नेताओं का उत्पादन किया।
- **राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में चरखा:** गांधी ने अहिंसा और सत्याग्रह के रूप में नया बौद्धिक समर्थन प्रदान किया, जो बाद में राष्ट्रीय प्रतिरोध के लिए महत्वपूर्ण उपकरण बन गया।
- **मुसलमानों ने भी भाग लिया:** मालाबार में मोपला विद्रोह के अपवाद के साथ, आंदोलन में मुस्लिम भागीदारी देखी गई।
- **ब्रिटिश भय को दूर करना:** लोगों के मन से ब्रिटिश पराक्रम का भय दूर कर दिया।
- **शैक्षिक संस्थानों का गठन:** जामिया मिल्लिया इस्लामिया, बिहार विद्यापीठ, काशी विद्यापीठ, गुजरात विद्यापीठ और अन्य सहित कई शैक्षणिक संस्थानों का गठन किया गया।

असफलता

- **स्वराज पूरा नहीं हुआ:** स्वराज, जैसा कि घोषित किया गया था, एक साल में पूरा नहीं हुआ था। इससे कई लोग निराश हुए।
- **मुस्लिम अलगाव**: असहयोग की विफलता का अर्थ खिलाफत की विफलता भी थी। अली बंधुओं ने अपनी असफलता के लिए कांग्रेस को जिम्मेदार ठहराया। आगे की कांग्रेस की कार्रवाइयों ने मुसलमानों से कम उत्साहपूर्ण सहयोग प्राप्त किया।
- **कांग्रेस में विभाजन:** आंदोलन की याद के साथ, कई लोगों ने इसे नापसंद किया, जबकि अन्य स्वराज पार्टी को जन्म देते हुए प्रांतीय चुनावों में भाग लेने के लिए उत्सुक हो गए।
- **क्रांतिकारी गतिविधि का पुनरुत्थान:** इसने बंगाल के विभाजन के बाद क्रांतिकारी गतिविधि के दूसरे चरण को भी जन्म दिया।
- **जन पहुंच:** खादी गरीबों के लिए अवहनीय थी, जिसने मध्यम और निम्न वर्ग को आंदोलन से दूर कर दिया।

चौरी-चौरा कांड

- उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले में भीड़ ने 22 अंग्रेज सिपाहियों को थाने के अन्दर जिंदा जला दिया।
- चौरी-चौरा की घटना से गाँधी जी इतने आहत हुए कि उन्होंने शीघ्र असहयोग आन्दोलन को समाप्त करने का निर्णय लिया।

- 12 फरवरी, 1922 को बारदोली में हुई कांग्रेस की बैठक में असहयोग आन्दोलन को समाप्त करने का निर्णय लिया गया और आन्दोलन समाप्त हो गया।
- जिस समय जनता का उत्साह अपने चरम बिन्दु पर था, उस समय गाँधी जी द्वारा आन्दोलन को वापस लेने के निर्णय से देश को आघात पहुँचा।
- मोतीलाल नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस, जवाहरलाल नेहरु, सी. राजगोपालाचारी, सी.आर. दास, अलीबंधु आदि ने गाँधी के इस निर्णय की आलोचना की।
- आन्दोलन को समाप्त करने के अपने निर्णय के बारे में गाँधी जी ने यंग इंडिया में लिखा कि 'आन्दोलन को हिंसक होने से बचाने के लिए मैं हर एक अपमान, यंत्रणापूर्ण बहिष्कार, यहाँ तक कि मौत भी सहने को तैयार हूँ।"
- आन्दोलन की समाप्ति के बाद गाँधी जी की स्थिति बड़ी कमजोर हुई।
- सरकार ने इस स्थिति का फायदा उठाकर 10 मार्च, 1922 को गाँधी को गिरफ्तार कर लिया।
- न्यायाधीश ब्रूम फील्ड ने गाँधी को असन्तोष भड़काने के अपराध में 6 वर्ष की कैद की सजा दी।

स्वराज पार्टी (1923)

- स्थापना - 1923 ई०
- संस्थापक - चितरंजन दास एवं मोतीलाल नेहरू
- स्थान - इलाहाबाद
- अध्यक्ष - सी० आरु दास
- महासचिव - मोतीलाल नेहरू
- विधान परिषदों के चुनाव में भाग लेने अथवा न लेने के विषय में काग्रेसियो के मध्य विवाद हो गया।
- चितरंजन दास और मोतीलाल नेहरू ने इन सभाओं में प्रवेश कर असहयोग करने की बात रखी। ये लोग परिवर्तनवादी कहलाए।
- परन्तु डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, राजगोपालाचारी, बल्लभ भाई पटेल, डॉ० अन्सारी, एन० जी० रंगा, आयंगर आदि नेताओं ने परिषदों में प्रवेश करने का विरोध किया। ये लोग अपरिवर्तनवादी कहलाए।
- दिसम्बर, 1922 ई० में कांग्रेस के गया अधिवेशन में कौंसिल में प्रवेश न लेने का प्रस्ताव पारित हुआ, फलस्वरूप चितरंजन दास ने त्यागपत्र दे दिया।
- मार्च, 1923 ई० में इलाहाबाद में अपने समर्थकों का अखिल भारतीय सम्मेलन बुलाया और एक नई राजनीतिक पार्टी 'स्वराज पार्टी' की स्थापना की।
- इस नई पार्टी ने कांग्रेस के अन्दर रहकर ही चुनाव लड़ेने का निर्णय लिया। अपरिवर्तनवादियों तथा स्वराजवादियों की कटुता को दूर करने के लिए सितम्बर , 1923 ई० में मौलाना आजाद की अध्यक्षता में दिल्ली में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन बुलाया गया।
- इसमें कांग्रेस ने विधानमण्डलों में प्रवेश के कार्यक्रमों को स्वीकार कर लिया।
- 1924 ई० में खराब स्वास्थ्य के कारण गाँधी जी जेल से छोड़ दिए गए। उन्होंने स्वराजवादियों के राजनीतिक कार्यक्रम का समर्थन किया।
- 1923 ई० के चुनावों में स्वराज पार्टी को काफी सफलता मिली।
- सेन्ट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली की 101 निर्वाचित सीटों में से 42 सीटों पर इनकी जीत हुई।
- मध्य प्रान्त में बहुमत मिला।
- बम्बई तथा उ० प्र० में भी इन्हें अच्छी सफलता मिली।
- मद्रास और पंजाब में जातिवाद और साम्प्रदायिकता की लहर के कारण इन्हें कुछ खास सफलता नहीं मिली।
- केन्द्रीय विधानमण्डल में स्वराजवादियों के नेता मोतीलाल नेहरू थे।
- बंगाल विधानमंडल में इनके नेता चितरंजन दास थे।

स्वराज पार्टी का आकलन

सफलता

- 1928 के सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक को पराजित करना, जिसने साम्यवादी विचारधारा से प्रेरित विध्वंसक तत्वों को निर्वासित करने का प्रयास किया था।
- जब राष्ट्रीय आंदोलन अपने सबसे कमजोर स्तर पर था, उस समय राजनीतिक परिदृश्य से गांधीजी की अनुपस्थिति से उत्पन्न राजनीतिक शून्य को उन्होंने भर दिया।
- इसने क्षेत्रीय सरकारों की वास्तविक प्रकृति के साथ-साथ 1919 के सुधारों के खोखलेपन को भी उजागर किया।
- इनकी मांगों के परिणामस्वरूप 1924 ई० में सरकार ने 1919 ई० के अधिनियम की समीक्षा के लिए मुण्डीर्मन कमेटी को नियुक्ति की।
- विधानसभा में मोतीलाल और सीआर दास की सक्रिय भागीदारी ने मीडिया का ध्यान आकर्षित किया, जिसने विधान सभाओं के कामकाज में लोगों की रुचि को जगाने का काम किया और राजनीतिक जागरूकता के स्तर को बढ़ाया।
- ये बजट को प्रत्येक वर्ष अस्वीकृत कर देते थे। परिणामस्वरूप वायसराय को अपने विशेषाधिकार द्वारा इसे पारित करना पड़ता था। इस तरह इन्होंने नए विधानमण्डलों का असली चरित्र उजागर किया।
- स्वराजवादियों ने उत्तरदायी शासन की स्थापना करने के लिए गोलमेज सम्मेलन बुलाने का सुझाव दिया।
- 1925 ई० में विठ्ठल भाई पटेल को सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली का अध्यक्ष बनवाने में सफलता मिली।
- 1925 ई० में मोतीलाल नेहरू ने स्क्रीन कमेटी की सदस्यता स्वीकार की जो सेना के तीव्र भारतीयकरण के लिये नियुक्त की गई थी।

स्वराजवादी विफलताएँ

- 1925 ई० में चितरंजन दास को मृत्यु से स्वराज दल को बड़ा धक्का लगा।
- वे सरकारी नीतियों में सेंध लगाने में असमर्थ थे और जल्द ही सत्ता की राजनीति में शामिल हो गए।
- वे आम जनता से नहीं जुड़ पा रहे थे।
- उन्होंने ग्रामीण हितों के मुस्लिम समर्थकों को अलग-थलग कर दिया। मुस्लिम ताकतों का विधानमण्डलों में प्रतिनिधित्व बढ़ गया।
- वे बंगाल के किसानों की पीड़ा को कम करने के लिए शक्तिहीन थे।
- 1926 ई० के चुनाव में स्वराज पार्टी को आशा के अनुरूप सफलता नहीं मिली।
- केन्द्र में इसे 40 सीटों पर और मद्रास में आधी सीटों पर सफलता मिली, लेकिन बाकी प्रान्तों विशेषकर उ० प्र०, मध्य प्रान्त और पंजाब में इसे भारी शिकस्त का सामना करना पड़ा।
- 1928 ई० में सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक पर सरकार की पराजय इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है। उन्होंने इस विधेयक को "भारतीय गुलामी विधेयक नं० 1" की संज्ञा दी।
- लाहौर काग्रेस अधिवेशन में पारित प्रस्तावों और सविनय अवज्ञा आन्दोलन के कारण 1930 ई० में स्वराजियों ने विधानमण्डल छोड़ दिया। इस प्रकार इस पार्टी का अन्त हो गया।

गाँधी-दास पैक्ट (नवम्बर, 1924 ई०)

- वर्ष - नवम्बर, 1924 ई०
- मध्य - गाँधी जी, सी० आर० दास और मोतीलाल नेहरू
- गाँधी जी, सी० आर० दास और मोतीलाल नेहरू ने 1924 में एक संयुक्त वक्तव्य दिया जो 'गांधी-दास पैक्ट' के नाम से जाना जाता है।
- इसमें स्वराज पार्टी को यह अधिकार दिया गया कि वह काग्रेस के नाम और इसके अभिन्न अंग के रूप में विधान सभाओं के अन्दर कार्य करे।
- इस पैक्ट के तहत गाँधी जी को "आल इण्डिया स्पिनर्स एसोसिएशन' संगठित करने और सम्पूर्ण देश में चरखे एवं करघे का प्रचार करने का कार्य दिया गया
- इस पैक्ट की पुष्टि बेलगाँव अधिवेशन, 1924 ई० में की गई, जिसकी अध्यक्षता गाँधी जी ने की थी।

अन्य राजनीतिक दल एवं आन्दोलन (1922-27 ई०)

राष्ट्रीय उदारवादी लीग-

- वर्ष -1918 ई०
- सदस्य - श्रीनिवास शास्त्री, तेज बहादुर सप्रू, विपिन चन्द्र पाल
- अन्य तथ्य
- यह बाद में अखिल भारतीय संघ के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
- 1923 ई० के चुनावों में इस उदारवादी लीग का अंत हो गया।

अखिल भारतीय मुस्लिम लीग-

- वर्ष -1924 ई०
- संस्थापक - मुहम्मद अली जिन्ना
- अन्य तथ्य
- मुस्तफा कमाल पासा के द्वारा 1924 तुर्की में खलीफा के पद को समाप्त कर दिए जाने के उपरान्त अखिल भारतीय खिलाफत समिति ने भी कार्य करना बन्द कर दिया।
- इस कारण 'अखिल भारतीय मुस्लिम लीग' का पुनरुत्थान हुआ।

हिन्दू महासभा

- स्थापना -1915 ई० में
- संस्थापक - पं० मदन मोहन मालवीय ने
- इसका प्रथम अधिवेशन 1915 ई० में कासिम बाजार के महाराजा की अध्यक्षता में हुआ।
- यह अधिक प्रभावशाली हो गई क्योंकि मदन मोहन मालवीय को इसका अध्यक्ष चुना गया।

युनियनिस्ट पार्टी

- स्थापना - 1937 ई०
- स्थान - पंजाब
- संस्थापक - अप्सर हुसैन
- अन्य तथ्य
- भू-स्वामी वर्गों के हितों की रक्षा के लिए पार्टी का गठन किया गया।
- 1937 ई० के चुनाव में इस पार्टी ने मुस्लिम लीग के साथ पंजाब में मिली-जुली सरकार का गठन किया।

अकाली आन्दोलन-

- 1922 ई० से 1927 ई० के बीच के आन्दोलनों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण अकाली आन्दोलन था।
- इसका लक्ष्य सिक्ख गुरुद्वारों को ब्रिटिश समर्थक एवं भ्रष्ट आनुवंशिक महन्तों के चंगुल से मुक्त करना था।
- 1925 ई० में एक विधेयक के द्वारा सिक्ख समुदाय को अपने गुरुद्वारों के प्रबन्ध के लिए अपने पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का चुनाव करने का अधिकार मिला।
- इस विधेयक के परिणामस्वरूप गुरुद्वारों के कार्यों की देखभाल करने के लिए 'शिरोमणि गुरुद्वारा प्रवन्धक समिति' की स्थापना हुई।

नागपुर झण्डा सत्याग्रह-

- 1923 ई० के मध्य में कांग्रेस के ध्वज के प्रयाग के रोकने वाले एक स्थानीय आदेश के खिलाफ नागपुर झण्डा सत्याग्रह किया गया।

वोरसद आन्दोलन-

- गुजरात के खेड़ा जिले में स्थित बोरसद में डकैतों की वारदातों को रोकने के लिए पुलिस दस्तों की नियुक्ति हेतु प्रत्येक वयस्क व्यक्ति पर 'व्यक्तिकर' के भुगतान के विरुद्ध यह आंदोलन चलाया गया था।
- 1923 ई० में सार्वजनिक दबाव के कारण यह कर समाप्त कर दिया गया।

वायकूम सत्याग्रह-

- वर्ष -1924-25 ई०
- स्थान - केरल के त्रावणकोर
- सत्याग्रही - टी० के० माधवन
- अन्य तथ्य - इसमें अछूतों के लिए मन्दिर प्रवेश की मांग की गई थी। नायर जैसी अन्य जातियाँ भी इस सत्याग्रह में सम्मिलित हुई थी,
- 1925 ई० में जब सरकार ने अछूतों के लिए पृथक् सड़कों का निर्माण करवा दिया, तब 20 माह के संघर्ष के बाद यह आन्दोलन समाप्त हो गया।

साइमन कमीशन (1928)

- 1919 ई0 के अधिनियम में मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड ऐक्ट के पारित होने के 10 वर्षों के पश्चात् भारत में उत्तरदायी सरकार की प्रगति की दिशा में किए गए कार्यों की समीक्षा का प्रावधान किया गया था।
- इसके अनुसार सरकार को 1931 ई० में कमीशन नियुक्त करना था, लेकिन 1929 ई० में ब्रिटेन के आम चुनावों को ध्यान में रखकर सरकार ने 8 नवम्बर, 1927 ई० में ही इस कमीशन की नियुक्ति कर दी। इस कमीशन के अध्यक्ष सर जॉन साइमन थे। उनकी अध्यक्षता में **'भारतीय संवैधानिक आयोग'** बहाल किया गया।
- अध्यक्ष-सहित इसमें कुल 7 सदस्य शामिल थे।

1. जॉन साइमन (लिबरल पार्टी)
2. मि. बाथम (कन्जर्वेटिव पार्टी)
3. स्ट्रैथ कोना (कन्जर्वेटिव पार्टी)
4. लेन फोक्स (कन्जर्वेटिव पार्टी)
5. कैडैगन (कन्जर्वेटिव पार्टी)
6. एटली (लेवर पार्टी)
7. बर्नोन हार्ट शोन (लेवर पार्टी)

- राष्ट्रवादी आंदोलन की प्रतिक्रिया में बनाया गया, आयोग को भारत में 1919 के अधिनियम द्वारा सुगम संवैधानिक प्रणाली के कामकाज की जांच करने और संशोधनों के लिए सिफारिशें करने का काम सौंपा गया था। साइमन कमीशन की स्थापना 1928 में हुई थी।
- भारतीय जनसंख्या ने मांग की कि सरकार की बोझिल द्वैध प्रणाली को संशोधित किया जाए, और भारत सरकार अधिनियम 1919 में ही कहा गया कि शासन मॉडल की प्रगति की समीक्षा के लिए दस साल बाद एक समिति का गठन किया जाएगा।
- भारतीय लोग क्रोधित और अपमानित हुए क्योंकि साइमन आयोग, जो भारत के भविष्य को निर्धारित करने वाला था, में एक भी भारतीय सदस्य शामिल नहीं था।

साइमन कमीशन के प्रस्ताव

- एक नए संविधान की रूपरेखा प्रस्तावित की गई थी।
- द्वैध शासन को समाप्त किया जाना चाहिए, और विधानमंडल के प्रति जवाबदेह मंत्रियों को सभी प्रांतीय जिम्मेदारियां सौंपी जानी चाहिए।
- यह केंद्र में द्वैध शासन का घोर विरोधी था। द्वैध शासन के स्थान पर इसने एक उत्तरदायी प्रांतीय सरकार की वकालत की।
- प्रकार की सरकार की संस्तुति की थी।
- इसमें प्रस्ताव दिया गया कि मताधिकार का विस्तार किया जाए और विधानमंडल का विस्तार किया जाए।
- उच्च न्यायालय को भारत सरकार के नियंत्रण में कर दिया जाए

- वर्मा को भारत से अलग किया जाए तथा उड़ीसा एवं सिंध को अलग प्रदेश का दर्जा दिया जाए।
- मताधिकार को 2.8% से बढ़ाकर 10 से 15 प्रतिशत तक बढ़ाने की बात कही गई।
- गवर्नर व गवर्नर जनरल अल्पसंख्यक जातियों के हितों के प्रति विशेष ध्यान रखें।
- प्रत्येक दस वर्ष बाद पुनरीक्षण के लिए एक संविधान आयोग की नियुक्ति की व्यवस्था को समाप्त कर दिया जाए।
- भारत के लिए एक ऐसा लचीला संविधान बने जो स्वयं से विकसित हो

राष्ट्रवादियों और कांग्रेस की प्रतिक्रिया :

- कांग्रेस ने 1927 में मद्रास में इसका विरोध करने पर सहमति व्यक्त की। इसकी आलोचना का मुख्य कारण यह था कि भारत में संवैधानिक सुधारों का आकलन करने के आयोग के लक्ष्य के बावजूद, इसके सभी सदस्य, ब्रिटिश थे, जिनमें कोई भारतीय प्रतिनिधि नहीं था।
- साइमन कमीशन का लाहौर में लाला लाजपत राय के नेतृत्व में विरोध हुआ। पुलिस के लाठी चार्ज के कारण लाला लाजपत राय की दिसम्बर, 1928 ई० में मृत्यु हो गई।
- साइमन कमीशन का लखनऊ में विरोध पंडित गोविन्द बल्लभ पंत और पंडित जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में हुआ।
- हिंदू महासभा, मुस्लिम लीग, लिबरल फेडरेशन, किसान मजदूर पार्टी, आदि ने भी कमीशन के बहिष्कार की नीति अपनाई।
- मुस्लिम लीग में साइमन कमीशन के बहिष्कार के सवाल पर 1928 में फूट पड़ गई
- मुहम्मद अली जिन्ना कमीशन के बहिष्कार के सवाल पर कांग्रेस के साथ थे।
- जब सारे देश में 'साइमन वापस जाओ' का नारा बुलन्द हो रहा था पूँजीपतियों, जमीदारों और कुछ देशी नरेशों ने इसका समर्थन किया
- डॉ. अम्बेडकर बम्बई में साइमन कमीशन के साथ सहयोग करने के लिए बनाई गई कमेटी के सदस्य बने।
- जब 1928 में साइमन कमीशन भारत आया, तो उसे काले झंडे दिखाए गए और "साइमन वापस जाओ" के नारे लगे।
- इस आयोग की भारत में कड़ी आलोचना की गई। फिर भी इस आयोग की अनेक बातों को 1935 ई० के भारत सरकार अधिनियम में स्वीकार किया गया।
- सर शिवस्वामी अय्यर ने इसे **'रद्दी की टोकरी'** में फेंकने लायक बताया।

राष्ट्रीय आंदोलन पर साइमन आयोग की नियुक्ति का प्रभाव:

- इसने न केवल पूर्ण स्वतंत्रता की मांग करने वाले कट्टरपंथी तत्वों को बढ़ावा दिया, बल्कि समाजवादी तर्ज पर बड़े पैमाने पर सामाजिक आर्थिक सुधार भी किए।
- जब साइमन कमीशन की घोषणा की गई, तो कांग्रेस को, जिसके पास कोई सक्रिय योजना नहीं थी, एक मुद्दा दिया गया, जिस पर वह जन आंदोलन आयोजित करे।

नेहरू रिपोर्ट (1928 ई.)

- साइमन आयोग की नियुक्ति के समय भारतीय सचिव लार्ड बर्केन हैड ने भारतीयों के समक्ष चुनौती रखी कि वे एक ऐसा संविधान बनाये जो सामान्यतः भारत के सभी लोगों को स्वीकार्य हो।
- भारतीय नेताओं ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुए फरवरी, 1928 में दिल्ली में प्रथम सर्वदलीय सम्मेलन में इस आशय का प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें ऐसे संविधान निर्माण की योजना थी जिसमें पूर्ण उत्तरदायी सरकार की व्यवस्था होगी।
- हिन्दू महासभा, मुस्लिम लीग, खिलाफत समिति, भारतीय ईसाई, कांग्रेस राष्ट्रीय उदारवादी संघ आदि अन्य दल सर्वदलीय सम्मेलन में शामिल हुए
- मई, 1928 को बम्बई में दूसरे सर्वदलीय सम्मेलन में पं. मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक सात सदस्यीय समिति की स्थापना की गई, जिसे भारत के संविधान के सिद्धान्तों का निर्धारण करना था।
- समिति के अन्य सदस्य - सर तेज बहादुर सप्रू, सुभाष चन्द्र बोस, एम.एस. सरदार, मंगल सिंह, अली इमाम, जी.आर. प्रधान, कुरेशी आदि।
- इस रिपोर्ट का प्रारूप मोतीलाल नेहरू और सर तेज बहादुर सप्रू ने तैयार किया था।
- मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता वाली समिति ने 28 अगस्त, 1928 को अपने रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसे नेहरू रिपोर्ट के नाम से जाना गया।
- **रिपोर्ट में की गई सिफारिशें इस प्रकार थीं-**

- भारत को डोमिनियन स्टेट का दर्जा
- भारत एक संघ होगा जिसके नियंत्रण में केन्द्र में द्वि- सदनीय विधान मण्डल होगा, मंत्रिमण्डल सदन के प्रति उत्तरदायी होगा।
- गवर्नर-जनरल की स्थिति संवैधानिक मुखिया भर ही रहेगी।
- साम्प्रदायिक आधार पर पृथक निर्वाचक मण्डल की माँग अस्वीकार कर दी गई।
- नागरिकता को परिभाषित करते हुए मूल अधिकारों को प्रतिपादित किया गया।
- भाषाई आधार पर राज्यों का गठन।
- 1928 ई. में लखनऊ में हुए सर्वदलीय सम्मेलन में नेहरू रिपोर्ट पर विचार-विमर्श हुआ। जिन्ना इस रिपोर्ट को अस्वीकार करते हुए पुनः आगा खाँ और मुहम्मद शफी के साथ हो गये।
- कांग्रेस में सुभाष चन्द्र बोस, जवाहर लाल नेहरू, सत्यपूर्ति भक्त जैसे युवा नेताओं डोमिनियन स्टेट की जगह पूर्ण स्वराज को कांग्रेस का लक्ष्य बनाना चाहते थे।
- नेहरू रिपोर्ट पर कलकत्ता में 1928 ई. को हुए कांग्रेस के अधिवेशन में 'पूर्ण स्वराज' और 'डोमिनियन स्टेट' को लेकर मतभेद की स्थिति पैदा हुई, गाँधी जी ने स्थिति को संभाला।
- गांधी जी के प्रस्ताव के अनुसार सरकार को एक वर्ष तक का समय दिया गया कि एक वर्ष के भीतर नेहरू रिपोर्ट में प्रस्तावित संवैधानिक योजना को स्वीकार कर डोमिनियन स्टेट का दर्जा दिया जाये नहीं तो कांग्रेस 'पूर्ण स्वराज' से कम किसी 'भी प्रस्ताव पर समझौता नहीं करेगी।
- नेहरू रिपोर्ट का भारतीय संवैधानिक इतिहास में विशेष महत्त्व है।
- इसी कारण अनेक इतिहासकारों ने 'नेहरू रिपोर्ट' को वर्तमान संविधान का 'ब्लू प्रिंट' माना है।

जिन्ना की चौदह सूत्रीय मांग

- राष्ट्रवादी मुसलमानों ने रिपोर्ट को स्वीकार कर लिया। किन्तु, मुहम्मद अली जिन्ना मुस्लिम सम्प्रदाय के लिए कुछ रियायते चाहते थे।
- 'उन्होंने अन्य माँगों के अतिरिक्त केन्द्रीय विधान मण्डल में एक तिहाई मुस्लिम प्रतिनिधित्व को माँग की जिसे कांग्रेस ने अस्वीकर कर दिया।
- परिणामस्वरूप, जिन्ना डॉ० मुहम्मद शफी के नेतृत्व वाले, रिपोर्ट-विरोधी मुस्लिम गुट में सम्मिलित हो गए जिन्ना ने अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए मार्च, 1929 ई० में 14 सूत्री माँग प्रस्तुत की।
- **जिन्ना की चौदह शर्तें निम्नलिखित थीं-**
- भारत का संविधान परिसंघात्मक हो और अवशिष्ट शक्तियों प्रान्तों में निहित हो।
- समस्त विधानमण्डलों और निर्वाचित निकायों में अल्पसंख्यकों को पर्याप्त एवं प्रभावपूर्ण प्रतिनिधित्व दिया जाये।
- केन्द्रीय विधान मण्डल में मुसलमानों का प्रतिनिधित्व एक-तिहाई हो।
- साम्प्रदायिक समूहों के लिए पृथक् निर्वाचन मण्डल की व्यवस्था जारी रहे।
- पंजाब, बंगाल और उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रान्त में भविष्य में गठन या विभाजन में मुस्लिम बहुमत प्रभावित न हो।
- सभी सम्प्रदायों को धार्मिक स्वतंत्रता हो।
- कोई भी विधेयक या प्रस्ताव किसी विधान मंडल अथवा किसी अन्य निर्वाचित निकाय में पारित न हो, यदि किसी सम्प्रदाय के तीन-चौथाई सदस्यों ने उसका विरोध किया हो
- सिन्ध को बम्बई से अलग कर न्य प्रान्त बनाया जाये।
- उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त और बलूचिस्तान में सांविधानिक सुधार लाये जायें।
- राज्य की संपूर्ण सेवाओं और स्थानीय स्वशासी संस्थाओं में मुसलमानों के लिए पर्याप्त स्थान आरक्षित किये जाये।
- मुस्लिम संस्कृति, धर्म, व्यक्तिगत विधि और धार्मिक संस्थाओं को सुरक्षा प्रदान की जाय।
- केन्द्रीय मंत्रिमंडल और प्रान्तीय मंत्रिमंडलों में मुसलमानों का कम से कम एक तिहाई प्रतिनिधित्व हो।
- केन्द्रीय विधान मंडल द्वारा भारतीय परिसंघ के सभी राज्यों की सहमति के बिना संविधान में संशोधन न किया जाय।

नेहरू रिपोर्ट से असंतुष्टि

- नेहरू रिपोर्ट की संस्तुतियों से जवाहरलाल नेहरू एवं सुभाष चंद्र बोस के नेतृत वाला कांग्रेस का युवा वर्ग असंतुष्ट था।

- इनका मनना कि रिपोर्ट में डोमिनियम स्टेटस की मांग स्वतंत्रता प्राप्ति की दिशा में एक नकारात्मक कदम है। इसलिये कलकत्ता के सर्वदलीय सम्मेलन में इन्होंने रिपोर्ट के इस प्रावधान पर तीव्र आपत्ति जताई।
- जवाहरलाल नेहरू एवं सुभाष चंद्र बोस ने कांग्रेस के इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया तथा संयुक्त रूप से इंडिपेंडेंस फॉर इंडिया लीग (नवंबर 1928) का गठन कर लिया।

पूर्ण स्वराज की मांग (1929)

- नेहरू रिपोर्ट के बाद, जिसने डोमिनियन स्टेटस को अपनी मांग के रूप में बताकर उनकी अपेक्षाओं को खारिज कर दिया, जवाहरलाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस और सत्यमूर्ति अधिक मुखर हो गए।
- दिसंबर 1929 में, जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में लाहौर कांग्रेस ने **'पूर्ण स्वराज'** या भारत के लिए पूर्ण स्वतंत्रता की मांग को औपचारिक रूप दिया।
- 31 दिसंबर ,1929 ई. के सम्मेलन की आधी रात्रि को रावी नदी के तट पर कांग्रेस के अध्यक्ष जवाहर लाल नेहरू ने भारतीय स्वतन्त्रता का प्रतीक 'तिरंगा झण्डा' पूर्ण स्वराज्य, वंदेमातरम् तथा इंकलाब जिन्दाबाद के नारों के बीच फहराया।
- 26 जनवरी 1930 को आधुनिक भारत के इतिहास में प्रथम स्वतन्त्रता दिवस के रूप में माना जाता है।

लाहौर अधिवेशन के महत्वपूर्ण निर्णय

- गोलमेज सम्मेलन का बहिष्कार।
- पूर्ण स्वराज को अपना लक्ष्य घोषित किया।
- विधानमंडल के सभी सदस्यों को इस्तीफा देने का अधिकार दिया गया।
- कांग्रेस कार्य समिति द्वारा 2 जनवरी, 1930 को अपनी बैठक में यह निर्णय किया गया कि 26 जनवरी, 1930 का दिन 'पूर्ण स्वराज्य दिवस' के रूप में मनाया जायेगा तथा 26 जनवरी को प्रत्येक वर्ष **'पूर्ण स्वाधीनता दिवस'** के रूप में मनाया जायेगा।
- यह तय किया गया कि गांधी के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया जाएगा।
- एक राष्ट्रव्यापी बैठक बुलाई गई थी जिसमे ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोग आए थे।
- नेहरू रिपोर्ट पर सरकार की निष्क्रियता और यहां तक कि प्रभुत्व की स्थिति की किसी भी मांग पर सहमत होने में विफलता के बाद, गांधीजी ने कांग्रेस और पूरे देश में बढ़ते असंतोष के बीच एक नई रणनीति की मांग की।

गांधी जी की ग्यारह सूत्रीय मांगें

- कांग्रेस के लाहौर अधिवेश में कांग्रेस कार्यकारिणी को सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने का अधिकार दिया गया।
- गाँधी जी आंदोलन शुरू करने से पूर्व इसे टालने के लिए अपने 'यंग इंडिया' के एक लेख में सरकार के समक्ष ग्यारह एकसूत्रीय मांगें रखीं तथा इन मांगों को स्वीकार या अस्वीकार करने के लिये उसे 31 जनवरी, 1930 तक का समय दिया।

ये मांगें थीं-

- **सामान्य हित से सम्बंधित मुद्दे**

1. सिविल सेवाओं तथा सेना के व्यय में 50 प्रतिशत तक की कमी की जाये।
2. नशीली वस्तुओं (शराब) के विक्रय पर पूर्ण रोक लगाई जाये।
3. गुप्तचर विभाग पर सार्वजनिक नियंत्रण हो या उसे खत्म कर दिया जाये।
4. शस्त्र कानून में परिवर्तन किया कर भारतीयों को आत्मरक्षा हेतु हथियार रखने का लाइसेंस दिया जाये।
5. सभी राजनीतिक बंदियों को रिहा किया जाये।
6. डाक आरक्षण बिल पास किया जाये।

- **बुर्जुआ वर्ग से सम्बंधित मुद्दे**

7. रुपये-स्टर्लिंग के विनिमय दर अनुपात को घटाकर एक शीलिंग और चार पेन्स किया जाये।
8. कपडा उद्योग को संरक्षण प्रदान किया जाये ।
9. तटीय यातायात रक्षा विधेयक पास किया जाये।

- **किसानों से सम्बंधित मुद्दे**

10. लगान में 50 प्रतिशत की कमी की जाये
11. नमक कर समाप्त करके इस पर सरकारी एकाधिकार खत्म किया जाये

सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930 - 31)

- फरवरी 1930 तक, सरकार से ग्यारह सूत्रीय मांगों के संबंध में कोई सकारात्मक उत्तर न मिलने के कारण साबरमती में कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में यह निर्णय लिया गया की गाँधी जी सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाएंगे। इसलिए गाँधी जी को विवश होकर आंदोलन करना पड़ा इसकी शुरुआत दांडी मार्च से की गयी।
- **दाण्डी मार्च (12 मार्च - 6 अप्रैल, 1930 ई०)**
- गाँधी जी ने 12 मार्च, 1930 ई० को सरोजिनी नायडू सहित अपने 78 चुने हुए अनुयायियों के साथ साबरमती आश्रम (अहमदाबाद) से अपना ऐतिहासिक दाण्डी (नौसारी जिला, गुजरात) मार्च प्रारम्भ किया।
- 5 अप्रैल, 1930 ई० को, 241 मील लम्बी पद यात्रा के 24 वे दिन दाण्डी पहुंचे और 6 अप्रैल, 1930 ई० को दाण्डी में अवैध रूप से नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा। इसके बाद सम्पूर्ण देश में यह आंदोलन व्यापक रूप से फैल गया।
- नोट - गाँधी जी की दाण्डी यात्रा के बारे में सुभाष चन्द्र बोस ने लिखा, "महात्मा जी के दाण्डी मार्च की तुलना इल्वा से लौटने पर नेपोलियन के पेरिस मार्च और राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के लिए मुसोलिनो के रोम मार्च से की ।

सविनय अवज्ञा आंदोलन में भारतीय प्रतिक्रिया:

- राष्ट्रवादी नेताओं में 11 बिंदुओं को लेकर कुछ क्रोध था, जिसे उन्होंने स्वराज घोषणा का खंडन माना, जो कुछ समय पहले ही जारी किया गया था।
- औद्योगिक वर्ग ने पूरे दिल से गांधीवादी मांगों का समर्थन किया क्योंकि वे उन्हें अधिक आर्थिक प्रकृति का मानते थे।
- महात्मा गांधी जहां भी गए, उन्हें सुनने के लिए हजारों की संख्या में भीड़ उमड़ पड़ी और उन्होंने समझाया कि स्वराज से उनका क्या मतलब है और उन्होंने अंग्रेजों को शांति से चुनौती देने का आह्वान किया।
- इस आंदोलन में भारी भीड़ उमड़ी। हर जगह नमक कानून तोड़ा गया। महिलाओं ने भी बड़ी संख्या में हिस्सा लिया। कमला (नेहरू जी की पत्नी) और स्वरूप रानी (नेहरू जी की माँ) सबसे आगे थीं। सी.राजगोपालाचारी ने तमिलनाडु में यात्रा का नेतृत्व किया, जबकि के केलप्पन ने मालाबार में यात्रा का नेतृत्व किया।
- देश के विभिन्न हिस्सों में हजारों लोगों ने नमक प्रतिबंध की अवहेलना की, नमक बनाया और सरकारी नमक सुविधाओं के प्रति प्रदर्शन किया।
- जैसे ही आंदोलन ने जोर पकड़ा, अंतरराष्ट्रीय कपड़ों का बहिष्कार किया गया और शराब की दुकानों पर धरना दिया गया। किसानों ने राजस्व और चौकीदार करों का भुगतान करने से इनकार कर दिया, गांव के अधिकारियों ने इस्तीफा दे दिया, और वन निवासियों ने कई स्थानों पर वन नियमों को तोड़ दिया, लकड़ी इकट्ठा करने और पशुओं को चराने के लिए आरक्षित वनों में प्रवेश किया।
- शराब की दुकानों के व्यापक बहिष्कार के विरोध में ताड़ी के पेड़ों को काट दिया गया।
- खान अब्दुल गफ्फार खान ने उत्तर पश्चिम सीमांत के प्रांतों में खुदाई खिदमतगार आंदोलन की स्थापना की।

लाल कुर्ती आंदोलन

- उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत में खान अब्दुल गफ्फार खां (**"सीमांत गांधी"**) ने अपने **"खुदाई खिदमतगार"** संगठन के साथ इस आदोलन में अत्यंत सक्रिय रूप से भाग लिया।
- इसके आंदोलनकरी लाल कुर्ती पहनते थे। अपनी पोशाक के कारण ये लाल कुर्ती के रूप में विख्यात हुए।
- लाल कुर्ती आंदोलन विशुद्ध अहिंसक आंदोलन था।
- कौमी आजादी के लिए इन्होंने कांग्रेस तथा गाँधी का नेतृत्व स्वीकार किया।
- लाल कुर्ती दल ने गफ्फार खाँ को **"फख-ए अफगान"** की उपाधि दी।

जियालरंग आन्दोलन

- भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र मणिपुर में भी सविनय अवज्ञा आंदोलन ने जोर पकड़ा।
- नागाओं ने यदुनाग के नेतृत्व में ब्रिटिश शासकों से पूर्ण असहयोग और कर बंदी आंदोलन का रास्ता अपनाया।
- इस आन्दोलन को जियालरंग आन्दोलन के नाम से जाना जाता है।

- यदुनाग पर हत्या का अभियोग लगाकर फांसी दे दी गई।
- इनके बाद इनकी बहन "गैडिनल्यू" ने नागा-विद्रोह की बागडोर संभाली।
- जिन्होंने 13 साल की उम्र में मणिपुर में गांधी के आह्वान का साथ दिया था, उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी और वो 1947 में ही आजाद हुई थी ।
- जवाहर लाल नेहरू ने इन्हे "रानी " की उपाधि दी। इनके बारे में जवाहर लाल नेहरू ने लिखा है- "एक दिन ऐसा आएगा जब भारत इन्हें स्नेहपूर्वक स्मरण करेगा।"

बम्बई

- बम्बई में इसका केन्द्र बिंदु घरासना था।
- गांधी जी ने घोषणा की कि वे घरासना में नमक निर्माण शाला पर अपने साथियों के साथ धावा बोलेंगे और नमक कानून तोड़ेंगे।
- लेकिन 4 मई को वायसराय के आदेश पर गाँधी जी को गिरफ्तार कर लिया और यरवदा जेल में डाल दिया गया।
- इसके बाद 31 मई, 1930 ई० को सरोजनी नायडू, इमाम साहब और गांधी जी के पुत्र मणिलाल कुछ कार्यकर्ताओं के साथ धरासना नमक कारखाने की ओर बढ़े।
- इन पर भीषण लाठी चार्ज हुआ, जिसमें दो लोगों की मृत्यु हो गई।
- इसी तरह बम्बई के पास स्थित "बडाला" के नमक कारखाने पर लोगों ने धावा बोला और नमक लूट लिया।
- मई, 1930 ई० में बम्बई के समुद्र तट पर अमेरिकी पत्रकार बेबमिलर ने अपनी आंखों के सामने निहत्थे सत्याग्रहियों पर अत्याचार का सजीव वर्णन किया है। उसने लिखा कि "धरासना जैसा भयानक दृश्य मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा है।"
- नोट - अमेरिकी पत्रकार बेबमिलर ने ब्रिटिश भारत में महिलाओं की स्थिति की आलोचना की और तर्क दिया कि "जब तक महिलाओं पर अत्याचार चलता रहेगा, तब तक भारतीय पुरुषों को यह अधिकार नहीं है कि वे भारत के शासन का प्रबंध अपने हाथ में लें।"

दक्षिण भारत

- दक्षिण भारत में भी नमक आंदोलन का तेज प्रसार हुआ राज गोपालाचारी ने त्रिचनापल्ली से बदोख्यम् तक की यात्रा की।
- कर्नाटक में लोगों ने "सैनी कट्टा" नामक कारखाने पर धावा बोला और लाठियां तथा गोलियां खाई।
- आंध्र प्रदेश में महिलाओं के जत्थे मीलों चलकर नमक कानून को चुनौती दी । वायकूम सत्याग्रह (केरल) के नेताओं ने के० केलप्पन एवं टी० के० माधवन के साथ कालीकट से पद्यान्नूर तक की यात्रा की और नमक कानून को तोड़ा।
- दक्षिणी और मध्य क्षेत्रों में अक्सर वन नियमों को तोड़ा जाता था।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन से ठीक पहले पटेल ने बारदोली सत्याग्रह की शुरुआत की, और सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान यह देश के अन्य हिस्सों में एक मॉडल कर नहीं अभियान बन गया।
- यूपी में एक और तरह का 'राजस्व नहीं, किराया नहीं' अभियान देखने को मिला।
- प्रभात फेरी और पत्रिका (अवैध समाचार पत्र) सहित कई सार्वजनिक लामबंदी रणनीतियों का उपयोग किया गया। बच्चों के लिए वानर सेना और लड़कियों के लिए मंजरी (बिल्ली) सेना का गठन किया गया।

Note:-

- गफ्फार खाँ ने **"पख्तून"** नामक एक पत्रिका पश्तो भाषा में निकाली जो बाद में "दश रोजा" नाम से प्रकाशित हुई।
- गफ्फार खाँ को "बादशाह खाँ" भी कहा जाता है।
- 1943 ई० में जिन्ना ने गफ्फार खाँ को "जंगी पठानों के हिन्दूकरण तथा उन्हें नपुंसक बनाने के कार्यवाहक" की संज्ञा दी।
- गफ्फार खाँ ने 1946-47 ई० में "पख्तूनिस्तान" की मांग को लेकर सक्रिय आंदोलन किया।

- **अन्य केन्द्र**

बंगाल

- मिदनापुर इलाके में नमक सत्याग्रह काफी समय तक चलता रहा।

उड़ीसा

- बालासोर, पुरी और कटक जिले गैर कानूनी तौर पर नमक निर्माण के मुख्य केन्द्र रहे।

असम

- सत्याग्रहियों का एक दल असम के सिलहट नामक स्थान से बंगाल के नोवाखाली समुद्र तट तक नमक बनाने के लिए पहुंचा था।
- 14 अप्रैल को नमक कानून तोड़ने के जुर्म में जवाहर लाल बेहरू को गिरफ्तार कर लिया गया।
- इसके जवाब में मद्रास, कलकत्ता और कराची आदि नगरों में प्रदर्शन हुए तथा प्रदर्शनकारियों की विशाल भीड़ एवं पुलिस के बीच टकराव हुआ।

Note :-

- गाँधी जी के बाद अब्बास तय्यब जी ने दांडी मार्च का नेतृत्व किया।
- दांडी मार्च का आदर्श वाक्य -" अंत तक लड़ो " - गाँधी जी
- वानर सेना और मंजरी सेना का सम्बन्ध दांडी मार्च से हैं। सविनय अवज्ञा आंदोलन में बच्चों को लेकर वानर सेना तथा बालिकाओं को लेकर मंजरी सेना का गठन किया गया था।
- "घुटने टेक कर मैंने रोटी मांगी और बदले में मुझे पत्थर मिला"- गाँधी जी
- "शक्ति के विरुद्ध अधिकार की इस लड़ाई में मैं विश्व की सहानुभूति चाहता हूँ "- गाँधी जी

जन सहभागिता

- **छात्र**: छात्रों ने भी शराब की दुकानों तथा विदेशी कपड़ों की दुकानों के समक्ष प्रदर्शन आयोजित करने तथा धरने देने के कार्यक्रमों में सक्रिय भूमिका निभाई।
- **मजदूर**: बॉम्बे, कलकत्ता, मद्रास एवं शोलापुर इत्यादि में मजदूरों ने आंदोलन की पूर्ण समर्थन प्रदान किया।
- **किसान**: ये मुख्यतया संयुक्त प्रांत, बिहार एवं गुजरात में सक्रिय रहे।
- **महिलायें**: गांधी जी ने महिलाओं से आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने हेतु आगे आने का विशेष आग्रह किया। गांधी जी के इस आग्रह का महिलाओं पर गहरा प्रभाव पड़ा तथा वे शीघ्र ही आंदोलन का अभिन्न अंग बन गई। महिलाओं ने विदेशी कपड़ों की दुकानों, शराब की दुकानों तथा अफीम के ठेकों पर धरने दिये।
- **व्यापारी:** इस वर्ग ने आंदोलन में उत्साहपूर्वक भाग लिया। विभिन्न व्यावसायिक संगठनों एवं वाणिज्यिक मंडलों ने प्रदर्शनों एवं धरनों इत्यादि में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। विशेषकर तमिलनाडु एवं पंजाब में इनकी भूमिका प्रशंसनीय रही।
- **मुसलमान**: इस आंदोलन में मुसलमानों की भागीदारी नगण्य रही।
  - इसके दो प्रमुख कारण थे-पहला, मुस्लिम नेताओं ने मुसलमानों को आंदोलन से पृथक रहने की सलाह दी ।
  - दूसरा, ब्रिटिश सरकार ने सांप्रदायिकता के मुद्दे का सहारा लेकर भावनात्मक रूप से मुसलमानों को आंदोलन से पृथक रखने का दुष्प्रयास किया।
  - उत्तर-पश्चिमी सीमांत प्रांत में मुसलमानों ने आंदोलन को भरपूर समर्थन प्रदान किया। यहां खान अब्दुल गफ्फार खान के नेतृत्व में मुसलमानों ने उपनिवेशी सरकार के विरुद्ध आदोलन में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।
  - सेनहट्टा, त्रिपुरा, गैबन्धा, बग एवं नोआखाली में मध्यवर्गीय मुसलमानों ने आंदोलन में सक्रिय भागीदारी निभाई।
  - ढाका में मुस्लिम नेताओं, दुकानदारों, निम्न वर्ग के लोगों तथा उच्च वर्ग की महिलाओं ने आंदोलन को पूर्ण समर्थन प्रदान किया। बिहार, बंगाल एवं दिल्ली के बुनकरों ने भी आंदोलन में प्रमुखता से भाग लिया।
- **जनजातियां**: मध्य प्रांत, कर्नाटक एवं महाराष्ट्र में जनजातियों एवं दलित वर्ग से आंदोलन में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

अंग्रेजों की प्रतिक्रिया:

- स्थिति से चिंतित औपनिवेशिक अधिकारियों ने एक-एक करके कांग्रेस नेताओं को गिरफ्तार करना शुरू कर दिया।
- इसके परिणामस्वरूप कई स्थानों पर में हिंसक लड़ाई हुई।
- एक भयभीत सरकार ने निर्मम दमन नीति के साथ जवाब दिया। शांतिपूर्ण सत्याग्रहियों पर हमला किया गया, महिलाओं और बच्चों को पीटा गया और लगभग 60,000 लोगों को जेल में डाल दिया गया।

- सी राजगोपालाचारी, वल्लभाई, जवाहर, मदन मोहन मालवीय, जे एम सेनगुप्ता और अन्य प्रमुख राजनेताओं को भी हिरासत में लिया गया। मई 1930 में, गांधी को भी पकड़ लिया गया था, और नेतृत्व अब्बास तैयबजी को सौंप दिया गया था, जिन्हें भी गिरफ्तार कर लिया गया था। अंततः सरोजिनी ने नेतृत्व किया, लेकिन उन्हें भी जेल हो गई।
- सरकार ने कई दमनकारी प्रस्ताव जारी किए, 'और कांग्रेस को असंवैधानिक घोषित किया गया।

आंदोलन का आकलन

सकारात्मक

- महात्मा गांधी जहां भी गए, उन्हें सुनने के लिए हजारों की संख्या में भीड़ उमड़ पड़ी और उन्होंने समझाया कि स्वराज से उनका क्या मतलब है और उन्होंने अंग्रेजों को शांति से चुनौती देने का आह्वान किया।
- इसका उद्देश्य मांगों को व्यापक बनाना था ताकि भारतीय समाज के भीतर सभी वर्ग उनके साथ जुड़ सकें और एक ही अभियान में शामिल हो सकें।
- औद्योगिक वर्ग ने पूरे दिल से गांधीवादी मांगों का समर्थन किया क्योंकि वे उन्हें अधिक आर्थिक प्रकृति का मानते थे।

असहयोग बनाम सविनय अवज्ञा

विफलताएं

- स्वराज की अमूर्त अवधारणा ने सभी सामाजिक समूहों को स्थानांतरित नहीं किया।
- ऐसा ही एक समूह देश का 'अछूत' था, जिसने 1930 के दशक में खुद को दलित या उत्पीड़ित कहना शुरू कर दिया था।
- खान अब्दुल गफ्फार खान के अधीन एनडब्ल्यूएफपी को छोड़कर, मुसलमान निस्त्साह हैं। वे नेताओं की सांप्रदायिक बयानबाजी के साथ-साथ उनकी मांगों के लिए सरकार की अनुकूल प्रतिक्रिया से ध्रुवीकृत थे।
- औद्योगिक वर्ग केवल मंदोष्ण समर्थन प्रदान कर रहा है।
- किसान गरीब प्रतिभागी थे।
- अंग्रेजों के साथ सहयोग करने से इनकार करने के बजाय, जैसा कि उन्होंने 1921-22 में किया था, अब लोगों से औपनिवेशिक कानूनों का उल्लंघन करने के लिए कहा गया। परिणामस्वरूप, एक वैचारिक विकास हुआ।
- इस बार का लक्ष्य परम स्वतंत्रता था।
- हालांकि उस समय मुस्लिम भागीदारी कम थी, जैसा कि श्रम भागीदारी थी, इस अभियान ने गांधी को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर ला खड़ा किया, और पहली बार महिलाएं एक राष्ट्रीय आंदोलन में बड़ी संख्या में शामिल हुई।
- एनसीएम में, आंदोलन देश के कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित था, जबकि सीडीएम में कई भारतीय नेताओं ने इस आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया।
- चौरी चौरा की घटना के बाद असहयोग आंदोलन के हिंसक हो जाने के बाद यह फीका पड़ गया, जबकि सीडीएम में महात्मा गांधी द्वारा इरविन के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद, अभियान में गिरावट आई।
- नमक को प्रमुख विषय के रूप में चुनना-
- जैसा कि गांधी ने कहा, "पानी के अलावा कोई अन्य वस्तु नहीं बची है, जिस पर टैक्स लगाकर सरकार लाखों भूखे, बीमार, अपंग, और पूरी तरह से असहाय लोगों को पीड़ा पहुंचा सके ... यह सबसे अमानवीय है प्रत्येक मनुष्य पर लगने वाला कर।"
- नमक ने खादी की तरह, स्वराज के आदर्श को तुरंत ग्रामीण गरीबों की सबसे स्पष्ट और सार्वभौमिक शिकायत से जोड़ दिया।
- इसने शहरी जनता को सामूहिक पीड़ा के साथ प्रतीकात्मक जुड़ाव का मौका दिया।

प्रथम गोलमेज सम्मेलन

- **वर्ष -** 12 नवम्बर, 1930-19 जनवरी, 1931 ई०
- **स्थान :** सेंट जेम्स पैलेस (लंदन)
- **अध्यक्षता :** ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनल्ड
- बिटिश सरकार ने निराशा एवं असंतोष के वातावरण में नवम्बर, 1930 ई० में प्रथम गोल मेज सम्मेलन बुलाया।
- इस सम्मलेन में कुल 89 प्रतिनिधियों ने अलग अलग संगठनों का प्रतिनिधित्व किया, जैसे –

सभा	प्रतिनिधि
हिन्दू महासभा	जयकर एवं बी० एस० मुंजे
उदारवादियों	सी० वाई. चिंतामणि एवं टी० वी० सप्रू
मुस्लिम	आगा खाँ, मुहम्मद शफी, मुहम्मद अली जिन्ना और फजलुल हक
सिक्खों सरदार	सम्पूर्ण सिंह
ऐंग्लो-इण्डियन	के० टी० पाल
दलित वर्ग	डॉ० भीम राव अम्बेडकर
कांग्रेस	भाग नहीं लिया।

- 12 नवम्बर, 1930 ई० को ब्रिटिश सम्राट् जॉर्ज पंचम ने सम्मेलन का उद्घाटन किया
- सम्मेलन में भारतीय नरेशों ने अखिल भारतीय संघ की स्थापना के लिए ब्रिटिश भारत में सम्मिलित होने का प्रस्ताव रखा।
- मुस्लिम प्रतिनिधियों ने पृथक् निर्वाचन मण्डल की माँग रखी।
- इसी तरह अम्बेडकर ने भी दलित वर्गों के लिए पृथक निर्वाचन मण्डल को माँग की। उपस्थित प्रतिनिधियों में एकता का भारी अभाव था।

परिणाम

- ब्रिटिश सरकार अखिल भारतीय संघ का निर्माण, प्रदेशों में पूर्ण उत्तरदायी शासन तथा केन्द्र में द्वैध शासन पर सहमत हुई।
- कांग्रेस ने गोल मेज सम्मेलन की कार्यवाहियों को मान्यता नहीं दी इस तरह 19 जनवरी, 1931 ई० बिना किसी परिणाम के यह सम्मेलन समाप्त हो गया।

गांधी-इरविन समझौता या दिल्ली पैक्ट (मार्च 1931)

- **वर्ष -** 5 मार्च, 1931ई.
- इरविन ने 26 जनवरी, 1931 ई० को गाँधी जी को जेल से रिहा कर देश में सौहार्द्र का वातावरण उत्पन्न करना चाहा।
- तेज बहादुर सप्रू एवं जयकर के प्रयत्नों से गाँधी जी एवं इरविन के मध्य 17 फरवरी से दिल्ली में वार्ता आरम्भ हुई। इसे **दिल्ली पैक्ट** के नाम से भी जाना जाता है।
- इस समझौता का मुख्य उद्देश्य कांग्रेस को गोलमेज सम्मेलन में शामिल करने हेतु राजी करना था।
- गांधी-इरविन समझौते का प्रारूप हर्बर्ट इमर्सन ने तैयार किया था।

इरविन ने निम्न शर्तो को माना

- राजनीतिक बंदियों की रिहाई (हिंसात्मक अपराधियों के अतिरिक्त)
- समुद्र के किनारे नमक बनाने का अधिकार (एक निश्चित सीमा के भीतर)
- नौकरी छोड़ने वाले को वापस लेना।
- तीसरे पक्ष को न बेचीं गयी सभी जमीनों को वापस कर दिया जायेगा।
- जुर्मानो की वसूली का स्थगन।
- आपातकालीन अध्यादेशों को वापस ले लिया जायेगा।
- शराब, अफीम और विदेशी वस्तुओं की दुकानों के सामने शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन की आज्ञा।

गांधीजी ने निम्न शर्तो को माना

- सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित किया
- गोलमेज सम्मेलन में शामिल होने का न्योता स्वीकार किया

- बहिष्कार की नीति का त्याग
- पुलिस जाँच की मांग वापस लिया
- इसी समझौते के सफलता को देखते हुए भारत कोकिला सरोजनी नायडू ने इन दोनों को 'दो महात्मा' कहा था।
- श्री के.एम. मुंशी ने इस समझौते को "भारत के सांविधानिक इतिहास में एक युग प्रवर्तक घटना" कहा।
- पं. नेहरू और सुभाष चन्द्र बोस ने यह कह कर आलोचना की कि गाँधी जी ने पूर्ण स्वतंत्रता के लक्ष्य को बिना ध्यान में रखे ही समझौता कर लिया।
- **गाँधी -** इरविन समझौते को एलन कैम्पबेल जॉन्सने (अमेरिकी पत्रकार) ने गाँधी जी के लाभ को 'सांत्वना पुरस्कार' कहा था।
- कांग्रेस उद्घाटन गोलमेज सम्मेलन में शामिल नहीं हुई, जिसमें मुस्लिम लीग, हिंदू महासभा, राजकुमारों, उदारवादियों और दलितों के चैंबर

समझौते के परिणाम

- गांधी-इरविन समझौते के तहत गांधीजी लंदन में एक गोलमेज सम्मेलन में सहभाग लेने के लिए सहमत हुए, और सरकार राजनीतिक कैदियों को रिहा करने के लिए प्रतिबद्ध थी।
- सरकार से स्पष्ट लाभ हासिल करने में विफल रहने और गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए सहमत होकर स्वराज की मांग पर आत्मसमर्पण करने के लिए कट्टरपंथियों द्वारा गठबंधन की आलोचना की गई थी।
- गांधीजी को शायद यह पता था कि विशाल आंदोलन मौलिक रूप से क्षणभंगुर होते हैं, और उन्होंने ब्रिटिश प्रशासन से इस अवसर का लाभ उठाने का प्रयास किया।
- इरविन समझौते में सहमति के अनुसार सविनय अवज्ञा को रोकने का गांधी का निर्णय पीछे हटना नहीं था।
- कार्यकर्ताओं के विपरीत, बलिदान करने में जनता की क्षमता सीमित थी, और सितंबर 1930 के बाद यह दिखाई भी देने लगा, खासकर उन दुकानदारों और व्यापारियों में जो इतनी ऊर्जा से लगे हुए थे।

कराची अधिवेशन (मार्च 1931)

- **वर्ष -** 29 मार्च 1931 ई.
- **अध्यक्षता -** सरदार वल्लभभाई पटेल
- **इस अधिवेशन की प्रमुख बातें -**
- आर्थिक कार्यक्रम से सम्बद्ध प्रस्ताव पारित किया गया।
- 'मौलिक अधिकार' का प्रस्ताव पारित किया गया।
- इसी अधिवेशन में काले झंडे दिखाकर युवाओ ने गाँधी जी का विरोध किया क्योकि गाँधी जी सरदार भगत सिंह व उनके साथियों को फांसी से नहीं बचा पाए।
- इस सम्मेलन में गाँधीजी ने कहा था कि "गाँधी मर सकता है, परन्तु गांधीवाद नहीं।"
- सुभाष चन्द्र बोस ने भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के कराची अधिवेशन को महात्मा गाँधी की लोकप्रियता और सम्मान की पराकाष्ठा माना।

अधिवेशन का महत्व

- इसने दिल्ली समझौते या गांधी-इरविन समझौते का समर्थन किया।
- इसने पहली बार मौलिक अधिकारों पर एक प्रस्ताव पेश किया, और मसौदा प्रस्ताव जवाहर लाल नेहरू द्वारा लिखा गया था (सत्र की अध्यक्षता वल्लभाई पटेल ने की थी)।
- इसने पूर्ण स्वराज की अवधारणा को पहली बार समझाया और इसे एक लक्ष्य के रूप में रेखांकित किया।
- इसमें यह भी कहा गया कि अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा के साथ-साथ उनकी संस्कृति की भी रक्षा की जाएगी।
- इसने भगत सिंह और दूसरों के वीरतापूर्ण बलिदान को मान्यता दी।
- कराची प्रस्ताव महत्वपूर्ण है क्योंकि बाद के वर्षों में यह कांग्रेस के राजनीतिक और आर्थिक एजेंडे की नींव बन गया।

दूसरा गोलमेज सम्मेलन

- **वर्ष -** 7 सितम्बर 1931 से 1 दिसंबर 1931
- **स्थान** - लंदन
- **प्रतिनिधि -** 31
- **अन्य तथ्य -**
- इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए गाँधी जी एस.एस. राजपुताना नामक जहाज से 12 सितम्बर को इग्लैण्ड पहुँचे और लन्दन के किंग्सले हाल में ठहरे थे।
- गाँधी जी कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि थे।
- इसी सम्मेलन में मदन मोहन मालवीय, सरोजनी नायडू और एनी बेसेन्ट ने स्वयं के खर्चे पर हिस्सा लिया था।
- दक्षिण पंथी नेता विंस्टन चर्चिल ने गाँधीजी को **'देशद्रोही फकीर'** कहा।

दूसरे गोलमेज सम्मेलन के संबंध में:

- गोलमेज सम्मेलनों को पहले, दूसरे और तीसरे के रूप में नामित किया गया था। इसे ऐसा कहना गलत होगा क्योंकि यह अनिवार्य रूप से तीन सत्रों में विभाजित एक ही सम्मेलन था।
- दूसरे गोलमेज सम्मेलन से ठीक पहले अप्रैल में इरविन की जगह नए वायसराय विलिंगडन को नियुक्त किया गया था और वह इरविन के उदार रुख को अपनाने के लिए तैयार नहीं थे।
- दूसरे गोलमेज सम्मेलन में अंग्रेजों ने गैर-कांग्रेसी दलों को भी अधिकाधिक संख्या में शामिल किया।
- अल्पसंख्यक मुद्दे पर वार्ता टूट गई। इस सम्मलेन में मुसलमानों के साथ-साथ अंबेडकर ने भी अल्पसंख्यकों के लिए अलग चुनाव की मांग की, जिसे गाँधी जी ने अस्वीकार कर दिया।
- अंततः साम्प्रदायिक गतिरोध उत्पन्न हो गया जिसके कारण सम्मेलन 1 दिसम्बर को समाप्त घोषित कर दिया गया और गाँधीजी लंदन से खाली हाथ निराश बम्बई पहुँचे।
- स्वदेश पहुँचने पर उन्होंने कहा कि "यह सच है कि मैं खाली हाथ लौटा हूँ किन्तु मुझे संतोष है कि जो ध्वज मुझे सौंपा गया था मैंने उसे नीचे नहीं होने दिया और उसके सम्मान के साथ समझौता नहीं किया"।

परिणाम:

- दो नए मुस्लिम बहुल प्रांतों, एनडब्ल्यूएफपी और सिंध का गठन।
- एक भारतीय सलाहकार समिति का गठन।
- एकतरफा सांप्रदायिक पंचाट की संभावना।
- चर्चिल की नई दक्षिणपंथी / रूढ़िवादी सरकार ने कांग्रेस को बराबरी पर रखने से इनकार कर दिया और कड़ा रुख अपनाया; परिणामस्वरूप, नए वायसराय ने गांधीजी से मिलने से इनकार कर दिया।
- गफ्फार खान और जवाहरलाल नेहरू दोनों को कैद कर लिया गया, कांग्रेस को अवैध घोषित कर दिया गया, और सभाओं, रैलियों और बहिष्कारों को रोकने के लिए कई प्रतिबंध लगाए गए।
- प्रेस पर प्रतिबंध था, और कांग्रेस अभी भी प्रतिबंध का सामना कर रही थी।
- महात्मा गांधी ने गहन चिंता के साथ सविनय अवज्ञा आंदोलन को फिर से शुरू किया।
- यह आंदोलन एक वर्ष से अधिक समय तक चला, लेकिन 1934 तक, सरकारी उत्पीड़न के कारण इसकी गति कम हो गई थी।

सविनय अवज्ञा आंदोलन के दूसरे चरण की विफलता के कारण

- प्रमुख नेताओं को कैद कर लिया गया।
- अल्प किसान समर्थन।
- गांधीवादी राजनीति में कम जड़ता और एक स्पष्ट निराशा है।

गोलमेज वार्ता की विफलता के बाद, ब्रिटिश सरकार ने घोषणा की कि यदि अल्पसंख्यकों के अलग प्रतिनिधित्व पर आम सहमति नहीं बन पाती है, तो एकतरफा सांप्रदायिक निर्णय दिया जाएगा। सरकार ने 1932 के सांप्रदायिक पुरस्कार के रूप में अपना वादा निभाया।

सांप्रदायिक पंचाट

- **वर्ष -** 4 अगस्त 1932
- **अन्य तथ्य**
- ब्रिटिश प्रधान मंत्री रैम्जे मैकडॉनल्ड ने मुसलमानों, सिखों और दलितों सहित भारत में अल्पसंख्यक समुदायों को अलग निर्वाचक मंडल देने के लिए सांप्रदायिक पुरस्कार जारी किया।
- दलित वर्गों को विशेष निर्वाचन क्षेत्रों की कई सीटों का आवंटन किया गया था जिसमें केवल दलित वर्गों के मतदाता ही मतदान कर सकते थे।
- पंचाट का कांग्रेस और अन्य राष्ट्रवादी समूहों ने विरोध किया गया था
- इसे ब्रिटेन की **'फूट डालो और राज करो'** योजना के हिस्से के रूप में देखा गया था।
- महात्मा गांधी, इस पंचाट से नाराज थे और उन्होंने इसका कड़ा विरोध किया। गांधी ने इसे "हिंदू-मुस्लिम एकता पर अंग्रेजी हमला" के रूप में संदर्भित किया।
- गाँधीजी इस समय यरवदा जेल में थे। उन्होंने इसके विरोध में आमरण अनशन कर दिया।

सांप्रदायिक पंचाट पर

- **अम्बेडकर के विचार:** उसने सांप्रदायिक पंचाट का समर्थन किया।
- **गांधी पर विचार**: गांधी, अम्बेडकर के अनुसार, मुसलमानों और सिखों को अलग निर्वाचक मंडल प्रदान करने के इच्छुक थे। हालाँकि, गांधी अनुसूचित जातियों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्र की पेशकश करने में हिचकिचा रहे थे।

पूना पैक्ट

- **वर्ष -** 24 सितम्बर, 1932
- मदन मोहन मालवीय, राजेन्द्र प्रसाद, पुरुषोत्तम दास और राजगोपालाचारी के प्रयासों से गाँधीजी और अम्बेडकरे के बीच पूना में समझौता हुआ जिसे पूना पैक्ट कहा जाता हैं।
- इस पर गांधी जी ने हस्ताक्षर नहीं किया था।
- इस पर हिन्दुओं की ओर से मदन मोहन मालवीय ने हस्ताक्षर किया था।

पूना पैक्ट की शर्ते -

- इसके तहत पृथक निर्वाचक मण्डल (दलित) समाप्त कर दिया गया
- प्रांतीय विधान मण्डलों में दलितों के लिए सुरक्षित सीटों की संख्या 71 से बढ़कर 148 कर दी गयी।
- केन्द्रीय विधानमण्डल में दलित वर्गों के लिए आरक्षित सीटों की संख्या 18% बढ़ा दी गई।
  इस समझौते के बाद गांधी ने दलितों की मदद के लिए अपने प्रयासों को दुगना कर दिया।
  उन्होंने हरिजन पत्रिका की स्थापना की और दलितों के लिए सामुदायिक कार्य करने और अस्पृश्यता के विचार का प्रसार करने में एक साल बिताया।

पूना पैक्ट का प्रभाव

- दलित वर्गों को महत्वपूर्ण राजनीतिक अधिकार प्रदान करने के बावजूद, पूना पैक्ट दलित वर्ग की मुक्ति के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करने में विफल रहा। इसने कई मुद्दों को जन्म देते हुए उसी पुरानी हिंदू सामाजिक संरचना को बने रहने दिया।
- पैक्ट ने गरीबों को राजनीतिक उपकरण में बदल दिया, जिसे बहुसंख्यक जाति हिंदू संगठनों द्वारा नियोजित किया जा सकता था।
- इसने उत्पीड़ित वर्गों को नेतृत्वविहीन कर दिया क्योंकि वर्गों के प्रामाणिक प्रतिनिधि सवर्ण हिंदू संगठनों द्वारा चुने गए।
- दलित वर्गों को एक विशेष और विशिष्ट जीवन से वंचित करके, इसने उन्हें हिंदू सामाजिक व्यवस्था के अधीन कर दिया।
- पूना पैक्ट ने समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व और न्याय पर आधारित एक आदर्श समाज के विकास में बाधा उत्पन्न की।
- इसने दलितों के अधिकारों और स्वतंत्रता को राष्ट्रीय जीवन के एक अलग और विशिष्ट तत्व के रूप देखा।

Note :-

- डा. बी.आर. अम्बेडकर ने कहा था कि **"महात्मा गांधी क्षणिक भूत की भांति धूल उठाते हैं लेकिन स्तर नहीं उठाते।"**

- **'आपरेशन रुबिकॉन'** शब्द का चुनाव लार्ड लिनलिथगो द्वारा पूना के आगा खां पैलेस में गाँधी जी के आमरण अनशन के दौरान उनकी सम्भावित मृत्यु की सूचना देने हेतु किया गया था।

गांधी का हरिजन अभियान और जाति पर विचार

- सरकार के बांटो और राज करो कार्यक्रम के विनाशकारी उद्देश्यों को कमजोर करने के लिए दृढ़ संकल्प, गांधी ने अन्य सभी हितों को त्याग दिया और अस्पृश्यता के खिलाफ एक उन्मादी अभियान शुरू किया , पहले जेल से और फिर, अगस्त 1933 में जेल से बाहर छूटने के बाद।

अस्पृश्यता के विरुद्ध गाँधी का अभियान:

- जेल में रहते हुए, उन्होंने सितंबर 1932 में अखिल भारतीय अस्पृश्यता विरोधी लीग और 1933 में आवधिक हरिजन संस्था की स्थापना की।
- अपनी रिहाई के बाद, वे वर्धा में सत्याग्रह आश्रम चले गए, और स्वराज हासिल होने तक साबरमती आश्रम में वापस नहीं आने का संकल्प लिया।
- वर्धा से, उन्होंने नवंबर 1933 से जुलाई 1934 तक पूरे देश में हरिजन यात्रा का नेतृत्व किया, अपने नवगठित हरिजन सेवक संघ के लिए धन इकट्ठा करते हुए और इसके सभी रूपों में अस्पृश्यता के उन्मूलन को बढ़ावा देते हुए 20,000 किलोमीटर की यात्रा की।
- उन्होंने राजनीतिक कार्यकर्ताओं से समुदायों का दौरा करने और हरिजनों की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक उन्नति की वकालत करने का आग्रह किया।
- अपने काम की गंभीरता और विषय की गंभीरता के बारे में अपने समर्थकों को मनाने के लिए उन्होंने 8 मई और 16 अगस्त, 1934 को दो बार उपवास किया।
- गांधी अपने पूरे अभियान के दौरान पारंपरिक और रूढ़िवादी तत्वों द्वारा लक्षित थे। इन समूहों ने उनकी सभाओं को बाधित किया, उनके खिलाफ काले झंडे दिखाए और उन पर हिंदू विरोधी होने का आरोप लगाया।
- उन्होंने कांग्रेस और सविनय अवज्ञा आंदोलन के खिलाफ आधिकारिक समर्थन का भी वादा किया। अगस्त 1934 में, सरकार के मंदिर प्रवेश विधेयक को पराजित कर अनुपालन किया।
- उनका पूर्ण प्रयास मानवतावादी और तर्कसंगत अवधारणाओं पर आधारित था। उन्होंने कहा कि शास्त्र अस्पृश्यता को मंजूरी नहीं देते हैं, और यदि वे ऐसा करते हैं, तो उन्हें नजरअंदाज कर दिया जाना चाहिए क्योंकि यह मानवीय गरिमा का उल्लंघन करता है।
- इसी तरह, उन्होंने अस्पृश्यता को हटाने और समग्र रूप से जाति व्यवस्था के उन्मूलन के बीच अंतर किया। इस बिंदु पर, वे अम्बेडकर से भिन्न थे, जिन्होंने अस्पृश्यता को समाप्त करने के लिए जाति व्यवस्था के उन्मूलन का आग्रह किया था।
- वर्णाश्रम व्यवस्था की सीमाएं और खामियां जो भी हों, गांधीजी का मानना था कि यह अस्पृश्यता की तरह दुष्ट नहीं है।
- गांधीजी के हरिजन अभियान में हरिजनों के लिए एक आंतरिक सुधार एजेंडा शामिल था जिसमें शिक्षा, स्वच्छता, स्वास्थ्य, गोमांस और मांस की खपत से परहेज करना और आपस में अस्पृश्यता को कम करना शामिल था।

अभियान के प्रभाव:

- गांधीजी ने लगातार कहा कि अभियान का उद्देश्य राजनीतिक आंदोलन नहीं था, बल्कि हिंदू धर्म और हिंदू संस्कृति को शुद्ध करना था।
- इस अभियान ने धीरे-धीरे हरिजनों तक राष्ट्रवाद का संदेश फैलाया, जो देश के अधिकांश क्षेत्रों में खेतिहर मजदूर भी थे, जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्रीय और किसान गतिविधियों में वृद्धि हुई।

- **Note:-** "अगर अस्पृश्यता जीवित रहती है तो हिंदू धर्म मर जाता है, अगर हिंदू धर्म को जीवित रहना है तो अस्पृश्यता को मरना होगा।" - गाँधी जी

तृतीय गोलमेज सम्मेलन

- **वर्ष -** 17 नवम्बर, 1932 से 24 दिसम्बर, 1932 ई०
- **प्रतिनिधि** - 46
- **स्थान -** लन्दन
- **अन्य तथ्य**
- भारत सचिव सर सिमुअल होर इस सम्मेलन के विरोधी थे।
- इस सम्मेलन में ऐसे लोगों को आमंत्रित नहीं क्रिया गया जिनसे सरकार के विरोध की संभावना थी।
- अधिकतर प्रतिनिधि उदारवादी एवं साम्प्रदायिक थे।
- 24 दिसम्बर, 1932 ई० को सम्मेलन की समाप्ति के बाद एक श्वेत पत्र जारी किया गया।
- इस श्वेत पत्र पर विचार करने के लिए लार्ड लिनलिथगों की अध्यक्षता में ब्रिटिश संसद ने एक संयुक्त समिति गठित की।
- इसने नवम्बर, 1934 ई० को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।
- इस रिपोर्ट के आधार पर सैमुअल होर द्वारा दिसम्बर, 1934 ई० को भारत शासन विधेयक ब्रिटिश संसद में प्रस्तुत किया।
- अगस्त, 1935 ई० को ब्रिटिश सम्राट् ने इसे मंजूरी दे दी।
- यह विधेयक "भारत शासन अधिनियम, 1935" के नाम से विख्यात हुआ।

1935 का भारत सरकार अधिनियम

- अधिनियम ने प्रमुख राज्यों और प्रांतों से मिलकर एक अखिल भारतीय संघीय ढांचे की स्थापना की। रियासतों को शामिल करने की परिकल्पना प्रांतों के बढ़ते राष्ट्रवाद के प्रतिसंतुलन के रूप में की गई थी।

अधिनियम की मुख्य विशेषताएं:

- **स्थापित संघवाद**: इसने प्रमुख राज्यों और प्रांतों के साथ-साथ संघीय सूची, प्रांतीय सूची और समवर्ती सूची के साथ भारत में संघवाद की स्थापना की। क्योंकि रियासतों ने स्वीकृति नहीं दी, इसलिए यह कभी भी एक वास्तविकता नहीं बन पाई।
- **प्रांतीय द्वैध शासन:** प्रांतीय स्वायत्तता ने प्रांतीय द्वैध शासन की जगह प्रांतों में उत्तरदायी सरकार की शुरुआत की। राज्यपाल को अब उन मंत्रियों की सलाह पर कार्य करना था जो प्रांतीय विधानमंडल को रिपोर्ट करते थे।
- **द्विसदनीय व्यवस्था**: ग्यारह प्रांतों में से छह में द्विसदनीय व्यवस्था लागू की गई थी।
- **द्विसदनीय संघीय विधायिका:** (रियासतों) राज्यों को अनुपातहीन भार के साथ एक द्विसदनीय संघीय विधायिका भी होनी थी। इसके अलावा, राज्यों के प्रतिनिधियों को लोगों द्वारा चुने जाने के बजाय सीधे शासकों द्वारा नियुक्त किया जाना था।
- **बर्मा को भारत से अलग किया:** बर्मा को भारत से अलग कर एक प्रांत का दर्जा दिया गया था।
- **संघीय स्तर पर द्वैध शासन लागू:** संघीय / केंद्रीय स्तर पर द्वैध शासन लागू किया गया था और प्रांतीय स्तर पर इसे समाप्त कर दिया गया था।
- **गवर्नर जनरल और प्रांतीय गवर्नरों की आपातकालीन शक्तियाँ:** ब्रिटिश सरकार को गवर्नर-जनरल और गवर्नरों की नियुक्ति करनी थी। हालाँकि प्रांतों को शक्तियाँ दी गई थीं, राज्यपालों को विशेष अधिकार दिए गए थे। उनके पास कानून को वीटो करने की शक्ति है। इसके अलावा, उन्होंने सिविल सेवा और पुलिस पर पूर्ण नियंत्रण बनाए रखा।
- **पृथक निर्वाचक मंडल:** 1909 और 1919 के अधिनियमों द्वारा अनिवार्य रूप से हिंदुओं और मुसलमानों के लिए स्थापित किए गए थे।
- **सीमित मताधिकार**: ब्रिटिश भारत की कुल आबादी के केवल 14% (1/6) लोगों को वोट देने का अधिकार दिया गया था।
- **प्रमुख विभागों पर ब्रिटिश नियंत्रण**: रक्षा और विदेशी मामले इसके दायरे से बाहर रहे, जबकि गवर्नर-जनरल ने शेष विषयों पर विशेष अधिकार का प्रयोग किया।
- **बजट पर मतदान:** इसकी अनुमति भी दी गई थी।
- **'सामूहिक प्रतिनिधित्व का विचार':** 'अविश्वास का मत' और 'सामूहिक प्रतिनिधित्व का विचार' शब्द रचे गए।

- **अन्य प्रावधान:** अधिनियम में एक संघीय न्यायालय, एक संघीय बैंक (RBI), एक संघीय लोक सेवा आयोग का प्रावधान भी किया गया।

Government of India Act of 1935

- The Act established an all-India federal structure consisting of major states and provinces. The inclusion of princely states was envisaged as a counterbalance to the growing nationalism of the provinces.

1935 के भारत सरकार अधिनियम का आकलन:

- **'पूरी तरह से निराशाजनक':** अधिनियम को कांग्रेस द्वारा 'पूरी तरह से निराशाजनक' माना गया था। इस कृत्य की सर्वत्र निंदा हुई। जवाहरलाल नेहरू ने अधिनियम को **"बिना इंजन वाली कार"** के रूप में वर्णित किया।
- **डोमिनियन स्टेटस का कोई उल्लेख नहीं:** इसमें साइमन कमीशन द्वारा प्रस्तावित डोमिनियन स्टेटस का कोई उल्लेख नहीं था।
- **पृथक निर्वाचक मंडल का प्रावधान:** इसने पृथक निर्वाचक मंडल के प्रावधान को भी बनाए रखा, जिसने समुदाय को और विभाजित किया। कांग्रेस लंबे समय से पृथक निर्वाचक मंडल का विरोध कर रही थी।

Note:-

- भारत सरकार अधिनियम, 1935 इसलिये पारित किया गया, क्योंकि हम समझते थे कि भारत पर अंग्रेजी प्रभुत्व बरकरार रखने का यह सर्वोत्तम तरीका है। **- लॉर्ड लिनलिथगो, वायसराय**
- हमें एक ऐसी कार दी गई है, जिसमें अनेक ब्रेक हैं किंतु इंजन का अभाव है। **- जवाहरलाल नेहरू**
- भारत में संवैधानिक सुधारों की प्रक्रिया को प्रारंभ करना, उपनिवेशी शासन की ओर भारतीयों को आकृष्ट करने की चेष्टा है। **- बी. आर. टॉमलिंसन**

1937 में चुनाव

- प्रातीय चुनाव (1937 ई०)
- भारत शासन अधिनियम, 1935 ई० में भारतीयों को प्रांतीय शासन प्रबंध का अधिकार मिल गया।
- इसके फलस्वरूप, अनेक क्षेत्रीय पार्टियों का उद्भव हुआ।

स्थान	पार्टी	संस्थापक
पंजाब	अप्सर हुसैन	यूनियनिस्ट पार्टी
बंगाल	फजलुल हक	कृषक प्रजा पार्टी
बंगाल, मध्य प्रांत	अम्बेडकर	इण्डिपेंडेण्स वर्कर्स पार्टी

- 1937 ई० के चुनाव में कांग्रेस को बड़ी सफलता मिली।
- कुल 1585 असेम्बली सीटों में 711 सीटों पर विजय प्राप्त हुई।
- ग्यारह में से पाँच प्रांतों मद्रास, बिहार, उडीसा, मध्य प्रांत और संयुक्त प्रांत में पूर्ण बहुमत मिला।
- बम्बई में लगभग पूर्ण बहुमत पूर्ण बहुमत मिला।
- मुस्लिम चुनाव क्षेत्रों में कांग्रेस ने बहुत मामूली प्रदर्शन किया लेकिन यह भी सिद्ध हो गया की मुस्लिम लीग भी, मुसलमानों की एक मात्र प्रतिनिधि नहीं हैं।
- पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत में लीग एक भी सीट नहीं पा सकी।
- पंजाब के 84 आरक्षित चुनाव क्षेत्रों में से केवल 2 और सिंध के 33 में से केवल तीन स्थान ही लीग को मिले।
- अनुसूचित जातियों की अधिकांश सीटें भी कांग्रेस ने जीत ली थीं सिवाय बम्बई के, जहाँ अम्बेडकर को इण्डिपेन्डेण्ट लेबर पार्टी ने हरिजनों के लिए आरक्षित 15 सीटों में से 13 जीती थीं।

- बाद में चल कर पश्चिमोत्तर प्रांत एवं असम में भी कांग्रेस का मंत्रिमण्डल बना।
- केवल बंगाल, पंजाब तथा सिंघ में कांग्रेस को बहुमत नहीं मिला।
- पंजाब से यूनियनिस्ट पार्टी तथा मुस्लिम लीग ने मिलकर संयुक्त सरकार का गठन किया।
- बंगाल में कृषक प्रजा पार्टी तथा मुस्लिम लीग की संयुक्त सरकार सत्ता में आई।

कांग्रेस मंत्रिमण्डलों का कार्यकाल (1937 ई० - 1939 ई०)

- 1937 ई० के चुनाव में कांग्रेस ने कुल आठ राज्यों में अपनी सरकारें बनाई।
- प्रशासन को चलाने के लिए एक केन्द्रीय नियंत्रण परिषद् गठित की गई।
- इस परिषद् को संसदीय उपसमिति का नाम दिया गया।
- इसके सदस्य थे - सरदार पटेल, मौलाना अबुल कलाम आजाद और डॉ० राजेन्द्र प्रसाद।
- इस समय प्रांतों के प्रमुख को प्रधानमंत्री कहा जाता था।

स्थान	प्रधानमंत्री
मद्रास	राज गोपालाचारी
विहार	कृष्ण सिन्हा
उड़ीसा	बी० एन० दास
मध्य प्रांत	एन० वी० खरे
संयुक्त प्रांत	गोविद वल्लभ पंत
बम्बई	बी० जी० खरी
असम	सादुल्लाह
उत्तर पश्चिमी सीमा प्रांत	डॉ० खाँ साहव
सिंघ	अल्लाह बख्श
पंजाब	सर सिकन्दर हयात खाँ
बंगाल	फजलुल हक

Note:-

- एन० बी० खरे के इस्तीफा देने के कारण राँव शंकर शुक्ल को मध्य प्रांत की प्रधानमंत्री बनाया गया।
- सादुल्लाह के इस्तीफा देने के कारण गोपीनाथ वारदोलई असम के प्रधान मंत्री बने।
- अल्लाह बख्श के इस्तीफा देने के बाद सिंघ में बन्दे अलीखा खान प्रधान मंत्री हुए।
- कांग्रेस सरकारों ने अपने 28 माह के संधिप्त शासन काल में यह प्रमाणित कर दिया कि वह जेवल जनसंघर्षों के लिए ही जनता का नेत्रत्व नहीं कर सकती है, बल्कि उनके हित में राजसत्ता का उपयोग भी कर सकती हैं।

- 1939 ई० में द्वितीय विश्व युद्ध के प्रारम्भ होने पर तत्कालीन वायसराय लार्ड लिनलिथगो ने भारतीय विधान मण्डलों की सहमति के बिना भारत को युद्ध में शामिल कर लिया।
- कांग्रेस कार्यसमिति ने यह माँग रखी कि युद्ध के बाद भारत को स्वतंत्र कर दिया जाए।
- सरकार ने इस माँग की उपेक्षा की। 22 अक्टूबर, 1939 ई० को कांग्रेस कार्यसमिति ने एक प्रस्ताव पास किया। जिसमे कांग्रेस मंत्रिमण्डलों को इस्तीफा देने के लिए कहा।
- कांग्रेस कार्यकारिणी के आदेश पर 29-30 अक्टूबर, 1939 ई० को 8 प्रांतों में कांग्रेस मंत्रिमण्डलों ने इस्तीफा दे दिया।
- कांग्रेस मंत्रिमण्डलों द्वारा त्याग पत्र दे दिए जाने के बाद मुस्लिम लीग ने 22 दिसम्बर, 1939 ई० को "मुक्ति दिवस" एवं धन्यवाद दिवस के रूप में मनाया इसमें उनका साथ डॉ० अम्बेडकर ने भी दिया।

- 1939 ई० में द्वितीय विश्व युद्ध के प्रारम्भ होने पर तत्कालीन वायसराय लार्ड लिनलिथगो ने भारतीय विधान मण्डलों की सहमति के बिना भारत को युद्ध में शामिल कर लिया।
- कांग्रेस कार्यसमिति ने यह माँग रखी कि युद्ध के बाद भारत को स्वतंत्र कर दिया जाए।
- सरकार ने इस माँग की उपेक्षा की। 22 अक्टूबर, 1939 ई० को कांग्रेस कार्यसमिति ने एक प्रस्ताव पास किया। जिसमे कांग्रेस मंत्रिमण्डलों को इस्तीफा देने के लिए कहा।
- कांग्रेस कार्यकारिणी के आदेश पर 29-30 अक्टूबर, 1939 ई० को 8 प्रांतों में कांग्रेस मंत्रिमण्डलों ने इस्तीफा दे दिया।
- कांग्रेस मंत्रिमण्डलों द्वारा त्याग पत्र दे दिए जाने के बाद मुस्लिम लीग ने 22 दिसम्बर, 1939 ई० को "मुक्ति दिवस" एवं धन्यवाद दिवस के रूप में मनाया इसमें उनका साथ डॉ० अम्बेडकर ने भी दिया।

कांग्रेस शासन का आकलन

- **परिषद के काम को अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करना:** भले ही 1939 तक कांग्रेसियों में आंतरिक कलह, अवसरवादिता और सत्ता की इच्छा उभरने लगी थी, लेकिन वे काफी हद तक परिषद के काम को अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करने में सक्षम थे।
- **अपने लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए राज्य की शक्ति:** कांग्रेस के सदस्यों ने प्रदर्शित किया कि एक आंदोलन राज्य की शक्ति का उपयोग अपने लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए सहयोजित किए बिना कर सकता है।
- **साम्प्रदायिक दंगों को नियंत्रित करने में सक्षम:** मंत्रालय साम्प्रदायिक दंगों को नियंत्रित करने में सक्षम थे, और परिषद के कार्यों ने पहले के कई शत्रुतापूर्ण तत्वों (उदाहरण के लिए जमींदारों) को बेअसर करने में सहायता की।
- आजादी मिलने पर लोग आने वाली चीजों के आकार को देख सकते थे।
- **मिथक को कमजोर किया:** भारतीय प्रशासनिक कार्य ने इस मिथक को कमजोर कर दिया कि भारतीय शासन करने के योग्य नहीं थे।
- **औद्योगिक श्रमिक वर्ग की आशाओं को जगाया:** चुनावों में कांग्रेस की जीत ने औद्योगिक श्रमिक वर्ग की आशाओं को जगाया था; बंबई, गुजरात, संयुक्त प्रांत और बंगाल में उग्रवाद और औद्योगिक असंतोष उस समय बढ़ गया था जब कांग्रेस को भारतीय पूंजीपतियों के करीब लाया गया था।

❑ भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन - तृतीय चरण (1939-1947)

- **द्वितीय विश्वयुद्ध एवं भारत:**
  - द्वितीय विश्व युद्ध (1939-1945) के दौरान, वायसराय लिनलिथगो ने भारतीय राजनेताओं को पूछे बिना ही भारत को जर्मनी के विरुद्ध युद्ध में शामिल कर दिया था।
- **युद्ध के प्रति भारतीयों का रुख:**
  - अंग्रेजों के खिलाफ एक शक्तिशाली आंदोलन शुरू करना और युद्ध के लिए भारत के संसाधनों को इकट्ठा करने के ब्रिटिश प्रयासों का विरोध करना।
  - हालांकि, हिंदू महासभा और मुस्लिम लीग जैसे राजनीतिक संगठनों ने ब्रिटिश युद्ध प्रयासों का समर्थन किया।
  - फासीवाद को मानवता के लिए भयानक खतरे के रूप में देखा गया, जिसके कारण युद्ध में सशर्त रूप से ब्रिटेन की सहायता करने की अभिलाषा हुई थी।
  - इस अकाल के कारण कुपोषण या बीमारी से करीब 30 लाख लोगों की मौत हुई थी।

- **द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रभाव**
  - **राजनीतिक:**
    - 1947 में पद ग्रहण करने के कुछ समय बाद, लेबर पार्टी के प्रधान मंत्री क्लीमेंट एटली ने भारत को स्वतंत्रता देने की प्रक्रिया शुरू की थी।
    - 1942 में, अंग्रेजो ने महात्मा गांधी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के "भारत छोड़ो" अभियान को समाप्त कर दिया था। इस वजह से, ब्रिटेन ने भारत (और उसकी सेना) की एकता बनाए रखने के लिए भयंकर लड़ाई लड़ी थी।

- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, दुनिया भर के लोगों ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का विरोध करने वालों का समर्थन करना शुरू कर दिया था।

- **सामाजिक:**
  - कई फसलें खराब होने की वजह से भारत में खाद्यान्न की भारी कमी हो गई थी।
  - ब्रिटिश सरकार द्वारा जरूरतमंद लोगों के लिए भारत से आपूर्ति रोकने हेतु इनकार करने से राष्ट्रवादियों के स्वतंत्रता के लिए लड़ने के संकल्प को बढ़ावा मिला था।
  - 1945 में जब ब्रिटेन में लेबर पार्टी सत्ता में आई, तो यह अन्य उदार विचारों, अंतर्राष्ट्रीयता और नस्लीय समानता के लिए प्रतिबद्ध थी।
- **आर्थिक**
  - भारतीय **अर्थव्यवस्था** पर विनाशकारी प्रभाव।
  - युद्ध व्यय की बजह से, भारत का स्टर्लिंग संतुलन मुद्दा देश की मुद्रास्फीति का मुख्य कारक रहा होगा।
  - मुद्रा विनिमय के मुद्दों और विनिमय **विनियमन** के विकास के कारण हुआ था।

❑ **अगस्त ऑफर (1940)**

- **वर्ष -** 8 अगस्त, 1940
- डोमिनियन स्टेट का वादा करते हुए तत्कालीन वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो द्वारा अगस्त प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया था।
- अगस्त प्रस्ताव में कांग्रेस के अंतरिम राष्ट्रीय सरकार गठित करने की मांग को अस्वीकार कर दिया गया।
- **इस प्रस्ताव के प्रावधान -**
- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद एक प्रतिनिधि मूलक संविधान निर्मात्री संस्था का गठन किया जाएगा।
- वर्तमान् में वायसराय की कार्यकारिणी परिषद में भारतीयों की संख्या बढ़ा दी जाएगी।
- एक युद्ध सलाहकार परिषद गठित की जाएगी।
- भारत का शासन किसी ऐसे समुदाय को नहीं सौपा जाएगा, जिसका विरोध भारत का कोई शक्तिशाली और प्रभावशाली वर्ग कर रहा हो।

उद्देश्य:

- इसने भारत को डोमिनियन स्टेटस देने की बात कही थी।
- ताकि अल्पसंख्यकों की राय के बिना कोई नई सरकार ना बनाई जाए
- भारत के संवैधानिक भविष्य का फैसला करने के लिए युद्ध के बाद संवैधानिक सभा की स्थापना करने हेतु।
- भारतीय राजनीतिक प्रतिनिधियों को शामिल करने के लिए परिषद का विस्तार किया था।

विभिन्न पार्टियों की प्रतिक्रिया:

- **कांग्रेस:** उन्होंने प्रस्ताव को ठुकरा दिया क्योंकि उनका मानना था कि यह "भारत को पूर्ण राष्ट्रीय स्वतंत्रता के उसके प्राकृतिक अधिकार से वंचित करने" का एक और ब्रिटिश प्रयास था।
- **मुस्लिम लीग:** हालांकि इसने प्रस्ताव को "प्रगति" के रूप में माना, यह वायसराय की परिषद के अनुमानित विस्तार पर भारतीय राजनीतिक दलों से परामर्श ना करने पर अंग्रेजों से सहमत नही थे ।
- **हिंदू महासभा**: इस संगठन, जो हिंदूओ के हितों के लिए आवाज उठाता था, ने प्रस्ताव को स्वीकार किया था और यहां तक कि वायसराय की परिषद के लिए अपने कुछ सदस्यों को भी भेजा था।

परिणाम - कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों ने अलग- अलग कारणों से इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया था।

❑ **व्यक्तिगत सत्याग्रह (1940)**

- **वर्ष -** 17 अक्टूबर 1940
- **विचारधारा -** महात्मा गांधी जी

- **स्थान -** पवनार आश्रम (महाराष्ट्र)
- **मुख्य उद्देश्य -** ब्रिटिश सरकार के एस दावे को खोखला साबित करना था कि भारत की जनता द्वितीय विश्वयुद्ध में सरकार के साथ है।
- **अन्य उद्देश्य-**
  - यह दिखाना कि राष्ट्रवादी धैर्य हमारी कमजोरी नहीं थी
  - इस भावना को व्यक्त करना कि लोग युद्ध की परवाह नहीं करते हैं तथा नाज़ीवाद और भारत पर शासन करने वाली दोहरी निरंकुशता के बीच अंतर जानते हैं।
  - कांग्रेस की मांगों को शांतिपूर्ण ढंग से स्वीकार करने के लिए सरकार को दूसरा मौका देना।

- **अन्य तथ्य**
  - अखिल भारतीय कांग्रेस समिति द्वारा अगस्त प्रस्ताव के विरोध में सितम्बर 1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह का प्रस्ताव पारित हुआ।
  - महात्मा गांधी के द्वारा विनोबा भावे को प्रथम सत्याग्रही चुना गया
  - पंडित जवाहरलाल नेहरू को दूसरे सत्याग्रही थे।
  - ब्रह्मदत्त तीसरे सत्याग्रही थे।
  - इस आन्दोलन को 'दिल्ली चलो' आन्दोलन भी कहा गया।

परिणाम

- इसने स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष के पीछे की मानसिकता को दर्शाने में योगदान दिया।
- व्यक्ति सम्मानपूर्वक और अहिंसक रूप से स्वतंत्रता का अनुरोध करके अपने कारण की वैधता और अपनी प्रतिबद्धता को साबित करने में सक्षम हुए थे।
- इससे वे सशक्त बने और उनमें उद्देश्य की भावना उत्पन्न हुई, जिससे वे अपने भाग्य का निर्धारण खुद कर सकें और स्वतंत्रता के लिए बड़े संघर्ष में भाग ले सकें।
- आंदोलन की सीमित भागीदारी के कारण बहुत कुछ हासिल नहीं हो पाया था।
- बिहार में, सत्याग्रह की पेशकश करने के लिए चुने गए कई पुरुष नगर निकायों में अपने पदों को छोड़ने के लिए अनिच्छुक(तैयार नही) थे।
- इस सत्याग्रह ने क्रिप्स प्रस्ताव को पेश करने के लिए मजबूर किया, जो अगस्त के प्रस्ताव से काफी अलग था क्योंकि इसमें संविधान सभा के लिए प्रावधान और किसी भी प्रांत को वापस लेने का विकल्प शामिल था, जिसने "भारत के विभाजन के लिए एक खाका" के रूप में कार्य किया।

❑ क्रिप्स मिशन (1942)

- **वर्ष -** 11 मार्च 1942
- **भारत पहुंचा** - 23 मार्च 1942
- **रिपोर्ट प्रस्तुत -** 30 मार्च 1942
- **उद्देश्य –**

- भारतीय नेताओं से विचार-विमर्श करके भारत के लिए भावी नीति तैयार करना तथा द्वितीय विश्व युद्ध के लिए भारतीयों का सहयोग भी प्राप्त करना था।

- **मुख्य बाते -**

- 1942 में तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने सर स्टेफर्ड क्रिप्स के नेतृव में एक दूत मण्डल भारत भेजा जो 'क्रिप्स मिशन' के नाम से प्रसिद्ध है।
- युद्ध के बाद भारत को एक उपनिवेश का दर्जा दिया जायेगा।
- प्रान्तों और राज्यों को मिलाकर एक भारतीय संघ की स्थापना की जाएगी।
- युद्ध समाप्त होने पर एक निर्वाचित संविधान सभा का गठन किया जायेगा।

- ब्रिटिश भारतीय प्रांतों को यह अधिकार होगा कि वे चाहे तो इस संविधान को स्वीकार करके संघ में शामिल हो जाय या अपने लिए नये संविधान की रचना कर लें।
- राष्ट्रमंडल छोड़ने के लिए स्वतंत्रता

- **परिणाम** –

- क्रिप्स मिशन के प्रस्तावों को सभी दलों ने अस्वीकृत कर दिया।
- महात्मा गाँधी द्वारा क्रिप्स प्रस्ताव को उत्तर तिथीय चेक (Post dated Cheque) की संज्ञा दी गयी थी।
- "यहां (भारत में) एक क्रान्ति होने जा रही है और हमे जल्दी से चले जाना चाहिए।" यह किसने कहा? - सर स्टेफोर्ड क्रिप्स
- क्रिप्स के मसौदे के कड़े रुख "इसे स्वीकार करो या इसे छोड़ दें" ने और भी बदतर बना दिया गया था।
- क्रिप्स ने पहले "कैबिनेट" और "राष्ट्रीय सरकार" शब्दों का इस्तेमाल किया था, लेकिन बाद में उन्होंने स्पष्ट किया कि उनका इरादा केवल कार्यकारी परिषद में वृद्धि करना था।
- 60% बहुमत के साथ विधायिका द्वारा पारित प्रस्ताव द्वारा अलगाव का फैसला किया गया था।
- इसके अलावा, यह स्पष्ट नहीं था कि सत्ता हस्तांतरण संधि को कौन लागू करेगा और इसकी व्याख्या कौन करेगा।

❑ **वर्धा प्रस्ताव 14 जुलाई, 1942**

- **वर्ष -** 14 जुलाई, 1942 ई०
- **मुख्य बाते -**

- गाँधी जी ने कांग्रेस को अपने प्रस्ताव को स्वीकार न किए जाने की स्थिति में चुनौती देते हुए कहा "मैं देश की बालू से ही कांग्रेस से भी बड़ा आंदोलन खड़ा कर दूँगा।"
- 14 जुलाई, 1942 ई० में कांग्रेस कार्य समिति की वर्धा बैठक में गाँधी जी के इस विचार को पूर्ण समर्थन मिला कि भारत में सांविधानिक गतिरोध तभी दूर हो सकता है जब अंग्रेज भारत से चले जाएँ।
- वर्धा में कांग्रेस कार्य समिति ने "अंग्रेजों भारत छोड़ो" प्रस्ताव पारित किया।
- आंदोलन की सार्वजनिक घोषणा के पूर्व 1 अगस्त, 1942 ई० को इलाहाबाद में 'तिलक दिवस' मनाया गया।
- इस समय नेहरू ने कहा "हम आग से खेलने जा रहे हैं तथा ऐसी दुधारी तलवार का प्रयोग करने जा रहे हैं जिसकी चोट उल्टी हमारे ऊपर भी पड़ सकती है।,

❑ **भारत छोड़ो (1942) या अगस्त क्रांति**

- **पृष्ठभूमि:**
- क्रिप्स मिशन की असफलता
- भारतीय सीमा के पास जापानी सेना की तैनाती
- खाद्य आपूर्ति की समस्याएं और बढ़ती कीमतें
- कांग्रेस के अंदर कई(विभिन्न) विचार/राय
- **वर्ष -** 8 अगस्त, 1942
- आदर्श वाक्य -"करो या मरो" - गाँधी जी
- 7 अगस्त 1942 को बम्बई के ग्वालियर टैंक मैदान में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की वार्षिक बैठक हुई, जिसकी अध्यक्षता मौलाना अबुल कलाम आजाद ने की।
- इस अधिवेशन में भारत छोड़ो प्रस्ताव को थोड़े बहुत संशोधन के बाद 8 अगस्त, 1942 को पास कर दिया गया।
- आंदोलन 9 अगस्त को प्रातः शुरू हुआ और सभी नेता गिरफ्तार कर लिए गये।
- भारत छोड़ो आन्दोलन को अगस्त क्रांति के नाम से भी जाना जाता है।

- इस सम्मेलन में गाँधी जी ने अपने भाषण में कहा - "सम्पूर्ण आजादी से कम किसी भी चीज से मैं संतुष्ट होने वाला नहीं, हो सकता है नमक टैक्स, शराब खोरी आदि को खत्म करने का प्रस्ताव दें। लेकिन मेरे शब्द होगें आजादी से कम कुछ भी नहीं"।
- गांधी जी के भाषण के बारे में डॉ० पट्टाभि सीता रमैया ने लिखा है कि "वास्तव में गाँधी जी उस दिन अवतार एवं पैगम्बर की प्रेरक शक्ति से प्रेरित होकर भाषण दे रहे थे।"
- गाँधी जी ने कहा था कि हम अपनी गुलामी स्थाई बनाया जाना नहीं देख सकते।
- **गाँधी जी द्वारा दिए गए निर्देश -**

  - सरकारी कर्मचारी नौकरी न छोड़े लेकिन कांग्रेस के प्रति निष्ठा की घोषणा कर दें।
  - राजे महाराजे भारतीय जनता की प्रभुसत्ता स्वीकार कर लें और रियासतों में रहने वाली जनता अपने को भारतीय राज्य का अंग घोषित कर दें।
  - छात्रों से कहा गया कि वे पढ़ाई तभी छोड़ें जब आजादी प्राप्त होने तक वे इस पर अडिग रह सके।
  - काश्तकारों के लिए निर्देश था कि यदि जमींदार उनका साथ न दें तो वे कर न चुकता करें।
- **अन्य तथ्य**

  - 8 अगस्त को मध्य रात्रि के बाद ही सरकार ने कांग्रेस के बड़े नेताओं को गिरफ्तार करने की योजना बनायी।
  - 9 अगस्त की सुबह "आपरेशन जीरो आवर" के तहत कांग्रेस के सभी महत्वपूर्ण नेता गिरफ्तार कर लिए गए।
  - गाँधी जी को पूना के जागा खाँ पलेश में तथा कांग्रेस कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों को अहमदनगर के दुर्ग में रखा गया।
  - सरोजनी नायडू और कस्तूरबा गाँधी को भी आगा खाँ पैलेस में रखा गया।
  - जवाहर लाल नेहरू को अल्मोड़ा जेल में, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद को बांकीपुर जेल तथा मौलाना अबुल कलाम आजाद को वाकुड़ा जेल में रखा गया।
  - कांग्रेस को अवैधानिक संस्था घोषित कर दिया।
  - सरकार के इन कृत्यों से जनता भड़क उठी और नेतृत्व विहीन होकर तोड़-फोड़ में जुट गई।
  - इस आदोलन में हिंसा और अहिंसा का मिश्रण देखने को मिलता है।
  - सरकार केकठोरतापूर्ण दमन की वजह से इस आंदोलन में एक भूमिगत संगठनात्मक ढाँचा भी तैयार हो गया।
  - हजारी बाग के सेन्ट्रल जेल से दिवाली के दिन भागने के बाद जयप्रकाश नामयणी ने भूमिगत होकर आंदोलन को बागडोर संभाल ली।
  - इन दिनों आंदोलन के समय बम्बई शहर के विभिन्न केन्द्रों से कांग्रेस रेडियो पर गुप्त संचालन कर रही थी।
  - 12 नवम्बर, 1942 ई० में पुलिस ने इसे खोज निकाला और जब्त कर लिया। इस अपराध में ऊपा मेहता और बाबू भाई को 4 वर्ष की सजा हुई।
  - अंग्रेजी सरकार ने 13 फरवरी, 1943 ई० में इस आंदोलन के समय हुए विद्रोहों का पूरा दोष गाँधी जी एवं कांग्रेस पर थोप दिया।
  - गाँधी जी ने इन दोषों को अस्वीकार करते हुए कहा कि "मेरा वक्तव्य अहिंसा की सीमा में था।"
  - गांधी जी ने अपने ऊपर लगे आरोपों को सिद्ध करने के लिए सरकार से निष्पक्ष जाँच करने को माँग की।
  - सरकार के ध्यान न देने फरवरी, 1943 ई० से गाँधी जी ने 21 दिन का उपवास शुरू कर दिया।
  - आपरेशन रुबिकॉन' शब्द का चुनाव लिनलिथगो द्वारा पूना के आगा खां पैलेस में गाँधी जी के आमरण अनशन के दौरान उनकी सम्भावित मृत्यु की सूचना देने हेतु किया गया था।
  - जनता ने सरकार पर गाँधी जी को रिहा करने के लिए दबाव डाला। परन्तु सरकार ने इस पर ध्यान नहीं दिया।
  - सरकार की इस बर्बर नीति के विरोध में वायसराय के काउन्सिल के सदस्य सर मोदी, सर एन० एन० सरकार, एवं अडे ने इस्तीफा दे दिया।
  - गाँधी जी को बाद में बीमारी के आधार पर 6 मई, 1944 ई० को रिहा कर दिया गया इस बीच गाँधी जी की पत्नी कस्तूरबा एवं उनके निजी सचिव महादेव देसाई का देहांत हो गया था।
- **इस आंदोलन की एक विशेषता समानांतर सरकारों की स्थापना था। जो निम्नवत हैं -**

  - **बलिया -** प्रथम समानांतर राष्ट्रीय सरकार चित्तू पाण्डे के नेतृत्व में बलिया और गाजीपुर में थोड़े समय के लिए स्थापित की गई

- **तामलुक -** बंगाल के मिदनापुर में गठित यह सरकार 1944 ई० तक चली। यहाँ की सरकार को "जातीय सरकार" के नाम से जाना जाता था।
- **सतारा-** सतारा की राष्ट्रीय सरकार सबसे लम्बी चली। यह 1945 ई० तक कार्यरत रही। इसके नेता वाई० बी० चाह्वाणऔर नाना पाटिल थे। यहाँ की सरकार को "प्रति सरकार" के नाम से जाना जाता था।
- इस आंदोलन की कई दलों ने आलोचना की जैसे - साम्यवादी दल , मुस्लिम लीग ने इस आंदोलन की आलोचना करते हुए कहा कि "आंदोलन का लक्ष्य भारतीय स्वतंत्रता नहीं, बल्कि , भारत में हिन्दू साम्राज्य की स्थापना करना था ।"
- कांग्रेस के उदारवादियों ने भी इस आंदोलन की आलोचना की - सर तेजबहादुर सप्रू ने इस प्रस्ताव को "अविचारित तथा असामयिक" बताया।
- राजगोपालाचारी ने भी इसकी आलोचना की।
- अम्बेडकर ने इसे "अनुत्तरदायित्वपूर्ण और पागलपन भरा कार्य" कहा।
- हिन्दू महासभा एवं अकाली दल ने भी इसकी आलोचना की।

- **निष्कर्ष -**

- भारत छोड़ो आंदोलन तात्कालिक रूप से भले ही असफल रहा, क्योंकि स्वतंत्रता प्राप्त न हो हुई लेकिन राष्ट्रीयता जगाने में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा।
- इस आंदोलन ने विश्व के कई देशों को भारतीय जनमानस के साथ खड़ा कर दिया।
- जैसे -चीन के मार्शल च्यांग-काई-शेक ने 25 जुलाई, 1942 ई० को अमेरिका के राष्ट्रपति रूजवेल्ट को पत्र में लिखा कि "अंग्रेजों के लिए श्रेष्ठ नीति यह है कि वे भारत को पूर्ण स्वतंत्रता कर दें"।
- रूजवेल्ट ने भी इसका समर्थन किया।
- सरदार पटेल ने आंदोलन के बारे में लिखा "भारत में ब्रिटिश राज्य के इतिहास में ऐसा विप्लव कभी नहीं हुआ जैसा कि पिछले तीन वर्षों में हुआ। (पटेल जी ने इसे अद्वितीय आंदोलन कहा)
- डॉ० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार "अगस्त की क्रांति सरकार के विरुद्ध प्रजा का विरोध था। इसकी तुलना फ्रांस के इतिहास के बैस्टिल के पतन से या रूस की अक्टूबर क्रांति से की।"

❑ आजादू हिन्द फौज (इंडियन नेशनल आर्मी)

- **संस्थापक -** सुभाष चन्द्र बोस
- **वर्ष -** 4 जुलाई 1943 ई.
- **स्थान -** सिंगापुर
- **अन्य तथ्य -**

- प्रथम बार गठन - 1 सितम्बर, 1942 को कैप्टन मोहन सिंह एवं निरंजन सिंह गिल ने किया था।
- मोहन सिंह एवं निरंजन गिल 29 दिसम्बर, 1942 को गिरफ्तार हो गये तथा आर्मी विघटित हो गयी।
- इसके गठन का विचार सबसे पहले मोहन सिंह ने ही सुझाया था प्रतिम सिंह और मेजर फूजीहारा ने इसमें उनकी मदद की थी।
- मोहन सिंह, सुभाष चन्द्र बोस से पूर्व आई. एन.एन. के कमांडर थे।
- सुभाष चंद्र बोस 2 जुलाई, 1943 को जापान होते हुए सिंगापुर पहुँचे और आजाद हिंद फौज के पुनर्गठन हेतु रासबिहारी बोस ने 4 जुलाई 1943 ई. को इसका नेतृत्व सुभाष चन्द्र बोस को सौंप दिया।
- नेता जी द्वारा सिंगापुर में ही 21 अक्टूबर, 1943 में आजाद भारत की अस्थायी सरकार का गठन किया गया था।
- इनके द्वारा आजाद हिंद फौज में रानी झांसी रेजीमेंट (महिला ब्रिगेड) सुभाष ब्रिगेड, नेहरू ब्रिगेड तथा गांधी ब्रिगेड आदि का गठन किया गया था।
- सुभाषचन्द्र बोस को द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान 1940 में उनके घर में ही नजरबन्द कर दिया गया था। लेकिन 1941 ई. में जियाउद्दीन नाम के एक पठान का वेश बनाकर अपने घर से बाहर निकल आये तथा यहाँ से वे पेशावर पहुँचे। उनके साथी भगत राम ने पेशावर से उन्हें

काबुल पहुंचा दिया। काबुल से वे (आरलैण्डो मैसोट्टा) नाम से पासपोर्ट प्राप्त किया तथा जर्मनी पहुंचे। वहाँ उन्होंने एक मुक्ति सेना बनाई। यहीं पर लोगों ने उन्हें 'नेताजी' नाम से पुकारा।

- तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा" का नारा सुभाष चन्द्र बोस ने सिंगापुर में आजाद हिन्द फौज के सैनिकों को सम्बोधित करते हुए दिया था।
- 21 अक्टूबर, 1943 को सुभाष चन्द्र ने सिंगापुर में स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार का गठन किया तथा 'जय हिन्द' तथा 'दिल्ली चलो' का नारा दिया।
- नवम्बर, 1943 को नेताजी के नेतृत्व में 'आजाद हिन्द फौज ने जापानी सेना के सहयोग से भारत के अण्डमान निकोबार द्वीप पर अधिकार कर लिया तथा अण्डमान का नाम शहीद द्वीपों एवं निकोबार का नाम स्वराज द्वीप रखा।
- द्वितीय विश्व युद्ध में जापान और जर्मनी हार गए। जापान के प्रदेशो पर अंग्रेजों का कब्जा हो गया। ऐसी परिस्थिति में अगस्त, 1945 ई० में सुभाष बैंकाक से टोकियो रवाना हुए, परन्तु फारमोसा द्वीप (ताइपेई) के पास विमान में आग लग जाने के कारण 18 अगस्त, 1945 ई० को उनको मृत्यु हो गई।

- **महत्त्व:**

- **भारतीय क्षेत्र में तिरंगा :** जापानी सेना के साथ, एक INA ब्रिगेड, भारतीय सीमा में चली गई। कोहिमा (नागालैंड) में पहली बार भारतीय ध्वज मार्च 1944 में फहराया गया था।
- **राजनीतिक परिदृश्य को प्रभावित करना:** भारत में राजनीतिक परिदृश्य, INA की गतिविधियों से महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित हुआ।
- **क्रांतिकारी उत्थान:** जब भारतीय लोगों ने लड़ाई के अंत में उनकी असाधारण बहादुरी और बलिदान की गाथाओं को जाना तो राष्ट्र क्रांतिकारी घटनाएँ हुई।
- **देशभक्ति:** ब्रिटिश सरकार ने देखा कि भारतीयों में देशभक्ति की भावना, विदेशी देश के प्रति उनकी वफादारी से अधिक है।
- **स्वतंत्रता के प्रेरणादायक विचार:** भारत की मुक्ति के लिए सुभाष चंद्र बोस की भव्य योजना और उनके आदर्शवादी आईएनए संगठन ने भारतीय लोगों को इस तरह से प्रेरित किया जो पहले कभी नहीं देखा गया था।

Note: -

- **नेता जी सुभाष चन्द्र बोस**
- **त्रिपुरी संकट के समय (1938-1939):** जैसा कि हमने पहले अध्याय में देखा, सुभाष बोस ने "त्रिपुरी संकट" के बाद कम्युनिस्ट और समाजवादी गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए कांग्रेस के भीतर फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना की थी
- **साहसिक पलायन:** जुलाई 1940 में "भारत के रक्षा अधिनियम" के तहत हिरासत में लिए गए, उन्हें घर में नजरबंद कर दिया गया था। भारत को पूर्व से उत्तर-पश्चिम के लिए पार करने में, काबुल के रास्ते से सोवियत संघ में, और अंततः बर्लिन तक कलकत्ता से "मुश्किल पलायन" किया।
- **स्वतंत्र भारत की अनंतिम सरकार :** इसकी स्थापना अक्टूबर 1943 में सुभाष बोस द्वारा की गई थी, और अंततः इसे जापान और आठ अन्य देशों द्वारा स्वीकार किया गया था।
- **दिल्ली चलो:** सुभाष के प्रसिद्ध आह्वान "दिल्ली चलो" के बाद अनन्तिम सरकार ने ग्रेट ब्रिटेन के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी थी
- **परमाणु हमले के बाद आत्मसमर्पण:** अमेरिका द्वारा हिरोशिमा और नागासाकी (अगस्त 1945 में) पर परमाणु बम गिराए जाने के बाद, जापान को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर होना पड़ा, और INA को कठिन परिस्थितियों में लड़ने के लिए छोड़ दिया गया।
- **आईएनए के समर्पण के बाद :**
- भारत लौटने से पहले,आत्मसमर्पण करने वाले आईएनए के 20,000 सैनिकों से पूछताछ की गई थी।
- **"ग्रे" और "व्हाइट,":** उनमें से जो जापानी और आईएनए प्रचार द्वारा "गुमराह" किए गए प्रतीत होते थे। उन्हें या तो रिहा कर दिया गया या फिर सेना में भर्ती कर लिया गया।
- **"अश्वेत":** अन्य, जो इस कार्य के प्रति अधिक समर्पित थे, उन्हें "अश्वेत" के रूप में वर्गीकृत किया गया और कोर्ट मार्शल के अधीन किया गया।
- **कुल मिलाकर ग्यारह ट्रायल हुए:** सबसे प्रसिद्ध ट्रायल दिल्ली के लाल किले में हुआ और इसमें तीन आईएनए कमांडर, पी. के. सहगल, जी. एस. ढिल्लों और शाह नवाज़ खान शामिल थे। सहगल, ढिल्लों और खान के खिलाफ देशद्रोह, हत्या के आरोप लगाए गए।

- सार्वजनिक ट्रायल के पीछे मौलिक विचार: सरकार के सार्वजनिक ट्रायल का उद्देश्य सेना के अधिकारियों को देशद्रोह के लिए क्रूरता से दंडित करना और लोगों को आईएनए द्वारा की गई "भयावहता" के बारे में सूचित करना था।
- सुभाषचन्द्र बोस को रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा देश नायक की उपाधि प्रदान की गयी थी।
- गाधीजी को 'राष्ट्रपिता' का सम्बोधन सुभाष चन्द्र बोस ने दिया था।
- सुभाष चन्द्र बोस ने लक्ष्मीबाई के नाम पर 'रानी झांसी रेजीमेंट' के नाम से स्त्री सैनिकों का एक दल बनाया था।
- "भारत की मुक्ति महात्मा गाँधी के नेतृत्व में नहीं होगी"। यह कथन सुभाष चन्द्र बोस का है।
- सरोजिनी नायडू द्वारा सुभाषचन्द्र बोस को 'भारतीय देशभक्ति की ज्वलंत तलवार' से संबोधित किया गया।
- "हमें उनका अनुसरण करना चाहिए..... सुभाष एक महान देशभक्त थे उन्होंने अपना जीवन देश पर न्योछावर किया है। संकीर्णतावाद और जाति-भेदभाव की उनके लिए कोई उपयोगिता नहीं थी। वे सबसे एक समान व्यवहार करते थे।" 23 जनवरी, 1948 ई. को सुभाष चन्द्र बोस के जन्म दिवस के अवसर पर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने उपरोक्त वक्तव्य दिया था।

❑ लाल किले का मुकदमा

- **वर्ष -** नवम्बर, 1945
- **मुख्य अभियुक्त -** मेजर शाहनवाज खाँ, कर्नल प्रेम सहगल, और कर्नल गुरूदयाल सिंह ढिल्लो
- **प्रमुख वकील -** तेज बहादुर सप्रू, कैलाशनाथ काटजू, अरुणा आसफ अली और जवाहर लाल नेहरू
- **अन्य तथ्य -**

  - आजाद हिंद फौज के गिरफ्तार सैनिकों एवं अधिकारियों पर अंग्रेजों ने लाल किले में मुकदमा चलाया उसे लाल किले का मुकदमा के नाम से जाना जाता हैं।
  - इन अभ्युक्तो पर राजद्रोह लगाया गया था।
  - कांग्रेस ने इनके बचाव हेतु आजाद हिंद फौज बचाव समिति का गठन किया जिसका नेतृत्व भूला भाई देसाई ने किया था।
  - अदालत द्वारा शाहनवाज, सहगल और ढिल्लो तीनों को फांसी की सजा सुनाई गई। सैनिक राशिद अली को 7 वर्ष के कारावास का दण्ड दिया गया था।
  - इस निर्णय के खिलाफ पूरे देश में कड़ी प्रतिक्रिया हुई, नारे लगाए गए "लाल किले को तोड़ दो, आजाद हिंद फौज को छोड़ दो।"
  - विवश होकर वायसराय लार्ड वेवेल ने अपने विशेषाधिकार का प्रयोग कर इनको मृत्यु दण्ड की सजा को माफ कर दिया।

❑ सी आर फॉर्मूला

सी. राजगोपालाचारी ने ब्रिटिश भारत की स्वतंत्रता के लिए अखिल भारतीय मुस्लिम लीग और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बीच राजनीतिक गतिरोध को समाप्त करने हेतु राजगोपालाचारी सूत्र (जिसे सीआर सूत्र या राजाजी सूत्र के रूप में भी जाना जाता है) दिया था।

- **सी आर फार्मूला के मुख्य बिंदु::**

  - मुस्लिम लीग कांग्रेस द्वारा की गई स्वतंत्रता की मांग का समर्थन करेगी।
  - लीग एक अस्थायी राष्ट्रीय सरकार बनाने के लिए कांग्रेस के साथ काम करेगी।
  - युद्ध के बाद, उत्तर पश्चिम और उत्तर पूर्व भारत के मुस्लिम बहुल क्षेत्रों के निवासियों को अपना स्वयं का संप्रभु राज्य स्थापित करना चाहिए या नहीं, यह निर्धारित करने के लिए एक सर्वेक्षण आयोजित किया गया था।
  - यदि विभाजन को स्वीकार कर लिया जाता है, तो संचार, व्यापार और रक्षा की सुरक्षा के लिए एक आम समझौता किया जाएगा। उपरोक्त शर्तें तभी लागू होंगी जब इंग्लैंड, भारत को पूर्ण अधिकार दे देगा।

- **गांधी-जिन्ना वार्ता**

  - **गांधी ने जेल से** रिहा होने के बाद जिन्ना के द्वि-राष्ट्र के विचार पर आधारित बातचीत की। सीआर सूत्र ने वार्ता के तंत्र के रूप में कार्य किया।

- गांधी ने सुझाव के तौर पर जिन्ना को सीआर फॉर्मूला पेश किया। फिर भी, दो सप्ताह की चर्चा के बाद, जिन्ना ने इस फार्मूले को अस्वीकार कर दिया। गांधी-**जिन्ना बैठक विफल रही।**

- **जिन्ना की आपत्ति:**

- जिन्ना चाहते थे कि कांग्रेस द्वारा द्वि-राष्ट्र सिद्धांत स्वीकार किया जाए।
- उसने मांग की कि जनमत संग्रह में केवल उत्तर पश्चिम और उत्तर पूर्व के मुसलमानों से वोट कराये जाए, पूरी आबादी से नहीं।
- उत्तर-पश्चिम में, सिंध, बलूचिस्तान, उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत और पंजाब, और उत्तर-पूर्व में, असम और बंगाल में, जिन्ना ने ब्रिटिश भारतीय प्रांतों, जो उस समय बहुसंख्यक मुस्लिम आबादी वाले माने जाते थे, पर दावा किया था।
- पहली बार गाँधी जी ने जिन्ना को "कायदे आजम " (महान नेता) कहकर उनके सम्मान को बढ़ाया।
- जिन्ना पाकिस्तान की माँग पर अटल रहे और वार्ता को असफल कर दिया।
- इसी फार्मूले के आधार पर भारत का विभाजन किया गया।
- इस प्रकार राजगोपालाचारी पहले कांग्रेसी नेता थे जिन्होंने 'पाकिस्तान की माँग का समर्थन किया।

वेवेल योजना (14 जून, 1945 ई०)

- **वर्ष -** 14 जून, 1945 ई०
- **अन्य तथ्य -**

- अक्टूबर, 1943 ई० में लार्ड लिनलिथगो के स्थान पर लाई बिस्काउंट वेवेल वायसराय तथा गवर्नर जनरल नियुक्त हुए।
- उन्होंने भारतीय सांविधानिक गतिरोध दूर करने की दिशा में प्रयास आरम्भ किया।
- 14 जून, 1945 ई० को भारतीय जनता के नाम एक प्रसारण किया।

- **वेवेल योजना के प्रमुख बिंदु -**

- वायसराय को कार्यकारिणी परिषद का गठन किया जाएगा।
- परिषद में वायसराय तथा कमाण्डर इन चीफ को छोड़ कर सभी सदस्य भारतीय होंगे। रक्षा को छोड़कर समस्त भाग भारतीयों को दिए जायेंगे।
- कार्यकारिणी में मुसलमान सदस्यों की संख्या सवर्ण हिंदुओं के बराबर होगी।
- कार्यकारिणी परिषद एक अंतरिम राष्ट्रीय सरकार के समान होगी।
- गवर्नर जनरल बिना कारण विषेधाधिकार का प्रयोग नहीं करेगा।
- कांग्रेस के नेता रिहा किए जायेंगे तथा शीघ्र ही शिमला में एक सम्मेलन बुलाया जाएगा। युद्ध समाप्त होने के बाद भारतीय स्वयं ही अपना संविधान बनाएंगे।
- भारत में ग्रेट बिटेन के वाणिज्यिक तथा अन्य हितों की देख-भाल के लिए एक उच्चायुक्त की नियुक्ति की जाएगी।

❑ **शिमला सम्मेलन**

- **वर्ष -** 25 जून-14 जुलाई, 1945 ई० तक
- **वायसराय -** वेवेल
- **आमंत्रित नेता -** 21
- **प्रमुख नेता -** जवाहर लाल नेहरू, जिन्ना, अबुल कलाम आजाद, सरदार पटेल, खान अब्दुल गफ्फार खाँ, तारा सिंह तथा इस्माइल खाँ।
- **कांग्रेस प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व -** अबुल कलामआज़ाद
- **अन्य तथ्य**

- गांधी जी ने सम्मेलन में भाग नहीं लिया, यद्यपि वे शिमला में उपस्थित रहे।

- सम्मेलन में मुस्लिम लीग ने यह शर्त रखी कि वायसराय की कार्यकारिणी परिषद् में नियुक्त होने वाले सभी मुस्लिम सदस्यों का चयन वह स्वयं करेगी।

- **परिणाम-**

- कांग्रेस ने जिन्ना की इस माँग को अस्वीकार कर दिया।
- मुस्लिम लीग के इस रुख के कारण शिमला सम्मेलन असफल रहा।
- वेवेल ने 14 जुलाई, 1945 ई० को सम्मेलन के विफलता की घोषणा की।
- संभवतः भारत के एक एकजुट, स्वतंत्र राष्ट्र बनने की संभावना समाप्त हो गई।

❑ भारत में आम चुनाव

- **वर्ष -** दिसम्बर, 1945 ई०
- **अन्य तथ्य**

- ब्रिटेन में आम चुनाव हुए, जिसमें विस्टन चर्चिल की कंजरवेटिव पार्टी हार गई और क्लीमेन्ट एटली की अध्यक्षता वाली लेबर पार्टी सत्ता में आई।
- सर पैथिक लारेंस को भारत सचिव नियुक्त किया।
- एटली सरकार को भारत में आम चुनाव करवाना था जो कि 1936 ई० से नहीं हुए थे। इन चुनावो में केन्द्रीय विधान सभा तथा प्रांतीय विधान मण्डलों में भी कांग्रेस को पर्याप्त बहुमत मिला।

- **परिणाम -**

- केन्द्रीय विधानसभा में कांग्रेस को सामान्य निर्वाचन में 91.3 प्रतिशत मत मिले।
- मुस्लिम लीग ने सभी मुस्लिम सीटें जीत लीं।
- प्रांतीय विधान मण्डल में कांग्रेस को बम्बई, मद्रास , संयुक्त प्रांत, बिहार, उड़ीसा और मध्य प्रांत में पूर्ण बहुमत मिला।
- उत्तर-पश्चिमी प्रांत में कांग्रेस ने 30 सीटें जीतीं, जिसमें 19 मुस्लिम सीटें थीं
- मुस्लिम लीग को केवल 17 सीटें मिलीं।
- पंजाब में कांग्रेस, अकालियों और यूनियनिस्ट पार्टी की साझा सरकार बनी मुस्लिम लीग को बंगाल तथा सिंध में ही बहुमत प्राप्त हुआ

❑ नौसेना विद्रोह (1946):

- **वर्ष -** 18 फरवरी -23 फरवरी, 1946 ई०
- **कारण –**

- इसकी शुरुआत 18 फरवरी को हुई, जब बम्बई में "एच० एम० आई० एस० तलवार" के 1100 नाविकों ने नस्लवादी भेदभाव और खराब भोजन के विरोध में हड़ताल कर दी।
- उनकी माँग थी कि नाविक बी० सी० दत्त को (जिसे जहाज की दीवालों पर 'भारत छोड़ो' लिखने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था) रिहा किया जाए।

- **प्रतिक्रिया-**

- बम्बई में इस विद्रोह के समर्थन में जनता ने व्यापक पैमाने पर विरोध किया और सरकारी सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाया।
- 19 फरवरी को कराची के नाविकों ने भी हड़ताल कर दी।

- कराची में दमनपूर्वक आत्मसमर्पण कराया गया जिसमें 6 नाविक मारे गए।
- बम्बई में सेना ने नाविकों तथा उसके सहयोगियों को शांत करा दिया।
- नौ सेना विद्रोह में "इंकलाब जिंदाबाद", "जय-हिन्द", "हिन्दू-मुस्लिम एक हों", "ब्रिटिश साम्राज्यवाद मुर्दाबाद" आजाद हिन्द फौज के कैदियों को रिहा करो" आदि नारे लगाए गए।
- इस विद्रोह के समर्थन में 20 लाख मजदूरों ने 22 फरवरी को बम्बई में हड़ताल का आयोजन किया।
- इनके प्रदर्शन में तीन झण्डे होते थे- कांग्रेस का तिरंगा, लीग का हरा और बीच में कम्युनिस्ट पार्टी का लाल झण्डा।
- इसमें सरदार पटेल ने हस्तक्षेप किया।
- पटेल और जिन्ना ने इन्हें आत्मसमर्पण की सलाह दी।
- 24 फरवरी को विद्रोहियों ने आत्मसमर्पण कर दिया और कहा कि- "हम भारत के सामने समर्पण कर रहे हैं, ब्रिटेन के सामने नहीं।"

- **भारतीय नेताओं की प्रतिक्रिया:**

- **गाँधी:** पटेल और नेहरू के विपरीत, जिन्होंने पहली बार समाजवादी नेता अरुणा आसफ अली के बंबई जाने के प्रस्ताव को स्वीकार किया, लेकिन जल्दी ही "हिंसा के बढ़ते प्रकोप को रोकने की आवश्यकता" को महसूस किया, गांधी विद्रोही नौसैनिक रेटिंग के समान ही शत्रुतापूर्ण थे।
- **नेहरू:** नेहरू जैसे नेताओं ने ब्रिटिशों द्वारा भारतीय हाथों में शांतिपूर्ण "सत्ता के हस्तांतरण" पर विचार करना शुरू किया, जिसे दो से पांच वर्षों के दौरान पूरा किया जाना था।
- **काँग्रेस:** इन विद्रोहों के समय और रणनीति के कारण कांग्रेस ने औपचारिक रूप से उनका समर्थन नहीं किया।
- बड़े पैमाने पर आंदोलन शुरू करने से पहले, आपस में मंथन करना कांग्रेस की रणनीति का एक प्रमुख घटक था।
- **कम्युनिस्ट:** उन्होंने कार्यकर्ताओं और विद्रोहियों का समर्थन किया था। गरीब किसानों और बंटाईदारों के बीच अपने प्रयासों का विस्तार करने के अलावा, वे बंबई और कलकत्ता के दंगों में सक्रिय रूप से शामिल थे, जहाँ उन्हें औद्योगिक श्रमिकों के बीच अच्छा समर्थन प्राप्त था।

- **सीमाएं:**

- पहले की गतिविधि राष्ट्रीय एकजुटता का एक शांतिपूर्ण प्रदर्शन थी, जबकि ये सत्ता के लिए हिंसक चुनौतियां थीं।
- केवल अधिक उग्रवादी समूहों को भाग लेने की अनुमति दी गई थी।
- समग्र INA आंदोलन दूर-दराज के ग्रामीण इलाकों में फैल गया था, जबकि ये विद्रोह संक्षिप्त थे और कुछ शहरी केंद्रों तक सीमित थे।
- साम्प्रदायिक सद्भाव मानवीय सद्भाव से अधिक सांगठनिक था।
- नौकरशाही के मनोबल में काफी गिरावट आई थी, लेकिन दमन के लिए ब्रिटिश बुनियादी ढांचा बना रहा।

❑ कैबिनेट मिशन

- **भारत आया -** 24 मार्च,1946 को
- **सदस्य -** पैथिक लॉरेंस (अध्यक्ष), सर स्टैफोर्ड क्रिप्स (व्यापार बोर्ड के अध्यक्ष), ए. वी. अलेक्जेंडर (नौसेना मंत्री)
- **रिपोर्ट -** 16 मई , 1946
- कैबिनेट मिशन के भारत आगमन के समय मौलाना अबुल कलाम आजाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष थे।
- कांग्रेस कार्य समिति ने श्री आजाद को मिशन से विचार-विमर्श करने का पूरा अधिकार दे दिया था।
- **प्रमुख बिंदु -**

- भारत एक प्रांत होगा और इसमें ब्रिटिश भारत के प्रांत और देशी राज्य दोनों शामिल होंगे।
- विदेशी मामले, प्रतिरक्षा तथा संचार साधन केन्द्रीय सरकार के अधीन होंगे।

- संघीय विषयों को छोड़कर शेष विषयों और अवशिष्ट शक्तियाँ प्रांतों में निहित होगी। ऐसी रियासतें जो शक्तियाँ संघ को सौंप दे उनके अतिरिक्त अन्य सभी विषय तथा शक्तियाँ उनके पास सुरक्षित रहेगी।
- प्रांतीय विधान सभाओं तथा देशी रियासतों के प्रतिनिधियों द्वारा संविधान निर्मात्री सभा का गठन किया जायेगा।
- प्रांत को उसकी जनसंख्या के अनुपात में सामान्यतः दस लाख की आबादी पर एक प्रतिनिधि के अनुपात में सीटों की कुल संख्या आवंटित की जायेगी।
- मुस्लिम लीग की पाकिस्तान मांग को इस आधार पर ठुकरा दिया गया था कि इससे अल्पसंख्यकों की समस्या का समाधान नहीं होगा।
- **प्रांतों को क, ख और ग तीन श्रेणियों में बाँटा गया-**

(क) . बिहार, बम्बई, मध्य प्रांत, मद्रास, उड़ीसा और संयुक्त प्रांत

(ख) . पश्मिोत्तर सीमाप्रांत, सिंध व पंजाब

(ग) . असम और बंगाल

- कैबिनेट मिशन योजना के तहत 24 अगस्त, 1946 को प्रथम अंतरिम राष्ट्रीय सरकार की घोषणा की गई। इस घोषणा में यह प्रावधान था कि अंतरिम राष्ट्रीय सरकार 2 सितंबर, 1946 को कार्यभार ग्रहण करेगी।

- **परिणाम -**

- प्रारम्भ में मुस्लिम लीग ने इसे अपनी स्वीकृति दे दी, परन्तु बाद में उसने स्वीकृति वापस ले ली तथा प्रस्ताव पारित कर पाकिस्तान राज्य की स्थापना के लिए 'सीधी कार्यवाही' की योजना बनाई
- 16 अगस्त, 1946 को लीग ने सीधी कार्यवाही दिवस की शुरूआत कर दी।
- गाँधी जी कैबिनेट मिशन के पक्ष में थे। इस योजना के संदर्भ में गाँधी जी ने कहा था "यह योजना उस समय की परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में सबसे उत्कृष्ट योजना है, इसमें ऐसे बीज हैं, जिनसे दुःख की मारी भारत भूमि यातना से मुक्त हो सकती है।"
- कांग्रेस संविधान सभा से सम्बन्धित प्रस्तावों पर सहमत हो गई, लेकिन उसने अंतरिम सरकार गठन करने सम्बंधी प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया, क्योंकि मुस्लिम लीग को उसमें असंगत प्रतिनिधित्व दिया गया था।

❑ संविधान सभा का चुनाव -

- **वर्ष -** जुलाई, 1946
- **अन्य तथ्य –**

- जुलाई, 1946 संविधान सभा का चुनाव हुआ। ब्रिटिश प्रांतों के 210 स्थानों में से कांग्रेस ने 199 स्थान जीते बाकी 11 स्थान में से पंजाब की यूनियनिस्ट पार्टी ने 2 , स्वतन्त्र उम्मीदवारों ने 6 , कम्युनिस्ट पार्टी ने एक , दलित उद्धार संघ ने 2 स्थान जीते।
- 78 मुस्लिम स्थानों में से मुस्लिम लोग ने 73 स्थान मिले।इसके बचे 5 स्थानों में से कांग्रेस ने तीन स्थान, यूनियनिस्ट पार्टी ने एक स्थान और कृषक प्रजा पार्टी ने एक स्थान पर कब्जा कर किया।
- संविधान सभा के चुनाव के आधार पर 9 दिसम्बर, 1946 ई० को संविधान सभा की पहली बैठक दिल्ली में हुई।
- इसके अस्थाई अध्यक्ष डॉ० सच्चिदानंद सिन्हा थे।
- 11 दिसम्बर को संविधान सभा की दूसरी बैठक दिल्ली में हुई यहां पर डॉ० राजेन्द्र प्रसाद को स्थाई अध्यक्ष निर्वाचित किया गया।
- 29 अगस्त, 1947 ई० को संविधान सभा की प्रारूप समिति बनायीं गयी जिसके अध्यक्ष डॉ० भीमराव निर्वाचित हुए। इस कारण से आंबेडकर को संविधान निर्माता भी कहा जाता है।

❑ सीधी कार्यवाही दिवस

- **वर्ष -** 16 अगस्त , 1946
- **अन्य तथ्य –**

- कांग्रेस ने कैबिनेट की योजना स्वीकार कर ली थी और लीग ने अस्वीकार कर दी थी। इसलिए वायसराय ने पं० जवाहर लाल नेहरू को अंतरिम सरकार बनाने के लिए 12 अगस्त, 1946 ई० को निमंत्रण भेजा जिसे जवाहर लाल नेहरू ने स्वीकार कर लिया।
- और इसी के विरोध में मुस्लिम लीग ने जिन्ना के नेतृत्व में पाकिस्तान को प्राप्त करने के लिए प्रत्यक्ष कार्यवाही की धमकी दी।
- मुस्लिम लीग ने 16 अगस्त, 1946 ई० को "प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस" के रूप में मनाया।
- इसके प्रारम्भ होते ही सांप्रदायिक दंगों ने भारतीय परिदृश्य को पूरी तरह बदल दिया दंगों का आरम्भ 16-17 अगस्त को कलकत्ता से होते हुए बम्बई , बंगाल के नोआखाली , बिहार , संयुक्त प्रांत के गढ़ मुक्तेश्वर तक फैल गया।
- मार्च, 1947 ई० से इसने पूरे पंजाब को अपनी लपेट में ले लिया।
- कलकत्ता में लीग की सरकार थी और उसने सीधी कार्यवाही के दिन छुट्टी घोषित कर दी थी। वहाँ के मुख्य मंत्री सुहरावर्दी ने इन दंगों को भड़काने का कार्य किया।
- 29 अगस्त तक लगभग चार हजार लोग मारे गए और दस हजार घायल हुए।
- पूर्वी बंगाल के नोआखाली में हत्याओं की तुलना में सम्पत्ति पर आक्रमण और बलात्कार की घटनाएँ अधिक हुई।
- 25 अक्टूबर को नोआखाली दिवस मनाए जाने के सिलसिले में बिहार में दंगे हुए।
- नोआखाली में यह नरसंहार सबसे भयंकर था।
- पेंडेरल मून ने अपनी पुस्तक "डिवाइड एण्ड विवट" में अनुमान के अनुसार बताय कि दंगों में लगभग 1,80,000 लोग मारे गए, जिसमें 60,000 पश्चिम के और 1,20,000 पूरब के थे।
- मार्च, 1948 ई० तक 60 लाख मुसलमान एवं 45 लाख हिन्दू एवं सिक्ख शरणार्थी बन चुके थे।
- इस बीच महात्मा गाँधी शान्ति की पुनर्स्थापना के लिए नोआखाली गए। माउन्टबेटन ने गाँधी जी को "वन मैन बाइन्ड्री फोर्स" की उपाधि प्रदान की तथा कहा कि " जो काम 500 हजार हथियार बंद सिपाही नहीं कर सकते थे वह काम गाँधी जी ने कर दिखाया।"

❑ एटली की घोषणा

- **वर्ष -** 20 फरवरी, 1947 ई०
- **अन्य तथ्य** –

- ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली ने हाउस ऑफ कामन्स में घोषणा की, कि अंग्रेज जून, 1948 ई० के पहले भारतीयों को सत्ता सौप देंगे।
- एटली ने लार्ड वेवेल के स्थान पर लार्ड माउन्टबेटन को गवर्नर जनरल के रूप में नियुक्ति की घोषणा की।
- 34वें और अन्तिम ब्रिटिश गवर्नर जनरल तथा वायसराय माउन्टबेटन 22 मार्च, 1947 ई० को भारत आए।
- इन्होंने सत्ता हस्तांतरण के लिए बातचीत शुरू कर दी।

❑ माउंटबेटन योजना

- **वर्ष -** 3 जून, 1947
- **अन्य तथ्य** –

- 22 मार्च, 1947 को भारत के अंतिम वायसराय के रूप में लार्ड माउंटबेटन भारत आए।
- 3 जून को माउंटबेटन ने भारत के विभाजन के साथ सत्ता हस्तांतरण की एक योजना प्रस्तुत की जिसे माउंटबेटन योजना और '3 जून योजना' के नाम से जाना जाता है।
- इस योजना के आधार पर 4 जुलाई, 1947 ई. को ब्रिटिश संसद में भारतीय स्वतंत्रता विधेयक पेश किया गया।
- 18 जुलाई, 1947 ई. को स्वीकृति मिल गयी।
- जिस समय भारतीय स्वतंत्रता विधेयक पर ब्रिटिश संसद में बहस चल रही थी हरवर्ट सैमुअल' जी अनुदारवादी दल का सदस्य था, इस विधेयक को एक बिना युद्ध के शान्ति समझौता कहा था।
- इस समझौते के अनुसार देश को 15 अगस्त, 1947 ई. को भारत और पाकिस्तान में बाँट देने का निर्णय लिया गया।
- इसे **"मन बाटन योजना"** के नाम से भी जाना जाता है।

- हिन्दुस्तान को दो हिस्सों भारतीय संघ और पाकिस्तान में बाँट दिया जाएगा।
- संविधान सभा द्वारा पारित संविधान भारत के उन भागों में लागू नहीं किया जाएगा जो इसे मानने के लिए तैयार नही हैं।
- बंगाल और पंजाब में हिन्दू तथा मुसलमान बहुसंख्यक जिलों के प्रांतीय विधानसभा के सदस्यों की अलग-अलग बैठक बुलाई जाए और उसमें यदि कोई पक्ष प्रांत विभाजन चाहेगा तो विभाजन कर दिया जाएगा।
- उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत में जनमत द्वारा यह पता लगाया जाए के किस भाग के साथ रहना चाहेगा।
- असम के सिलहट जिले में भी इसी प्रकार का जनमत कराया जाएगा।
- भारतीय नरेशों के प्रति पुरानी नीति अपनायी जाएगी।

- **परिणाम -**

- इस योजना को कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग दोनों ने स्वीकार कर लिया।
- अखिल भारतीय कांग्रेस की 14 जून, 1947 को सम्पन्न हुई बैठक में भारत विभाजन के विपक्ष में मतदान खान अब्दुल गफ्फार खाँ ने किया था।
- जबकि नेहरू, अबुल कलाम आजाद, सरदार पटेल और गोविन्द वल्लभ पंत पक्ष में थे।
- इस योजना को काँग्रेस कार्य समिति की 3 जून, 1947 ई. की बैठक में स्वीकार कर लिया गया। 14 जून को गोविन्द बल्लभ पंत ने देश विभाजन को स्वीकार किया।
- अबुल कलाम आजाद ने कहा कि "काँग्रेस कार्य समिति का फैसला सही नहीं है लेकिन काँग्रेस के सामने कोई और रास्ता नहीं है।
- विरोध करने वाले नेता अब्दुल गफ्फार खाँ, राम मटवानी, डॉ. किचलू, पुरुषोत्तम दास टण्डन, मौलाना हफीजुर्रहमान आदि थे।
- गाँधी, नेहरू और पटेल के समर्थन के बावजूद कांग्रेस कार्यसमिति का प्रस्ताव अखिल भारतीय कांग्रेस समिति में सर्वसम्मति से पास न हो सका।
- 108 सदस्यों ने खिलाफ में वोट दिया या वे तटस्थ रहे।
- मुस्लिम लीग की काउन्सिल की बैठक 10 जून, 1947 ई० को दिल्ली में बुलाई गई।
- लीग ने भारी बहुमत से योजना को स्वीकार किया।
- लीग की बैठक में उपस्थित 400 सदस्यों में से सिर्फ 10 सदस्यों ने इसका विरोध किया।
- कांग्रेस द्वारा माउन्टबेटन योजना को स्वीकार कर लेने के बाद पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत के अब्दुल गफ्फार खाँ ने माँग की कि अलग पठानिस्तान या पख्तूनिस्तान की योजना के बारे में भी जनमत लिया जाय। परन्तु, माउन्टबेटन ने इससे इन्कार कर दिया।
- पाकिस्तान या भारतीय संघ में सम्मिलित होने के बारे में जनमत लेने के समय उन्होंने बहिष्कार का नारा दिया।
- लीग ने घोर साम्प्रदायिकता का प्रचार कर और अनेक जाली वोट डलवाकर पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत को पाकिस्तान में शामिल होने का फैसला करवाया।
- पूर्वी बंगाल, पश्चिमी पंजाब, सिंघ, बलूचिस्तान और असम के सिलहट जिले ने पाकिस्तान में शामिल होने का फैसला किया।

❑ भारतीय स्वतंत्रता का अधिनियम 1947 ई०

- **वर्ष -** माउन्टबेटन योजना के आधार पर ही 4 जुलाई, 1947 ई० को ब्रिटिश संसद में स्वतंत्रता विधेयक पेश किया गया।

- 18 जुलाई, 1947 ई० को इसे स्वीकृति मिल गयी।

- **अन्य तथ्य –**

- इसके अनुसार देश को 15 अगस्त, 1947 ई० को भारत और पाकिस्तान में बाँट दिया गया।
- 14 अगस्त को स्वतंत्र राष्ट्र पाकिस्तान और 15 अगस्त को भारत की स्थापना की गयी।
- मुहम्मद अली जिन्ना पकिस्तान के गवर्नर जनरल तथा लियाकत अली प्रधानमंत्री बने। भारतीय संघ की बैठक 14 अगस्त की आधी रात को हुई।

- रात के बारह बजे और 15 अगस्त प्रारम्भ होते ही जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा को संबोधित करते हुए कहा-"आधी रात की इस जब दुनिया सो रही है भारत जगकर जीवन और स्वतन्त्रता प्राप्त कर रहा है।
- इसके बाद संविधान सभा ने लार्ड माउन्टबेटन को भारत का प्रथम गवर्नर जनरल नियुक्त किया।
- 15 अगस्त की प्रातः जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में नए मंत्रिमंडल को शपथ दिलाई गई।

- **Note:-**
- 'मेरा अंतिम उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति के आँख से आँसू पोंछना होगा' यह कथन महात्मा गाँधी के हैं
- जब भारत स्वतंत्र हुआ उस समय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष जे.बी. कृपलानी थे। हालांकि, 1947 के अधिवेशन में (दिसम्बर 1947) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया था।
- 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल के रूप में लार्ड माउंटबेटन की नियुक्त की गई थी जिन्होंने जवाहर लाल नेहरू को स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के, रूप में शपथ दिलाई।
- डॉ. किचलू ने 1947 के काँग्रेस कमेटी की बैठक द्वारा विभाजन के प्रस्ताव के पारित होने को "राष्ट्रवाद का सम्प्रदायवाद के पक्ष में समर्पण" कहा था।
- हिन्दू महासभा ने हमेशा भारत की अखण्डता का समर्थन किया। उसने माउन्टबेटेन योजना कि घोर आलोचना की। 3 जुलाई, 1947 को भारत विभाजन के विरुद्ध हिन्दू महासभा ने काला दिवस मनाया।
- भारत विभाजन के समय ब्रिटिश भारत के पंजाब प्रान्त ने संयुक्त व स्वतंत्र अस्तित्व की योजना प्रस्तावित की थी परन्तु सरदार वल्लभ भाई पटेल के प्रयासों से पूर्वी पंजाब, पटियाला तथा पहाड़ी राज्यों का एक संघ बनाया गया। जिसे पिप्सू कहा गया
- भारत विभाजन के संदर्भ में सीमाओं का निर्धारण करने के लिए अंग्रेजी सरकार ने रेडक्लिफ की अध्यक्षता में एक सीमा आयोग नियुक्त किया जिसका काम हिन्दू तथा मुस्लिम बहुसंख्यक वाले संलग्न प्रदेशों अथवा ग्रामों का मानचित्रों पर निर्धारण करना था।
- भारत की स्वतंत्रता के समय यू० के० में लेबर पार्टी की सरकार थी जिसके नेता लॉर्ड एटली यू० के० के प्रधानमंत्री थे।
- 15 अगस्त 1947 को भारत दो स्वायत्त उपनिवेशों में बंट गया लेकिन ब्रिटिश सरकार ने इस विभाजन के लिए अपने आप को उत्तरदायी नहीं माना। ब्रिटिश प्रधानमंत्री लार्ड एटली ने विभाजन की जिम्मेदारी नहीं ली।
- भारत विभाजन के समय बनी विभाजन परिषद के अध्यक्ष लार्ड माउंटबेटन थे। कांग्रेस की तरफ से सरदार बल्लभ भाई पटेल तथा जवाहरलाल नेहरू इस समिति के सदस्य थे।

भारतीय समाचार पत्रों का इतिहास

- भारत में प्रेस की स्थापना पुर्तगालियों ने की थी।
- गोवा में पुर्तगालियों ने 1557 ई० में पहली पुस्तक भारत में छापी।
- 1684 ई० में ईस्ट इंडिया कम्पनी ने बम्बई में एक मुद्रणालय लगाया।
- आधुनिक भारतीय प्रेस का प्रारम्भ 1766 ई० में विलियम बोल्ट्स द्वारा एक समाचार पत्र के प्रकाशन से हुआ, लेकिन ईस्ट इंडिया कंपनी ने उनको इंग्लैण्ड भेज दिया। 1780 ई० में जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने प्रथम समाचार पत्र द बंगाल गजट अथवा द कलकता जनरल एडवरटाइजर प्रकाशित किया था।
- उसके द्वारा कम्पनी के कर्मचारियों की आलोचना करने के कारण 1782 ई० में इसे वारेन हेस्टिंग ने बन्द करवा दिया।
- नवम्बर, 1780 ई० में प्रकाशित इण्डिया गजट दूसरा भारतीय पत्र था।
- 1784 ई० में कलकत्ता गजट, 1785 ई० में बंगाल जर्नल, 'द ओरियन्टल मैगजीन आफ कलकत्ता' अथवा 'द कलकत्ता एम्यूजमेन्ट ,1786 ई० में 'कलकत्ता क्रोनिकल, 1788 ई० में मद्रास कूरियर इत्यादि अनेक समाचार पत्र निकाले गए।
- 18 वीं शताब्दी के अन्त तक बंगाल में 'कलकत्ता कैरियर', 'एशियाटिक मिरर तथा ओरियंटल स्टार', बम्बई में 'बम्बई गजट' तथा 'हेराल्ड' और मद्रास में 'मद्रास कैरियर', 'मद्रास गजट आदि समाचार पत्र प्रकाशित होने लगे थे।

इन समाचार पत्रों की एक विशेषता -

  - वे एक-दूसरे के पूरक तथा आपसी प्रतिस्पर्धा से मुक्त थे।
  - विभिन्न समाचार पत्र भिन्न-भिन्न दिन, प्रकाशित होते थे।
  - यह समाचार पत्र आज की भाँति दैनिक न होकर साप्ताहिक थे।
  - इनका क्षेत्र केवल कंपनी के अधिकारियों, व्यापारियों तथा मिशनरियों तक ही सीमित था।

- भारतीय द्वारा अंग्रेजी में प्रकाशित समाचार पत्र गंगाधर भट्टाचार्य का साप्ताहिक बंगाल गजट था। 1816 ई० में इसका प्रकाशन शुरू हुआ था।
- मार्शमैन ने 1818 ई० में दिग्दर्शन नामक मासिक पत्रिका बंगाली में निकाली।
- 1818 ई० में ही क्राशिमेन के संपादन में 'समाचार दर्पण' का निकलना आरम्भ हुआ।
- पत्रकारिता के इतिहास में बर्किंघम का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने ही प्रेस को जनता प्रतिबिम्ब बनाया था।
- उन्होंने प्रेस को आलोचनात्मक दृष्टिकोण , जाँच-पड़ताल तथा नेतृत्व करने को और प्रवृत्त किया।
- बर्किंघम ने 'कलकता जर्नल' का सम्पादन करके लार्ड हेस्टिंग्ज तथा जान एडम्स को परेशानी में डाल दिया।
- इन दोनों ने प्रेस को नियंत्रित करने के लिए उन पर प्रतिबंध लगाये।
- कम्पनी ने 1823 में उन्हें इंग्लैण्ड वापस भेज दिया।
- **राजा राममोहन राय** ने प्रगतिशील राष्ट्रीय प्रवृत्ति के समाचार पत्रों का प्रकाशन प्रारम्भ किया।
- इन्होंने 1821 ई० में बंगाली में 'संवाद कौमुदी तथा 1822 ई० में फारसी में मिरात उल' अखबार का प्रकाशन किया।
- राममोहन राय को राष्ट्रीय प्रेस की स्थापना का श्रेय दिया जाता है।
- इन्होंने समाचार पत्रों के माध्यम से समाज सुधार का प्रचार किया।
- इन्होंने समाचार पत्रों को धार्मिक तथा दार्शनिक समस्याओं पर विचार तथा विवाद का माध्यम भी बना दिया।
- अंग्रेजी में उन्होंने बाह्मनिकल मैगजीन' भी निकालना शुरू किया।
- राममोहन राय के सामाजिक तथा धार्मिक विचारों का विरोध करने के लिए 1822 ई० में चंद्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ।
- 1822 ई० में बम्बई से गुजराती भाषा में दैनिक बंबई समाचार' निकलने लगा, इसके संस्थापक फर्टूनजी थे।
- 1830 ई० में 'बंगला में 'बंगदत्त' द्वारकानाथ टैगोर, प्रसन्न कुमार टैगोर तथा राजा राममोहन राय के प्रयास से कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।
- 1831 ई० में 'जामें जमशेद' गुजराती में पी० एम० मोती बाला के नेतृत्व में बम्बई से प्रकाशित हुआ।
- 1851 ई० में 'गस्त गोफ्तार का संपादन दादा भाई नौरोजी ने गुजराती में बाम्बे में किया।
- 1853 में हिन्दू पैटियाट अंग्रेजी में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।

- इसके सम्पादक हरिश्चन्द्र मुखर्जी एवं गिरीश चन्द्र घोष थे।

❑ 1857 ई० के बाद समाचार-पत्र

- 1857 ई० के विद्रोह के बाद पत्रकारों को राष्ट्रीयता के आधार पर विभाजित किया जाने लगा।
- अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित समाचार-पत्रों में जातीय गौरव भरा होता था।
- इनको आधुनिक सुविधा प्राप्त थी।
- अंग्रेजों द्वारा सम्पादित समाचार-पत्रों में कुछ को छोड़ कर सरकार की आलोचना नहीं की जाती थी।
- ये समाचार-पत्र सरकार के समर्थक बन गए।

❑ अंग्रेजों द्वारा सम्पादित पत्र

- अंग्रेजों द्वारा सम्पादित प्रमुख मन्त्रों में 'टाइम्स आफ इण्डिया' 1862 ई० से, 'स्टेट्समैन' 1878 ई० से, 'फ्रेण्ड आफ इण्डिया' तथा 'इंग्लिशमैन' कलकत्ता से, 'मद्रास मेल' मद्रास से, 'पायनियर' इलाहाबाद से और 'सिविल एण्ड मिलिट्री गजट' लाहौर से प्रकाशित होते थे।
- इन समाचार-पत्रों में 'इंग्लिश मैन' सर्वाधिक रूढ़िवादी एवं प्रतिक्रियावादी था, जब कि 'स्टेट्समैन' उदारवादी विचारों के लिए प्रसिद्ध था।
- 'पायनियर' सरकार का समर्थक था।
- मद्रास मेल, यूरोपीय-वाणिज्य, भू-स्वामी तथा महाजनों का प्रतिनिधित्व करता था, जबकि' 'सिविल एण्ड मिलिट्री गजट' ब्रिटिण विचारों का समर्थक था।
- इस काल में भारतीयों ने अंग्रेजी तथा विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में समाचार पत्र निकालने शुरू किए।
- ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने 1859 ई० में 'सोम प्रकाश' का प्रकाशन एक साप्ताहिक के रूप में प्रारम्भ किया।
- इस समाचार पत्र ने नील आन्दोलन में किसानों के हितों का जोरदार समर्थन किया।
- इसी के विरोद्ध में लार्ड लिटन का वर्नाक्यूलर प्रेस ऐक्ट 1878 ई० में लागू हुआ था।
- 'सोम प्रकाश' की स्थापना में कुछ वर्षों बाद 'हिन्दू पैट्रियाट' को भी विद्यासागर ने ले लिया। इसके सम्पादक किस्टोदास पाल थे, जिन्हें भारतीय पत्रकारिता का राजकुमार भी कहा जाता है।
- मोती लाल घोष ने 1868 ई० में अमृत बाजार पत्रिका का प्रकाशन साप्ताहिक रूप में बंगाली में प्रारम्भ किया। वर्नाक्यूलर प्रेस ऐक्ट से बचने के लिए 1878 ई० में यह अंग्रेजी साप्ताहिक में परिवर्तित हो गया। 1891 ई० तक आते-आते यह दैनिक पत्र के रूप में परिवर्तित हो गया।
- वीर राघवाबारी ने 1878 ई० में मद्रास में अंग्रेजी भाषा में 'हिन्दू' का प्रकाशन साप्ताहिक के रूप में प्रारम्भ किया। 1881 ई० तक आते-आते रह दैनिक पत्र के रूप में परिवर्तित हो गया।
- जोगिन्दर नाथ बोस ने 1881 ई० में 'बंगवासी' शुरू किया।
- 'इण्डियन मिरर' की स्थापना 1861 ई० में देवेन्द्र नाथ टैगोर तथा मनमोहन घोष ने की। यह दैनिक था।
- केशव चन्द्र सेन ने 'सुलभ समाचार पत्र' का प्रकाशन किया। यह बंगला भाषा में था।
- बम्बई में 1881 ई० में अंग्रेजी भाषा में 'मराठा' तथा मराठी में 'केसरी' आरम्भ हुए। प्रारम्भ में 'केसरी' के सम्पादक केलकर तथा 'मराठा' के सम्पादक आगरकर थे। बाद में इन दोनों का सम्पादन तिलक के हाथों में आ गया।
- रानाडे के सम्पादन में 1862 ई० में 'इन्दु प्रकाश' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ।
- 1864 ई० में बो० एन० मांडलिक ने 'नेटिव ओपीनियन' का प्रकाशन प्रारम्भ किया।
- एंग्लो-इण्डियन पत्रकार राबर्ट नाइट ने 1859 ई० में 'बाम्बे टाइम्स' खरीद लिया तथा 1867 ई० में वे 'टाइम्स आफ इण्डिया' के सम्पादक बने ।
- सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने 1879 ई० में 'बंगाली' का सम्पादन अंग्रेजी में प्रारम्भ किया।
- कलकत्ता से हिन्दी साप्ताहिक के रूप में 'भारत मित्र' का प्रकाशन बाल मुकुन्द गुप्त ने किया।
- हिन्दी में पहला समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' था। इसका प्रकाशन 1826 ई० में जुगल किशोर ने किया।
- हिन्दी में उत्तर प्रदेश से एक अन्य साप्ताहिक 'हिन्दोस्तान' निकलना प्रारम्भ हुआ।इसके सम्पादक मदन मोहन मालवीय तथा प्रताप नारायण मिश्र थे।
- 1866 ई० में 'ज्ञान प्रदायनी पत्रिका' नवीन चन्द्र राय के सम्पादन में निकली।
- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 1867 ई० में हिन्दी की साहित्यिक मासिक 'कवि वचन सुधा' का प्रकाशन प्रारम्भ किया।
- 1872 ई० में भारतेन्दु की मासिक पत्रिका 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' का प्रकाशन शुरू हुआ।
- 1877 ई० में बाल कृष्ण भट्ट का 'हिन्दी प्रदीप' प्रकाशित हुआ।

- 1899 ई० में अंग्रेजी मासिक हिन्दुस्तान स्टैण्डर्ड की स्थापना सच्चिदानन्द सिन्हा ने की।
- मद्रास में 'इण्डियन रिव्यू' की स्थापना जी० ए० नटेसन ने 1900 ई० में की।
- कलकत्ता में रामानन्द चटर्जी ने 'माडर्न रिव्यू' का प्रकाशन 1907 ई० किया।
- 1913 ई० में बी० जी० हार्निमन के सम्पादकत्व में फिरोज शाह मेहता ने 'बाम्बे क्रॉनिकल' की स्थापना की। इसका मुख्य उद्देश्य कांग्रेस के सूरत विभाजन के बाद जनता तक अपनी बात पहुँचाना था।
- डा० एनी बेसेण्ट ने 1916 ई० में 'न्यू इण्डिया' का प्रकाशन किया। इसका पुराना नाम 'मद्रास स्टैण्डर्ड' था। कॉमनवील' भी इन्ही का समाचार पात्र था।
- गाँधी जी ने दो समाचार पत्रों 1919 ई० में 'यंग इण्डिया' तथा 1933 ई० में 'हरिजन' का प्रकाशन किया।
- मोतीलाल नेहरू ने इलाहाबाद से 1919 ई० में अंग्रेजी दैनिक 'इण्डिपेंडेन्स' का प्रकाशन किया।
- हिन्दी पत्र 'आज' की स्थापना शिव प्रसाद गुप्त ने की।
- 1923 ई० में अंग्रेजी दैनिक 'हिन्दुस्तान टाइम्स' का प्रकाशन के० एम० पन्निकर ने किया। अकाली सिक्ख आन्दोलन के परिणामस्वरूप इस पत्र की स्थापना हुई थी।
- इसे अकालियों से धन प्राप्त होता था। अकालियों ने इसे पण्डित मदन मोहन मालवीय के हाथों में बेच दिया।

❑ **बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक के समाचार पत्र**

- इस दशक में समाजवादी एवं साम्यवादी विचारों का प्रसार हुआ। मराठी साप्ताहिक 'क्रान्ति' 'वर्कर्स एण्ड पीजेण्ट्स पार्टी आफ इण्डिया' का प्रतिनिधित्व कर रहा था।
- अंग्रेजी में साप्ताहिक 'स्पार्क' का प्रकाशन के० एम० जी० देसाई तथा 'न्यू स्पार्क का प्रकाशन 'लेस्टर हचिन्सन' ने किया। ये समाचार पत्र मार्क्सवाद का प्रचार कर रहे थे।
- प्रसिद्ध मार्क्सवादी विचारक एवं नेता एम० एन० राय ने 'वेन्गिडार्ड' तथा 'इण्डिपेंडेण्ट इण्डिया' का प्रकाशन किया।

❑ **उर्दू पत्रकारिता का विकास**

- इसमें 1910 ई० से 1920 ई० के मध्य विकास हुआ।
- 1912 ई० में अबुल कलाम आजाद ने 'अल हिलाल' तथा 1913 ई० में 'अल विलाग' का प्रकाशन कलकत्ता से किया।
- मोहम्मद अली ने अंग्रेजी में 'कामरेड' तथा उर्दू में हमदर्द' का प्रकाशन किया।
- हमीद उल अंसारी ने बिजनौर से 'मदीना' तथा अब्दुल बरी साहेब ने लखनऊ से 'हमदम' का प्रकाशन किया।
- गणेश शंकर विद्यार्थी ने 1910 ई० में कानपुर से 'प्रताप' का प्रकाशन किया। यह उग्र राष्ट्रीयता का पोषक और देसी रियासतों की जनता तथा किसान, मजदूर का समर्थक था।
- 1913 ई० में 'गदर' पत्र का प्रकाशन सेनफ्रांसिस्को से लाला हरदयाल ने उर्दू में किया। जनवरी, 1914 ई० से पंजाबी में भी इसका प्रकाशन आरम्भ हुआ।
- इसका प्रकाशन हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती तथा पश्तों में भी हुआ।

समाचार एजेंसियाँ (News Agencies)

- ब्रिटिश सरकार में 1935 तक चार समाचार एजेंसियों की स्थापना की जा चुकी थी।
  - रायटर (1860)
  - एसोसिएट प्रेस ऑफ इण्डिया (1905)
  - फ्री प्रेस न्यूज सर्विस (1927)
  - यूनाइटेड प्रेस आफ इण्डिया (1934)
- 'एसोसिएटेड प्रेस ऑफ इण्डिया' भारत की प्रथम राष्ट्रीय समाचार एजेन्सी थी।

❑ **प्रेस प्रतिबन्ध**

- भारत के आरम्भिक समाचार पत्र ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकारियों की कृपा पर आश्रित थे।
- समाचार पत्रों पर ब्रिटिश सरकार ने धीरे- धीरे अपना नियंत्रण स्थापित करने के लिए निम्नलिखित अधिनियम पारित किये -
  - 1799 का समाचार पत्रों का पत्रेक्षण अधिनियम
  - 1823 का अनुज्ञप्ति नियम

- 1857 का अनुज्ञप्ति अधिनियम
- 1867 का पंजीकरण अधिनियम
- देशी भाषा समाचार पत्र अधिनियम : (1878 ई.)
- समाचार पत्र अधिनियम
- भारतीय समाचार पत्र अधिनियम : 1910
- संकटकालीन भारतीय समाचार पत्र एक्ट : 1931

1799 का समाचार पत्रों का पत्रेक्षण अधिनियम

- **लागू** - लार्ड वेलेजली
- **समाप्त** - 1818 में लार्ड-हेस्टिंग्स
- **अन्य तथ्य -**
  - समाचार-पत्रो को सम्पादक, मुद्रक और स्वामी का नाम स्पष्ट रूप से छापना पड़ता था।
  - प्रकाशक को प्रकाशित किये जाने वाले सभी तथ्यों को सरकार के सचिव के सामने पूर्व-पत्रेक्षण के लिए भेजना होता था।
  - 1807 में यह अधिनियम पत्रिकाओं, पैम्फलेट तथा पुस्तकों सभी पर लागू कर दिया गया।
  - यह प्रतिबंध फ्रांसीसी आक्रमण के भय से आरोपित किया था।

1823 का अनुज्ञप्ति नियम -

- **लागू** - जॉन एडम्स
- **समाप्त** - 1835-36, चार्ल्स मेटकाफ ("भारतीय समाचार पत्रों का मुक्तिदाता")
- **अन्य तथ्य -**
  - प्रकाशक को प्रिंटिंग प्रेस स्थापित करने के लिए लाइसेन्स लेना होगा।लाइसेन्स के बिना प्रकाशन अपराध माना जायेगा।
  - 400 रूपये का जुर्माना , कारावास तथा प्रिंटिंग प्रेस को जब्त करने का प्रावधान किया गया।
  - गवर्नर जनरल को लाइसेंस रद्द करने का अधिकार था।
  - यह नियम भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों के विरूद्ध था।
  - इसके कारण राजा राममोहन राय को 'मिरात- उल-अखबार' का प्रकाशन बन्द करना पड़ा था।
  - एडम्स की इस आज्ञा के बाद जे० एस० बार्किंघम, जो कि एक निर्भीक अंग्रेज पत्रकार थे; कम्पनी की आलोचना करने के कारण 1823 में इंग्लैण्ड भेज दिये गये।

1857 का अनुज्ञप्ति अधिनियम

- 1857 के विद्रोह ने अंग्रेजी राज्य की जड़ें हिला दी थीं।
- इस परिस्थिति से निपटने के लिए यह अधिनियम लागू किया गया।
- लाइसेन्स के बिना प्रिंटिंग प्रेस रखने व प्रयोग करने पर सरकार ने रोक लगा दी।
- सरकार किसी भी समाचार पत्र, पुस्तक का प्रकाशन बीच में ही रोक सकती थी।
- यह केवल आपातकालीन व्यवस्था थी जो एक वर्ष तक चली। इसके समाप्त होने पर मेटकाफ द्वारा बनाये गये अधिनियम फिर से लागू हो गये।

1867 का पंजीकरण अधिनियम

- इस अधिनियम द्वारा सरकार समाचार पत्रों पर रोक नहीं बल्कि उनका नियमन करना चाहती थी।
- प्रत्येक मुद्रित पुस्तक तथा समाचार पत्र पर मुद्रक, प्रकाशक और मुद्रण स्थान का नाम होना अनिवार्य कर दिया गया था।
- प्रकाशित पुस्तक की एक प्रति एक मास के भीतर सरकार को देना पड़ता था।
- इस अधिनियम को 1890 और 1914 में पुनः संशोधित किया गया।
- वहाबी आंदोलन के समय राजद्रोही लेखों से निपटने के लिए इसी अधिनियम में भारतीय दंड संहिता की धारा 124 और 124 A जोड़ा गया।
- जिसके तहत् राजद्रोह फैलाने वाले व्यक्तियों को आजीवन निर्वासन अथवा अर्थ दण्ड का आरोपण किया जा सकता था।

देशी भाषा समाचार पत्र अधिनियम (1878 ई.)

- **लागू** - लार्ड लिटन

- **समाप्त -** लार्ड रिपन (1882)
- **अन्य तथ्य**
  - 1857 के विद्रोह के बाद देशी समाचार पत्र खुल कर सरकार की आलोचना कर रहे थे।
  - लिटन की साम्राज्यवादी और शोषण नीति ने लोगों के अंसतोष को चरम सीमा पर पहुँचा दिया। जिसकी अभिव्यक्ति समाचार पत्रों के माध्यम से हुई।
  - फलस्वरूप लिटन ने समाचार पत्रों पर प्रतिबंध लगाने के लिए इस अधिनियम की व्यवस्था की।
  - मजिस्ट्रेट भारतीय पत्रों के संपादकों से या तो बॉण्ड लिखा लें कि वे आपत्तिजनक सामग्री प्रकाशित नहीं करेगें या छपने से पूर्व निरीक्षण के लिए प्रस्तुत प्रमाण पेश करें। मजिस्ट्रेट का निर्णय अन्तिम होगा और उसके बाद अपील करने का कोई अधिकार नहीं होगा।
  - इस अधिनियम को "मुंह बंद करने वाला अधिनियम' (गैंगिग एक्ट) कहा गया। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने इसे "आकाश से होने वाला बज्रपात" कहा।
  - इसने देशी भाषा तथा अंग्रेजी भाषा के पत्रों में भेद-भाव किया। इसके तहत् 'सोमप्रकाश', (ईश्वर चन्द्र विद्यासागर) भारत मिहिर, ढाका प्रकाश, सहचर आदि समाचार पत्रों के विरूद्ध मामले दर्ज किये गए।
  - केवल पायनियर ने ही इस अधिनियम का समर्थन किया था।
  - यह अधिनियम ने भारतीय समाचार पत्रों की भाषा व प्रवृत्ति दोनों को कमजोर कर दिया।
  - भारत के नये सचिव लार्ड क्रेनबुक ने इस अधिनियम के पूर्व-पत्रेक्षण की धारा का विरोध किया। परिणामस्वरुप सितम्बर 1878 में यह धारा हटा ली गई।

❑ समाचार पत्र अधिनियम (1908)

- कांग्रेस के उग्र दल द्वारा समाचार पत्रों के माध्यम से सरकार की कड़ी आलोचना की जा रही थी।
- इसे दबाने के लिए सरकार ने 1908 में यह अधिनियम पारित किया।
- जिन समाचार पत्रों में हिंसा अथवा हत्या को प्रेरित करने वाले तथ्य होंगे तो प्रकाशक की सम्पत्ति अथवा मुद्रणालय को जब्त कर लिया जायेगा। इस जब्ती के 15 दिन के भीतर उच्च न्यायालय में अपील की अनुमति होगी।
- इसके द्वारा बंगाल में 'वंदेमातरम', 'संध्या' तथा युगांतर आदि 9 समाचार पत्रों को बंद करके उन पर मुकदमा चलाया गया था।
- इसके अधिनियम द्वारा 7 मुद्रणालयों को जब्त कर लिया गया था।

❑ भारतीय समाचार पत्र अधिनियम 1910

- इसके अनुसार सरकार किसी भी मुद्रणालय के स्वामी अथवा प्रकाशक से पंजीकरण जमानत कम से कम 500 रूपये तया अधिक से अधिक 2000 रूपये मांग सकती थी।
- पंजीकरण के साथ-साथ जमानत भी जब्त की जा सकती थी।
- पुनः पंजीकरण के लिए कम से कम 1000 तथा अधिक से अधिक 10,000 रूपये सरकार को देने पड़ते थे।
- पीड़ित पक्ष 2 माह के भीतर स्पेशल ट्रिव्यूनल के पास अपील भेज सकता था।
- इस अधिनियम के अधीन 991 प्रिंटिंग प्रेस व समाचार पत्रों के विरूद्ध कार्यवाही की गई।
- प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान सरकार ने इस अधिनियम को लागू कर राजनीतिक व जन आंदोलन पर रोक लगा दी थी।
- समाचार पत्रों के कानून की समीक्षा के लिए 1921 में सर तेजबहादुर सप्रू की अध्यक्षता में 'प्रेस कमेटी' नियुक्त की गयी।
- इस कमेटी की सिफारिशों के तहत् 1908 और 1910 के अधिनियम को रद्द कर दिया गया।

❑ संकटकालीन भारतीय समाचार पत्र एक्ट (1931)

- सविनय अवज्ञा आंदोलन के कारण सरकार ने यह अधिनियम पारित किया था।
- जिसके तहत् 1910 के प्रेस एक्ट के नियम पुनः लागू हो गये।
- प्रान्तीय सरकारों को सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रचार को दबाने के लिए अत्यधिक शक्तियाँ प्रदान की गई।
- इस अधिनियम की धारा 4(1) के तहत् अपराध के लिए प्रेरणा देने अथवा ऐसे किसी अपराध की प्रशंसा करने पर दण्ड दिया जा सकता था।
- 1932 में इसी अधिनियम को विस्तारित करके क्रिमिनल एमेंडमेंट एक्ट लागू किया गया। धारा 4 को और व्यापक बना दिया गया।
- द्वितीय विश्वयुद्ध के समय प्री-सेंसरशिप को पुनः लागू कर दिया गया।
- प्रेस इमरजेंसी एक्ट और आफिशियल सिक्रेट एक्ट को संशोधित करके लागू किया गया।

- कांग्रेस के विषय में समाचार प्रकाशित करना भी अवैध घोषित ने कर दिया गया। युद्ध की समाप्ति के बाद 1945 में ये शक्तियां समाप्त कर दी गई।

❑ **समाचार-पत्र जॉच समिति (1947)**

- इसे संविधान सभा में निर्धारित किये गये मौलिक अधिकारों के सन्दर्भ में समाचार पत्रों के लिए पारित अधिनियमों की समीक्षा करके प्रतिवेदन देने के लिए कहा गया।
- **मुख्य सिफारिशे -**
  - 1931 के अधिनियम को रद्द करना
  - समाचार पत्र और पुस्तकों के पंजीकरण के अधिनियम में संशोधन
  - भारतीय दण्ड संहिता की धारा 124-A और 153-A में परिवर्तन
  - 1931 तथा 1934 के देशी राज्यअधिनियम को रद्द कराना
  - इस प्रकार इस जाँच समिति के सुझावों के आधार पर देश में प्रेस की स्वतंत्रता पुनः लागू हो गयी।

❑ **समाचार पत्र (आपत्तिजनक विषय) अधिनियम (1951)**

- स्वतंत्रता के बाद साम्प्रदायिक दंगों के कारण भारत सरकार ने 1951 में संविधान के अनुच्छेद 19(2) में संशोधन किया और 'समाचार-पत्र अधिनियम' को पारित किया।
- यह अंग्रेजो के अधिनियमों से बहुत व्यापक था।
- इसने प्रेस सम्बन्धी असीमित अधिकार सरकार को प्रदान किए।
- इस प्रेस कानून से मुद्रणालयों की सुरक्षा राशि जमा कराने तथा उसको जब्त करने का अधिकार सरकार को प्राप्त हो गया था।
- वह पूर्णतः प्रेस को प्रतिबन्धित कर सकती थी अथवा कोई भी समाचार प्रकाशित करने से रोक सकती थी।
- सीमित मामलों में प्रकाशक या प्रेस को जूरी-मण्डल से न्याय माँगने का अधिकार प्रदान किया गया था। यह व्यवस्था 1956 तक चली।

प्रमुख आधुनिक भारतीय समाचार पत्र

❑ **कलकत्ता के प्रमुख समाचार पत्र**

- समाचार पत्र /पत्रिकाएं -बंगाल गजट
  - वर्ष - 1780
  - स्थान - कलकत्ता
  - संस्थापक - जेम्स ऑगस्टस हिक्की (आयरिश)
  - भाषा - अंग्रेजी
  - अन्य तथ्य - भारत में अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित प्रथम साप्ताहिक समाचार पत्र। इसे 'कलकत्ता जनरल एडवरटाइजर' भी कहा जाता था।
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - इण्डिया गजट
  - वर्ष - 1784
  - स्थान - कलकत्ता
  - संस्थापक - हेनरी विवियन डेरोजियो
  - भाषा – अंग्रेजी
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - बंगाल गजट
  - वर्ष - 1818
  - स्थान - कलकत्ता
  - संस्थापक - गंगाधर भट्टाचार्य, हारुचन्द्र राय
  - भाषा - अंग्रेजी
  - अन्य तथ्य - किसी भारतीय द्वारा अंग्रेजी में प्रकाशित प्रथम दैनिक समाचार पत्र प्रथम बंगाली मासिक तथा भारतीय भाषा का प्रथम समाचार पत्र था जो बाद में साप्ताहिक हो गया एवं इसका नाम समाचार दर्पण हो गया।
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - दिग्दर्शन

- वर्ष - 1818
- स्थान - कलकत्ता
- संस्थापक - जे० सी० मार्शमैन
- भाषा - बंगाली
- अन्य तथ्य - भारतीय भाषा में प्रकाशित प्रथम समाचार पत्र

- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - समाचार दर्पण
  - वर्ष - 1818
  - स्थान - कलकत्ता
  - संस्थापक - जे० सी० मार्शमैन
  - भाषा - बंगाली
  - अन्य तथ्य - बंगला भाषा में प्रकाशित प्रथम साप्ताहिक
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - संवाद कौमुदी
  - वर्ष - 1821
  - स्थान - कलकत्ता
  - संस्थापक - राजाराम मोहन राय
  - भाषा - बंगाली
  - अन्य तथ्य - यह राष्ट्रवादी विचारधारा से प्रेरित बंगाली भाषा का साप्ताहिक पत्र था।
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - मिरातुल अखबार
  - वर्ष - 1822
  - स्थान - कलकत्ता
  - संस्थापक - राजाराम मोहन राय
  - भाषा - फारसी
  - अन्य तथ्य - फारसी भाषा का प्रथम पत्र था।
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - जाम-ए-जहाँनुमा
  - वर्ष - 1822
  - स्थान - कलकत्ता
  - संस्थापक - हरिहर दत्ता
  - भाषा - उर्दू
  - अन्य तथ्य - उर्दू भाषा का प्रथम समाचार पत्र।
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - बंगदूत
  - वर्ष - 1829
  - स्थान - कलकत्ता
  - संस्थापक - राजाराम मोहन राय
  - अन्य तथ्य - यह, हिंदी, अंग्रेजी, बंगाली तथा फारसी भाषाओं में निकाला गया एक साताहिक पत्र था।
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - उदन्त मार्तण्ड
  - वर्ष - 1826
  - स्थान - कलकत्ता
  - संस्थापक - जुगल किशोर
  - भाषा -हिन्दी
  - अन्य तथ्य - भारत का प्रथम हिन्दी समाचार पत्र।
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - हिन्दू पैट्रियाट

- वर्ष - 1853
- स्थान - कलकत्ता
- संस्थापक - गिरीश चन्द घोष , हरिश्चन्द्र मुखर्जी
- भाषा -अंग्रेजी
- अन्य तथ्य - भारतीयों द्वारा अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित प्रथम साप्ताहिक समाचार पत्र

- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - सोम प्रकाश
  - वर्ष - 1858
  - स्थान - कलकत्ता
  - संस्थापक - ईश्वरचन्द्र विद्यासागर
  - भाषा -बंगाली
  - अन्य तथ्य - प्रथम बंगाली राजनैतिक समाचार पत्र।
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - अमृत बाजार पत्रिका
  - वर्ष - 1868
  - स्थान - कलकत्ता
  - संस्थापक - शिशिर कुमार घोष एवं मोतीलाल घोष
  - भाषा -बंगाली
  - अन्य तथ्य - इस पत्रिका की भाषा 1878 के वार्नाक्यूलर प्रेस ऐक्ट से बचने के लिए अंग्रेजी कर दी गई। इसका प्रथम बार सम्पादन मोतीलाल घोष ने किया था।
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - बंग दर्शन
  - वर्ष - 1873
  - स्थान - कलकत्ता
  - संस्थापक - बंकिम चन्द्र चटर्जी
  - भाषा -बंगाली
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - युगान्तर
  - वर्ष - 1906
  - स्थान - कोलकत्ता
  - संस्थापक - बारीन्द्र घोष, भूपेन्द्र नाथ दत्त
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - संध्या
  - वर्ष - 1906
  - स्थान - कोलकत्ता
  - संस्थापक - ब्रह्मबांधव उपाध्याय
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - भवानी मन्दिर
  - वर्ष - 1904
  - स्थान - कोलकत्ता
  - संस्थापक - वारीन्द्र कुमार घोष
  - अन्य तथ्य - यह बम तथा हथियार बनाने की गुप्त पत्रिका थी।
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - 'वन्देमातरम्'
  - वर्ष - 1906
  - स्थान - कोलकत्ता
  - संस्थापक - अरविन्द घोष तथा विपिन चन्द्र पाल
  - अन्य तथ्य - क्रान्तिकारियों का प्रेरणास्रोत

❑ मुम्बई के प्रमुख समाचार पत्र

- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - बाम्बे हैराल्ड
  - वर्ष - 1789
  - स्थान - बम्बई
  - भाषा -अंग्रेजी
  - अन्य तथ्य -बम्बई से प्रकाशित पहला समाचार पत्र जिसे भारतीय जनता का दर्पण संज्ञा दिया गया।
  - यह पत्र 1791 ई० में 'बाम्बे गजट' में परिवर्तित हो गया
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - बम्बई कुरियर
  - वर्ष - 1790
  - स्थान - बम्बई
  - संस्थापक -ल्यूक एशवर्नर
  - भाषा -अंग्रेजी
  - अन्य तथ्य - 1838 में रावर्ट नाइट के सम्पादन में इसका नाम परिवर्तित कर 'बाम्बे टाइम्स' कर दिया गया।
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - बाम्बे समाचार
  - वर्ष - 1822
  - स्थान -बम्बई
  - संस्थापक -फर्टूनजी मार्जवान
  - भाषा -गुजरती
  - अन्य तथ्य - गुजराती भाषा का प्रथम समाचार पत्र।
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - बाम्बे टाइम्स
  - वर्ष - 1838
  - स्थान -बम्बई
  - संस्थापक -थामस वेटेन/राबर्ट नाइट
  - भाषा -अंग्रेजी
  - अन्य तथ्य - 1861 के बाद इसका नाम 'द टाइम्स ऑफ इण्डिया' हो गया।
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - रास्त गोफ्तार
  - वर्ष - 1851
  - स्थान -बम्बई
  - संस्थापक -दादा भाई नौरोजी
  - भाषा -गुजराती
  - अन्य तथ्य - पारसी धर्म सुधारकों का समाचार पत्र
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - केसरी
  - वर्ष - 1881
  - स्थान -बम्बई
  - संस्थापक -बाल गंगाधर तिलक
  - भाषा -मराठी
  - अन्य तथ्य - पहले इस पत्र के सम्पादक प्रो० केलकर जी थे।
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - मराठा
  - वर्ष - 1881
  - स्थान - बम्बई
  - संस्थापक - बाल गंगाधर तिलक

- भाषा -अंग्रेजी
- अन्य तथ्य - पहले इस पत्र के सम्पादक आगरकर जी थे।

- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - यंग इण्डिया
  - वर्ष - 1919
  - स्थान - बम्बई
  - संस्थापक - महात्मा गांधी
  - भाषा - अंग्रेजी
  - अन्य तथ्य - अंग्रेजी के अलावा गुजराती भाषा में भी प्रकाशित।
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - नवकाल
  - वर्ष - 1928
  - स्थान - बम्बई
  - संस्थापक - एन० वाई० खांडेकर
  - भाषा - मराठी
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - हरिजन
  - वर्ष - 1933
  - स्थान - बम्बई (पूना)
  - संस्थापक - महात्मा गांधी
  - अन्य तथ्य - यह पत्र गुजराती, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा में था।

❑ **मद्रास के प्रमुख समाचार पत्र**

- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - मद्रास कुरियर
  - वर्ष - 1785
  - स्थान - मद्रास
  - संस्थापक - यंग वायड तथा रिचर्ड जॉनसन
  - भाषा - अंग्रेजी
  - अन्य तथ्य - मद्रास से प्रकाशित पहला समाचार पत्र
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - इण्डिया हेराल्ड
  - वर्ष - 1795
  - स्थान - मद्रास
  - संस्थापक - आर० विलियम हम्फ्री
  - भाषा - अंग्रेजी
  - अन्य तथ्य - सरकार समर्थित पत्र
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - मद्रास मेल
  - वर्ष - 1868
  - स्थान - मद्रास
  - अन्य तथ्य - भारत का प्रथम सांध्य दैनिक समाचार-पत्र
- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - द हिन्दू
  - वर्ष - 1878
  - स्थान - मद्रास
  - संस्थापक - जी० एस० अय्यर, वी राधवाचारी
  - भाषा - अंग्रेजी
  - अन्य तथ्य - यह 1889 के पहले साप्ताहिक पत्र था।

❑ उत्तर प्रदेश प्रमुख समाचार पत्र

- समाचार पत्र /पत्रिकाएं - अलीगढ़ इंस्टीट्यूट गजट
  - वर्ष - 1866
  - स्थान - उत्तर प्रदेश
  - संस्थापक - सर सैय्यद अहमद खाँ
  - भाषा - अंग्रेजी, उर्दू
  - अन्य तथ्य - मुसलमानों में अंग्रेजी राजभक्ति पैदा करना तथा उन्हें शिक्षा के प्रति जागृत करना था।

❑ अन्य प्रमुख समाचार पत्र

समाचार पत्र /पत्रिकाएं	वर्ष	स्थान	संस्थापक	भाषा
स्वराज	1936	-	एन० पी० पारूलेकर	गुजराती
इन्कलाब	1937	मुम्बई	खालिद अंसारी	उर्दू
नेशनल हेराल्ड	1938	-	जवाहर लाल नेहरू	अंगेजी
तलवार	-	पेरिस	मैडम भीकाजी कामा	-
फ्री हिन्दुस्तान	1918	वैकुवर (अमेरिका)	तारकनाथ दास	
हिन्दुस्तान	1889	-	पं. मदन मोहन मालवीय एवं प्रताप नारायण मिश्र	हिन्दी
कामरेड	1911	कलकत्ता	मौलाना मु. अली	अंग्रेजी
हमदर्द	1913	दिल्ली	मौलाना मु. अली	उर्दू
वन्देमातरम व दि पीपुल	1920	लाहौर	लाला लाजपत राय	-
न्यू इंडिया	1902	-	विपिन चन्द्र पाल	अंग्रेजी
इण्डिया	1890	लंदन	दादा भाई नौरोजी	-
प्रताप	1913	कानपुर	गणेश शंकर विद्यार्थी	हिन्दी
गदर	1913	सैन फ्रांसिस्को	लाला हरदयाल	उर्दू, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, पंजाबी, हिन्दी
अल हिलाल	1912	कलकत्ता	मौ. अबुल कलाम आजाद	उर्दू
मद्रास स्टैण्डर्ड	1914	मद्रास	एनीबेसेंट	हिन्दी
कॉमन वील	1914	मद्रास	एनीबेसेंट	अंग्रेजी
न्यू इण्डिया	1916	मद्रास	एनीबेसेंट	अंग्रेजी
डॉन	1917	करांची	मु० अली जित्रा	-
द लीडर	1909	इलाहाबाद	मदन मोहन मालवीय	अंग्रेजी
नवजीवन	1919	अहमदाबाद	महात्मा गांधी	हिन्दी, गुजराती

भारत में पाश्चात्य शिक्षा का इतिहास

- जिस समय अंग्रेजों ने बंगाल का शासन अपने हाथ में लिया, उच्चतर शिक्षा टोलों और मदरसों में संस्कृत, फारसी एवं अरबी के अध्ययन तक सीमित थी।
- देशी भाषायें पिछड़ रही थीं।
- प्रारम्भिक शिक्षा पाठशालाओं और मकतबों में दी जाती थी।
- ब्रिटिश सरकार ने भी शिक्षा के विकास में दिलचस्पी नहीं ली।
- प्रथम गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स ने पहली बार भारतीय शिक्षा के पुनर्जीवन को प्रोत्साहित किया।
- इन्होंने 1781 ई० में कलकत्ता में एक मदरसा स्थापित किया।
- वारेन हेस्टिम्स के समय में ही सर विलियम जोंस ने कलकत्ता में एशियाटिक सोसायटी की स्थापना की।

❑ **एशियाटिक सोसायटी**

- **वर्ष** -1784 ई०
- **संस्थापक** -विलियम जोंस (सभापत्ति)
- **स्थान** - कलकत्ता (बंगाल)
- **पत्रिका** -एशियाटिक रिसर्चेज'
- **अन्य तथ्य -**
  - विल्किस की भगवद्गीता वह प्रथम अनुवादित ग्रन्थ है जिसका अनुवाद एशियाटिक सोसायटी ऑफ-बंगाल के अधीन मूल संस्कृत से अंग्रेजी भाषा में नवम्बर, 1784 ई० में हुआ।
  - 1787 ई० में विल्किस ने हितोपदेश का भी अनुवाद किया।
  - 1789 ई० में जोंस ने कालिदास रचित अभिज्ञान शाकुन्तलम् का अंग्रेजी अनुवाद किया।
  - इसके पश्चात् 1792 ई० में जोंस ने गीतगोविन्द का अंग्रेजी अनुवाद किया
  - जोंस की मृत्यु के बाद 1792 ई० में 'इंस्टीट्यूट्स आफ हिन्दू लॉ' के नाम से मनुस्मृति का अनुवाद प्रकाशित हुआ।
  - मनुस्मृति प्रथम ग्रंथ है जिसका अनुवाद 1776 ई० में सर्वप्रथम संस्कृत से अंग्रेजी भाषा में 'ए कोड ऑफ जेन्टूलॉज' के नाम से हुआ।
  - बनारस के ब्रिटिश रेजीडेन्ट जोनाथन डंकन ने 1792 ई० में बनारस में एक संस्कृत कालेज की स्थापना की।
- अंग्रेजी सिखाने के लिए स्कूलों का जाल बिछा देने का विचार सबसे पहले चार्ल्स ग्रान्ट के मन में उठा।
- चर्ल्स ग्रांट ने शिक्षा के प्रचार के लिए अंग्रेजी भाषा को उपयुक्त माध्यम बताया।अतः उसे भारत में आधुनिक शिक्षा का जन्मदाता कहा जाता है।

❑ **ईसाई मिशनरियों का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान -**

- ईसाई मिशनरियों ने आधुनिक भारतीय भाषाओं के अध्ययन को महत्व प्रदान किया, शब्दकोष तैयार किए व्याकरण पर पुस्तकें लिखीं, बाइविल का भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया।
- स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में भी मिशनरियों ने अग्रणी कार्य किया।
- इन्होंने बालिकाओं के लिए विद्यालय खोले, अनाथालय स्थापित किए और मध्यवर्गीय एवं उच्चवर्गीय महिलाओं के लिए गृहशिवा व महिला शिक्षा का आरम्भ किया।
- इन मिशनरियों ने अपने कार्य का प्रारम्भ मद्रास एवं बंगाल में किया।
- बंगाल में विलियम केरी, वार्ड तथा मार्शमैन सीरमपुर की डच बस्ती में बसे।
- इस प्रकार प्रसिद्ध 'सीरमपुर त्रयी' 1799 ई० में अस्तित्व में आई।
- इन्हें बंगाल में कम्पनी के विरोध का सामना भी करना पड़ा।
- लार्ड वेल्जली ने 1800 ई० में कम्पनी के असैनिक अधिकारियों (I.C.S.) की शिक्षा के लिए कलकत्ता में 'फोर्ट विलियम कालेज' की स्थापना की, किन्तु कुछ कारणों से 1802 ई० में इसे बन्द कर दिया गया।
- इसकी जगह पर 1806 ई० में इंग्लैण्ड के हेलेबरी में प्रशिक्षण प्रारम्भ किया गया।
- 1813 ई० के चार्टर ऐक्ट में सर्वप्रथम भारतीय शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए 1 लाख रुपये की व्यवस्था की गई।

- इसमें भारतीय शिक्षा एवं स्थानीय विद्वानों को प्रोत्साहन देने के लिए खर्च करने की व्यवस्था थी।

❑ **ईसाई मिशनरियों का भारतीयों पर प्रभाव**

- ईसाई मिशनरियों का प्रभाव कुछ भारतीयों पर भी पड़ा।
- राजा राम मोहन राय और डेविड हेयर के प्रयत्नों से अनेक स्कूलों की स्थापना हुई, जिनमें एक हिन्दू कालेज भी था।
- यह कालेज 1817 ई० में कलकत्ता में डेविड हेयर एवं राम मोहन राय के प्रयत्नों से स्थापित हुआ।
- पाश्चात्य पद्धति पर उच्च शिक्षा देने का यह प्रथम कालेज था, जिसका धार्मिक शिक्षा से कोई सम्बन्ध नहीं था।
- इसमें अंग्रेजी, नीतिशास्त्र, व्याकरण, बंगला, इतिहास, भूगोल, गणित और ज्योतिष की शिक्षा दी जाती थी।
- वित्तीय कठिनाई के कारण इस विद्यालय का प्रबन्ध कम्पनी को सौंप दिया गया।
- 1854 ई० में यह महाविद्यालय बना।

❑ **प्राच्य-पाश्चात्य विवाद -**

- 1813 ई० के चार्टर अधिनियम के निर्देश अस्पष्ट थे। अतः शिक्षा नीति का लक्ष्य, माध्यम, शिक्षण संस्थाओं की व्यवस्था एवं शिक्षा प्रणाली विवाद का विषय बन गए।
- इस विषय पर विचारको ने दो मत प्रस्तुत किये।
- पहला - शिक्षा उच्च वर्गों से छन- छनकर ही जन सामान्य तक पहुंचाई जाए। इस प्रणाली को अधोमुखी निस्यंदन का सिद्धान्त कहा गया। इस सिद्धांत का प्रतिपादन लार्ड मैकाले ने किया। तथा घोषणा लार्ड ऑकलैंड ने की थी।
- दूसरा - जन सामान्य तक शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए कम्पनी को प्रत्यक्ष रूप से प्रयत्न करना चाहिए।
- लोक शिक्षा के माध्यम और स्वरुप को निर्धारित करने के लिए 10 सदस्यों की समिति बनायीं गयी इसमें दो दल थे। एक पाश्चात्य या आंग्ल-शिक्षा का समर्थक था, दूसरा प्राच्य शिक्षा के समर्थक थे।
- प्राच्य शिक्षा समिति का नेतृत्व लोक शिक्षा समिति के सचिव एच० टी० प्रिसेप तथा एच० एच० विल्सन ने किया।
- प्राच्य विद्या के समर्थकों ने वारेन हेस्टिंग्स और मिन्टो को शिक्षा की नीति का समर्थन किया।
- इन्होंने हिन्दुओं एवं मुस्लिमों के पुराने साहित्य के पुनरुत्थान को अधिक महत्व दिया।
- प्राच्य दल के लोग विज्ञान के अध्ययन को महत्व देते थे, परन्तु वे इसका अध्ययन ऐसी भाषा में करना चाहते थे जो आम भारतीय के लिए सहज हो।
- पाश्चात्य या आंग्ल शिक्षा के समर्थकों का नेतृत्व मुनरो एवं एल्फिसटन ने किया, इनका समर्थन मैकाले ने भी किया।
- मैकाले भारतीयों में पाश्चात्य शिक्षा के प्रचार के साथ एक ऐसे समूह का निर्माण करना चाहता था जो रंग एवं रक्त से तो भारतीय हों पर विचारों. रुचि एवं बुद्धि से अंग्रेज हों।
- मैकाले का मानना था कि "यूरोप के एक अच्छे पुस्तकालय की एक आलमारी का एक कक्ष भारत एवं अरब के समस्त साहित्य से अधिक मूल्यवान है।"
- 2 फरवरी, 1835 ई० को मैकाले ने अपना स्मरण पात्र लिखा और परिषद् के सामने रखा लेख जिसे तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड विलियम बेंटिक ने 7 मार्च, 1835 ई० को स्वीकार कर लिया।
- अंग्रेजी भाषा को भारत में शिक्षा का माध्यम बना दिया गया।
- 'अधोमुखों निस्पंदन सिद्धान्त' जिसका अर्थ था, शिक्षा समाज के उच्च वर्ग को दी जाए, इस वर्ग से छन-छनकर ही शिक्षा का असर जन सामान्य तक पहुँचे। इस सिद्धान्त को सर्वप्रथम सरकारी नीति के रूप में ऑकलैण्ड ने लागू किया।
- 1854 ई० से पूर्व उच्च शिक्षा के विकास की गति धीमी रही।
- 1835 ई० में लोक शिक्षा समिति 20 विद्यालयों को चला रही थी।
- 1837 ई० में इनको संख्या बढ़कर 48 हो गयी।
- 1835 ई० में 'कलकत्ता मेडिकल कालेज' की नींव बेटिंक के समय में पड़ी।
- 1840 ई० में बम्बई में भारतीय शिक्षा समिति को भंग करके उसके स्थान पर शिक्षा बोर्ड की स्थापना की गई।
- 1844 ई० में कलकत्ता हिन्दू कालेज में इंजीनियरिंग की कक्षा आरम्भ की गई।
- 1847 ई० में अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए कलकत्ता में एक 'नार्मल स्कूल' भी खुलवाया गया।
- 1851 ई० में पूना संस्कृत कालेज तथा पूना अंग्रेजी स्कूल को मिलाकर 'पूना कालेज' बनाया गया।

- 1854 ई० में बम्बई में ग्रांट मेडिकल कालेज की नींव पड़ी।
- 1856 ई० में कलकत्ता में इंजीनियरिंग कालेज की स्थापना हुई।
- 1852 ई० में आगरा में सेंट जॉन्स कालेज की स्थापना हुई।
- उत्तर-पश्चिमी प्रान्त में लेफ्टीनेंट गवर्नर जेम्स टॉमसन ने 1847 ई० में रुड़की इंजीनियरिंग कालेज की स्थापना की जो कि भारत का प्रथम इंजीनियरिंग कालेज था।

❑ चार्ल्स वुड का घोषणा पत्र (1854 ई०)

- **वर्ष -** 19 जुलाई, 1854 ई०
- **संस्थापक -** चार्ल्स वुड
- **अन्य तथ्य -**
- इस घोषणापत्र को "भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा" कहा जाता है।
- इसको सिफारिशें निम्नलिखित थीं-
- पाश्चात्य शिक्षा के प्रसार सरकार का उद्देश्य होगा।
- उच्च शिक्षा अंग्रेजी भाषा में दी जाए तथा देशी भाषा के विकास को महत्व दिया जाये।
- ग्राम स्तर पर देशी भाषा के माध्यम से अध्ययन के लिए प्राथमिक पाठशालायें स्थापित की जाएँ और उनसे ऊपर जिला स्तर पर एंग्लो-वर्नाक्यूलर हाई स्कूल एवं सम्बन्धित कालेज खोले जाएं।
- निजी प्रयत्नों को प्रोत्साहन देने के लिए अनुदान सहायता की पद्धति चलाई गई।
- कम्पनी के पाँचों प्रान्तों(बंगाल , बम्बई , मद्रास , उत्तर पश्चिम प्रान्त , पंजाब) में एक-एक निदेशक के अधीन लोक शिक्षा विभाग स्थापित किया जाएं।
- लन्दन विश्वविद्यालय के आधार पर कलकत्ता, बम्बई एवं मद्रास में विश्वविद्यालय स्थापित किए जाएं। इसमें एक कुलपति, उपकुलपति, सीनेट एवं विधि सदस्यों की व्यवस्था की गई। इन विश्वविद्यालयों को परीक्षा लेने एवं उपाधियां प्रदान करने का अधिकार होता था।

Note :- ऐसा पहला विश्वविद्यालय कोलकत्ता में स्थापित किया गया।

- तकनीकी एवं व्यावसायिक विश्वविद्यालयों की स्थापना की सिफारिश भी की गई।
- इस घोषणा पत्र में महिला शिक्षा को भी समर्थन दिया गया था।
- यह नई शिक्षा प्रणाली अंग्रेजी नमूनों की दासतापूर्ण अनुकृति थी।
- परिणाम
  - चार्ल्स वुड के पत्र की सभी सिफारिशें लागू कर दी गई।
  - पुरानी शिक्षा परिषद् और लोक शिक्षा समिति के स्थान पर 1855 ई० में लोक शिक्षा विभाग स्थापित कर दिया गया।
  - तीनों विश्वविद्यालय कलकत्ता, बम्बई और मद्रास अस्तित्व में आ गए।
  - श्री बेथून के प्रयत्नों से कुछ महिला पाठशालाओं की स्थापना भी की गई।
  - वुड का डिस्पैच मुख्यतः विश्वविद्यालयी स्तर की शिक्षा से सम्बन्धित था।

❑ हन्टर शिक्षा आयोग

- वर्ष - 1882-83 ई०
- अध्यक्ष - डब्ल्यू० डब्ल्यू० हण्टर
- सदस्य भारतीय - 8
- इस आयोग को प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा को समीक्षा तक ही सीमित कर दिया गया था।
- **प्रमुख सुझाव -**
  - सरकार प्राथमिक शिक्षा के सुधार और विकास पर विशेष ध्यान दे।
  - प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा दी जाये।
  - हाई स्कूल स्तर पर व्यावसायिक एवं व्यापारिक तथा साहित्यिक शिक्षा की व्यवस्था की जाये।
  - शिक्षा के क्षेत्र में निजी प्रयासों को बढ़ावा दिया जाए, परन्तु प्राथमिक शिक्षा उसके बगैर भी दी जाए।

- स्त्री शिक्षा की पर्याप्त व्यवस्था की जाए।

- परिणाम -
  - इसकी सिफारिशों के बाद 20 वर्षों में माध्यमिक एवं कालेज शिक्षा का अभूतपूर्व विस्तार हुआ।
  - 1882 ई० में पंजाब एवं 1887 ई० में इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।
  - लार्ड कर्जन जब भारत का वायसराय बना तब उसने मैकाले की शिक्षा नीति की आलोचना की। उसने कहा कि मैकाले की नीति देशी भाषाओं के विरुद्ध है। उसने अपने शासनकाल में गुण और दक्षता के नाम पर विश्वविद्यालयों पर सरकारी नियंत्रण बहुत कड़ा कर दिया।

❑ भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम

- वर्ष - 1904 ई०
- अध्यक्ष - सर टॉमस रैले
- भारतीय सदस्य -सैय्यद हुसैन बिलमामी एवं जस्टिस गुरुदास बनर्जी
- **अन्य तथ्य -**
  - 1901 ई० में कर्जन ने शिमला में एक सम्मेलन बुलाया, जहाँ उसने भारत में शिक्षा के सभी क्षेत्रों को समीक्षा की बात कही।
  - 1902 ई० में कर्जन ने रैले की अध्यक्षता में एक विश्वविद्यालय आयोग को स्थापना की।
  - इस आयोग का उद्देश्य विश्वविद्यालयों की स्थिति की समीक्षा करना एवं उनके संविधान तथा कार्यक्षमता के बारे में सुझाव देना था।
  - इस आयोग का कार्यक्षेत्र उच्च शिक्षा एवं विश्वविद्यालय तक हो सीमित था।
- **प्रमुख सिफारिशे**
  - अध्ययन तथा शोध को बढ़ावा देने के लिए योग्य प्राध्यापकों तथा व्याख्याताओं की नियुक्ति की जाए।
  - उपयोगी प्रयोगशालाओं एवं पुस्तकालयों को स्थापना की जाए।
  - विश्वविद्यालय के अधिछात्रों की संख्या 50 से कम और 100 से अधिक नहीं होनी चाहिए।
  - अधिछात्र मुख्य रूप से सरकार द्वारा मनोनीत होने चाहिए और इनकी नियुक्ति 6 वर्ष के लिए को जानी चाहिए।
  - विश्वविद्यालय की सीनेट द्वारा पारित प्रस्तावों पर सरकार को वोटो का अधिकार दिया जाये।
  - अशासकीय कालेजों को विश्वविद्यालय से सम्बन्धित करने की शर्तें अधिक कड़ी कर दी जाये ।
  - गवर्नर जनरल को इन विश्वविद्यालयों की क्षेत्रीय सीमायें निश्चित करने का अधिकार दे दिया जाये।
- **परिणाम**
  - राष्ट्रवादी तत्वों ने कड़ी आलोचना की ।
  - कर्जन की इस नीति के परिणामस्वरूप ही विश्वविद्यालयों के सुधार के लिए प्रतिवर्ष 5 लाख रुपये पांच वर्ष तक के लिए व्यवस्था की गई।

❑ 1913 ई० का सरकारी प्रस्ताव

- 21 फरवरी, 1913 ई० को शिक्षा नीति के सरकारी प्रस्तावों में प्रत्येक प्रान्त में एक विश्वविद्यालय खोलने की घोषणा हुई।
- गोपाल कृष्ण गोखले द्वारा की जा रही अनिवार्य निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की माँग सरकार ने नकार कर निरक्षरता खत्म करने की नीति को स्वीकार किया।
- सरकार ने प्रान्तों की सरकारों को प्रेरित किया कि वे समाज के निर्धन एवं अत्यन्त पिछड़े हुए वर्गों को निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने का प्रबन्ध करे।
- आवासिक विश्वविद्यालयों की स्थापना की सिफारिश की।

❑ सैडलर विश्वविद्यालय आयोग

- **वर्ष -**1917-19 ई०
- **अध्यक्ष -** डा० एम० सैडलर
- **भारतीय सदस्य -** डा० सर आशुतोष मुखर्जी , डा० जियाउद्दीन अहमद
- **अन्य तथ्य -**
  - 1917 ई० में सरकार ने कलकत्ता विश्वविद्यालय की समस्याओं के अध्ययन के लिए
  - इस आयोग की नियुक्ति की.

- इस आयोग ने कलकत्ता विश्वविद्यालय के साथ-साथ माध्यमिक-स्नातकोत्तरीय शिक्षा पर भी अपना मत व्यक्त किया।
- इसने 1904 ई० के विश्वविद्यालय अधिनियम की कड़ी आलोचना की।
- इसके अनुसार विश्वविद्यालय की शिक्षा को सुधारने के लिए माध्यमिक शिक्षा में सुधार आवश्यक है।

- प्रमुख सिफारिशें -
  - स्कूल की शिक्षा 12 वर्ष की होनी चाहिए।
  - विद्यार्थियों का प्रवेश हाई स्कूल के बाद नहीं बल्कि उत्तर माध्यमिक परीक्षा के बाद विश्वविद्यालय में किया जाना चाहिए।
  - ऐसी शिक्षण संस्थायें स्थापित करने का सुझाव दिया गया जो इण्टरमीडिएट महाविद्यालय कहलाए।
  - ये महाविद्यालय चाहें तो स्वतंत्र रहें या फिर हाईस्कूल से सम्बद्ध हो जाएँ।
  - इन संस्थाओं के प्रशासन हेतु माध्यमिक तथा उत्तर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के निर्माण की सिफारिश की गई।
  - इण्टरमीडिएट के बाद स्नातक स्तर की शिक्षा 3 वर्ष की होनी चाहिए।
  - विश्वविद्यालयों को सुझाव दिया गया कि वे बहुत सख्त नियम न बनाएं।
  - पूर्ण स्वायत्त आवासीय एवं एकात्मक स्वरूप के विश्वविद्यालयों की स्थापना की जाये ।
  - कलकत्ता विश्वविद्यालय के कार्यभार को कम करने के लिए आयोग ने ढाका में एक एकांकी विश्वविद्यालय की स्थापना का सुझाव दिया।
  - महिला शिक्षा के प्रसार के लिए कलकत्ता विश्वविद्यालय में एक महिला शिक्षा प्रसार बोर्ड बनाया जाए।
  - आयोग ने ढाका एवं कलकत्ता विश्वविद्यालयों में अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए शिक्षा विभाग खोलने की सलाह दी।
  - आयोग ने व्यावसायिक कालेज खोलने की ओर भी सरकार का ध्यान खींचा।
- परिणाम -
  - इसके सुझावों पर 1916 ई० में मैसूर विश्वविद्यालय, 1916 ई० में बनारस विश्वविद्यालय, 1917 ई० में पटना विश्वविद्यालय, 1918 ई० में उस्मानिया विश्वविद्यालय, 1920 ई० में अलीगढ़ विश्वविद्यालय एवं 1921 ई० में लखनऊ विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।

❑ द्वैध शासन के अन्तर्गत शिक्षा

- 1919 ई० के माण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों के अनुसार प्रान्तों में शिक्षा विभाग एक निर्वाचित मंत्री के अधीन कर दिया गया।
- केन्द्र सरकार ने अब शिक्षा में रुचि लेना बन्द कर दिया।
- शिक्षा के लिए केन्द्रीय अनुदान भी बन्द कर दिया।
- केन्द्र की इस उपेक्षा के कारण शिक्षा का स्तर गिर गया।
- प्रान्तीय सरकारें वित्तीय अभाव के कारण प्रभावी शिक्षा की व्यवस्था न कर सकीं। शिक्षा को प्रांतीय सरकारों के अधीन कर दिया गया।

❑ हाटोंग समिति

- वर्ष - 1929 ई०
- अध्यक्ष - सर फिलिप हाटोंग
- प्रमुख सिफारिशें -
  - प्राथमिक शिक्षा के राष्ट्रीय महत्व पर बल जाये।
  - ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों को वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल के स्तर पर रोक दिया जाए। अर्थात् उनके कालेजों में प्रवेश के स्थान पर इन्हें व्यावसायिक एवं औद्योगिक शिक्षा दी जाए।
  - उच्च्च शिक्षा प्राप्त करने के योग्य छात्रों को ही उच्च्च शिक्षा प्राप्त करने की अनुमति दी जाए।

❑ मौलिक शिक्षा की वर्षा योजना

- वर्ष - 1937 ई०
- 1937 ई० में महात्मा गाँधी ने अपने 'हरिजन' के अंकों में शिक्षा पर एक योजना प्रस्तुत की। इसे ही वर्धा योजना कहा गया।
- इस योजना का मूलभूत सिद्धान्त 'हस्त उत्पादक कार्य' था।
- इसके अन्तर्गत विद्यार्थी को मातृभाषा में 7 वर्ष तक शिक्षा अध्ययन कराया जाये।
- परिणाम -
  - द्वितीय विश्वयुद्ध और मंत्रिमंडलों के त्याग पत्र के कारण यह योजना लागु न हो सकी गई।

❑ शिक्षा की सार्जेण्ट योजना

- वर्ष - 1944 ई०
- अध्यक्ष - जॉन सार्जेण्ट
- मुख्य सिफारिशें
  - इसमें प्राथमिक विद्यालय और उच्च माध्यमिक विद्यालयों के स्तरों में सुधार पर जोर दिया गया।
  - इस योजना में 6 से 11 वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की गई।
  - 11 से 17 वर्ष तक के बच्चो के लिए सीनियर स्कूल की व्यवस्था की जाये। यह स्कूल दो प्रकार के होंगे - साहित्यिक शिक्षा हेतु , प्रावधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा हेतु
  - इस योजना में इण्टरमीडिएट श्रेणी को समाप्त करने की व्यवस्था थी।
  - 40 वर्ष के अन्दर ही शिक्षा के पुनर्निर्माण कार्य को अन्तिम रूप देना था। परन्तु 'खेर समिति' ने इस समय-सीमा को घटाकर 16 वर्ष कर दिया।

❑ राधाकृष्णन आयोग

- वर्ष - 1948-49 ई०
- अध्यक्ष - डा० राधाकृष्णन
- रिपोर्ट - अगस्त, 1949 ई०
- मुख्य सिफारिशें -
  - विश्वविद्यालय के डिग्री कोर्स से पूर्व 12 वर्ष की स्कूली शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए।
  - उच्च शिक्षा के 3 प्रमुख उद्देश्य होने चाहिये- सामान्य शिक्षा, संस्कारी शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा।
  - विश्वविद्यालय में परीक्षा दिनों के अतिरिक्त वर्ष में कम से कम 180 दिन पढ़ई होनी चाहिए जो 11 -11 सप्ताह के तीन सत्रों में विभाजित होनी चाहिए।
  - प्रशासनिक सेवाओं के लिए विश्वविद्यालय की स्नातक उपाधि आवश्यक नहीं होनी चाहिए।
  - शिक्षा को समवर्ती सूची में शामिल किया जाए।
  - विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना की जाए।
  - विश्वविद्यालय के वेतन में वृद्धि की जाए।
- परिणाम -
  - भारत सरकार ने 1953 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना एक स्वायत्त निकाय के रूप में किया था।
  - 1956 में संसद द्वारा पारित एक कानून के माध्यम से इसे स्वतंत्र निकाय का दर्जा मिल गया।
  - वर्तमान में यह विश्वविद्यालयों में शिक्षा, शोध, सुविधा और शिक्षा से सम्बद्ध अन्य विकास योजनाओं का पर्वेक्षण एवं सम्पादन करता है।
  - वर्तमान में लगभग 1055 विश्वविद्यालय हैं।

❑ कोठारी शिक्षा आयोग

- वर्ष - 1964 ई०
- अध्यक्ष- डा० दौलत सिह कोठारी
- रिपोर्ट - जून, 1966 ई०
- इंग्लैण्ड, अमेरिका, रूस इत्यादि के प्रमुख शिक्षा शास्त्री तथा वैज्ञानिक इससे सम्बद्ध किए गए।
- यूनेस्को सचिवालय ने श्री जे० एफ० मैक्डूगल की सेवायें भी उपलब्ध कराई, जिन्होंने एक सहकार सचिव के रूप में आयोग में कार्य किया।
- प्रमुख सिफारिशें -
  - शिक्षा के सभी स्तरों पर समाज सेवा एवं कार्य अनुभव के विषय शामिल किए जाएं। नैतिक शिक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास किया जाए।
  - माध्यमिक शिक्षा को व्यावसायिक बनाया जाए।
  - उन्नत अध्ययन केन्द्रों की स्थापना की जाए।
  - कृषि अनुसंधान और शिक्षा पर बल दिया जाए।

- राष्ट्रीय आय का 6% शिक्षा पर व्यय करना।
- विद्यालयों के लिए अध्यापको के प्रशिक्षण एवं श्रेणी पर बल दिया जाये।

❑ राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- वर्ष - 1968 ई०
- प्रमुख प्रावधान -
  - 14 वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था।
  - त्रि-भाषायी फार्मूला स्वीकार किया जाये।
  - विज्ञान और अनुसंधान की शिक्षा का समानीकरण किया जाये।
  - कृषि तथा उद्योग के लिए शिक्षा का विकास किया जाये।
  - पाठ्य-पुस्तकों को अधिक उत्तम बनाना और सस्ती पुस्तकों का उत्पादन किया जाये।
  - राष्ट्रीय आय का 6% शिक्षा पर व्यय किया जाये।
  - शिक्षा की संरचना 10+2+3 करना, अर्थात् 10 वर्ष सामान्य शिक्षा, 2 वर्ष की उच्चतर माध्यमिक शिक्षा और 3 वर्ष का स्नातक कोर्स।

❑ राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- वर्ष - 1986 ई०
- प्रारूप प्रस्तुत - शिक्षा मंत्री के. सी. पंत
- भारत सरकार ने 1986 ई० में नई शिक्षा नीति की घोषणा की।
- प्रमुख प्रावधान -
  - राष्ट्रीय साक्षरता दर का विकास किया जाए।
  - प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमीकरण किया जाए।
  - माध्यमिक शिक्षा का व्यवसायीकरण किया जाए।
  - शिक्षा का समाजीकरण किया जाए।
- प्रारंभिक शिक्षा को सर्वव्यापी बनाना।
- प्राथमिक विद्यालयों में न्यूनतम आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था के निमित्त 'ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड' को कार्य रूप देना।
- इस नीति में राष्ट्रीय साक्षरता की दर को 36 प्रतिशत से बढ़ाकर 2000 ई. तक 56% करना था।

❑ नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- वर्ष - 2020
- भारत की शिक्षा प्रणाली में व्यापक बदलाव लाने के लिए तैयार की गई है। इस नीति की
- **मुख्य सिफारिशें-**
- स्कूल शिक्षा में सुधार:
  - 5+3+3+4 प्रारूप: प्री-प्राइमरी (3 वर्ष), प्राथमिक (5 वर्ष), मध्य (3 वर्ष) और उच्च माध्यमिक (4 वर्ष)।
  - शिक्षा के लिए मातृभाषा का उपयोग: कक्षा 5 तक की शिक्षा मातृभाषा में देने की सिफारिश।
- शिक्षा में बहु-विषयक दृष्टिकोण:
  - सभी विषयों में एकीकृत दृष्टिकोण अपनाना।
  - STEM (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) के साथ-साथ कला और मानविकी पर जोर।
- उच्च शिक्षा में सुधार:
  - मल्टीडिसिप्लिनरी इंस्टीट्यूट की स्थापना।
  - नए संस्थानों की स्थापना और मौजूदा संस्थानों का विकास।
- शिक्षकों का प्रशिक्षण:
  - शिक्षकों के लिए अनिवार्य निरंतर व्यावसायिक विकास।

- शिक्षकों की योग्यता में सुधार के लिए नए प्रशिक्षण कार्यक्रम।

- तकनीकी समावेश:
  - डिजिटल शिक्षा के लिए इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास।
  - ई-लर्निंग और ऑनलाइन पाठ्यक्रमों को बढ़ावा।
- शिक्षा में अनुसंधान:
  - शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान को प्रोत्साहन देने के लिए विशेष फंडिंग।
  - शिक्षा नीति के कार्यान्वयन पर निगरानी और मूल्यांकन।
- समानता और समावेशन:
  - विशेष रूप से हाशिए पर पड़े समुदायों और विकलांग लोगों के लिए विशेष योजनाएँ।
  - आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए छात्रवृत्तियाँ और अन्य समर्थन।
- नैतिक शिक्षा:
  - नैतिक और मूल्यों की शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करना।

ब्रिटिश गवर्नर और गवर्नर-जनरल

बंगाल के गवर्नर

❑ **क्लाइव**

- **वर्ष -** 1757-60 ई० और 1765-67 ई०
- **उपाधि**
  - "बड़ी-बड़ी नींवें रखने वाला" - वर्क ने
  - "भविष्य का अग्रदूत" -पर्सीवल स्पीयर ने
- **मृत्यु -** इंग्लैण्ड में आत्महत्या।
- **मुख्य तथ्य -**
  - प्लासी की विजय के बाद क्लाइव को बंगाल का प्रथम गवर्नर बनाया गया।
  - बक्सर की विजय के बाद इसे पुनः गवर्नर बनाकर बंगाल भेजा गया।
- इलाहाबाद की सन्धि (1765 ई०)
- व्यापार समिति (Society for Trade)
  - प्लासी और बक्सर के युद्धों में सफलता के बाद कम्पनी के कर्मचारियों ने उपहार एवं निजी व्यापार के जरिए खूब धन बटोरे। क्लाइव ने इसे बन्द कर दिया
  - इन प्रतिबन्धों से जो हानि हुई, उसकी क्षतिपूर्ति के लिए अगस्त, 1765 ई० में कम्पनी के कार्यकर्ताओं की एक व्यापार समिति बनाई गई।
  - इसको नमक, सुपारी तथा तम्बाकू के व्यापार का एकाधिकार दिया गया।
  - 1768 ई० में यह योजना समाप्त कर दी गई।
- श्वेत विद्रोह
  - क्लाइव ने बंगाल के सैनिकों को मिलने वाला दोहरा भत्ता बन्द कर दिया तथा जनवरी, 1766 ई० से यह भत्ता केवल उन सैनिकों को ही मिलता था जो बंगाल एवं बिहार की सीमा से बाहर कार्य करते थे।
  - मुंगेर तथा इलाहाबाद स्थित श्वेत अधिकारियों ने इस आज्ञा का विरोध किया। इसे श्वेत विद्रोह' कहा जाता है।
  - बंगाल में द्वैध शासन लागू किया जिसे 1772 में वारेन हेस्टिग्स ने समाप्त किया।

❑ **हालवेल**

- **वर्ष -** 1756 ई०
- **मुख्य तथ्य**
  - यह क्लाइव के बाद बंगाल का स्थानापन्न गवर्नर बना।
  - इसी ने ब्लैक होल की घटना का वर्णन किया था।

❑ **वेन्सिटार्ट**

- **वर्ष -** 1760-65 ई०
- **मुख्य तथ्य**
  - बक्सर के युद्ध के समय वेन्सिटार्ट ही बंगाल का गवर्नर

❑ **वेरेलस्ट**

- **वर्ष -** 1767-69 ई०
- **मुख्य तथ्य**
  - द्वैध शासन के समय ये बंगाल के गवर्नर थे।

❑ **कर्टियर**

- **वर्ष -** 1769-72 ई०
- **मुख्य तथ्य**
  - इनके समय में भी बंगाल में द्वैध शासन जारी रहा।
  - 1770 ई० में बंगाल में आधुनिक भारत का प्रथम अकाल पड़ा।

❑ **वारेन हेस्टिंग्स**

- **वर्ष -** 1772-74 ई०
- **मुख्य तथ्य**

○ यह बंगाल का अन्तिम गवर्नर था।
○ इसने बंगाल में द्वैध शासन को समाप्त कर दिया।

गवर्नर जनरल

❑ **वारेन हेस्टिंग्स**

- **वर्ष - 1774-85 ई०**
- **मुख्य तथ्य -**

○ रेग्यूलेटिंग ऐक्ट के तहत वारेन हेस्टिंग्स को बंगाल का प्रथम गवर्नर जनरल बनाया गया। इसे भारत का प्रथम गवर्नर जनरल भी कहा जाता है।
○ 1772 ई० में हेस्टिंग्स ने राजस्व बोर्ड का गठन किया तथा कोष मुर्शिदाबाद से कलकत्ता लाया गया।
○ 1773 ई० के रेग्यूलेटिंग ऐक्ट के तहत 1774 ई० में कलकत्ता में एक सुप्रीम कोर्ट की स्थापना की गई।
○ इस प्रकार भारत में न्यायिक सेवा का जन्मदाता वारेन हेस्टिंग्स था।
○ बनारस की सन्धि (1773 ई०)
○ फैजाबाद की सन्धि (1775 ई०)
○ 1784 ई० में विलियम जोंस ने कलकत्ता में एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल की स्थापना की।
○ नन्द कुमार पर अभियोग (1775 ई०)
○ नन्द कुमार मुर्शिदाबाद का भूतपूर्व दीवान था।
○ इसने वारेन हेस्टिंग्स पर घूस लेने का आरोप लगाया था
○ हेस्टिंग्स ने इम्पे की मदद से जालसाजी के मुकदमे में नन्द कुमार को फाँसी पर लटका दिया। इस मुकदमे को "न्यायिक हत्या" की संज्ञा दी जाती है।

- **महाभियोग**

○ हेस्टिंग्स भारत का एकमात्र गवर्नर जनरल था जिस पर बर्क ने महाभियोग का मुकदमा दायर किया।
○ वर्क ने हेस्टिंग्स को "चूहा और नेवला", "एक झूठा बैलों का ठेकेदार" और "अन्याय का मुखिया, आदि से संबोधित किया है।
○ यह मुकदमा 1788 ई० से 1795 ई० तक चलता रहा, परन्तु संसद ने उसे सभी दोषों से मुक्त कर दिया।

❑ **कार्नवालिस**

- **वर्ष -** 1786-93 ई०
- **मुख्य तथ्य**

○ 1789 ई० में दासों के व्यापार पर रोक लगा दी।
○ कार्नवालिस भारत में सिविल सेवा का जन्मदाता था।
○ भारत में पुलिस सेवा का जन्मदाता
○ स्थायी बन्दोवस्त (1793 ई०)
○ कार्नवालिस संहिता (1793 ई०) - "कार्नवालिस संहिता" शक्तियों के पृथक्करण के सिद्धान्त पर आधारित था।
○ उसने कर तथा न्याय-प्रशासन को पृथक् कर दिया।
○ कार्नवालिस एकमात्र गवर्नर जनरल है, जिसकी समाधि भारत में गाजीपुर में स्थित है।

❑ **सर जॉन शोर**

- **वर्ष -** 1793-98 ई०
- **मुख्य तथ्य**

○ मैसूर के प्रति अहस्तक्षेप की नीति का पालन किया।
○ इसने जमींदारों को भूमि का वास्तविक स्वामी माना था।
○ 1793 का चार्टर अधिनियम
○ निजाम एवं मराठों के बीच खर्दा की लड़ाई (1795)

- अवध के उत्तराधिकार विवाद में हस्तक्षेप
- इलाहाबाद का कंपनी के साम्राज्य में विलय

❑ **लार्ड वेल्जली**

- **वर्ष - 1798-1805 ई०**
- **मुख्य तथ्य-**

- सहायक सन्धि प्रणाली को प्रचलित किया।
- 1800 ई० में कलकत्ता में फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना।
- सबसे पहले यह संधि हैदराबाद के निजाम के साथ की गई
- चतुर्थ मैसूर युद्ध (1799)
- द्वितीय मराठा युद्ध (1803-05)
- बेसीन की संधि (1802)

❑ **सर जार्ज बार्लो**

- **वर्ष -** 1805 ई०
- **मुख्य तथ्य**

- इसने "अहस्तक्षेप की नीति का कड़ाई से पालन किया
- मराठों के प्रति शान्तिपूर्ण नीति अपनाई ।
- वेल्लोर का विद्रोह (1806)

❑ **लार्ड मिंटो**

- **वर्ष -** 1807-13 ई०
- **मुख्य तथ्य**

- इसके समय में रणजीत सिंह के साथ 1809 ई० में प्रसिद्ध अमृतसर की सन्धि हुई।
- सन्धि पर अंग्रेजों की तरफ से चार्ल्स मेटकॉफ ने हस्ताक्षर किए।

❑ **लार्ड हेस्टिंग्स**

- **वर्ष -** 1813-23 ई०
- **मुख्य तथ्य**

- अहस्तक्षेप की नीति का परित्याग
- आंग्ल-नेपाल युद्ध (1814-16 ई०)
- पिण्डारियों का दमन (1817-18 ई०)
- मराठा संघ का अन्त
- साथियों के साथ संधि (1817)
- थॉमस मुनरो द्वारा रैयतवाड़ी बंदोबस्त लागू (1820)

❑ **लार्ड एडम्स**

- **वर्ष -** 1823 ई०
- **मुख्य तथ्य -**

- इसके समय में प्रेस पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया।

❑ **लार्ड एण्हर्स्ट**

- **वर्ष -** 1823-28 ई०
- **मुख्य तथ्य** –

- यह भारत का पहला गवर्नर जनरल था, जो मुगल सम्राट् अकबर 11 से 1827 ई० में बराबरी के स्तर पर मिला।
- प्रथम आंग्ल-बर्मा युद्ध (1824-26 ई०)
- 1826 ई० के याण्डवू के सन्धि
- 1824 ई० में बैरकपुर की छावनी में सैनिक विद्रोह
- भरतपुर का अधिग्रहण (1826)

❑ **लार्ड विलियम बेंटिक**

- **वर्ष -** 1828-35 ई०
- **मुख्य तथ्य** –

○ सती प्रथा का अन्त- 1829 ई०
○ ठगी-प्रथा का अन्त 1830 ई०
○ 1833 ई० का चार्टर ऐक्ट
○ अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाना, 1835
○ कलकत्ता मेडिकल कालेज 1835 ई०
○ 'संभागीय आयुक्तों' की नियुक्ति
○ मैसूर (1831 ई०), कुर्ग (1834 ई०) तथा कछार (1832 ई०) की रियासतों को अपने प्रदेश में मिला लिया।
○ रणजीत सिंह के साथ 'निरंतर मित्रता' की संधि
○ लॉर्ड कॉर्नवालिस द्वारा स्थापित प्रांतीय अपीलीय एवं भ्रमणकारी न्यायालयों की समाप्ति

❑ **चार्ल्स मेटकॉफ**

- **वर्ष -** 1835-36 ई०
- **मुख्य तथ्य**

○ इसने समाचार पत्रों पर से सभी प्रतिबन्ध हटा लिया।
○ इसी कारण इसे "समाचार पत्रों के मुक्तिदाता" के रूप में जाना जाता है।

❑ **लार्ड आकलैण्ड**

- **वर्ष -** 1836-42 ई०
- **मुख्य तथ्य**

○ प्रथम आंग्ल-अफगान युद्ध (1838-42 ई०)
○ त्रिपक्षीय सन्धि-शाहशुजा (अफगानिस्तान का भगोड़ा शासक), रणजीत सिंह और अंग्रेजों के बीच एक त्रिपक्षीय सन्धि हुई।
○ रणजीत सिंह की मृत्यु
○ इसी समय "शेरशाह सूरी मार्ग" का नाम बदलकर जी० टी० रोड रख दिया गया।

❑ **लार्ड एलनबरो**

- **वर्ष -** 1842-44 ई०
- **मुख्य तथ्य**

○ सिन्य का विलय (1843 ई०)
○ एलनबरो ने 1843 ई० के 'अधिनियम 5'द्वारा दास प्रथा का अन्त कर दिया।
○ ग्वालियर के साथ युद्ध (1843 ई०)

❑ **लार्ड हार्डिंग**

- **वर्ष -** 1844-48 ई०
- **मुख्य तथ्य**

○ प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध (1846)
○ लाहौर की सन्धि (1846)
○ हार्डिंग ने खोंड जनजाति में प्रचलित नरबलि प्रथा का दमन करने के लिए कैम्पबेल की नियुक्ति की।

❑ **लार्ड डलहौजी**

- **वर्ष -** 1848-56 ई०
- **मुख्य तथ्य**

○ पंजाब का विलय (1852 ई०)
○ द्वितीय आंग्ल-बर्मा युद्ध (1852 ई०)
○ लोअर बर्मा तथा पेगु का विलय कर लिया।
○ 1850 ई० में सिक्किम राज्य के कुछ दूरवर्ती प्रदेश जैसे दार्जिलिंग आदि सम्मिलित थे, भारत में मिला लिए।

- व्यपगत का सिद्धान्त की शुरुआत की।
- गवर्नर जनरल पर कार्य के बोझ को कम करने के उद्देश्य से बंगाल में एक लेफ्टीनेंट गवर्नर की नियुक्ति की व्यवस्था की।
- सैन्य सुधार इसके अन्तर्गत कलकत्ता में स्थित तोपखाने का कार्यालग मेरठ में तथा सेना का मुख्य कार्यालय शिमला में स्थापित किया गया।
- शिमला को भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाई
- 1853 ई० में टॉमसन की व्यवस्था के अनुसार समस्त उत्तर-पश्चिमी प्रान्त , लोअर बंगाल और पंजाब में स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार भारतीय भाषाओं में शिक्षा का प्रस्ताव स्वीकार किया गया।
- 1854 ई० का चार्ल्स वुड का डिस्पैच इन्हीं के समय में पारित हुआ।
- भारत में 1853 ई० में प्रथम रेलवे लाइन बम्बई से थाना के बीच बिछाई गई। दूसरी रेलवे लाइन 1854 ई० में कलकत्ता से रानीगंज के बीच बिछाई गई।
- प्रथम विद्युत तार सेवा कलकत्ता से आगरा के बीच प्रारम्भ हुई।
- 1854 ई० में पहली बार डाक टिकटों का प्रचलन आरम्भ हुआ।
- 1854 ई० में पारित पोस्ट आफिस ऐक्ट द्वारा तीनों प्रेसीडेन्सियों में डाकघरों की अच्छी देखरेख के लिए एक-एक महानिदेशकों की नियुक्ति की गई।
- पहली बार एक सार्वजनिक निर्माण विभाग बनाया गया।
- गंगा नहर को खोल दिया गया(1854)
- भारत के बन्दरगाहों को अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए खोल दिया।
- पेशवा के पेंशन की समाप्ति (1853)
- 1854 ई० में लोक शिक्षा विभाग की स्थापना की।
- विधवा पुनर्विवाह अधिनियम (1856)

भारत के वायसराय

- 1857 ई० के विद्रोह के बाद 1858 ई० का अधिनियम पारित किया गया।
- इस अधिनियम के द्वारा ही गवर्नर जनरल को अब वायसराय कहा जाने लगा।
- कैनिंग के समय में ही 1857 ई० का विद्रोह हुआ। इसके बाद उसे ही प्रथम वायसराय बनाया गया।

- 1857 ई० के विद्रोह के बाद 1858 ई० का अधिनियम पारित किया गया।
- इस अधिनियम के द्वारा ही गवर्नर जनरल को अब वायसराय कहा जाने लगा।
- कैनिंग के समय में ही 1857 ई० का विद्रोह हुआ। इसके बाद उसे ही प्रथम वायसराय बनाया गया।

❑ **लार्ड कैनिंग**

- **वर्ष - 1856-62 ई०**
- **मुख्य तथ्य**

- यह भारत का गवर्नर जनरल एवं वायसराय दोनों था।
- 1857 ई० का विद्रोह
- 1857 ई० में कलकत्ता, बम्बई और मद्रास में विश्वविद्यालयों की स्थापना।
- 1858 ई० के महारानी विक्टोरिया के उद्घोषणा द्वारा भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन की समाप्ति हो गई।
- विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856 ई० में कैनिंग के ही समय में पास हुआ।
- भारतीय दण्ड संहिता (I.P.C) की स्थापना 1861 ई० में कैनिंग के ही समय में हुई।

- विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856 ई० में कैनिंग के ही समय में पास हुआ।
- भारतीय दण्ड संहिता (I.P.C) की स्थापना 1861 ई० में कैनिंग के ही समय में हुई।

❑ **सर जॉन लारेन्स**

- **वर्ष - 1864-68 ई०**
- **मुख्य तथ्य**

- अफ्गानिस्तान के सन्दर्भ में अहस्तक्षेप की नौति का पालन किया
- 1865 ई० में भारत एवं यूरोप के बीच प्रथम समुद्री टेलीग्राफ सेवा शुरू हुई।
- एक अकाल समिति का गठन
- भूटान को युद्ध में पराजित किया

❑ **लार्ड मेयो**

- **वर्ष -** 1869-72 ई०
- **मुख्य तथ्य** –

○ 1870 ई० में लाल सागर होकर तार व्यवस्था का प्रारम्भ।
○ 1871 ई० में जनगणना का कार्य प्रारम्भ हुआ।
○ 1872 ई० में एक कृषि विभाग की स्थापना की।
○ 1872 ई० में पंजाब में कूका विद्रोह।
○ 1872 ई० में मेयो कालेज की स्थापना अजमेर में की गई।
○ बम्बई व मद्रास में नमक कर में वृद्धि कर दी।
○ भारतीय सांख्यिकी सर्वेक्षण स्थापना
○ पोर्ट ब्लेयर में इसकी हत्या कर दी गई।

❑ **लार्ड नार्थ बुक**

- **वर्ष -** 1872-76 ई०
- **मुख्य तथ्य**

○ 1874 ई० में बिहार का अकाल।
○ 1875 ई० में मोहम्मडन एंग्लो-ओरियण्टल कालेज की स्थापना'
○ प्रिंस आफ वेल्स की भारत यात्रा (1875)
○ बड़ौदा के गायकवाड़ पर मुकदमा

❑ **लार्ड लिटन**

- **वर्ष -** 1876-80 ई०
- **मुख्य तथ्य**

○ साहित्य जगत में यह "ओवन मैरिडिथ" के नाम से प्रसिद्ध था।
○ 1878 ई० में " स्ट्रेची" की अध्यक्षता में प्रथम अकाल आयोग नियुक्त किया गया।
○ राज उपाधि अधिनियम् 1876 ई० - महारानी विक्टोरिया ने कैसर-ए-हिन्द की उपाधि धारण की।
○ प्रथम दिल्ली दरवार 1877 ई०
○ वर्नाक्यूलर प्रेस ऐक्ट 1878 ई०
○ भारतीय शस्त्र अधिनियम, 1878 ई०
○ सिविल सेवा परीक्षा की आयु 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष कर दी गई।
○ द्वितीय अफगान युद्ध1878-80 ई०

❑ **लार्ड रिपन**

- **वर्ष -** 1880-84 ई०
- **मुख्य तथ्य**

○ 1852 ई० में उन्होंने एक पुस्तिका 'इस युग का कर्तव्य" (The Duty of Agc) लिखा था।
○ प्रथम वास्तविक जनगणना 1881 ई०
○ स्थानीय स्वायत्त शासन का जन्मदाता
○ प्रथम फैक्ट्री अधिनियम1881 ई०
○ हण्टर कमीशन का गठन - 1882 ई०
○ वर्नाक्यूलर प्रेस ऐक्ट को 1882 ई० में समाप्त।
○ इल्बर्ट बिल विवाद 1884 ई०
○ अकाल संहिता का गठन 1883 ई०

❑ **लार्ड डफरिन**

- **वर्ष -** 1884-88 ई०
- **मुख्य तथ्य**

- "टेनेन्सी ऐक्ट पारित 1885 ई० हुआ, जिसके अन्तर्गत अब जमींदार अपनी इच्छानुसार किसानों की भूमि नहीं छीन सकते थे।
- 1887 ई० में पंजाब में "टेनेन्सी ऐक्ट पारित हुआ।
- 1885 ई० में "लेडी डफरिन फंड" स्थापित किया गया।
- तृतीय वर्मा युद्ध 1885 ई०
- कांग्रेस की स्थापना
- 1887 ई० में इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।

❑ **लार्ड लेंसडाउन**

- **वर्ष -** 1888-94 ई०
- **मुख्य तथ्य**

- प्रिंस आफ वेल्स का दूसरी बार भारत आगमन 1889 ई०
- दूसरा फैक्ट्री अधिनियम 1891 ई०
- इण्डियन कौंसिल ऐक्ट 1892 ई०
- 1893 ई० में भारत और अफगानिस्तान के बीच एक रेखा निश्चित की गई, जो दूरण्ड रेखा के नाम से जानी जाती है।

❑ **लार्ड एल्गिन द्वितीय**

- **वर्ष -** 1894-99 ई०
- **मुख्य तथ्य-**

- इसने घोषणा की कि "हमने भारत को तलवार के बल पर जीता है और तलवार के बल पर ही इसे अधीन रखेंगे।"
- 1897 ई० में सीमान्त प्रदेश में विद्रोह।
- बम्बई में प्लेग का फैलना
- इण्डियन एजूकेशन सोसायटी की स्थापना।
- स्वामी विवेकानन्द द्वारा वेल्लूर में रामकृष्ण मिशन और मठ की स्थापना।
- चित्राल विद्रोह

❑ **लार्ड कर्जन**

- **वर्ष -** 1899-1905 ई०
- **मुख्य तथ्य –**

- सिंचाई आयोग नियुक्त 1901 ई०
- पुलिस आयोग गठित 1902 ई०
- C.I.D की स्थापना 1903 ई०
- रैले आयोग गठित 1902 ई०
- भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पारित 1904 ई०
- सहकारी उदार समिति अधिनियम पारित 1904 ई०
- भारतीय टंकण तथा मुद्रण अधिनियम 1899 ई०
- प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम1904 ई०
- किचनर से विवाद 1900 ई० - लार्ड किचनर भारत का सेनाध्यक्ष होकर आया। देशी नरेशों के राजकुमारों के सैनिकों के लिए उसने "इम्पीरियल कैडेट कोर" की स्थापना की। किचनर से विवाद के कारण ही कर्जन ने त्यागपत्र दे दिया।
- 1904 ई० में तिब्बत में "यंग हस्बैण्ड" का अभियान भेजा।
- 1905 ई० में बंगाल का प्रथम विभाजन किया।

❑ **लार्ड मिण्टो द्वितीय**

- **वर्ष -** 1905-10 ई०
- **मुख्य तथ्य –**

- ढाका में मुस्लिम लीग की स्थापना 1906 ई०
- कलकत्ता अधिवेशन में कांग्रेस द्वारा "स्वराज" लक्ष्य घोषित 1906 ई०।
- कांग्रेस का सूरत अधिवेशन में विभाजन 1907 ई०

- समाचार पत्र अधिनियम (प्रेस ऐक्ट), 1908 ई० पारित।
- बाल गंगाधर तिलक पर राजद्रोह 1908 ई०
- माले-मिण्टो सुधार अधिनियम, 1909 ई०
- गवर्नर जनरल की कौसिल के सदस्य के रूप में एस० पी० सिन्हा की नियुक्ति की गई।
- मदल लाल धींगरा द्वारा लन्दन में 1909 ई० को कर्जन वायली की गोली मारकर हत्या।

❑ **लार्ड हार्डिंग द्वितीय**

- **वर्ष -** 1910-16 ई०
- **मुख्य तथ्य -**

- 1910 ई० में इंग्लैण्ड के राजा एडवर्ड III की मृत्यु एवं जार्न V का राज्यारोहण।
- तृतीय दिल्ली दरबार 1911 ई०
- बंगाल का विभाजन निरस्त
- कलकत्ता से दिल्ली में राजधानी स्थानान्तरण
- 1911 ई० में भारत की पाँचवीं जनगणना हुई।
- 1912 ई० में दिल्ली को प्रान्त बनाने की घोषणा।
- 1913 ई० में रवीन्द्रनाथ टैगोर को नोबुल पुरस्कार
- फीरोजशाह मेहता ने "बम्बई क्रानिकल" का एवं गणेश शंकर विद्यार्थी ने "प्रताप" का प्रकाशन प्रारम्भ किया।
- मदनमोहन मालवीय द्वारा "हिन्दू महासभा" की स्थापना।
- 1914-18 ई० तक प्रथम विश्व युद्ध ।
- 1915 ई० में गाँधी जी का भारत आगमन
- 1915 ई० में गोपाल कृष्ण गोखले एवं फीरोजशाह मेहता की मृत्यु हुई।
- 1916 ई० में वाराणसी में मदन मोहन मालवीय द्वारा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना।

❑ **लार्ड चेम्सफोर्ड**

- **वर्ष -** 1916-21 ई०
- **मुख्य तथ्य –**

- बाल गंगाधर तिलक एवं श्रीमती ऐनी बेसेंट द्वारा होमरूल लीग का गठन।
- डी० के० कर्वे द्वारा महिला विश्वविद्यालय की स्थापना 1916 ई०
- सैडलर आयोग की नियुक्ति 1917 ई०
- जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड 1919 ई०
- संवैधानिक सुधार अधिनियम 1919 ई०
- सर एस० पी० सिन्हा को बिहार का गवर्नर नियुक्त किया गया।
- खिलाफत एवं असहयोग आन्दोलन की शुरुआत ।

❑ **लार्ड रीडिंग**

- **वर्ष -** 1921-26 ई०
- **मुख्य तथ्य**

- मोपला विद्रोह 1921 ई०
- प्रिंस आफ वेल्स ने भारत की यात्रा की 1921 ई०
- 1920 ई० में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना ताशकन्द में एम० एन० राय ने की।
- विश्व भारती विश्वविद्यालय की स्थापना 1922 ई०
- 1923 ई० से सिविल सर्विसेज की परीक्षा की व्यवस्था दिल्ली और लन्दन में एक साथ की गई।
- काकोरी षड्यंत्र केस 1925 ई०
- सी आर दास की मृत्यु 1925 ई०
- स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या 1926 ई०
- सी.आर. दास तथा मोतीलाल नेहरू द्वारा 'स्वराज पार्टी' की स्थापना

- अकाली आंदोलन एवं गुरुद्वारा एक्ट
- दिल्ली एवं नागपुर में विश्वविद्यालयों की स्थापना

❑ **लार्ड इरविन**

- **वर्ष -** 1926-31 ई०
- **मुख्य तथ्य**

- भारतीय जल सेना अधिनियम पारित 1927 ई०
- साइमन कमीशन की नियुक्ति 1927 ई०
- साइमन कमीशन भारत आया 1928 ई०
- लखनऊ में सर्वदलीय सम्मेलन का आयोजन 1928 ई०
- नेहरू रिपोर्ट 1928 ई०
- जिन्ना की 14 सूत्रीय माँग 1929 ई०
- कृषि से सम्बन्धित रॉयल कमीशन की नियुक्ति 1928 ई०
- दिल्ली विधानसभा बम विस्फोट 1929 ई०
- सांडर्स की हत्या 1929 ई०
- लाहौर षड्यंत्र केस 1929 ई०
- जतिन दास की भूख हड़ताल के बाद जेल में मृत्यु 1929 ई०
- 1929 ई० के प्रत्तिद्ध लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस का पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पारित।
- 1929 ई० में प्रसिद्ध मेरठ षड्यंत्र केस का मुकदमा प्रारम्भ।
- 1929 ई० में 'इम्पीरियल कौंसिल आफ एमीकल्चरल रिसर्च' की स्थापना।
- दीपावली घोषणा -1929 (भारत को नियत समय में अधिराज्य का दर्जा)
- 26 जनवरी, 1930 ई० को सम्पूर्ण देश में स्वतंत्रता दिवस का आयोजन।
- सविनय अवज्ञा आन्दोलन 1930 ई०
- कांग्रेस द्वारा प्रथम गोलमेज सम्मेलन का बहिष्कार , 1930 ई०
- गाँधी-इरविन समझौता 1931 ई०
- सविनय अवज्ञा आन्दोलन स्थगित एवं कांग्रेस द्वारा द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने का निर्णय।
- राजकीय श्रमिक आयोग 1931 ई०

❑ **लार्ड विलिंगडन**

- **वर्ष -** 1931-36 ई०
- **मुख्य तथ्य**

- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन का आयोजन 1931 ई० , इस सम्मेलन में गाँधी जी ने कांग्रेस का प्रतिनिधित्व किया।
- साम्प्रदायिक निर्णय 1932
- गाँधी जी ने इस एवार्ड के विरोध में आमरण अनशन प्रारम्भ किया।
- पूना पैक्ट 1932
- तृतीय गोलमेज सम्मेलन का दिसम्बर, 1932 ई० में आयोजन
- 1932 ई० में इण्डियन मिलेट्री एकेडमी, देहरादून की स्थापना।
- 1933 ई० में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के छात्र चौधरी रहमत अली द्वारा सर्वप्रथम 'पाकिस्तान" शब्द का प्रयोग किया गया।
- 1934 ई० में सविनय अवज्ञा आन्दोलन का समापन।
- भारत सरकार अधिनियम 1935 ई०
- अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना (1936)
- जयप्रकाश नारायण एवं आचार्य नरेंद्रदेव द्वारा कांग्रेस समाजवादी पार्टी की स्थापना (1934)
- बर्मा भारत से पृथक कर दिया गया (1935)

❑ **लार्ड लिनलिथगो**

- **वर्ष - 1936-44 ई०**

- **मुख्य तथ्य:**

- पहला आम चुनाव 1936-37 ई०
- कांग्रेस का मंत्रिमण्डल से त्यागपत्र 1939 ई०
  - 1939 ई० को मुस्लिम लीग ने इसे "मुक्ति दिवस के रूप में मनाया।
- 1937 ई० में पहली बार ग्राम फैजपुर (बंगाल) में कांग्रेस का अधिवेशन, जहाँ जवाहर लाल नेहरू अध्यक्ष थे।
- वी० डी० सावरकर "हिन्दू महासभा के अध्यक्ष निर्वाचित 1938 ई०
- शरत चन्द्र चटर्जी और मुहम्मद इकबाल की मृत्यु 1938 ई०
- "फारवर्ड ब्लाक" का गठन 1939 ई०
- व्यक्तिगत सत्याग्रह 17 अक्टूबर, 1940 ई०
- विस्टन चर्चिल ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बने 1940 ई०
- क्रिप्स मिशन 1942 ई०
- भारत छोडो प्रस्ताव 14 जुलाई, 1942 ई०
- भारत छोडो आंदोलन 08 अगस्त , 1942 ई०
- मुस्लिम लीग ने 1940 ई० में पृथक् राज्य की माँग की।
- 1943 ई० में सिंगापुर में आजाद हिन्द फौज का गठन।

❑ **लार्ड वेवेल**

- **वर्ष -** 1944-47 ई०
- **मुख्य तथ्य**

- शिमला सम्मेलन 1945 ई०
- वेवेल योजना 1945 ई०
- ब्रिटेन प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली 1945 ई०
- लाल किले का मुकदमा 1945 ई०
- नौ-सैनिक विद्रोह 1946 ई०
- कैबिनेट मिशन की घोषणा 19 फरवरी, 1946 ई०
- कैबिनेट मिशन दिल्ली पहुँचा 24 मार्च, 1946 ई०
- सीधी कार्यवाही दिवस - 16 अगस्त, 1946 ई०
- संविधान सभा का गठन - जुलाई, 1946 ई०
- संविधान सभा को पहली बैठक 9 दिसम्बर, 1946 ई०
- अन्तरिम सरकार का गठन 2 सितम्बर, 1946 ई०
- 20 फरवरी, 1947 ई० को ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने घोषणा की कि 30 जून, 1948 ई० तक भारतीयों को सत्ता सौंप दी जाएगी।

❑ **लार्ड माउन्टबेटन**

- **वर्ष -** 1947-48 ई०
- **मुख्य तथ्य**

- माउण्टबेटन प्लान की घोषणा 3 जून, 1947 ई०
- भारतीय स्वतंत्रता विधेयक प्रस्तुत 2 जुलाई, 1947 ई०
- 1947 ई० में दो सीमा निर्धारण आयोग गठित किए गए।
- पहला बंगाल विभाजन के लिए और दूसरा पंजाब विभाजन के लिए।
- सर सायरिल रेडक्लिफ दोनों आयोगों के अध्यक्ष थे।
- 14 अगस्त को पाकिस्तान और 15 अगस्त को भारत स्वतंत्र हुआ
- स्वतंत्रता के बाद लार्ड माउन्टबेटन को स्वतंत्र भारत का प्रथम गवर्नर जनरल बनाया गया।

❑ **सी० राजगोपालाचारी**

- **वर्ष -** 1948-50 ई०
- **मुख्य तथ्य**

- भारत के अन्तिम गवर्नर जनरल।
- संविधान सभा द्वारा भारत का संविधान अंगीकृत 26 नवम्बर, 1949 ई०
- संविधान लागू 26 जनवरी, 1950 ई०
- गवर्नर-जनरल का पद समाप्त करके डा० राजेन्द्र प्रसाद को भारत का प्रथम राष्ट्रपति नियुक्त किया गया।

आधुनिक भारत की ऐतिहासिक विभूतियाँ

- 19वीं और 20वीं शताब्दी में कुछ ऐसी महान् विभूतियों का उदय हुआ, जिन्होंने भारतवासियों को एक नूतन मार्ग दिखाया।

❑ **राधाकान्त देव**

- **वर्ष -** 1784-1867 ई.
- राधा कान्त देव 'गोपी मोहन देव' के पुत्र थे।
- 1817 ई. में 'कलकत्ता स्कूल बुक सोसायटी' की स्थापना की।
- 1851 ई. में स्थापित 'ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन' के संस्थापक अध्यक्ष थे।
- 1830 ई. में 'धर्मसभा' (बंगाल) नामक संस्था की स्थापना की
- 'सती प्रथा' के समर्थक थे
- इन्होंने 'शब्द कल्पद्रुम' नामक संस्कृत के आधुनिक महाशब्दकोश की रचना की।

❑ **देवेन्द्र नाथ टैगोर**

- **वर्ष -** 1817-1905 ई.
- देवेन्द्र नाथ टैगोर का जन्म 'कलकत्ता' में 'द्वारिका नाथ टैगोर' के पुत्र के रूप में हुआ।
- ये 'ब्रह्मसमाज' के संस्थापक सदस्य थे।

❑ **शिव दयाल खत्री**

- **वर्ष -** 1818-1878 ई.
- शिव दयाल खत्री का जन्म 'आगरा' में हुआ था।
- 'राधा स्वामी मत' की शिक्षा प्रारम्भ करने वाले पहले संत थे।
- अपने दर्शन का नाम 'सतनाम अनामी' रखा जो आगे चलकर राधा स्वामी कहलाया।
- **समाधि -** दयालबाग (आगरा)

❑ **ईश्वर चन्द्र विद्यासागर**

- **वर्ष -** 1820-1891 ई.
- **जन्म -** 'पश्चिम बंगाल'
- **पिता -** 'ठाकुर बन्धोपाध्याय'
- **माता -** 'भगवती देवी'
- विद्वता के कारण 'विद्या सागर' की उपाधि से विभूषित किया गया।
- इन्होंने 'सोम प्रकाश' नामक पत्र का संपादन किया तथा 'वैताल पंचविंशति' नामक गद्य की रचना की।
- बहु विवाह का विरोध किया।
- विधवा विवाह का समर्थन करते हुए अपने पुत्र का विवाह विधवा महिला से करवाया।
- इन्हीं के प्रयास से लार्ड कैनिंग ने 1856 ई. में 'विधवा पुनर्विवाह अधिनियम' पास किया।
- 1864 ई. में 'मेट्रोपालिटिन कॉलेज' की स्थापना की।

❑ **गोपाल हरि देशमुख**

- **वर्ष -** 1823-1892 ई.
- **जन्म -** महाराष्ट्र
- **उपनाम -** 'लोकहित वादी'
- अहमदाबाद में 'पुनर्विवाह मण्डल' नामक संस्था की स्थापना की।
- **पुस्तक -** जाति-भेद , गीता तत्व, सुभाषित
- **साप्ताहिक पत्र -** 'प्रभाकर'
- 1880 ई. में गवर्नर जनरल की 'कार्यकारिणी परिषद' का सदस्य बनाया गया था।

❑ **आत्माराम पांडुरंग**

- **वर्ष-** 1823-1898 ई.
- बम्बई में 1867 ई. में 'प्रार्थना समाज' की स्थापना की।
- 'मुंबई प्राकृतिक इतिहास सोसायटी' के संस्थापकों में से एक थे।

❑ **दीनबन्धु मित्र**

- **वर्ष-** 1829-1873 ई.
- **जन्म -** बंगाल
- **मूल नाम -** 'गंधर्व नारायण'
- **उपनाम -** 'दीनबन्धु'

- इनका प्रथम नाटक 'बंग्ला भाषा' में 'नील दर्पण' 1860 ई. में प्रकाशित हुआ।
- जिसमें 'दिगम्बर विश्वास' एवं विष्णु विश्वास के नेतृत्व में हुए 'नील आन्दोलन' का वर्णन है।

❑ **केशव चन्द्र सेन**

- **वर्ष -** 1838-1884 ई.
- **जन्म -** 'कोलकाता'
- ब्रह्म समाज संज्ञक सामाजिक संस्था के मंच से एक विशाल आन्दोलन का नेतृत्व किया।

❑ **महादेव गोविन्द रानाडे**

- **वर्ष -** 1842-1901 ई.
- **जन्म** – महाराष्ट्र
- **पिता -** गोविन्द अमृत रानाडे
- समाज सेवक एवं मुम्बई हाईकोर्ट के न्यायाधीश थे।
- केवश चन्द्र सेन की प्रेरणा से प्रार्थना समाज की सदस्यता ग्रहण वर्ष।

❑ **श्री नारायण गुरु**

- **वर्ष - 1855-1928 ई.**
- **जन्म -** 'केरल'
- कन्याकुमारी के 'मारुतवन' नामक पहाड़ी गुफा में तपस्या करके ज्ञान प्राप्त किया।
- 'अरुविप्पुरम' आकर एक मन्दिर बनवाया, जिसका द्वार सभी मनुष्यों के लिए खोल दिया
- उनका कहना था कि, 'मानव का एक जाति, एक धर्म और एक ईश्वर है।'
- नारायण गुरु के कहने पर ही महात्मा गांधी ने अपने अखबार का नाम 'नवजीवन' से बदलकर 'हरिजन' कर दिया था।
- 1903 ई. में 'श्री नारायण धर्म परिपालन योगम' की स्थापना की।

❑ **स्वामी श्रद्धानंद**

- **वर्ष -** 1856-1926 ई.
- **जन्म -** 'जालंधर' (पंजाब)
- 1901 ई. में 'गुरुकुल विद्यालय' की स्थापना की, जो आगे चलकर 'गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
- श्रद्धानन्द ने 'देवनागरी' लिपि को बढ़ावा देने के लिए पत्र 'सद्धर्म को देवनागरी लिपि एवं हिन्दी भाषा में प्रकाशित करवाया।
- 23 दिसम्बर 1926 ई. को 'अब्दुल रशीद' नामक एक व्यक्ति ने गोली मारकर हत्या कर दी।

❑ **बेहरामजी मेरवानजी मालाबारी**

- **वर्ष- 1853-1912 ई.**
- **जन्म -** पारसी परिवार
- दादा भाई नौरोजी की अनुपस्थिति में 'वॉयस ऑफ इंडिया' का प्रकाशन जारी रखा
- इनके प्रयास से ही 1891 ई. में सम्पति आयु अधिनियम पारित हुआ, जिसका विरोध बाल गंगाधर तिलक ने किया था।

❑ **डी.के. कर्वे**

- **वर्ष -** 1858-1962 ई.
- **जन्म** – महाराष्ट्र
- 'महिला शिक्षा' और 'विधवा विवाह' के प्रबल समर्थक थे।
- 1893 ई. में 'गोड़बाई' नामक विधवा से विवाह कर लिया। परिणामतः इन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया गया।
- 'पूना' में 'विधवा विवाह संघ' की स्थापना की।
- पूना में 'महिला विश्वविद्यालय' की स्थापना की, जिसके प्रधानाध्यापक स्वयं बने।
- 1958 ई. में डी.के. कर्वे को उनके योगदान हेतु 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

❑ **गुरु रवीन्द्र नाथ टैगोर**

- **वर्ष - 1861-1941 ई.**
- **जन्म** – कोलकाता
- **पिता -** 'देवेन्द्र नाथ टैगोर'
- **माता -** 'शारदा देवी'
- वर्ष 1913 ई० में उन्हें अपनी रचना 'गीतांजलि' के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान प्राप्त करने वाले वह भारत के ही नहीं बल्कि एशिया के प्रथम व्यक्ति थे।
- रवीन्द्र नाथ टैगोर की दो रचनाएँ 'जनगणमन' भारत की तथा 'अमार सोनार बांगला' बांग्लादेश की राष्ट्रगान बनी।
- 1901 ई. में 'शान्ति निकेतन' की स्थापना की
- गांधी जी को 'महात्मा' की उपाधि प्रदान की

- अंग्रेजी सरकार द्वारा 1913 ई. में 'सर' की उपाधि से विभूषित किया गया था
- 1919 ई. के जलियावाला कांड से क्षुब्ध होकर लौटा दिया।

❑ **डॉ. हर विलास शारदा**

- **वर्ष -** 1867-1955 ई.
- **जन्म -** राजस्थान
- 1929 ई. में 'शारदा अधिनियम' पारित किया गया
- जिसमें लड़की के विवाह की न्यूनतम आयु 14 वर्ष तया लड़के की 18 वर्ष निर्धारित की गयी।

❑ **स्वामी दयानन्द सरस्वती**

- **वर्ष - 1824-1883 ई.**
- **जन्म -** राजकोट (गुजरात)
- **मूल नाम -** मूल शंकर
- 1875 ई. में आर्य समाज की स्थापना की।

❑ **बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय**

- **वर्ष - 1838-1894 ई.**
- **जन्म -** 'बंगाल
- **प्रमुख कृतियाँ -** 'दुर्गेशनंदिनी', 'कपाल कुण्डला', 'मृणालिनी',' राधारानी', 'इन्दिरा', 'आनन्दमठ', 'देबी चौधरानी' आदि हैं।
- **मासिक पत्रिका-** 'बंगदर्शन'
- भारत का राष्ट्रीय गीत 'वन्दे मातरम्' इन्हीं की रचना है।
- 'आनन्दमठ' उपन्यास में बंगाल में 'तीर्थयात्रा कर' के विरोध में हुए 'संन्यासी विद्रोह' का वर्णन किया है।

❑ **स्वामी विवेकानन्द**

- **वर्ष -** 1863-1902 ई.
- **जन्म -** कलकत्ता
- **माता -** विश्वनाथ दत्त
- **पिता -** भुवनेश्वरी देवी
- **बचपन का नाम -** नरेन्द्र नाथ दत्त
- वेलूर में 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना की।

❑ **सैयद अहमद खान**

- **वर्ष -** 1817-1898 ई.
- **जन्म -** दिल्ली
- अलीगढ़ आन्दोलन के प्रणेता
- 1857 ई. के विद्रोह की विफलता अपने आंखों से देखी थी।

❑ **मुहम्मद इकबाल**

- **वर्ष -** 1877-1938 ई.
- **जन्म -** सियालकोट (पंजाब)
- पाकिस्तान का 'राष्ट्र कवि' माना जाता है।
- **रचना** – 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा', तराना-ए-हिन्द तथा बंग-ए-दर्रा आदि
- 1930 ई. में इन्होंने ही सर्वप्रथम मुस्लिम लीग के मंच से इलाहाबाद में 'द्विराष्ट्र सिद्धान्त' की बात की।
- 'बंग-ए-दर्श' नामक रचना में ही 'इंकलाब' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया गया था।
- इनकी मृत्यु 1938 ई. में लाहौर में हुयी।

❑ **राम सिंह कूका**

- **वर्ष -** 1816-1872 ई.
- **जन्म -** पंजाब
- ये रणजीत सिंह की सेना में रहे थे।
- इन्होंने गोरक्षा, स्वदेशी, नारी उद्धार, अन्तर्जातीय विवाह, सामूहिक विवाह पर बल देने के लिए 'नाम धारी आन्दोलन' चलाया।
- कूकाओं का पहला विद्रोह राम सिंह के नेतृत्व में 1869 ई. में फिरोजपुर में हुआ
- 1885 ई. में रंगून में इनकी हत्या कर दी गयी।

❑ **दादाभाई नौरोजी**

- **वर्ष -** 1825-1917 ई.
- **जन्म** – महाराष्ट्र

- **पिता -** पालनजी दोर्डी
- **माता -** मणिकबाई
- **उपाधि -** 'ग्रैंड ओल्ड मैन ऑफ इण्डिया' , भारत के 'ग्लैडस्टन'
- 1852 ई. में 'बम्बई एसोसिएशन' , 'लन्दन इण्डियन एसोसिएशन' एवं 'ईस्ट इण्डिया एसोसिएशन' जैसी संस्थाओं की स्थापना की।
- 1892 ई. में ब्रिटेन के उदारवादी दल की ओर से हाऊस ऑफ कामन्स के सदस्य निर्वाचित
- **पत्र** – 'रास्त गोफ्तार' , 'सत्यवादी' (दोनों गुजराती)
- दादाभाई ने अपनी पुस्तक 'पावर्टी एण्ड अन ब्रिटिशरूल इन इण्डिया' में 'धन निष्कासन सिद्धान्त' प्रस्तुत किया।
- वे तीन बार 1886, 1893 तथा 1906 में कांग्रेस के अध्यक्ष रहे

❑ **एलेन ओक्टेवियन ह्यूम**

- **वर्ष - 1829-1912 ई.**
- **जन्म** – इंग्लैण्ड
- 1856 ई. में इटावा (उत्तर प्रदेश) के कलेक्टर बने।
- 1885 ई. में 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' की स्थापना बम्बई में किया।
- 1859 ई. में 'लोकमित्र' नामक समाचार पत्र निकाला।
- इनके जीवनीकार विलियम वेडरबर्न थे।

❑ **सत्येन्द्र नाथ टैगोर**

- **वर्ष-** 1842-1923 ई.
- **जन्म -** कोलकाता
- 1863 ई. में इण्डियन सिविल सर्विस की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले प्रथम भारतीय थे।
- इनकी पहली नियुक्ति बम्बई प्रान्त में हुई।
- अवकाश ग्रहण करने तक ये जिला एवं सेसन जज के पद तक ही पहुंच सके ।

❑ **व्योमेश चन्द्र बनर्जी**

- **वर्ष -** 1844-1906 ई.
- **जन्म -** कलकत्ता
- लंदन में 'लंदन भारतीय समाज' की स्थापना की , जिसे बाद में 'ईस्ट इण्डिया एसोसिएशन' नाम दिया गया।
- 1885 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एक संस्थापक अध्यक्ष बने।
- ब्रिटेन के हाऊस ऑफ स कॉमन्स के लिए चुनाव लड़ने वाले प्रथम भारतीय थे, परन्तु जीत नहीं सके।

❑ **फिरोजशाह मेहता**

- **वर्ष- 1845-1915 ई.**
- **जन्म** – बम्बई
- **समाचार पत्र -** 'बाम्बे क्रॉनिकल'
- बम्बई प्रान्तीय सभा के सदस्य एवं बम्बई प्रेसीडेन्सी एसोसिएशन के सभापति बने।
- 1887 ई. में बम्बई लेजिस्लेटिव के सदस्य नियुक्त किये गये।

❑ **सुरेन्द्र नाथ बनर्जी**

- **वर्ष -** 1848-1925 ई.
- **जन्म -** कोलकाता
- स्वतन्त्र विचारों के कारण सिविल सर्विस से बर्खास्त किये गए थे
- यह उदारवादी नेता थे
- 1876 ई. में कलकत्ता के 'अल्बर्ट हाल' में 'इण्डियन एसोसिएशन' की स्थापना की।
- वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट, तथा आर्म्स एक्ट के विरोध का नेतृत्व किया।
- 1879 ई. में 'बंगाली' नामक समाचार पत्र निकाला,
- 1921 ई. में बंगाल के 'स्वास्थ्य मंत्री' बनने वाले प्रथम भारतीय थे।

❑ **गोपाल कृष्ण गोखले**

- **वर्ष -** 1866-1915 ई.
- **जन्म -** महाराष्ट्र
- **पत्रिका-** 'सुधारक'
- महात्मा गांधी के राजनीतिक गुरु
- महादेव गोविंद रानाडे के शिष्य
- 1905 ई. में 'सर्वेन्ट्स ऑफ इण्डिया सोसायटी' की स्थापना की।

- 1902 ई. में बम्बई विधान सभा और 'इण्पीरियल विधान परिषद' का सदस्य चुना गया।
- 'भारतीय लोक सेवा आयोग' के सदस्य के रूप में कार्य किया।
- भारत सचिव मार्ले ने इन्हें 'एक ताल ठोकने वाला चिमटा' कहा।

❑ **गाँधी जी (2 अक्टूबर, 1869 ई० में)**

- **वास्तविक नाम -** "मोहन दास करम चन्द गाँधी"
- **जन्म -** पोरबन्दर (गुजरात)
- **माता -** 'पुतली बाई'
- **पिता -** 'करम चन्द्र गाँधी'
- **पत्नी** - 'कस्तूरबा गाँधी'
- **चार पुत्र -** हरिलाल, रामदास, मणिलाल एवं देवदास
- 'जमनालाल बजाज' को गाँधी जी ने अपने पाँचवें पुत्र की उपाधि प्रदान की थी।
- भारत की शिक्षा के बाद गाँधी जी तीन (1889-91) वर्षों तक इंग्लैण्ड में रहकर 'बैरिस्टरी' की पढ़ाई की।
- भारत लौटकर राजकोट एवं बम्बई में वकालत शुरू की।
- 1893 में एक भारतीय मुसलमान दादा अब्दुल्ला के मुकदमें के सिलसिले में 'दक्षिण अफ्रीका' चले गये।
- गाँधी जी को मेरित्यवर्ग नामक स्टेशन पर डरबन से प्रिटोरिया की यात्रा के दौरान प्रथम श्रेणी के डिब्बे से अंग्रेजों ने जबरन धक्का देकर नीचे उतार दिया। क्योंकि दक्षिण अफ्रीका में किसी भी भारतीय को गोरों के साथ प्रथम श्रेणी ट्रेन में यात्रा की अनुमति नहीं थी। 'मेरित्यवर्ग काण्ड' ने गाँधी जी के जीवन यात्रा की दिशा ही परिवर्तित कर दी।
- भारतीयों के प्रति द० अफ्रीकी सरकार द्वारा अपनाये जा रहे 'रंगभेद नीति' का विरोध किया।
- 1906 ई० में गाँधी जी ने 'एशियाटिक रजिस्ट्रेशन ऐक्ट' का विरोध किया, जो कि भारतीयों के पंजीकरण प्रमाण पत्र से सम्बद्ध था।
- अन्ततः इस अधिनियम को समाप्त करवाने में सफलता प्राप्त की।
- इसी अधिनियम को समाप्त करवाने के दौरान सर्वप्रथम गाँधी जी ने 'अवज्ञा आन्दोलन' शुरू किया, जिसे 'सत्याग्रह' की संज्ञा दी गई।
- **सम्बंधित संगठन -**
- 1894 ई0 - 'नेटाल इण्डियन कांग्रेस'
- 1906 - 'टालस्टाय फार्म' (बाद में 'गाँधी आश्रम' के नाम से प्रसिद्ध)हुआ। ज्ञातव्य है कि 1904 - 'फिनिक्स आश्रम' (1912 में 'फिनिक्स ट्रस्ट' में परिवर्तित)
- **प्रमुख आन्दोलन**
- चम्पारण सत्याग्रह (1917)
- खेड़ा सत्याग्रह (1918)
- अहमदाबाद मजदूर आन्दोलन (1918)
- खिलाफत आन्दोलन (1919)
- असहयोग आन्दोलन (1920)
- सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1930)
- व्यक्तिगत सत्याग्रह (1940)
- भारत छोड़ों आन्दोलन (1942)
- **राजनैतिक गुरु -** गोपाल कृष्ण गोखले
- 23 सितम्बर, 1913 को गाँधी जी ने अपनी पत्नी कस्तूरबा गाँधी और 16 अन्य सहयोगियों के साथ 'गिरमिटिया प्रथा' के विरुद्ध सत्याग्रह आन्दोलन शुरू किया और 1914 ई० में सफलता प्राप्त की।
- 9 जनवरी, 1915 को भारत (बम्बई) वापस आ गये। ध्यातव्य है कि इसी तिथि (9 जनवरी) को भारत सरकार 'प्रवासी भारतीय दिवस' के रूप में मानती हैं।
- भारत लौटने पर 25 मई, 1915 को 'सत्याग्रह आश्रम' की स्थापना की, जिसे 17 जून, 1917 को अहमदाबाद के निकट साबरमती नदी के तट पर स्थानान्तरित कर दिया गया और इसका नाम रूपान्तरित करके 'साबरमती आश्रम' कर दिया गया।
- **साधन -** सत्य, अहिंसा एवं सत्याग्रह
- 30 जनवरी, 1948 को 'बिड़ला हाउस' में 'नाथूराम गोडसे एवं नाना ऑप्टे ने गोली मारकर इनकी हत्या कर दी
- 15 नवम्बर 1949 को अम्बाला जेल में इन दोनों को फांसी दे दी गई।

❑ **मोहम्मद अली जिन्ना**

- **वर्ष -** 1876-1948 ई.
- **जन्म -** करांची
- **माता -** मिठीबाई
- **पिता -** जिन्नाभाई
- **उपाधि-** पाकिस्तान का संस्थापक, कायदे आज़म तथा पाकिस्तान के 'राष्ट्रपिता'
- 1916 ई. में कांग्रेस-लीग को एक मंच पर लाने हेतु सराहनीय भूमिका का निर्वहन किया।

- 1920 ई. के कांग्रेस के 'नागपुर' अधिवेशन में असहयोग के प्रस्ताव से नाराज होकर वह हमेशा के लिए कांग्रेस का परित्याग कर दिये।
- जब 1928 ई. में भारत सचिव बर्केनहैड की चुनौती स्वीकार करते हुए पं. मोतीलाल नेहरू ने भारतीय संविधान की रुपरेखा हेतु
- नेहरू रिपोर्ट के विरोध में जिन्ना ने '14 सूत्री फार्मूला' प्रस्तुत किया।
- 1940 ई. में मुस्लिम लीग के मंच से पाकिस्तान की मांग की।
- 16 अगस्त, 1946 ई. को 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' की घोषणा करके पूरे देश में हिन्दू और मुस्लिम को एक-दूसरे के खून का पिपासु बना दिया।

❑ **डॉ. पट्टाभि सीतारमैया**

- **वर्ष -** 1880-1959 ई.
- **जन्म -** 'आन्ध्र प्रदेश
- **साप्ताहिक पत्रिका-** 'जन्म भूमि'
- **रचनाएँ -** 'गांधी तथा गांधीवाद', 'इंडियन नेशनल कांग्रेस', 'आन खद्दर' तथा 'इंडियन नेशनलिज्म'
- 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' के सरकारी इतिहासकार
- 1939 ई. में कांग्रेस के अध्यक्ष पद के चुनाव में गांधी जी ने कहा कि "पट्टाभि सीतारमैया ही की हार मेरी हार होगी।"
- 1948 ई. में 'जयपुर' कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष बने
- 1952 ई. में 'मध्य प्रदेश' के 'राज्यपाल' नियुक्त हुए।

❑ **आचार्य विनोबा भावे**

- **वर्ष -** 1895-1982 ई.
- **जन्म -** महाराष्ट्र
- **मूल नाम -** 'विनायक नरहरि भावे'(जिसे महात्मा गांधी ने बदलकर 'विनोबा' रखा।)
- **रचनाएँ -** भूदान यज्ञ, गीताई तथा गीता प्रवचन
- **उपाधि-** 'भारत के राष्ट्रीय अध्यापक', 'महात्मा गांधी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी' , 'भारतरत्न'
- 'नागपुर झण्डा सत्याग्रह' में बंदी बनाये गये थे।
- 1937 ई. से जीवन पर्यन्त 'पवनार आश्रम' में रहे।
- 'सर्वोदय आन्दोलन' का नेतृत्व किया।
- 'भूदान आन्दोलन' के जनक
- 'व्यक्तिगत सत्याग्रह के प्रथम सत्यग्राही थे।

❑ **चौधरी रहमत अली**

- **वर्ष -** 1893-1951 ई.
- **जन्म -** 'बलाचौर' (पाकिस्तान)
- 'पाकिस्तान' शब्द के निर्माता
- ये 'कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय' के छात्र थे।

❑ **लोकमान्य बाल गङ्गाधर तिलक**

- **वर्ष - 1856-1 अगस्त 1920**
- **जन्म -** महाराष्ट्र
- **उपाधि-** 'भारत के बेताज बादशाह' , हिन्दू राष्ट्रवाद के पिता
- **कार्यक्रम एवं संस्थाओं की स्थापना -** अखाड़े, लाठी क्लब, गो हत्या विरोधी सभाएँ, गणपति उत्सव (1893 ई.), शिवाजी महोत्सव (1895 ई.)
- **पत्रिका -** 'मराठा' , 'केशरी' , 'गीता रहस्य', आर्कटिक होम ऑफ द आर्यन'
- नारा - "स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और इसे मैं लेकर ही रहूँगा।"
- 1916 ई. में पूना में 'होम रूल लीग' की स्थापना की।
- 'लंदन टाइम्स' के संवाददाता एवं इण्डियन अनरेस्ट के लेखक बेलेन्टाईन चिरोल ने इन्हें 'भारतीय अशान्ति का जन्मदाता' कहा।

❑ **बिपिन चन्द्र पाल**

- **वर्ष -** 1858-1932 ई.
- **जन्म -** अविभाजित भारत (वर्तमान बांग्लादेश)
- **साप्ताहिक पत्रिका -** परिदर्शक , 'मेरे जीवन' , 'समय की यादें'
- विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहित करने के लिए स्वयं एक विधवा से विवाह कर लिया।

❑ **मोती लाल नेहरू**

- **वर्ष -** 1861-1931 ई.
- **जन्म** – आगरा
- ये मूलतः कश्मीरी ब्राह्मण थे।
- **समाचार पत्र -** इण्डिपेंडेंट'

- **पुस्तक -** 'द वॉयस आफ फ्रीडम'

❑ **लाला लाजपत राय**

- **वर्ष -**1865-1928 ई.
- **जन्म** – पंजाब
- **उपाधि -** पंजाब केशरी तथा शेर-ए-पंजाब
- **पत्रिका -** 'पंजाबी', 'वन्देमातरम्' , 'दी पीपुल'
- लाला हंसराज के साय मिलकर लाहौर में दयानन्द एंग्लो वैदिक विद्यालय स्थापित किया।
- राष्ट्रीय कालेज लाहौर की भी स्थापना की
- 1920 ई. में 'आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस' के अध्यक्ष बने।
- 1928 ई. में साइमन कमीशन का विरोध करते हुए पुलिस की लाठियों से घायल हो गये और कहा कि, "मेरे शरीर पर किया गया एक-एक आघात ब्रिटिश साम्राज्यवाद के ताबूत की कील साबित होगा।"

❑ **'देशबंधु' चितरंजन दास**

- **वर्ष -** 1870-1925 ई.
- **जन्म -** बंगाल
- 'स्वराज पार्टी' के संस्थापक
- अरविन्द घोष की तरफ से अलीपुर षड्यन्त्र केस (1908) तथा ढाका षड्यन्त्र केस के प्रतिवादी वकील के रूप में उनका पक्ष रखा।
- 1921 ई. में अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गये। परन्तु जेल में होने के कारण 'हकीम अजमल खां' नै अध्यक्षता किया
- समाचार पत्र - 'फारवर्ड' , 'वंदेमातरम्'
- पुस्तक- 'इण्डिया फार फ्रीडम'

❑ **अरविन्द घोष**

- **वर्ष - 1872-1950 ई.**
- **जन्म -** कलकत्ता
- **1916 -** पाण्डिचेरी के 'ओरविले आश्रम' के
- **पत्रिका -** 'वन्देमातरम्'
- **अंग्रेजी पत्र -** 'कर्मयोगी
- **रचना -** 'एसेज ऑन गीता', 'सावित्री' , 'डिवाइन लाइफ'
- अलीपुर षड्यन्त्र केस चलाया गया, जिसमें 'देशबन्धु' चितरंजन दास की दलीलें इन्हें रिहा करने पर मजबूर कर दी।

❑ **चक्रवर्ती राजगोपालाचारी**

- **वर्ष - 1878-1972 ई.**
- **जन्म** – कृष्णागिरि
- **रचना -** 'स्वराज' तथा 'सत्यमेव'
- स्वतंत्र भारत के प्रथम एवं अंतिम भारतीय गवर्नर जनरल
- 1937 ई. में चक्रवर्ती के नेतृत्व में कांग्रेस ने मद्रास में सरकार बनायी थी।
- 1952 ई. में मद्रास के मुख्यमंत्री बने
- 1954 ई. में भारत रत्न सम्मान से सम्मानित किया गया।

❑ **खान अब्दुल गफ्फार खान**

- **वर्ष -** 1890-1988 ई.
- **जन्म -** पेशावर (पाकिस्तान)
- **उपाधि -** सरहदी गांधी' (सीमान्त गांधी), बच्चा खाँ तथा 'बादशाह खान'
- सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान उ.प. सीमा प्रान्त में 'खुदाई खिदमतगार' नामक संगठन की सहायता से 'लालकुर्ती' आन्दोलन चलाया।
- **पत्रिका -** 'पख्तून' (बाद में 'दशरोजा' के नाम से प्रकाशित)
- 1987 ई. में 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया, यह सम्मान प्राप्त करने वाले प्रथम विदेशी नागरिक हैं।

❑ **सरदार वल्लभ भाई पटेल**

- **वर्ष -** 1875-1950 ई.
- **उपाधि -** 'लौह पुरुष' तथा 'सरदार'
- **जन्म -** 'नाडियाल(गुजरात)
- 'बारदोली किसान आन्दोलन' (1928 ई.) 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' (1930 ई.) तथा 'भारत छोड़ों आन्दोलन' (1942 ई.) आदि में हिस्सा लिया था।
- 1931 ई. में कराची अधिवेशन के अध्यक्ष बने तथा कांग्रेस के मंच से 'मौलिक अधिकार' जैसा महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित करवाया।
- स्वतंत्रता के बाद देश के पहले उपप्रधान मंत्री, गृहमंत्री तथा दूरसंचार मंत्री बने।

- 365 दिनों में 562 राज्यों और रियासतों को भारतीय संघ में सम्मिलित करने जैसा महान कार्य किया।
- मरणोपरान्त 1991ई. में 'भारत रत्न' से विभूषित किया गया।
- अहमदाबाद हवाई अड्डे का नाम परिवर्तित करके 'सरदार वल्लभ भाई पटेल अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा' रखा गया
- गुजरात के नर्मदा जिले में दुनिया की सबसे ऊंची मूर्ति 'स्टैच्यू ऑफ युनिटी' (एकता की मूर्ति) का निर्माण किया गया।

❑ **मौलाना अबुल कलाम आजाद**

- **वर्ष -** 1888-1958 ई
- **जन्म -** मक्का
- **रचनाएँ-** 'इण्डिया विन्स फ्रीडम (आत्मकथा), 'गुबार-ए-खातिर' एवं 'दास्तान-ए-कर्बला'
- **पत्रिका -** 'अल-हिलाल'
- 1923 ई. में दिल्ली में विशेष अधिवेशन की अध्यक्षता करने वाले सबसे कम उम्र के व्यक्ति थे।
- 1940 से 1945 ई. तक कांग्रेस के अध्यक्ष रहे।
- मरणोपरान्त 1992 ई. में भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

❑ **सुभाष चन्द्र बोस**

- **वर्ष**-23 जन. 1897 ई. 18 अगस्त 1945 ई.
- **जन्म** – कटक (ओडिसा)
- **माता -** प्रभावती देवी
- **पिता -** जानकीनाथ बोस
- **पुत्री -** अनीता बोस फाफ
- 1934 ई. में एमिली शेंकल नामक आस्ट्रियन महिला से प्रेम विवाह किया
- 1920 ई. में आई.सी.एस. परीक्षा में चौथी रैंक प्राप्त की,
- देश भक्ति के कारण अप्रैल 1921 ई. में त्याग पत्र दे दिया

❑ **चापेकर बन्धु**

- **जन्म -** महाराष्ट्र
- 'व्यायाम मंडल' के संस्थापक
- **चापेकर बन्धु -** दामोदर, बालकृष्ण एवं वासुदेव हरि चापेकर
- दामोदर हरि चापेकर ने 22 जून 1897 ई. को पूना प्लेग कश्मिनर मिस्टर रैण्ड तथा सहायक लेफ्टीनेंट एम्हर्स्ट की हत्या कर दी।
- यह भारत में यूरोपियों की पहली राजनीतिक हत्या कही जाती है।

❑ **जतीन्द्रनाथ मुखर्जी/बाघा जतिन**

- **वर्ष -** 1879-1915 ई.
- **जन्म** – बंगाल
- 'शेर' मारने के कारण 'बाघा जतिन' की उपाधि से विभूषित किया गया।
- मुखर्जी ने क्रांतिकारी गतिविधियों के तहत् पुलिस अधिकारी 'शमसुल आलम' की हत्या कर दी, परिणामतः 1910 ई. में 'हावड़ा षड्यन्त्र केस' चलाया गया।
- 'युगान्तर पार्टी', 'अनुशीलन समिति' एवं 'गदर पार्टी' के सदस्य थे।

❑ **बारीन्द्र घोष**

- **वर्ष - 1880-1959 ई.**
- **जन्म -** 'क्रोयदन' (लन्दन)
- भूपेन्द्र नाथ दत्त के साथ मिलकर कलकत्ता में 'अनुशीलन समिति' का गठन किया।
- जिसका मूल उद्देश्य 'खून के बदले खून' था।
- पुस्तक -'भवानी मन्दिर', 'वर्तमान रणनीति'
- **पत्र -** 'युगान्तर'
- **साप्ताहिक पत्र -** 'द डान ऑफ इण्डिया'
- 'अलीपुर षड्यन्त्र केस' में पकड़े गये तथा आजीवन कारावास की सजा हुई।
- अन्ततः अपने भाई के पास पाण्डिचेरी चले गये।

❑ **विनायक दामोदर सावरकर**

- **वर्ष -** 1883-1966 ई.
- **जन्म** – महाराष्ट्र
- 1904 में 'अभिनव भारत' नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की।
- 1905 स्वदेशी आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभायी।
- इनके लेख 'इण्डियन सोशियोलाजिस्ट' और 'तलवार' नामक पत्रिकाओं में प्रकाशित होते थे, जो बाद में कलकत्ता के 'युगान्तर' पत्र में भी छपे।

- 1907 में इन्होंने 'इण्डिया हाउस' लन्दन में प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की स्वर्ण जयन्ती मनायी
- 1857 के संग्राम को "भारत का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम" सिद्ध किया।
- 1908 में मराठी में एक पुस्तक की रचना की जिसका बाद में अंग्रेजी भाषा में अनुवाद (Indian war Independence, 1857 ई.) हुआ।

❑ **रास बिहारी बोस**

- **वर्ष** - 1886-1945 ई.
- **समाचार पत्र** – 'न्यू एशिया
- **जन्म** - बंगाल

❑ **सत्येन्द्र नाथ बसु**

- **वर्ष** - 1882-1908 ई.
- **जन्म** - बंगाल
- 'आनन्दमठ' के संस्थापक
- स्वदेशी आन्दोलन में सक्रिय भूमिका के कारण 1906 में सरकारी सेवा से निकाल दिया गया।
- अलीपुर षड्यन्त्र केस (1908) के सरकारी गवाह नरेन्द्र गोसाई की हत्या के कारण इन्हे फांसी दे दी गयी।

❑ **मास्टर सूर्यसेन**

- **वर्ष** - 1894-1934 ई.
- **जन्म** - 'नोआपारा' (चटगांव)
- **उपाधि** - 'मास्टर दा'
- **पिता** - राम निरंजन
- 'इंडियन रिपब्लिक आर्मी' नामक क्रान्तिकारी संगठन की स्थापना की।

❑ **राम प्रसाद बिस्मिल**

- **वर्ष** - 1897-1927 ई.
- **जन्म** - उत्तर प्रदेश
- **पुस्तक** - 'काकोरी षड्यन्त्र'
- **गजल** - 'सरफरोसी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।"
- 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' के संस्थापक सदस्य थे।
- बिस्मिल 'मैनपुरी षड्यन्त्र' सम्मिलित थे,
- 'काकोरी काण्ड' के परिणामतः इनको 'गोरखपुर' जेल में फांसी दे दी गयी।

❑ **श्यामजी कृष्ण वर्मा**

- **वर्ष** - 1857-1930 ई.
- **जन्म** - गुजरात
- **समाचार पत्र** – 'द इण्डियन सोशियोलाजिस्ट'
- लंदन में 'इण्डिया हाउस' की स्थापना

- 1905 में 'इण्डियन होमरुल सोसायटी' की स्थापना की।
- इनकी मृत्यु जेनेवा में हुई थी, और इनके अस्थियों को 2003 में भारत लाया गया।

❑ **सोहन सिंह भाकना**

- **वर्ष** - 1870-1968 ई.
- **जन्म** - पंजाब
- **पत्र** - 'गदर'
- **संगठन** - 'गदर पार्टी'
- अमेरिका एवं कनाडा के भारतीय प्रवासियों के सहयोग से 'हिन्द' नामक संस्था की स्थापना की।
- यही संस्था आगे चलकर 'हिन्द एसोसिएशन ऑफ पेसिफिक कोस्ट' का रूप ले लिया
- 'लाहौर षड्यन्त्र केस' में फसाकर आजीवन काला पानी की सजा दी गयी।
- 1930 ई. में रिहा होने पर अपना शेष जीवन 'किसान सभा' को समर्पित कर दिया।

❑ **लाला हरदयाल**

- **वर्ष - 1884-1939 ई.**
- **रचना** - Thought of Education एवं Hint of Self Culture
- **पत्र** – 'बन्देमातरम्' , 'तलवार'
- 1913 में सैनफ्रांसिस्को में 'गदर पार्टी' की स्थापना की तया 'गदर' नामक समाचार पत्र प्रकाशित किया।

- 1927 में लाला हरदयाल को भारत लाने का प्रयास किया गया किन्तु ब्रिटिश सरकार ने अनुमति नहीं दी।
- 1938 में भारत लौटते हुए रास्ते में ही 4 मार्च 1939 को अमेरिका के फिलाडेल्फिया में उनकी रहस्यमय मृत्यु हो गयी।

❑ **मदन लाल ढींगरा**

- **वर्ष -** 1883-1909 ई.
- **जन्म -** पंजाब प्रान्त
- लंदन में स्थित 'इण्डिया हाउस' भारतीय क्रांतिकारियों का केन्द्र था।
- ये भी वहाँ 'अभिनव भारत' संस्था के सदस्य बन गये।
- कर्जन विलियम वायली 1909 में गोली मारकर हत्या के कारण इन्हे फाँसी दे दी गयी।

❑ **राजा महेन्द्र प्रताप**

- **वर्ष -** 1886-1979 ई.
- **समाचार पत्र -** दो प्रेम एवं निर्बल सेवक
- 'हाथरस' के राजा हरनारायण सिंह के दत्तक पुत्र थे।
- 1915 ई. में अफगानिस्तान में भारत की अस्थायी सरकार की स्थापना की थी।
- उत्तर प्रदेश के वृंदावन में 'प्रेम विद्यालय' की स्थापना की

❑ **मानवेन्द्र नाथ राय**

- **वर्ष -** 1887-1954 ई.
- **जन्म -** कोलकाता
- **मूल नाम -** नरेन्द्रनाथ भट्टाचार्य
- 'रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी' की स्थापना की
- लेनिन के निमंत्रण पर 'थर्ड इण्टरनेशनल साम्यवादी सम्मेलन' में हिस्सा लिया।

❑ **शचीन्द्र नाथ सान्याल**

- **वर्ष -** 1893-1942 ई.
- **जन्म** – वाराणसी (उत्तर प्रदेश)
- **रचना -** 'बन्दी जीवन'
- रास बिहारी बोस के साथ मिलकर क्रान्तिकारी गतिविधियों को अंजाम देते थे।
- 'लाहौर सिख रेजीमेंट' तथा 'काशी सिख रेजीमेंट' को विद्रोह करने के लिए तैयार करने के कारण आजीवन काले पानी की सजा दे दी गयी थी।
- प्रथम विश्व युद्ध के उपरान्त 1919 ई. में रिहा किया गया
- पुनः 'हिन्दुस्तान गणतान्त्रिक संस्था' बनाने के लिए क्रियाशील हो गये।
- 'काकोरी षड्यन्त्र केस' में दुबारा आजीवन कारावास की सजा दे दी गयी।

❑ **श्री पाद अमृत डांगे**

- **वर्ष -** 1899-1991 ई.
- **समाचार पत्र -** द सोशलिस्ट
- **पुस्तक -** 'गांधी , लेनिन'
- भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापक सदस्यों में से एक थे
- 'भारतीय व्यापार संघ' आन्दोलन के नेता थे।

❑ **अशफाक उल्ला खाँ**

- **वर्ष -** 1900-1927 ई.
- **जन्म -** शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश)
- क्रान्तिकारी संगठन 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' के संस्थापक सदस्य थे।
- 'काकोरी काण्ड' के तहत फैजाबाद' जेल में फांसी दे दी गई थी।

❑ **राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी**

- **वर्ष -** 1901-1927 ई.
- **जन्म -** बंग्लादेश
- **पिता -** क्षितिमोहन लाहिड़ी
- **माता -** बसन्त कुमारी
- **पत्रिका -** 'बंगवाणी'
- 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' के प्रमुख सदस्य थे।
- 'अनुशीलन समिति' की वाराणसी शाखा के सशस्त्र विभाग के प्रभारी थे।
- काकोरी काण्ड में सक्रिय भूमिका के कारण 17 दिसम्बर 1927 ई. को गोण्डा जेल में फांसी दे दी गयी थी।

- फांसी होने से पूर्व कहा था कि, "मैं मरने नहीं जा रहा हूँ, अपितु भारत को स्वतन्त्र कराने हेतु पुनर्जन्म लेने जा रहा हूँ।"

❑ **भगवती चरण बोहरा**

- **वर्ष -** 1904-1930 ई.
- **जन्म -** आगरा (उत्तर प्रदेश)
- **पत्नी -** दुर्गा ('दुर्गा भाभी')
- **पुस्तक -** 'बम का दर्शन'
- गांधी जी' के एक आह्वान पर 1921 ई. में पढ़ायी छोड़कर 'असहयोग आन्दोलन' में सम्मिलित हो गये।
- 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' के सक्रिय सदस्य थे
- 'नवजवान भारत सभा' के प्रचार सचिव थे।
- श्री बोहरा 'काकोरी केस,' 'लाहौर षड्यन्त्र केस' और 'साण्डर्स हत्याकाण्ड में सम्मिलित थे।
- वायसराय 'इर्विन' को चलती ट्रेन से उड़ाने के लिए ट्रेन के नीचे बम रख दिये, परन्तु वायसराय बच गया।
- **मृत्यु -** बम परीक्षण से हुई थी।

❑ **चन्द्रशेखर आजाद** –

- **जन्म -** अलीराजपुर (मध्य प्रदेश)
- **पिता -** पण्डित सीताराम तिवारी
- **माता -** जगरानी देवी
- 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' की स्थापना के साथ-साथ 'काकोरी काण्ड', 'साण्डर्स हत्याकाण्ड' तथा 'लाहौर सेन्ट्रल असेम्बली के बमकाण्ड' में भी सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया।
- 'लाहौर षड्यन्त्र केस' तथा 'दिल्ली षड्यन्त्र केस' चलाया गया, परन्तु कभी भी पकड़े नहीं गये।
- इलाहाबाद के 'अल्फ्रेड पार्क' में पुलिस से लड़ते हुए 27 फरवरी, 1931 को आखिरी गोली खुद को मारकर शहीद हो गये।

❑ **सुखदेव**

- **वर्ष -** 1907-1931 ई.
- **जन्म -** लुधियाना (पंजाब)
- 'साण्डर्स हत्याकाण्ड' के प्रमुख अभियुक्त थे,
- 'लाहौर षड्यन्त्र केस' के तहत 23 मार्च 1931 ई. को 'लाहौर जेल' में फांसी दे दी गयी।

❑ **भगत सिंह**

- **वर्ष -** 1907-1931 ई.
- **जन्म -** 'पंजाब'
- **पिता -** किशन सिंह
- **माता -** विद्यावती कौर
- 'नौजवान भारत सभा' के संस्थापक
- क्रान्तिकारी संगठन 'हिन्दुस्तान रिब्लिकन एसोसिएशन' तथा हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के सक्रिय सदस्य थे।
- 1928 ई. में पुलिस अधीक्षक जे.पी. सांडर्स की हत्या की।
- क्रान्तिकारी बटुकेश्वर के साथ सेन्ट्रल असेम्बली दिल्ली में बम एवं पर्चे फेंककर अपनी गिरफ्तारी दी।
- 'लाहौर षड्यन्त्र केस' चलाकर 23 मार्च 1931 ई. को लाहौर जेल में फांसी दे दी गयी।
- **शिवराम हरि राजगुरु**
- **वर्ष -** 1908-1931 ई.
- **जन्म -** पुणे (महाराष्ट्र)
- 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' के सक्रिय सदस्य थे
- 'भगत सिंह' के साथ मिलकर पुलिस अधिकारी 'जे.पी. साण्डर्स' की हत्या की थी।
- "लाहौर षड्यन्त्र केस' के तहत 23 मार्च 1931 ई. को इनको फांसी दे दी गयी।

❑ **डॉ. राम मनोहर लोहिया**

- **वर्ष -** 1910-1967 ई.
- **जन्म -** अम्बेडकर नगर (उत्तर प्रदेश)
- **पत्रिका**- 'द कांग्रेस सोशलिस्ट'
- **रचनाएँ -** 'अंग्रेजी हटाओ' और 'हिन्दू बनाम हिन्दू'
- 1918 ई. के अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन से राजनीतिक जीवन प्रारम्भ किया।
- कांग्रेस समाजवादी पार्टी के संस्थापक सदस्य थे।
- श्री लोहिया ने जून 1946 ई. में गोवा को स्वतंत्र कराने के लिए एक आन्दोलन चलाया तथा सफलता भी प्राप्त की।

❑ **राज कुमार शुक्ल**

- **वर्ष -** 1875-1929 ई.
- **जन्म -** 1875 ई.
- इनके आग्रह पर ही महात्मा गांधी ने चम्पारन सत्याग्रह (1917) प्रारम्भ किया था।

❑ **बाबा रामचन्द्र**

- **वर्ष -** 1875-1950 ई.
- **जन्म -** मध्य प्रदेश
- **कार्य क्षेत्र -** जौनपुर, प्रतापगढ़, रायबरेली तथा फैजाबाद
- रामायण पाठ द्वारा किसानों को जागृत एवं संगठित करते थे।
- 1920 में अवध किसान सभा स्थापित की।
- जिससे मजबूर होकर अंग्रेजी सरकार को 'अवध मालगुजारी रेंट अधिनियम' पारित करना पड़ा।

❑ **स्वामी सहजानन्द सरस्वती**

- **वर्ष -** 1889-1950 ई.
- **जन्म -** गाजीपुर (उत्तर प्रदेश)
- **बचपन का नाम -** नौरंगराय
- **उपाधि -** 'किसान प्राण'
- **पत्रिका-** 'भूमिहार ब्राह्मण' , 'लोक संग्रह'
- **रचना -** कर्मकलाप
- 1928 ई. में 'बिहार प्रान्तीय किसान सभा' के अध्यक्ष बने
- 'अखिल भारतीय किसान सभा, लखनऊ के संस्थापक अध्यक्ष बने।

❑ **प्रो. एन.जी. रंगा**

- **वर्ष -** 1900-1995 ई.
- **जन्म -** गुंटूर (आन्ध्र प्रदेश)
- **उपाधि -** 'पद्म विभूषण'
- घर का कुंआ हरिजनों के लिए भी खोल दिया था।
- आन्ध्र प्रदेश में 'भारतीय किसान सभा' की स्थापना की
- 'अखिल भारतीय किसान सभा, लखनऊ' के संस्थापक महासचिव थे।
- देश के पहले किसान विद्यालय की स्थापना 1838 ई. में आन्ध्र प्रदेश के गुंटूर जिले में की।
- 'कृषि उत्पादकों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन' के संस्थापक सदस्य बने।
- भाषाई आधार पर आन्ध्र प्रदेश को अलग राज्य बनाने के लिए संघर्ष किया।

❑ **जय प्रकाश नारायण**

- **वर्ष -** 1902-1979 ई.
- **जन्म -** सितावदियारा (पटना)
- **उपाधि-** लोक नायक
- **सम्मान-** भारतरत्न
- **स्थापित संस्था -** अखिल भारतीय समाजवादी पार्टी (1934 ई.) तथा आजाद दस्ते (1942 नेपाल)
- **रचनाएँ-** समाजवाद ही क्यों, ए.बी.सी. आफ डिस्लोकेशन, टू आल फाइटर्स आफ फ्रीडम

❑ **नारायण मेघाजी लोखाण्डे**

- **वर्ष -** 1848-1897 ई.
- **जन्म -** महाराष्ट्र के पुणे
- **पत्र -** 'दीनबन्धु'
- 'बाम्बे मिल हैण्ड्स एसोसिएशन' की स्थापना की, जिसे भारत में गठित 'प्रथम मजदूर संगठन' माना जाता है।
- इस संगठन ने 'श्रम आयोग' का गठन करवाया।
- 'श्रम आयोग' ने श्रमिकों के काम के घन्टे तथा कामगारों के भोजन की छुट्टी का समय निर्धारित किया।
- **जन्म -** चेन्नई
- 'प्रथम ट्रेड यूनियन (1918 ई.) की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया
- भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना में सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया।

❑ **वहमन पेस्टोनजी वाडिया**

- **वर्ष -** 1881-1958 ई.
- **जन्म -** 'मुम्बई'

- थियोसोफिस्ट विचारों के प्रचार हेतु मुम्बई से 'अड्यार' चले गये और वहीं पर 'मद्रास टेक्साइल्स' में काम करने लगे।
- 1918 ई. में 'मद्रास श्रमिक संघ' की स्थापना की।
- यह भारत का पहला व्यवस्थित श्रमिक संघ बना, जो कपड़ा उद्योग से सम्बन्धित था।

❑ **ज्योतिराव गोविन्दराव फुले**

- **वर्ष -** 1827-1890 ई.
- **जन्म -** पुणे (महाराष्ट्र)
- **रचना -** 'गुलामगिरी'
- **पत्नी -** सावित्री बाई
- **उपाधि -** 'ज्योतिबा फुले' , महात्मा फुले
- 1848 ई. में एक 'महिला विद्यालय' की स्थापना की, जो देश का प्रथम महिला विद्यालय था।
- सत्य की खोज के लिए 'सत्य शोधक समाज' की स्थापना 'बम्बई' में किया।
- 'एग्रीकल्चर एक्ट' पास किया गया।

❑ **रामास्वामी / 'पेरियार'**

- **वर्ष - 1879-1973 ई**
- **जन्म** – तमिलनाडु
- **पत्रिका -** 'कुडी अरासू' तथा 'रिवोल्ट'
- 'आत्म सम्मान आन्दोलन' चलाया था।
- 'मनुस्मृति' को जलाने तथा बिना ब्राह्मण के विवाह संस्कार सम्पन्न करवाने जैसा कृत्य किया।
- पेरियार को 1924 ई. के 'बायकोम सत्याग्रह' (केरल) का प्रणेता भी कहा जाता है।
- इन्होंने 'जस्टिस पार्टी' का भी संचालन किया, जिसका नाम बाद में परिवर्तित करके 'द्रविड़ कड़गम' कर दिया गया।

❑ **टी.के. माधवन**

- **वर्ष - 1885-1930 ई.**
- **जन्म** – केरल
- **पत्र -** 'देशाभिमानी'
- ये नारायण गुरु के शिष्य थे।
- 'श्री नारायण धर्म परिपालन योगम' की स्थापना की तथा उसके सचिव वने।
- इनके आन्दोलनों का मुख्य लक्ष्य निम्न जाति के लोगों को 'मन्दिरों में प्रवेश' दिलाना था।
- इसके लिए 'वायकोम सत्याग्रह' भी किया।
- इसका समर्थन करने के लिए 'महात्मा गांधी' भी साथ आ गये।

❑ **कोयापल्ली केलप्पन नायर**

- **वर्ष - 1889-1971 ई.**
- **जन्म** – कालीकट (केरल)
- गांधीजी के 'असहयोग आन्दोलन' में सम्मिलित थे
- 'व्यक्तिगत सत्याग्रह' के समय दक्षिण भारत के प्रथम 'सत्याग्रही'थे
- 'वॉयकोम सत्याग्रह' में संघर्ष करते हुए पुलिस की लाठियाँ खाई
- 'गुरुवायूर' के 'कृष्ण मन्दिर' में हरिजनों के प्रवेश पर लगी रोक हटवाने के लिए भूख हड़ताल की।
- मद्रास सरकार को 'मन्दिर प्रवेश कानून' बनाना पड़ा।
- जे.बी. कृपलानी की 'किसान मजदूर पार्टी' से प्रथम लोक सभा के सदस्य बनें।

❑ **डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर**

- **वर्ष -** 1891-1956 ई.
- **जन्म स्थान-** महू छावनी, इन्दौर (मध्य प्रदेश)
- **पत्नी -** रमाबाई , डॉ. सविता
- **उपाधि -** बाबा साहेब , भारतीय दलितोद्धारक, गरीबों के मसीहा
- **पत्र -** 'मूक नायक' (मराठी), 'बहिष्कृत भारत'।
- **पुरस्कार-** 'भारत रत्न', 'बोधिसत्व' आदि।
- **संगठन-**
- 'द आल इण्डिया डिप्रेस क्लास फेडरेशन (1920)
- 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' (1924 बम्बई)
- 'स्वतंत्र लेबर पार्टी' (1936)

- 'अनुसूचित जाति फेडरेशन' (1942)
- 'भारतीय बौद्ध महासभा' (1955)
- 'भारतीय रिपब्लिकन पार्टी' (राजनीतिक पार्टी)।
- **पुस्तकें-**
- थाट्स ऑफ पाकिस्तान
- दि अनटचेबुल
- गांधी एण्ड गांधीज्म
- रानाडे
- गांधी एण्ड जिन्ना
- दि बुद्धा एण्ड हिज धम्मा

❑ **बुद्धो भगत**

- **वर्ष -** 1792-1832 ई.
- **जन्म -** झारखण्ड
- इनके नेतृत्व में 1831 ई. में 'कोल विद्रोह' कर दिये। इसे 'लरका विद्रोह' भी कहा जाता है।
- यह विद्रोह जमींदारों, साहूकारों एवं ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध था।

❑ **अमृत लाल ठक्कर बापा**

- **वर्ष - 1869-1951 ई.**
- **जन्म** - भावनगर (सौराष्ट्र)
- सर्वप्रथम आदिवासियों को 'आदिवासी' कहा
- 'सर्वेन्ट ऑफ इंडिया सोसाइटी' को प्रोत्साहित करना,
- स्वीपरों के लिए 'को- ऑपरेटिव सोसाइटी' की स्थापना
- गुजरात में 'भील सेवा मंडल' की स्थापना करना
- 'हरिजन सेवक महासंघ' के महासचिव रहे।
- 'रांची' में स्थापित 'आदिम जाति मंडली' के उपाध्यक्ष रहे , जिसके अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद थे।

❑ **बिरसा मुंडा**

- **वर्ष -** 1875-1900 ई.
- **जन्म -** झारखण्ड
- **माता-** सुगना मुंडा
- **पिता-** करमी हातू
- मुंडा ने स्वयं को भगवान का दूत घोषित किया और 'सिंगबोगा' की पूजा करने को कहा।
- 'मुण्डा विद्रोह' का नेतृत्व किया
- 1900 ई. में 'चक्रधरपुर' में बिरसा मुण्डा गिरफ्तार कर लिये गये तत्पश्चात रांची जेल में ही मृत्यु हो गयी।
- **समाधि -** रांची में कोकर के निकट
- इनकी स्मृति में रांची में 'बिरसा मुण्डा केन्द्रीय कारागार' तथा 'बिरसा मुण्डा हवाई अड्डा' बनाया गया है।

❑ **अल्लूरी सीताराम राजू**

- **वर्ष -** 1897-1924 ई.
- **जन्म -** विशाखापट्टनम (आन्ध्र प्रदेश)
- 'असहयोग आन्दोलन' के दौरान आन्ध्र प्रदेश में स्थानीय विवादों को सुलझाने हेतु पंचायतों की स्थापना की।
- कुछ समय बाद अंग्रेजों ने इन्हें बन्दी बना लिया और गोली मार दी।

❑ **चार्ल्स ग्रान्ट**

- **वर्ष -** 1746-1823 ई.
- **जन्म** – स्कॉटलैण्ड
- ईस्ट इण्डिया कम्पनी के 'व्यापार बोर्ड' के सदस्य रहे।
- यह विचार दिया कि, 'अंग्रेजी सिखाने के लिए पूरे भारत में स्कूलों का जाल बिछा दिया जाय।'
- उनके इस विचार और प्रयत्न के कारण ही उन्हें भारत में 'आधुनिक शिक्षा का जन्मदाता' कहा जाता है।

❑ **विलियम जोंस**

- **वर्ष -** 1746-1794 ई.
- **जन्म-** लन्दन
- 1783 ई. में 'बंगाल उच्च न्यायालय' के न्यायाधीश नियुक्त हुए

- **उपाधि -** 'सर'
- 1784 ई. में कलकत्ता में 'एशियाटिक सोसायटी' की स्थापना की
- इस संस्था ने 'भगवद्गीता "अभिज्ञान शाकुन्तलम्' तथा 'मनुस्मृति' आदि ग्रन्थों का अंग्रेजी में अनुवाद किया।

❑ **डेविड हेयर**

- **वर्ष - 1775-1842 ई.**
- 1800 ई. में भारत आए।
- 1817 में 'हिन्दू कॉलेज' की स्थापना की।
- इसी वर्ष कलकत्ता में इनके द्वारा एक अंग्रेजी स्कूल की स्थापना की गई, जिसमें अन्य विषयों के साथ-साथ यांत्रिकी तया वाल्टेयर दर्शन की शिक्षा प्रदान की जाती थी।

❑ **हेनरी लुई विवियन डीरोजीओ**

- **वर्ष -** 1809-1931 ई.
- यह एक एग्लो-इण्डियन थे।
- यंग बंगाल आन्दोलन की स्थापना 1828 ई. में की थी।
- ये हिन्दू कालेज (कलकत्ता) में प्राध्यापक पद पर नियुक्त हुए थे।
- **संगठन -** 'एंग्लो-इण्डियन हिन्दू एसोसिएशन', 'बंगहित सभा' 'डिबेटिंग क्लब'
- **समाचार पत्र-** 'हेसपेरस', 'द कलकत्ता लाइब्रेरी गजट' तथा 'इंडिया जट'
- डेरोजियो को आधुनिक भारत का प्रथम राष्ट्रीय कवि माना जाता है।

❑ **जोनाथन डंकन**

- **वर्ष - 1756-1811 ई.**
- 1772 ई. में ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेवा में भारत आये
- 1778 ई. में बनारस का 'सुपरिंटेंडेण्ट' बनाया गया, जहाँ 'शिशुबलि' जैसी कुप्रथा का निवारण किया।
- 1791 ई. में बनारस में एक संस्कृत कॉलेज की स्थापना की।
- बम्बई के गवर्नर की हैसियत से 'चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध' (1799 ई.) तथा 'द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1803-05) में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- **मृत्यु -** 'मुम्बई' में हुयी,
- इनकी कब्र पर 'सज्जन' और 'न्यायिक' व्यक्ति लिखा गया है।

❑ **लॉर्ड थॉमस बैविंग्टन मैकॉले**

- **वर्ष -** 1800-1859 ई.
- **रचना -** हिस्ट्री ऑफ इंग्लैण्ड'
- लॉर्ड मैकाले 'चार्टर अधिनियम 1833 ई.' के तहत 1834 में गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी परिषद में चौथे सदस्य (विधि सदस्य) के रूप में भारत आए।
- इसने 'अधोमुखी निस्यंदन सिद्धान्त' के माध्यम से शिक्षा देने की वकालत की,
- इसने 'दी इंडियन पीनल कोड' की पाण्डुलिपि तैयार की

❑ **चार्ल्स फ्रीयर एंड्रयूज 'दीनबंधु'**

- **वर्ष - 1871-1940 ई.**
- **जन्म-** इंग्लैंड
- 1904 ई. में सेंट स्टीफन कॉलेज में शिक्षण हेतु भारत आए।
- इनके सामाजिक कार्यों से प्रभावित होकर सेंट स्टीफन कॉलेज के छात्रों एवं गांधीजी ने इनको 'दीनबन्धु' की उपाधि दी।
- 1913 ई. में दक्षिण अफ्रीका गए जहाँ 'नेटाल इंडियन कांग्रेस' नामक संस्था तथा 'इंडियन ओपीनियन' पत्रिका प्रकाशित करने में गाँधीजी को सक्रिय सहयोग प्रदान किया।
- दीनबंधु ने वॉयकोम सत्याग्रह, अस्पृश्यता आन्दोलन, मद्रास के श्रमिक आन्दोलन तथा गोलमेज सम्मेलन में सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया।
- 1920 ई. में 'इंडियन ट्रेड यूनियन कांग्रेस' की सदस्यता ग्रहण की ,1925 ई. में अध्यक्षता भी की।
- जलियावाला बाग हत्याकाण्ड हेतु ब्रिटिश सरकार को दोषी ठहराया
- जनरल ओ डायर के कुकृत्य को "जानबूझ कर किया गया जघन्य हत्याकांड" कहा।
- **लेख -** 'मेनचेस्टर गार्जियन', 'द हिन्दू', 'माडर्न रिव्यू', 'द नेटाल आब्जर्वर' तथा 'द टोरन्टो स्टार'
- 1940 ई. में कोलकाता में अन्तिम सांस ली।

❑ **चार्ल्स वुड**

- **वर्ष - 1800-1885 ई.**
- भारत में इनको 'बोर्ड ऑफ कन्ट्रोल' का प्रधान नियुक्त किया गया।
- 19 जुलाई 1854 ई. को ड का डिस्पैच योजना प्रस्तुत की,
- इसे ही 'भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा' भी कहा जाता है।

❑ **विलियम विलसन हन्टर**

- **वर्ष - 1840-1900 ई.**
- एक भारतीय सिविल सर्वेन्ट के रूप में इनकी नियुक्ति बंगाल में हुई थीं।
- 'लार्ड रिपन' के कार्यकाल में 'हण्टर शिक्षा आयोग' (1882-83 ई.) का अध्यक्ष नियुक्त किया गया, जिसमें 8 सदस्य भारतीय थे।
- इसका क्षेत्र 'प्राथमिक' एवं 'माध्यमिक' शिक्षा तक सीमित था।

❑ **डॉ. सर्वपल्ली राधा कृष्णन**

- **वर्ष -** (1888-1975 ई.)
- **जन्म** – तिरुपति (चेन्नई)
- 'भारत रत्न' से सम्मानित (1954)
- 1948 ई. में इनकी अध्यक्षता में **राधा कृष्णन** आयोग का गठन किया गया था।
- बाद में यह देश के प्रथम - उपराष्ट्रपति और द्वितीय राष्ट्रपति चुने गये।
- इनके सम्मान में ही इनके जन्म दिन (5 सितम्बर) को 'राष्ट्रीय शिक्षक दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

❑ **सर आशुतोष मुखर्जी**

- **वर्ष -** 1864-1924 ई.
- **जन्म-** कलकत्ता
- 1904 ई. में कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश बने।
- 'बंग्ला' की सेवा के कारण 'आधुनिक बंगाल का निर्माता' भी कहा जाता है।
- प्रथम भारतीय थे, जिन्होंने 'रॉयल कमीशन' (सैडलर आयोग) के सदस्य की हैसियत से सम्पूर्ण भारत में धोती कोट पहनकर भ्रमण किया।
- बाद में कलकत्ता विश्वविद्यालय के 'वाइस चांसलर' भी बने।

❑ **दौलत सिंह कोठारी**

- **वर्ष - 1905-1993 ई.**
- **जन्म -** उदयपुर (राजस्थान)
- दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर बने।
- इन्हें 1961 ई. में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।
- 1964 ई. में इनकी अध्यक्षता में 'कोठारी शिक्षा आयोग, का गठन किया गया।
- इस आयोग की सिफारिशों को भारतीय शिक्षा क्षेत्र का 'इनसाइक्लोपीडिया' कहा जाता है।

❑ **बेगम हज़रत महल**

- **वर्ष - 1820-1879 ई.**
- पति - वाजिद अली शाह
- 1857 ई. के विद्रोह में अवध का नेतृत्व किया
- कॉलिन कैम्पबेल ने लखनऊ पर अधिकार कर लिया
- बेगम हजरत महल नेपाल के राजा जंग बहादुर के यहां शरण ली
- 1879 ई. में उनकी मृत्यु हो गयी।

❑ **सावित्रीबाई फुले**

- **वर्ष - 1831-1857 ई.**
- **जन्म -** महाराष्ट्र के
- **पति -** ज्योतिबा फुले
- **रचनाएँ -** 'काव्य फुले' एवं 'बावनकशी सुबोध रत्नाकर'
- देश की प्रथम प्रशिक्षित शिक्षिका
- महिला शिक्षा एवं महिला मुक्ति के क्षेत्र में अमिट योगदान है।
- 1848 ई. में पुणे में प्रथम महिला विद्यालय की स्थापना की।
- महिला मुक्ति हेतु 'विधवा आश्रम' एवं शिशु बालिका हत्या प्रतिबन्धक गृह की स्थापना की।
- मराठी भाषा की कवयित्री भी थी।

❑ **महारानी लक्ष्मीबाई**

- **वर्ष - 1835-1858 ई.**
- **जन्म -** वाराणसी
- **पति -** 'गंगाधर राव नेवालकर'
- **दत्तक पुत्र -** 'दामोदर राव'
- 1857 ई. के विद्रोह में झांसी का नेतृत्व किया
- ब्रिटिश जनरल ह्यूरोज ने रानी की वीरता से अविभूत होकर कहा था कि, "मेरे सामने सोयी हुई यह महिला विद्रोहियों में एक मात्र मर्द है।"

- **रमाबाई रानाडे**
  - **वर्ष -** 1863-1924 ई.
  - **जन्म -** सांगली (महाराष्ट्र)
  - **पति -** महादेव गोविंद रानाडे
  - रमाबाई ने अपने विवाह के पश्चात पति के सहयोग व प्रोत्साहन से स्वयं को शिक्षित करने और अंग्रेजी भाषा सीखने की ठानी।
  - रमाबाई पुणे में "सेवा सदन" की संस्थापक अध्यक्षा भी थीं।
  - आर्य महिला समाज की स्थापना की।
  - मुम्बई में 'हिन्दू लेडीज सोशल क्लब' की स्थापना की।
  - 1886 ई. में पुणे में महिलाओं का पहला उच्च विद्यालय स्थापित किया।
- **पंडिता रमाबाई**
  - **वर्ष -** 1858-1922 ई.
  - **जन्म -** महाराष्ट्र
  - **उपाधि -** 'सरस्वती' एवं 'पंडिता'
  - 12 वर्ष की ही अवस्था में संस्कृत के 20 हजार श्लोक कंठस्थ कर लिए थे।
  - 'पुणे' में 'आर्य महिला समाज (1881)' की स्थापना की
  - अछूतोद्धार हेतु संघर्ष करते हुए स्वयं का विवाह बिपिन बिहारी मेधावी का नामक बंगाली अछूत से किया।
  - 1912 ई. में गुलबर्गा में 'ईसाई हाई स्कूल' की स्थापना की
  - मुम्बई में 'शारदा सदन' एवं 'कृपा सदन' नामक शैक्षणिक संस्था की स्थापना की।
  - इन कृत्यों से प्रभावित होकर ब्रिटिश सरकार ने 1919 ई. में इन्हे 'कैसर-ए-हिन्द से सम्मानित किया।
- **श्रीमती भीकाजी रुस्तम कामा**
  - **वर्ष - 1861-1936 ई**
  - **जन्म -** बम्बई
  - भारतीय मूल की पारसी नागरिक
  - **उपाधि -** 'भारतीय क्रान्ति की माता' , 'क्रांति प्रसूता', 'भारतीय राष्ट्रीयता की महान् पुजारिन'
  - **समाचार पत्र -** 'वन्देमातरम्' और 'मदन तलवार'
  - 1907 में जर्मनी के स्टुटगार्ड में 'अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस' के सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए 22 अगस्त को 'भारत का प्रथम राष्ट्रीय तिरंगा झण्डा' फहराया।
  - यह झण्डा सरदार सिंह राणा ने मैडम भीकाजी कामा के साथ डिजाइन किया था।
  - 13 अगस्त, 1936 को बम्बई में उनका निधन हो गया।'
- **कस्तूरबा गांधी**
  - **वर्ष -** 1869-1944 ई.
  - **पति** – महात्मा गांधी
  - **जन्म** - काठियावाड़ (पोरबन्दर)
  - श्रीमती गाँधी ने 'असहयोग आन्दोलन', 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' तथा 'भारत छोड़ों आन्दोलन' में सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया।
  - 9 अगस्त 1942 ई. को गिरफ्तार करके पूना के आगा खां जेल में भेज दिया गया।
  - 1944 ई. में मृत्यु हो गयी।
- **मातंगिनी हजारा**
  - **वर्ष -1870-1942 ई.**
  - 'गांधी बुढ़ी' की संज्ञा से प्रसिद्ध क्रान्तिकारी
  - 1942 ई. में वह 5000 लोगों को एकत्र करके जब ब्रिटिश सरकार विरोधी नारे लगा रही थी तो पुलिस की एक गोली बाये हाथ में लगी तो झण्डे को दाहिने हाथ में ले लिया।
  - अन्त में एक गोली दाहिने हाथ और माथे पर लगी लेकिन भारतीय झण्डे को नीचे नहीं गिरने दिया।
  - इस बलिदान से मिदनापुर क्षेत्र में इतना जोश उमड़ा कि 10 दिन के अन्दर 'जातीय सरकार' की स्थापना हो गयी जो 21 महीने तक चली।
- **सरोजिनी नायडू**
  - **वर्ष - 1879-1949 ई.**
  - **जन्म -** हैदराबाद
  - **उपाधि -** 'भारत कोकिला' (नाइटिंगल ऑफ इंडिया)
  - **रचनाएँ -** गोल्डन ट्रैशोल्ड, वर्ड ऑफ टाईम, सांग ऑफ इण्डिया तया ब्रोकन विंग
  - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 1925 के कानपुर अधिवेशन की अध्यक्षता कर प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष बनी।

- उत्तर प्रदेश एवं देश की प्रथम महिला राज्यपाल बनने का गौरव प्राप्त हुआ।
- स्त्रियों के उत्थान के लिए महिला विश्वविद्यालय एवं अनाथ आश्रम की स्थापना की।
- 1947 ई. में एशियन रिलेशन कांफ्रेंस की अध्यक्षता की।

❑ **सुचेता कृपलानी**

- **वर्ष -** 1908-1974 ई.
- **जन्म -** हरियाणा
- **पति -** जे.बी. कृपलानी
- अरुणा आसफ अली एवं ऊषा मेहता के साथ भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया।
- उत्तर प्रदेश एवं देश की प्रथम महिला मुख्यमंत्री बनने का गौरव प्राप्त हुआ।
- इन्होंने कांग्रेस की महिला विभाग तथा अण्डरग्राउण्ड वालंटियर फोर्स की स्थापना की। जिसके अन्तर्गत महिलाओं को हथियार चलाने की ट्रेनिंग दी गयी।
- नोआखली दंगे के समय गांधी के साथ थी।

❑ **अरुणा आसफ अली**

- **वर्ष -** 1909-1996 ई.
- **जन्म -** हरियाणा
- **पति -** आसफ अली
- भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान मुम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान में कांग्रेस का झण्डा फहराने वाली भूमिगत नेता
- अरुणा 1958 ई. में दिल्ली की पहली महिला मेयर चुनी गई।
- पुरस्कार - अन्तर्राष्ट्रीय लेनिन पुरस्कार ,जवाहर लाल नेहरु
- इन्हें संयुक्त राष्ट्रसंघ महासभा की प्रथम महिला अध्यक्ष होने का गौरव भी प्राप्त है।
- 'नेशनल फेडरेशन ऑफ इण्डियन वूमेन' तथा 'ऑल इंडियन वूमेन कांफ्रेस की अध्यक्षता की।
- 'ऑल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस' की उपाध्यक्षता की।

❑ **प्रीतिलता वादेदार**

- **वर्ष - 1911-1932 ई.**
- **जन्म -** चटगांव (बांग्लादेश)
- 'इण्डियन रिपब्लिकन आर्मी की सदस्या
- मास्टर सूर्यसेन की शिष्या
- इनका मानना था कि सशस्त्र हथियार से ही देश को स्वतंत्रता मिल सकती है।

❑ **बीना दास**

- **वर्ष -1911-1986 ई.**
- **जन्म** – बंगाल
- **आत्म कथाएँ -** 'श्रृंखल झंकार' और 'पितृधन'।
- कलकत्ता में 'छात्री संघ' की सदस्या थी, जिसके लिए 9 वर्ष के कारावास की सजा दी गयी थी।
- 6 फरवरी 1932 ई. को कलकत्ता विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में गवर्नर स्टैनले जैक्सन को गोली मारी , परन्तु वह बच गया।
- परिणामतः 10 साल का कारावास हुआ।
- "भारत छोड़ो आन्दोलन" के समय तीन वर्ष के लिए नजरबंद कर दिया गया था।
- 1946 से 1951 तक आप बंगाल विधानसभा की सदस्या रही।
- गांधीजी की नोआखाली यात्रा के समय लोगों के पुनर्वास के काम में बीना ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

❑ **रानी गाइडिन्ल्यू**

- **वर्ष -** 1915-1993 ई.
- **जन्म -** मणिपुर
- नागा नेता जादोनांग की शिष्या एवं उत्तराधिकारिणी थी।
- गांधी जी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान कर न देने का आन्दोलन चलाया।
- जिसके लिए भूमिगत होकर 4,0000 नागा सशस्त्र सिपाहियों की भर्ती की तथा छापामार प्रणाली से असम राइफल्स की चौकी पर हमला कर दिया।
- 1932 ई. में आपको गिरफ्तार करके आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।
- **सम्मान -** पद्मभूषण, विवेकानन्द सेवा सम्मान , बिरसा मुंडा सम्मान
- भारत सरकार ने इनके सम्मान में तो 1996 में एक स्टाम्प, 2015 में एक सिक्का जारी किया।

❑ **उषा मेहता**

- **वर्ष -** 1920-2000 ई.
- **जन्म -** सूरत

- भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान 14 अगस्त 1942 ई. को 'खुफिया कांग्रेस रेडियो' का प्रसारण किया।
- 'गांधी स्मारक निधि' का अध्यक्ष चुना गया।
- गांधी शान्ति प्रतिष्ठान की सदस्या बनी
- भारत सरकार ने पद्म विभूषण से सम्मानित किया।

❑ **हैलना ब्लावाट्स्की**

- **वर्ष - 1831-1891 ई.**
- **जन्म -** दक्षिणी रूस
- **पत्र -** 'द थियोसॉफिट'
- थियोसोफिकल सोसायटी की संस्थापिका
- 1879 ई. में बम्बई में थियोसोफिकल सोसायटी की एक शाखा स्थापित की
- 1882 ई. में थियोसोफिकल सोसायटी का अन्तर्राष्ट्रीय कार्यालय अड्यार (चेन्नई) में स्थान्तरित किया।

❑ **एनी बेसेन्ट**

- **वर्ष -(1847-1933 ई.)**
- **जन्म -** लन्दन
- आयरन लेडी के नाम से प्रसिद्ध
- **समाचार पत्र -** 'कामनवील' तथा 'न्यू इंडिया'
- भारत में स्वशासन के उद्देश्य से 1916 ई. में 'होम रूल लीग' आन्दोलन चलाया।
- 1917 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष बनने का गौरव प्राप्त हुआ।

❑ **भगिनी निवेदिता**

- **वर्ष -**1867-1911 ई.
- **जन्म -** आयरलैण्ड
- **मूल नाम -** मार्गेट एलिजाबेथ नोबेल
- **उपाधि** –
- विवेकानन्द ने 'शेरनी'
- रवीन्द्र नाथ टैगोर ने 'लोकमाता'
- अरविन्द घोष ने अग्नि शिखा
- **रचनाएँ -** 'द बेव आफ इंडियन लाइफ' तथा 'द मास्टर ऐज आई सा हिम'
- स्वामी विवेकानन्द की शिष्या
- 28 जनवरी, 1898 को कोलकाता पहुँची।
- शारदा देवी ने उन्हें बंगाल की कूकी अर्थात् छोटी लड़की कहकर बुलाया।
- 25 मार्च 1898 को स्वामी विवेकानंद ने सार्वजनिक तौर पर निवेदिता नाम दिया।
- भारतीय मठ परम्परा को स्वीकारने वाली प्रथम पश्चिमी महिला बनीं।
- 13 नवंबर, 1898 को कालीपूजा के दिन कोलकाता के बागबाजार में बालिकाओं के लिए एक स्कूल का शुभारंभ किया।
- दार्जलिंग में महज 43 साल की उम्र में 13 अक्टूबर, 1911 देहान्त हुआ।
- दार्जिलिंग के विक्टोरिया फॉल्स के पास स्मारक स्थित है।
- 1968 में भारतीय सरकार ने इनके सम्मान में एक डाक टिकट जारी किया।

❑ **मैडलिन स्लेड (मीराबेन)**

- **वर्ष - 1892-1982 ई.**
- **जन्म** – इंग्लैण्ड
- हरिद्वार के 'गुरुकुल कांगडी' में हिन्दी सीखने आई।
- गाँधी जी के बुनियादी शिक्षा, मानव सेवा, सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह एवं सर्वोदय जैसे गांधीवादी सिद्धान्तों से प्रभावित थी ।
- गाँधी जी ने उनका नाम 'मीराबेन' रख दिया।
- भारत छोड़ों आन्दोलन के समय गाँधी जी के साथ पूना के 'आगा खाँ पैलेस' में बन्द थी।
- रुड़की में 'किसान आश्रम', भूपनाग में 'बापूग्राम' एवं 'गोपाल आश्रम' की स्थापना की ।
- सेवाग्राम में उन्होंने 'बापू कुटी' का निर्माण स्वयं किया था
- गाँधी जी के मृत्योपरान्त मीराबेन ने उनके विचारों के की प्रचार-प्रसार में संलग्न रही।
- 1982 में मृत्योपरान्त 'पदमविभूषण' से अलंकृत किया

Chapter- **ब्रिटिश शासन के अधीन भारत का संवैधानिक विकास**

संवैधानिक विकास/ Constitutional Development

❑ पृष्ठभूमि

- ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा प्राप्त करने के बाद प्रशासनिक अव्यवस्था तथा अराजकता का वातावरण व्याप्त हो गया।
- कम्पनी के कर्मचारी जनता के शोषण और अधिकाधिक धन एकत्रित करने में व्यस्त थे।
- सीमा विस्तार तथा विभिन्न युद्धों में भारी व्यय के कारण कंपनी आर्थिक कठिनाई में थी। सन् 1772 ई० में तो आर्थिक अस्थिरता इतनी बढ़ गई कि वह दिवालिया होने की स्थिति में आ गई। 1772 ई० को ब्रिटिश संसद ने कम्पनी के कार्यों की जाँच के लिए एक प्रवर समिति तथा गुप्त समिति नियुक्त की।
- सन् 1773 में कम्पनी ने संसद से आर्थिक सहायता के लिये प्रस्ताव किया। गुप्त समिति ने अपना अंतिम प्रतिवेदन 3 मई, सन् 1773 ई० को प्रस्तुत कर दिया। प्रतिवेदन के फलस्वरूप लार्ड नार्थ ने 18 मई को संसद में अपना प्रसिद्ध विधेयक प्रस्तुत किया, जो बाद में रेग्यूलेटिंग ऐक्ट कहलाया।

❑ रेग्यूलेटिग एक्ट, 1773

- बंगाल में कंपनी के कुशासन ने 1773 के रेग्यूलेटिंग एक्ट को अनिवार्य बना दिया था
- कंपनी के डायरेक्टरों से कहा गया कि वह राजस्व से संबंधित सभी मामलों, तथा दीवानी एवं सैन्य प्रशासन से सम्बंधित सभी कार्यों से सरकार को अवगत कराये।
- कंपनी के कर्मचारियों को 'उपहार' लेने तथा निजी व्यापार में शामिल होने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया।
- अब 500 पौंड के अंशधारियों के स्थान पर 1,000 पौंड के अशधारियों का संचालक चुनने का अधिकार दिया गया।
- संचालक मंडल का कार्यकाल चार वर्ष कर दिया गया।
- वर्ष में एक-चौथाई सदस्यों के स्थान पर नये सदस्यों के निर्वाचन की पद्धति अपनाई गई।
- बंगाल में गवर्नर को गवर्नर जनरल के तौर पर पदनामित किया गया था।
- बंगाल में एक प्रशासक मंडल गठित किया गया, जिसमें गवर्नर जनरल तथा चार पार्षद नियुक्त किये गये।
- इस मंडल में बहुमत के आधार पर निर्णय लिये जाते गवर्नर जनरल के पास निर्णायक मत देने का अधिकार था।
- इस अधिनियम किया द्वारा मंडल में वॉरन हेस्टिंग्स को गवर्नर जनरल के रूप में तथा जॉन क्लेवरिंग, जॉर्ज मॉनसन, रिचर्ड बरवेल एवं फिलिप फ्रांसिस को पार्षदों के रूप में नियुक्त किया गया।
- बंगाल के गवर्नर को अब समस्त अंग्रेजी क्षेत्रों का गवर्नर बना दिया गया। कुछ विशेष मामलों में उसे बॉम्बे तथा मद्रास प्रेजिडेंसियों का अधीक्षण भी दिया गया।
- इस अधिनियम द्वारा बंगाल में 1774 में एक उच्चतम न्यायालय की स्थापना की गई। इस न्यायालय में एक मुख्य न्यायाधीश तथा तीन अन्य न्यायाधीश थे।
- सर एलिजाह एंपी को इस न्यायालय का प्रथम मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया।
- उच्चतम न्यायालय में अंग्रेज एवं भारतीय, सभी न्याय की गुहार कर सकते थे।
- कानून बनाने का अधिकार गवर्नर जनरल तथा उसकी परिषद को दे दिया गया
- परन्तु इन कानूनों को लागू करने से पूर्व भारत सचिव से अनुमति प्राप्त करना अनिवार्य था।
- कंपनी के कर्मचारियों के निजी व्यापार को पूर्णतया प्रतिबंधित कर दिया गया।

Note –

- इस अधिनियम के सभी प्रावधान 'नियंत्रण एवं संतुलन' के सिद्धांत पर आधारित थे।
- **संशोधन (1781)**
  - कलकत्ता स्थित उच्चतम न्यायालय के न्याय क्षेत्र को परिभाषित किया गया।
  - कानून बनाते तथा उनका क्रियान्वयन करते समय भारतीयों के सामाजिक तथा धार्मिक रीति-रिवाजों का सम्मान किया जाना था।

❑ पिट्स इंडिया ऐक्ट, 1784

- इस ऐक्ट से पहले फॉक्स ने इण्डिया बिल प्रस्तुत किया। यह बिल हाउस ऑफ कामन्स में पारित हो गया परन्तु हाउस ऑफ लार्ड्स में बिल पारित नहीं हो सका। फलस्वरूप लार्ड नार्थ और फॉक्सा की मिलीजुली सरकार को त्यागपत्र देना पड़ा। यह पहला और अंतिम अवसर था जब अंग्रेजी सरकार भारतीय मामले पर गिर गई।
- इस अधिनियम के द्वारा 6 कमिश्नरों का बोर्ड गठित किया गया जिसे 'बोर्ड ऑ कन्ट्रोल' कहा गया।
- इसमें एक चांसलर ऑफ एक्सचेकर, एक राज्य सचिव तथा 4 व्यक्ति प्रिवी कौंसिल के सदस्य होते थे।
- सभी सैनिक, असैनिक तथा राजस्व सम्बन्धी मामलों को इस बोर्ड के अधीन कर दिया गया।
- बोर्ड ऑफ कन्ट्रोल की अनुमति के बिना गवर्नर जनरल किसी भारतीय नरेश के साथ संघर्ष एवं संधि नहीं कर सकता था।
- बोर्ड ऑफ कन्ट्रोल का अध्यक्ष ब्रिटिश मंत्रिमंडल का एक सदस्य होता था।
- इस प्रकार ब्रिटिश सरकार का कंपनी के मामलों पर तथा उसके भारतीय प्रशासन पर पूर्ण नियंत्रण हो गया।
- इस प्रकार शासन की द्वैध प्रणाली एक कम्पनी द्वारा और दूसरी संसदीय बोर्ड द्वारा 1858 ई० तक चलती रही।
- गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी के सदस्यों की संख्या घटाकर 3 कर दी गई और बम्बई व मद्रास की सरकारें इसके अधीन कर दी गई।

1786 का ऐक्ट

- गवर्नर जनरल को मुख्य सेनापति की शक्तियाँ दे दी गयी।
- गवर्नर जनरल को विशेष अवस्था में अपनी परिषद् के निर्णयों को रद्द करने तथा अपने निर्णय को लागू करने का अधिकार भी दे दिया गया।

1793 का चार्टर ऐक्ट

- कम्पनी के अधिकारों को 20 वर्ष के लिए बढ़ा दिया गया।
- परिषद् के निर्णयों कोरद्द करने का जो अधिकार कार्नवालिस को दिया गया; उसे आने वाले गवर्नर जनरल को भी दे दिया गया।
- बोर्ड ऑफ कन्ट्रोल के अधिकारियों का वेतन भारतीय कोष से मिलने लगा।

1813 का चार्टर ऐक्ट

- कम्पनी का अधिकार 20 वर्ष के लिए पुनः बढ़ा दिया गया।
- कम्पनी का भारतीय व्यापार पर एकाधिकार समाप्त हो गया
- चाय और चीन के व्यापार पर एकाधिकार बना रहा।
- व्यापारिक लेन-देन तथा राजस्व खाते अब भिन्न-भिन्न रखने होंगे।
- कम्पनी को भारत में शिक्षा पर एक लाख रुपया खर्च करने का प्रावधान था।
- ईसाई मिशनरियों को भारत में प्रवेश करने की छूट मिल गई।
- भारत में आकर बसने तथा व्यापार करने के लिए आने वाले अंग्रेजों को लाइसेंस लेना अनिवार्य कर दिया गया।
- सभी अंग्रेज व्यापारियों को भारत में व्यापार करने की छूट दे दी गयी।

1833 का चार्टर ऐक्ट

- इस अधिनियम पर मैकाले एवं जेम्स मिल का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है।
- कम्पनी का अधिकार 20 वर्ष के लिए पुनः बढ़ा दिया गया।
- कम्पनी का व्यापारिक अधिकार चाय तथा चीन से भी पूर्णतः समाप्त कर दिया गया।
- भारत के प्रशासन का केन्द्रीकरण कर दिया गया।
- बंगाल का गवर्नर जनरल भारत का गवर्नर जनरल बना दिया गया।
- बम्बई, मद्रास, बंगाल तथा अन्य प्रदेश गवर्नर जनरल के नियंत्रण में आ गए।
- गवर्नर जनरल और उसकी कार्यकारिणी को भारत के लिए कानून बनाने का अधिकार दिया गया
- मद्रास तथा बंबई की परिषदों की कानून बनाने की शक्ति समाप्त कर दी गई।
- गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी में एक अतिरिक्त विधि सदस्य को चौथे सदस्य के रूप में सम्मिलित किया गया।
- इसे केवल परिषदों की बैठकों में भाग लेने का अधिकार था, मत देने का अधिकार नहीं था।
- एक विधि आयोग की नियुक्ति की गई।
- इस अधिनियम की सबसे महत्वपूर्ण धारा 87 थी जिसके द्वारा जाति, वर्ग के आधार पर सरकारी चयन में भेदभाव समाप्त कर दिया गया।
- इस अधिनियम के अधीन भारत सरकार को दासता समाप्त करने की आज्ञा दी गई।

Note:-

- लॉर्ड मैकाले प्रथम विधि सदस्य बने।
- 1843 में दास प्रथा का उन्मूलन किया गया।

चार्टर एक्ट, 1853

- यह अंतिम चार्टर अधिनियम था, और पहली बार, कंपनी को एक निश्चित समय अवधि के लिए चार्टर नवीकरण नहीं मिला।
- कंपनी को भारतीय प्रदेशों को 'जब तक ब्रिटिश संसद न चाहे' तब तक के लिये अपने अधीन रखने की अनुमति दे दी गई।
- डायरेक्टरों की संख्या से 24 घटाकर 18 कर दी गई, और उनमें से छह सदस्य सम्राट द्वारा मनोनीत किये जाने थे।
- गवर्नर जनरल की परिषद का विधि-विशेषज्ञ पूर्ण सदस्य बना दिया गया।
- गर्वनर जनरल की परिषद में कानून निर्माण में सहायता देने के लिये छह नये सदस्यों की नियुक्ति की गई।
- गवर्नर जनरल की परिषद की विधायी और कार्यकारी शक्तियां अलग कर दी गई।
- बंगाल के लिये पृथक लेफ्टिनेंट गवर्नर की नियुक्ति की गई।
- सेवाओं पर कंपनी के संरक्षण को समाप्त कर दिया गया। अब सेवाओं को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए खोल दिया गया।
- सिविल सेवाएं भारतीयों के लिए भी खोल दी गई।

Note:-

- मैकाले समिति या भारतीय सिविल सेवा समिति की नियुक्ति 1854 में की गयी थी।

1858 का अधिनियम

- 1857 के विद्रोह ने जटिल परिस्थितियों में कंपनी की प्रशासन की सीमाओं को स्पष्ट कर दिया था। इसके पश्चात कंपनी से प्रशासन का दायित्व वापस लेने तथा ब्रिटिश सम्राट द्वारा भारत का प्रशासन प्रत्यक्ष रूप से संभालने को मांग तेज हो गई। 1858 के अधिनियम इसी का परिणाम था।
- अब भारत का शासन, ब्रिटिश साम्राज्ञी की ओर से भारत राज्य सचिव को चलाना था,
- सचिव सहायता के लिये 15 सदस्यीय भारत परिषद का गठन किया गया।
- इस प्रकार, ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त हो गया।
- भारत परिषद के 15 सदस्यों, में से 7 सदस्यों को निदेशक मंडल में से चुना गया तथा 8 को क्राउन द्वारा नियुक्त किया गया।
- परिषद के सदस्यों का वेतन भारत के राजस्व से दिया जाना था।
- राज्य सचिव को परिषद की अध्यक्षता तथा बराबरी की स्थिति में निर्णायक मत का अधिकार दिया गया।
- ब्रिटिश संसद ने भारतीय मामलों पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया
- भारत के शासन से संबंधित सभी कानूनों एवं कदमों पर भारत सचिव की स्वीकृति अनिवार्य कर दी गई।
- इस प्रकार पिट्स इंडिया एक्ट द्वारा प्रारंभ की गई द्वैध शासन की व्यवस्था समाप्त कर दी गई।
- अब गवर्नर जनरल का पदनाम बदलकर 'वायसराय' कर दिया गया।
- वायसराय सीधे तौर पर भारत के राज्य सचिव के प्रति उत्तरदायी था।
- व्यपगत का सिद्धांत समाप्त हो गया।
- भारतीयों को योग्यता के आधार पर ब्रिटिश भारत सरकार में काम करने की अनुमति दी गयी।

भारतीय परिषद अधिनियम, 1861

- वायसराय की कार्यकारी परिषद में एक पांचवां सदस्य एक न्यायविद शामिल किया गया।
- अब परिषद में गृह, सैन्य, राजस्व, विधि और वित्त सदस्य थे।
- वायसराय की शक्तियों में वृद्धि की गई। वह परिषद की अध्यक्षता करता था।
- विधि-निर्माण के उद्देश्य से वायसराय की कार्यकारी परिषद का विस्तार किया गया। वायसराय द्वारा दो वर्षों के लिए नियुक्त अतिरिक्त सदस्यों की संख्या छह से कम और 12 से अधिक नहीं होनी चाहिए थी।
- विधायी परिषद के कार्य को विधि-निर्माण तक सीमित कर प्रशासन एवं वित्त पर कोई अधिकार नहीं रहा।
- अब विधान परिषदों का गठन अन्य प्रांतों में भी किया जा सकता था।
- विधायी शक्तियां मद्रास एवं बॉम्बे प्रेजिडेंसीज में निहित कर दी गई और इस प्रकार विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया की शुरुआत हुई।
- कलकत्ता की विधान परिषद को समग्र भारत के लिए कानून बनाने की शक्ति प्रदान की गई।
- गवर्नर जनरल की शक्तियों का विस्तार किया गया। आपातकालीन स्थितियों में उसे विधान परिषद की सहमति के बिना अध्यादेश, जिसे छह माह से अधिक प्रवर्तन में नहीं रखा जा सकता था. जारी करने की शक्ति दी गई थी।
- राज्य सचिव को सपरिषद गवर्नर जनरल द्वारा पारित किसी भी अधिनियम को भंग करने हेतु सशक्त किया गया।

भारतीय परिषद अधिनियम, 1892

- केंद्रीय और प्रांतीय विधान परिषदों में गैर सरकारी सदस्यों की संख्या में वृद्धि की गई। गवर्नर जनरल की विधान परिषद का विस्तार किया गया, जिसमें न्यूनतम 10 सदस्य और अधिकतम 16 अतिरिक्त सदस्य थे।
- पांच और अतिरिक्त सदस्यों को शामिल किया गया
- प्रतीय परिषदों हेतु अतिरिक्त सदस्यों की संख्या में अंतर था - बॉम्बे (8 अतिरिक्त सदस्य); मद्रास (20); बंगाल (20); पश्चिमोत्तर प्रांत (15) और अवध (15)।
- विश्वविद्यालयों, जिला बोडों, नगरपालिकाओं, जमींदारों, व्यापार संघों और वैवर ऑफ कॉमर्स को प्रांतीय परिषदों के लिए सदस्यों को अनुशंसित करने श्री शक्ति प्रदान की गई।
- इस अधिनियम के तहत, पहली बार केंद्रीय प्रांतीय परिषदों को कुछ शर्तों के तहत बजट पर चर्चा करने का अधिकार प्राप्त हुआ।
- परिषद के सदस्यों के पास अभी भी कोई प्रस्ताव करने या किसी वित्तीय चर्चा के संबंध में परिषद को विभाजित करने के कोई शक्ति नहीं थी।
- पहली बार, छह दिन की अग्रिम सूचना देने पर लोक हित के मामलों पर प्रश्न पूछने और बजट से संबद्ध मामलों पर विचार करने को अधिकार मिला। लेकिन इस पर मतदान नहीं कर सकते थे। अनुभूत्रि प्रश्न पूछने की अनुमति नहीं थी।

भारतीय परिषद् ऐक्ट 1909

- इसे 1892 के अधिनियम के दोषों को दूर करने के लिए लाया गया।
- विधान परिषद् की सदस्य संख्या 69 कर दी गई। जिसमें 37 सरकारी एवं 32 गैर सरकारी सदस्य थे।
- गैर सरकारी सदस्यों में 27 निर्वाचित तथा 5 वायसराय द्वारा मनोनीत होते थे।
- भारत में प्रतिनिधित्व के आधार पर विधान परिषदों में निर्वाचन प्रणाली लागू की गई। चुनाव के लिए 3 प्रकार के निर्वाचक मण्डलों का प्रावधान किया गया- 1. साधारण निर्वाचक मण्डल 2. वर्ग-विशेष 3. विशेष निर्वाचक मण्डल।

- साम्प्रदायिक आधार पर निर्वाचन पद्धति को स्थापित करने का प्रयास किया।
- मुसलमानों के लिए अलग निर्वाचन मंडल की शुरुआत की गई ताकि मुसलमानों का चुनाव केवल मुसलमानों द्वारा किया जा सके।
- सदस्य वार्षिक बजट पर विचार कर सकते थे तथा प्रस्ताव प्रस्तुत कर सकते थे। सार्वजनिक हित के विषय में प्रस्ताव रख सकते थे तथा प्रश्न पूँछ सकते थे।
- सदस्यों को पूरक प्रश्न पूँछने का अधिकार भी मिल गया।
- भारत सचिव की परिषद् तथा भारत के वायसराय की कार्यकारिणी परिषद् में सर्वप्रथम भारतीय सदस्यों, को सम्मिलित किया गया।
- दो भारतीय के० सी० गुप्ता तथा सैयद हुसैन बिलमामी को इंग्लैण्ड स्थित भारत परिषद् में नियुक्त किया गया।

❑ **1919 का अधिनियम**

- मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार इसका आधार थी।
- इसने यह स्पष्ट किया कि भारत में स्वशासित संस्थानों का केवल क्रमिक विकास होगा।
- केंद्र में इंपीरियल या भारतीय विधान परिषद को एक द्विसदनीय व्यवस्था से प्रतिस्थापित कर दिया गया।
- अब इसमें गवर्नर-जनरल और दो सदन थे-राज्य परिषद (उच्च सदन) और एक विधानसभा (निम्न सदन)।
- भारतीय विधान परिषद को अब भारतीय विधानमंडल कहा जाएगा।
- राज्य परिषद - 60 सदस्य शामिल होंगे (27 मनोनीत 33 निर्वाचित)
- विधानसभा - 144 सदस्य होंगे, (41 मनोनीत 104 निर्वाचित)
- गवर्नर-जनरल को मुख्य कार्यकारी प्राधिकारी बना दिया गया वह विधायिका की सहमति के बिना भी विधि निर्माण कर सकता था। 1919 का अधिनियम

- मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार इसका आधार थी।
- इसने यह स्पष्ट किया कि भारत में स्वशासित संस्थानों का केवल क्रमिक विकास होगा।
- केंद्र में इंपीरियल या भारतीय विधान परिषद को एक द्विसदनीय व्यवस्था से प्रतिस्थापित कर दिया गया।
- अब इसमें गवर्नर-जनरल और दो सदन थे-राज्य परिषद (उच्च सदन) और एक विधानसभा (निम्न सदन)।
- भारतीय विधान परिषद को अब भारतीय विधानमंडल कहा जाएगा।
- राज्य परिषद - 60 सदस्य शामिल होंगे (27 मनोनीत 33 निर्वाचित)
- विधानसभा - 144 सदस्य होंगे, (41 मनोनीत 104 निर्वाचित)
- गवर्नर-जनरल को मुख्य कार्यकारी प्राधिकारी बना दिया गया वह विधायिका की सहमति के बिना भी विधि निर्माण कर सकता था।

- भारत के संबंध में ब्रिटिश संसद द्वारा बनाई गई किसी भी विधि को भारतीय विधानमंडल द्वारा बदला नहीं जा सकता था।
- सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व के सिद्धांत का विस्तार कर मुसलमानों के आलावा भारतीय इसाइयों, यूरोपियन, एंग्लो-इंडियन के लिए पृथक निर्वाचन क्षेत्र आरक्षित किए गए।
- प्रांतों में आशिक रूप से उत्तरदायी सरकार के साथ. विधान के विषयों को केंद्रीय और प्रांतीय रूप में सीमांकित करना आवश्यक हो गया।
- भारत से संबंधित और प्रांतीय क्षेत्र से संबंधित विषयों के आधार पर विषयों को दो सूचियां में वर्गीकृत किया गया - केंद्रीय सूची , प्रांतीय सूची
- केंद्रीय सूची के विषय - विदेशी और राजनीतिक संबंध, रक्षा, मुद्रा, सार्वजनिक ऋण, टैरिफ और सीमा शुल्क, संचार, पेटेंट आदि
- प्रांतीय सूची - स्थानीय स्वशासन, स्वास्थ्य, स्वच्छता, शिक्षा, सार्वजनिक कार्य, कृषि, वन, विधि और व्यवस्था आदि
- परिषद में शेष शक्तियां गवर्नर जनरल के पास थीं।
- प्रांतीय सूची को छोड़कर केंद्र को सभी विषयों पर कानून बनाने का अधिकार दिया गया।
- अवशिष्ट शक्तियां केंद्र सरकार में निहित की गईं।
- गवर्नर जनरल की अनुमति से, तो केंद्र सरकार को किसी भी प्रांतीय विषय पर कानून बनाने की शक्ति प्राप्त थी।
- प्रांतों में द्वैध शासन की व्यवस्था शुरू की गई।
- इसके अनुसार प्रान्तीय विषयों को दो वर्गों में विभाजित किया गया-आरक्षित विषय और हस्तान्तरित विषय।
- हस्तांतरित विषय- शिक्षा, स्वास्थ्य आदि
- आरक्षित विषय - राजस्व, न्याय, वित्त, पुलिस आदि
- आरक्षित श्रेणी का प्रशासन गवर्नर और उसकी कार्यकारिणी को करना था।
- हस्तांतरित श्रेणी का प्रशासन उत्तरदायी भारतीय मंत्रियों के हाथों में दे दिया गया

❑ **भारतीय शासन अधिनियम, 1935**

- यह सबसे बड़ा और जटिल दस्तावेज था।
- इसमें 14 भाग 321 धारायें तथा 10 अनुसूचियों थीं।
- इसमें प्रस्तावना नहीं थी। अतः 1919 के अधिनियम की प्रस्तावना को इसके साथ जोड़ दिया गया।
- नेहरू रिपोर्ट , साइमन आयोग रिपोर्ट, तीन गोलमेज कान्फ्रेंस तथा अंग्रेजी सरकार द्वारा प्रस्तुत श्वेतपत्र, इस अधिनियम का आधार बने।
- अखिल भारतीय संघ की व्यवस्थाकी गयी।
- इसमें 11 ब्रिटिश प्रांतों 6 चीफ कमिश्नर के क्षेत्रों एवं देशी रियासते शामिल थी।

- इस अधिनियम ने द्वैध शासन को केन्द्रीय स्तर पर लागू किया और आंशिक उत्तरदायी शासन की स्थापना की।
- विषयों के विभाजन के लिए तीन सूचियां बनाई गई- (1) संघीय सूची -इसके अन्तर्गत 59 विषय थे। (2) प्रांतीय सूची - इसमें 54 विषय थे। (3) समवर्ती सूची-इसमें 36 विषय थे।
- संघीय विधानमंडल के दो सदन बनाये गए - (1) संघीय विधान सभा, (2) संघीय सभा
- संघीय विधान सभा - यह निम्न सदन था। इसकी सदस्य संख्या 375 थी, इसमें 125 स्थान देशी रियासतों कि लिए थे।
- संघीय सभा - यह उच्च सदन था। इसमें सदस्यों की संख्या 260 थी जिसमें 104 स्थान देशी रियासतों के लिए थे।
- बजट को दो भागों में विभक्त कर दिया गया था मुख्य खर्च एवं अन्य व्यय।
- मुद्रा और विनिमय पर कानून बनाने के लिए वायसराय को पूर्वानुमति आवश्यक थी।
- नये केन्द्रीय रिजर्व बैंक की स्थापना की व्यवस्था की गई
- संघ की राजधानी दिल्ली में एक केन्द्रीय न्यायालय की स्थापना का भी उपबन्ध था। इसमें मुख्य न्यायाधीश के अतिरिक्त तीन अन्य न्यायाधीश एवं दो सहायक न्यायाधीशों को नियुक्ति का प्रावधान था।
- प्रान्तीय स्वायत्तता की स्थापना की गयी।
- इसके द्वारा प्रान्तों में दोहरे शासन का अन्त और पूर्ण उत्तरदायी शासन की स्थापना की गई।
- बर्मा को भारत से अलग कर दिया गया।
- कुछ प्रान्तों में दो सदनों की व्यवस्था की गईः जैसे बम्बई, मद्रास, बंगाल, संयुक्त प्रान्त एवं बिहार।
- इस अधिनियम के द्वारा इंडिया कौंसिल को समाप्त कर दिया गया।
- भारत सचिव अब कुछ परामर्शदाताओं के परामर्श से कार्य करेगा।

Saarthi

THE COACH

1 : 1 MENTORSHIP BEYOND THE CLASSES

- **Diagnosis** of candidates based on background, level of preparation and task completed.
- **Customized solution** based on Diagnosis.
- One to One **Mentorship.**
- Personalized schedule **planning.**
- Regular **Progress tracking.**
- **One to One classes** for Needed subjects along with online access of all the subjects.
- Topic wise **Notes Making sessions**.
- One Pager **(1 Topic 1 page)** Notes session.
- **PYQ** (Previous year questions) Drafting session.
- **Thematic charts** Making session.
- **Answer-writing** Guidance Program.
- **MOCK Test** with comprehensive & swift assessment & feedback.

Ashutosh Srivastava
(B.E., MBA, Gold Medalist)
Mentored 250+ Successful Aspirants over a period of 12+ years for Civil Services & Judicial Services Exams at both the Centre and state levels.

Manish Shukla
Mentored 100+ Successful Aspirants over a period of 9+ years for Civil Services Exams at both the Centre and state levels.

WALL OF FAME

UTKARSHA NISHAD
UPSC RANK - 18

SURABHI DWIVEDI
UPSC RANK - 55

SATEESH PATEL
UPSC RANK - 163

SATWIK SRIVASTAVA
SDM RANK-3

DEEPAK SINGH
SDM RANK-20

ALOK MISHRA
DEPUTY JAILOR RANK-11

SHIPRA SAXENA
GIC PRINCIPAL (PCS-2021)

SALTANAT PARWEEN
SDM (PCS-2022)

KM. NEHA
SUB REGISTRAR (PCS-2021)

SUNIL KUMAR
MAGISTRATE (PCS-2021)

ROSHANI SINGH
DIET (PCS-2020)

AVISHANK S. CHAUHAN
ASST. COMMISSIONER
SUGARCANE (PCS-2018)

SANDEEP K. SATYARTHI
CTO (PCS-2018)

MANISH KUMAR
DIET (PCS-2018)

AFTAB ALAM
PCS OFFICER

ASHUTOSH TIWARI
SDM (PCS-2022)

CHANDAN SHARMA
Magistrate
Roll no. 301349

YOU CAN BE THE NEXT....

8009803231 / 8354021661

D 22&23, PURNIYA CHAURAHA, NEAR MAHALAXMI SWEET HOUSE, SECTOR H, SECTOR E, ALIGANJ, LUCKNOW, UTTAR PRADESH 226024

MRP:- ₹360